प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक फ्रांस के श्रेष्ठ उपन्यासकार ह्यूगो की एक उत्कृष्ट रचना है। यह एक विपन्न सन्तपुरुष की करुण कहानी है—एक वीर पुरुष के जीवन-संघर्ष का इतिहास है, एक पतित समाज के घृणित अत्याचारों का रोमांचकारी वर्णन है। मूर्ख अमीरों की मूर्खता-भरी सनकों की ऐसी यथार्थ आख्यायिका है, जिसे पढ़कर हमारा मस्तक लज्जा से झुक जाता है।

विक्टर ह्यूगो का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब उनका देश फ्रांस क्रान्ति की लहरों पर नीचे-ऊपर हो रहा था। उन्होंने अपने पिता के साथ नेपोलियन के सेना और राज-सत्तावाद की बुराइयों का दर्शन कर क्रान्ति के युग में देश का साथ दिया था। देश की भीषण अवस्था का ह्यूगो के कोमल और सहानुभूतिशील चित्त पर बड़ा गहरा असर पड़ा और उसने उनकी लेखनी में ऐसी बिजली भर दी, जिसने फ्रांस के साहित्य-जगत में एक दूसरी चिरस्थायी क्रान्ति पैदा कर दी। ह्यूगो के लेखों, कविताओं, नाटकों और उपन्यासों ने फ्रांस में अद्‌भुत हलचल मचा दी।

ह्यूगो का प्रिय विषय क्रान्ति-युग की भावना के अनुरूप ही था। प्राचीनता और नवीनता में एक संघर्ष उपस्थित हो गया था। राजसत्ता, पोपशाही गुरुडम, धनिकों की विलास-वृत्ति इत्यादि के प्रति समाज के हृदय में तिलमात्र भी आदर नहीं रह गया था।

समाज समझ चुका था, उसका दृढ़ विश्वास हो चुका था कि इनकी छत्रच्छाया में सद्‌गुण नहीं पनप सकते। ह्यूगो की तमाम रचनाओं में यही कल्पना भिन्न-भिन्न रीति से चित्रित की गई है। अपनी रचना को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए ह्यूगो अपने कथा-नायकों को गरीब, कुरूप किन्तु मानवोचित उदात्त गुणों का भण्डार बनाता है और सत्ता, ऐश्वर्य, धार्मिक दम्भ आदि के प्रति घृणा प्रकट करने के लिए इन उच्च स्थानों पर चमकनेवाली पुतलियों को दुर्गुण और दुर्बलताओं की प्रतिमा बनाता है।

ऐश्वर्य और सौन्दर्य में दुर्गुण और कुरूपता एवं दरिद्रता में सद्गुण—ह्यूगो की रचनाओं की विशेषता है। इसीका दर्शन पाठक इस उपन्यास में भी करेंगे।

पुस्तक बहुत समय से अप्राप्य थी। इसकी बराबर मांग होने पर भी हमें खेद है कि इसके पुनर्मुद्रण में इतना विलम्ब होगया। इस संस्करण में भाषा अधिक परिमार्जित कर दी गई है। आशा है, पाठक इस कृति को बहुत रुचिकर पायंगे।

—मंत्री

विषय-सूची

अनोखा

अनोखा

परिचय

१. दो मित्र

उर्सस और होमो गाढ़े मित्र थे। उर्सस मनुष्य था और होमो भेड़िया। इन दोनों का स्वभाव एक-सा था। उर्सस ने ही होमो का नामकरण किया था। सम्भवत: अपना नाम भी उसने ख़ुद ही रक्खा था। यह मनुष्य और भेड़िया दोनों मिलकर मेलों, तमाशों, चौराहों वग़ैरा पर खेल दिखाकर रोज़ी कमाते थे। भेड़िया अपनी नम्रता, शिष्टता और आज्ञाकारिता से लोगों का मनोरंजन करता था। जंगली जानवरों का पालतूपन देखकर किसे आनन्द नहीं होता! पालतूपन की परेड देखने में हमें सबसे ज्यादा मजा आता है।

उर्सस एक छोटी-सी गाड़ी में रहता था। होमो में इतनी सभ्यता आ गई थी कि वह दिन को गाड़ी खींचता और रात को उसकी रखवाली करता था। जहां कहीं ये पहुंच जाते थे—वहां तुरन्त इनकी चर्चा फैल जाती थी और इस जुगल जोड़ी के आस-पास कौतूहल से भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। तब उर्सस व्याख्यान झाड़ता था और होमो उसका समर्थन करता था। और अन्त में होमो अपने मुह में कटोरा पकड़कर नम्रतापूर्वक श्रोताओं से पैसे मांगता था। उर्सस अपने जीवन की उलझनों को बढ़ाने के लिए, या यों कहिये कि उसे सम्पूर्ण बनाने के लिए, दवा-दारू और झाड़-फूंक भी करता था और तरह-तरह की बोलियां बोल लेता था। वह बिना होंठ हिलाये ही बोल सकता था। वह हर किसीकी आवाज, लहज़े और उच्चारण की नक़ल कर सकता था, ऐसी कि आप धोखा खा जायं। वह बोलियों की तो इतनी हूबहू नक़ल कर सकता था कि आपको यही विश्वास हो जाय कि जिसकी बोली है, वही बोल रहा है। वह अकेला ही एक बड़ी भीड़ की आवाज़ों की नकल कर सकता था, जिसके कारण वह 'वाचस्पति'

की उपाधि का अधिकारी था, और उसने वह उपाधि धारण भी कर ली थी। वह तरह-तरह के पक्षियों की बोलियां बोल लेता था। चिड़िया, मैना, तोता, कौआ, कोयल, चील, चंडूल, तीतर, मोर, उल्लू सब मानो उसकी ज़बान पर थे। जब कभी उसकी तबियत चाहती थी वह कभी तो आपको हर तरह के शोर-गुल से भरे हुए बाजार का ध्यान दिला देता था, कभी जानवरों की आवाजों से चरागाहों का खयाल करा देता था—एक भीड़ के समान हुल्लड़ से भरा हुआ और दूसरा प्रभात के समान प्रशान्त। इस तरह के गुणी यद्यपि विरले होते हैं, पर हैं अवश्य।

उर्संस प्रायः कहा करता था कि "बकवास से फेफड़ों का भारीपन दूर हो जाता है। भेड़िए को गुर्राने में मजा आता है, भेड़ को मिमियाने में, चिड़ियों को चहचहाने में, स्त्री को प्रेम-कथाओं में और दार्शनिक को बहस में।" पेट के वास्ते उर्संस को नाटक तैयार करने पड़ते थे। उनको सुनाते समय वह अभिनय भी करता जाता था, जिसमें उसकी दवाओं की बिक्री होती थी।

उर्संस चतुर तमाशगीर और अच्छा डाक्टर समझा जाता था। लोग उसे जादूगर भी मानते थे; परन्तु बड़ा नहीं, मामूली; क्योंकि उन दिनों शैतान का दोस्त समझा जाना खतरनाक था। सच कहा जाय तो बात यह है कि उर्संस पर लोग शक भी कर सकते थे; क्योंकि वह दवा-दारू और जड़ी-बूटी का प्रेमी होने के कारण ऐसी-ऐसी घनी झाड़ियों में जाया करता था, जहां रतनजोत की लता मिला करती है; और यह साबित हो चुका है कि जहां यह लता उगती है, वहां शाम के धुंधलके में ज़मीन के अन्दर से एक आदमी निकलता है, जिसकी दाहिनी आंख अन्धी होती है, पैर नंगे रहते हैं, वह कोई कपड़ा नहीं ओढ़ता और उसकी कमर में तलवार लटकी रहती है। लेकिन उर्संस तो बिल्कुल सीधा-सादा, कुछ सनकी किन्तु अच्छा आदमी था। न तो वह शैतान को जगा सकता था, न भगा सकता था और न किसीको नचा-नचाकर मार सकता था; न बुरे सपने दिखा सकता था और न चार पंखवाले मुर्गे पैदा कर सकता था, न जर्मन, हिब्रू, ग्रीक वगैरा भाषा बिना सीखे बोल सकता था। इसके अलावा सीरियन भाषा वह जानता ही नहीं था और सीरियन भाषा ही तो वह भाषा है, जिसमें जादू-टोनेवाले आधी रात के समय शैतान से बातचीत करते हैं।

सारांश यह कि उर्संस ऐसा आदमी न था जिसको पुलिस का डर हो। उसकी गाड़ी काफी लंबी और काफी चौड़ी थी। वह उसमें सन्दूक के ऊपर पैर फैलाकर सो सकता था। सन्दूक के अन्दर उसके थोड़े से कपड़े रखे रहते थे। उसके पास एक लालटेन, बहुत-सी लम्बे बालोंवाली टोपियां और

कुछ बरतन थे, जो कीलों पर लटके रहते थे। कुछ बाजे भी थे जो बरतनों की तरह लटके रहते थे। इनके अलावा एक रीछ की खाल भी थी, जिसे वह तमाशा करते समय ओढ़ लेता था। उसे वह फुल-ड्रेस (पूरी पोशाक) पहनना कहता था। वह कहा करता था कि "मेरे दो चमड़े हैं। असली चमड़ा यह है"—उसका इशारा रीछ के चमड़े की ओर रहता था।

यह पहियेदार मकान, उसकी और भेड़िये की, दोनों की सम्पत्ति था। उसके मकान में अर्क वग़ैरह खींचने का टेढ़ी गर्दन या नलीवाला यन्त्र और भेड़िए के अलावा उसके पास एक बांसुरी और एक सारंगी भी थी, जिनको वह अच्छी तरह बजा लेता था। वह अपने अर्क खुद खींचता था। वह अपने गुणों से कभी-कभी इतना द्रव्य प्राप्त कर लेता था कि अनाज खरीदकर खा सकता था। उसकी गाड़ी में एक छेद था, जिसमें से लोहे की ढली हुई अंगीठी की चिमनी ऊपर निकली हुई थी। इस अंगीठी में दो हिस्से थे। एक में उर्सस दवाएं बनाता था और दूसरे में आलू पकाता था। रात के समय भेड़िया गाड़ी के नीचे ज़ंजीर में बंधा हुआ सोता था। होमो के बाल काले थे और उर्सस के सफेद। उर्सस की उम्र अगर साठ वर्ष नहीं थी तो पचास ज़रूर थी। वह सिर्फ आलुओं पर ही गुज़र करता था, जोकि उन दिनों सुअरों और कैदियों की खुराक थे। वह आलुओं से सन्तुष्ट नहीं था। वह लम्बे कद का था। कमर से वह झुक गया था और उदास रहता था।

बूढ़े आदमी की झुकी हुई देह, जीवन की धंसकी हुई इमारत के समान होती है। प्रकृति ने उसको उदासी के लिए बनाया था। उसके लिए मुस्कराना कठिन था और उसको रोने का भी अवसर कभी नहीं मिला, जिससे वह आंसुओं की ठण्डक और आनन्द के सन्तोष दोनों से वंचित था। बूढ़ा आदमी ज़िन्दा खंडहर-सा होता है, और इस तरह का खंडहर उर्सस था। उसमें भांड जैसी बकवास, तपस्वी जैसा दुबलापन और भरी हुई सुरंग जैसी तेजी थी।

यह एकसौ अस्सी वर्ष पहले की बात है, जबकि आजकल की अपेक्षा मनुष्यों में भेड़ियापन अधिक था; लेकिन बहुत अधिक नहीं।

२. पहियेदार मकान

होमो मामूली भेड़िया नहीं था। वह भी आलू खाया करता था। लेकिन था वह असली भेड़िया ही। उर्सस से भेंट होने के पहले, जबकि उसे गाड़ी नहीं खींचनी पड़ती थी, तब एक रात में पचास मील दौड़ जाना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। एक बहते हुए नाले के पास झाड़ी में उसे उर्सस ने पहले-पहल देखा। उस समय वह पानी में से केंकड़े पकड़ रहा

था। उसकी चालाकी और फुर्ती देखकर उर्सस उस पर मुग्ध हो गया।

गाड़ी खींचने के लिए उर्सस गधे की अपेक्षा होमो को ज़्यादा पसन्द करता था। उसे यह ख़याल ही घृणास्पद मालूम होता था कि उसकी गाड़ी और गधा खींचे! उसकी दृष्टि में गधे की बहुत इज़्ज़त थी। उसका कहना था कि गधा तो चार पैरवाला तत्त्वज्ञानी है। मनुष्य उसको नहीं पहचान सकता। जब तत्त्वज्ञानी निरर्थक बकवास करते हैं, तब गधा सन्तोष के साथ अपने कान मोड़ लिया करता है। मित्र की हैसियत से उर्सस कुत्ते के मुकाबले में होमो को ज्यादा पसन्द करता था, इस विचार से कि भेड़िये का प्रेम बिरले ही को मिला करता है।

उर्सस ने होमो के जहन में अपनी बुद्धि का कुछ हिस्सा पहुंचा दिया था, जैसे कि सीधे खड़े होना, गुस्से को रोक लेना और सिर्फ मन-ही-मन कुढ़ना, भौंकने के बजाय सिर्फ गुर्राना। और भेड़िये ने भी, जो कुछ वह जानता था, उसने उर्सस को सिखा दिया था—बिना छत, रोटी और आग के अपना काम चलाना और महल की गुलामी की बनिस्बत जंगल में भूखे रहना पसंद करना।

उर्सस की गाड़ी हलकी लकड़ी की बनी थी, पर थी मजबूत। सामने की तरफ उसमें कांच का दरवाजा था और छोटा-सा छज्जा, जो व्याख्यान-बाजी के काम आता था। वह कुछ तो प्लेटफार्म के समान था और कुछ पुलपिट[1] के जैसा था। पीछे की तरफ एक दरवाजा था, जिसके पट ऐसे बने थे कि उसमें से आ-जा सकते थे। दरवाजे के नीचे तीन सीढ़ियां थीं, जो नीचे-ऊपर हो सकती थीं। उन्हें नीचे कर देने से दरवाजे तक पहुंच हो जाती थी। रात को दरवाजे में सांकल और ताला लग जाते थे। पानी और बरफ के गिरते रहने से उस पर जो रंग पुता था वह बिगड़ गया था, इतना कि पहचान में नहीं आता था कि कौन-सा रंग है। सामने, बाहर की तरफ, एक तख्ता लगा था। वह एक तरह का दर्शनीय चित्र था, जिस पर कभी नीचे लिखा लेख पढ़ा जा सकता था। वह लेख सफेद ज़मीन पर काले अक्षरों में लिखा हुआ था, परन्तु धीरे-धीरे अक्षर बिगड़कर अस्पष्ट हो गये थे :

"रगड़ के कारण सोने का चौदहसौवां हिस्सा हर साल कम हो जाता है। इसे घिस जाना कहते हैं। इसलिए यह नतीजा निकलता है कि संसार में जो एक अरब चालीस करोड़ का सोना व्यवहार में है, उसमें से हर साल

[1] पुलपिट गिरजे में वह जगह होती है, जहां पर खड़े होकर प्रधान पादरी धर्मोपदेश देता है।

दस लाख का सोना बरबाद हो जाता है। यह दस लाख, खाक होकर धूल में मिल जाता है, हवा में उड़ जाता है, पानी में घुल जाता है, इसके अणु बन जाते हैं, दवा बन जाती है। यह अन्तःकरण पर जम जाता है, धनवानों की आत्माओं में मिल जाता है और उनमें गर्व उत्पन्न करता है; और ग़रीबों की आत्माओं में भी जा मिलता है और उन्हें पशुवत् बना देता है।"

सौभाग्य की बात है कि यह लेख बरसात और प्रकृति की कृपा से घिसकर मिट रहा था और पढ़ने में नहीं आता था; क्योंकि, यद्यपि उसका तत्त्वज्ञान स्पष्ट और गूढ़ दोनों है, परन्तु वह अन्य बड़े-बड़े सरकारी अफसरों को पसन्द नहीं आता। उन दिनों इंग्लैंड का कानून खिलवाड़ की चीज़ नहीं था। आदमी को आततायी होने में कुछ नहीं लगता था। रिवाज ही ऐसा पड़ गया था कि मैजिस्ट्रेट भयानक होते थे और क्रूरता महज रोज़मर्रा की चीज़ थी। फौजदारी अदालतों के जजों की संख्या बढ़ गई थी और कई गुना बढ़ती जा रही थी।

गाड़ी के अंदर दो लेख और थे। एक में इंग्लैंड के अमीर-उमरावों की वेशभूषा तथा दरबारी शिष्टाचार का वर्णन था और दूसरे में उन सरदारों की नामावली थी जो इंग्लैंड के राजा के दरबार में सम्मिलित होते थे।

करीब-करीब बत्तीस लार्डों की रियासतों, महलों, पार्कों और आमदनी वगैरा का वर्णन उस अंतिम लेख में था, जिसमें लॉर्ड क्लैनचार्ली की जायदाद का भी वर्णन था। उसकी आमदनी चालीस हजार पौंड सालाना बताई गई थी।

"दूसरे जेम्स राजा के राज्य में १७२ पियर (सरदार) थे और उन सबकी आमदनी मिलाकर १२,७२,००० पौंड सालाना होती है, जो इंग्लैंड की कुल आमदनी का ग्यारहवां हिस्सा है।" हाशिये में आखिरी नाम लीनस लॉर्ड क्लैनचार्ली के सामने उर्सस के हाथ का लिखा हुआ यह नोट था—

"बलवाई, देश से निकाला हुआ, मकान-जमीनें और सब सामान जब्त कर लिया गया। अच्छा हुआ!"

३. दार्शनिक उर्सस

उर्सस होमो पर मुग्ध था। हरएक अपने-जैसे पर मुग्ध रहता ही है। यही नियम है।

सदा भीतर से क्रोधित और बाहर से गुर्राते रहना उर्सस की मामूली अवस्था थी। वह स्वभावतः असंतुष्ट था। उसके स्वभाव में एक ही समय

में एक-दूसरे से विरोधी भाव पाये जाते थे। वह संसार को दयाहीन भाव से देखता था। उसको कोई भी मनुष्य या कोई भी वस्तु संतोषप्रद नहीं मालूम होती थी। मधु-मक्खी शहद बनाकर अपने डंक का मावजा नहीं चुका सकती। खिला हुआ गुलाब ग्रीष्म ऋतु की लू के दोष से सूर्य को बरी नहीं कर सकता। यह संभव है कि एकांत में उर्सस ईश्वर की बहुत-कुछ आलोचना करता हो। वह कहा करता था कि "यह तो प्रकट है कि शैतान स्प्रिंग के जरिये काम करता है; परंतु ईश्वर का दोष इतना ही है कि वह बंदूक के घोड़े को दबा देता है।" वह राजाओं के सिवा किसी की तारीफ़ नहीं करता था। तारीफ़ का भी उसका तरीका निराला था। एक दिन, दूसरे जेम्स राजा ने आयरलैंड के कैथोलिक-संप्रदाय के गिरजा-घर में प्रभु ईसा की माता वर्जिन के नाम पर एक खालिस सोने का लैम्प चढ़ाया था। उस समय उर्सस भी होमो के साथ उधर पहुंच गया था। होमो ऐसे मामलों की ओर शायद ही कभी ध्यान देता था; लेकिन उर्सस ने खुशी के मारे भीड़ के सामने तारीफ़ करनी शुरू कर दी और कहा, "यह निश्चित है कि यहां के इन नंगे पैरोंवाले बच्चों को जूतों की जितनी जरूरत है, अवश्य ही उससे ज्यादा जरूरत महाभागा वर्जिन को इस लैम्प की है।"

उर्सस इंग्लैंड के एक छोर से दूसरे छोर तक अपनी दवा और शीशियां बेचता हुआ और भेड़िये के साथ खेल-तमाशे दिखाता हुआ स्वतंत्रतापूर्वक घूमता था। पुलिस ने उस जमाने में आवारा गिरोहों की निगरानी रखने और खासकर कॉम्प्रेचिको लोगों को पकड़ने के लिए इंग्लैंड-भर में जाल फैला रखा था, लेकिन उसके कारण उर्सस के मार्ग में कोई रुकावट नहीं पड़ती थी।

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, वह मुस्कराता नहीं था; किन्तु वह हँसा करता था। कभी-कभी नहीं, प्रायः वह कड़वी हँसी हँसता था। मुस्कराहट में मंजूरी रहती है और हँसी में बहुधा इन्कार।

भोगना है; इस बात को मंजूर करते हुए भी कि मृत्यु में ही मुक्ति है—यदि कोई उसके पास बीमार को लाता था तो वह उसे चंगा कर देता था। बूढ़ों की ज़िन्दगी के लिए उसके पास काढ़े और तेज अर्क भी थे। वह लंगड़े-लूलों को तन्दुरुस्त कर देता था और ऊपर से यह ताना मारता था, "हां, अब तुम्हारे पैर फिर से दुरुस्त हो गए। आंसुओं की इस घाटी में बहुत समय तक चलते रहो!" यदि कोई गरीब भूख से मरता हुआ उसको दिखाई देता था तो वह अपने पास के सब पैसे उसको दे देता था, यह गुर्राते हुए कि "जीता रह, अभागे! खा! बहुत समय तक बना रह! मैं कुछ तेरी काले पानी की सजा को कम करनेवाला नहीं हूं।" इसके बाद वह अपनी हथेलियां रगड़ते हुए कहता था, "मैं आदमियों को जितना हो सकता है, उतना नुकसान पहुचाता हूं।"

गाड़ी के पीछे की छोटी-सी खिडकी में से छत पर लिखे हुए ये शब्द हर कोई पढ़ सकता था—"दार्शनिक उर्सस"

४. काम्प्रेचिकोज़

१

आजकल काम्प्रेचिकोज़ शब्द को कौन जानता है और उसका मतलब कौन समझता है!

काम्प्रेचिकोज़ एक तरह के बीभत्स और विचित्र प्रकार के घुमक्कड़ लोगों की जमात होती थी। सत्रहवीं सदी में सब लोग इन्हें जानते थे। अठारहवीं सदी में सब इन्हें भूल गये। उन्नीसवीं सदी में तो कहीं इनका नाम भी नहीं सुनाई देता था। वे पुरानी मानवीय कुरूपता के एक अंग थे। इतिहास की महान् दृष्टि में, जिसे हर वस्तु समष्टि रूप से दिखाई देती है, काम्प्रेचिकोज़ का सम्बन्ध गुलामी की ज़बरदस्त घटना से है। काम्प्रेचिकोज स्पेन और इंग्लैंड के फौजदारी कानून पर अपने निशान छोड़ गये हैं। अंग्रेज़ों के कानून की अन्धकारपूर्ण गड़बड़ी में जहां-तहां आपको इस भयंकर सच्चाई के निशान, जंगल में किसी असभ्य के पद-चिह्नों के समान, मिलेंगे।

काम्प्रेचिकोज़ स्पेन की भाषा का शब्द है। उसका मतलब है: बच्चे खरीदनेवाले।

काम्प्रेचिकोज़ बच्चों का व्यापार करते थे। वे उन्हें खरीदते और बेचते थे। वे उन्हें चुराते नहीं थे। बच्चों को भगाना इस व्यवसाय की दूसरी शाखा है। पर वे इन बच्चों का क्या करते थे?

उन्हें बीभत्स बनाते थे। बीभत्स, क्यों? देखकर हँसने के लिए।

जनता को हँसाने की जरूरत होती ही है, राजा को भी। सड़कों पर भांड़ की जरूरत है और दरबार में विदूषक की।

आदमी आनन्द-प्राप्ति के लिए जो-जो प्रयत्न करता है, वे कभी-कभी ऐसे होते हैं, जिनपर दार्शनिक को जरूर ध्यान देना चाहिए।

हम इन शुरू के पृष्ठों में किसका चित्रण कर रहे हैं? दारुणतम पुस्तक के एक अध्याय का। उस पुस्तक का नाम होना चाहिए—सुखों के द्वारा दुःखों की खेती।

२

पहले बालक एक ऐसी चीज थी, जिसे मनुष्य खिलौना समझता था। अब भी वैसा ही है।

असभ्य जमाने में ऐसी चीज का खास धन्धा था। सत्रहवीं शताब्दी, जो कि महान् शताब्दी कहलाती है, ऐसा ही जमाना था। उसमें कृत्रिम सादगी और कोमल क्रूरता का मेल था। सभ्यता का विचित्र नमूना था, मानो बनावटी मुस्कराहटवाला शेर। उस शताब्दी में बच्चों का बहुत व्यापार होता था। चापलूस इतिहास-लेखकों ने इस घाव को छिपा रखा है, किन्तु उसके इलाज को जाहिर कर दिया है, जिससे उसका पता चल जाता है।

मानवीय खिलौना अच्छा बने, इसलिए उसे शुरू से बनाना चाहिए। बौने को छुटपन से ही गढ़ना पड़ेगा। हम बचपन के साथ खेलते हैं, किन्तु सुघड़ बच्चा मजेदार नहीं होता। कुबड़ा बच्चा ज्यादा मजेदार मालूम होता है।

इसलिए एक कला की सृष्टि हुई। उस समय भी ऐसे उस्ताद थे, जो आदमी को अधूरा आदमी बना देते थे। वे मुख का मुखौटा (मुखड़ा) बना देते थे, मनुष्य की बाढ़ को रोक देते थे, और अंगों को आदि के समान गढ़ डालते थे। प्राकृत ढंग से विचित्र अंगोंवाले शरीर बनाने की शिक्षा के भी नियम थे। उसका एक पूरा शास्त्र था, जो सौंदर्य-शास्त्र से बिलकुल विपरीत था। जहां ईश्वर ने सुन्दर आंखें रखी थीं, वहां उनकी कला भेंगापन कायम कर देती थी। जहां ईश्वर ने मधुर मिलान रखा था, वहां वे अंतर अव्यवस्था कर देते थे। जहां ईश्वर ने सम्पूर्ण चित्र बनाया था, वहां वे सारी रेखाएं बदल देते थे और उन चितेरों की दृष्टि में यह नया संशोधन दीखता था। प्रकृति हमारा चित्रपट है। मनुष्य की इच्छा सदा ईश्वर के काम में कुछ-न-कुछ वृद्धि करने की रही है। आदमी सृष्टि में फेर-बदल करता है, कभी बहुत अच्छा और कभी बहुत बुरा। दरबारों का विदूषक सिवा इसके और क्या था कि आदमी को फिर से बन्दर बना दिया जाए।

वह उन्नति थी उलटी तरफ की, सर्वोत्कृष्ट रचना, किन्तु पीछे की तरफ।

कुरूप बनाना मनुष्य को पतित करता है। उसकी शक्ल बिगाड़कर उसकी असलियत बिल्कुल छिपा दी जाती थी। उस समय के कुछ जर्राह मानवीय चेहरे से ईश्वरीय स्वरूप मिटा देने में गज़ब का कमाल रखते थे।

इस विद्या के मुताबिक आदमी ऐसे बना दिये जाते थे कि उनका जीवन भद्दे ढंग का और सरल हो जाता था। वह उन्हें तो दुःखी बनाता था, लेकिन उनसे दूसरों का मनोरंजन भी करवाता था।

३

मनुष्यों को वीभत्स बनाने का यह व्यवसाय बहुत बढ़ा हुआ था और उसकी कई शाखाएं थीं।

सुलतान को उनकी जरूरत थी, और पोप को भी। एक को अपनी स्त्रियों की रखवाली के लिए और दूसरे को अपनी ओर से ईश्वर-प्रार्थना करने के लिए। ये खोजे विचित्र प्रकार के थे। इनमें सन्तानोत्पादक शक्ति नहीं रहती थी। वे मुश्किल से मनुष्य कहला सकते थे। वे विषय-वासना तृप्त करने और धर्म के काम में लाये जाते थे।

उस ज़माने में वे लोग जो चीज़ें बनाना जानते थे, आजकल वे नहीं बनती हैं। उनकी विद्या अब नहीं रही है। हम अब जिन्दा आदमी के गोश्त की शिल्पकारी नहीं जानते, यह पीड़ा देने की विद्या के लोप हो जाने का परिणाम है। आदमी एक जमाने में इस विद्या में निपुण थे किन्तु अब नहीं रहे।

उस जमाने की जिन्दा आदमियों की चीरफाड़, केवल बाज़ार के लिए भांड़, महलों के लिए विदूषक (जो कि दरबारियों की एक किस्म है) और सुलतान तथा पोप के लिए खोजे बनाने तक ही सीमित नहीं थी। उससे कई किस्में तैयार होती थीं। उसकी एक उत्कृष्ट क्रिया इंग्लैंड के राजा के लिए मुर्गे तैयार करना थी।

इंग्लैंड के राजा के महलों में एक विचित्र रिवाज था। वहां एक ऐसा चौकीदार रखा जाता था, जो मुर्गे के समान बांग देता था। जब लोग सोते थे, वह चौकीदार जागता था। हर घंटे पर जितना बजा हो, उतनी ही बार बांग देता था और इस प्रकार घड़ी का काम करता था। जो आदमी मुर्गे के पद पर तैनात होता था, उसका काग बचपन में ही काट दिया जाता था। इस क्रिया के कारण मुंह से थूक बहता रहता है। इसे देखकर इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय के समय पोर्टस्मथ की डचेज़ को बहुत घृणा हुई। इसलिए उस मुर्गे को तो हटा दिया गया, किन्तु वह पद कायम रखा गया, ताकि राजा की शान में बट्टा न लगे और उसके स्थान पर मुर्गे का काम

करने के लिए ऐसा आदमी रखा गया, जिसका काग काटा नहीं गया था। इसके बाद इस सम्मानीय काम के लिए आमतौर से कोई अवकाश-प्राप्त बूढ़ा अफसर चुना जाता था। राजा जेम्स द्वितीय के मुर्गे का नाम विलियम सैमसन काक (मुर्गा) था, और उसे बांग देने के एवज़ में नौ पौंड दो शिलिंग छः पेंस सालाना तनख्वाह मिलती थी।

करीब एक सौ साल पहले रूस के दरबार में यह प्रथा थी कि यदि किसी रूसी राजकुमार से ज़ार या ज़ारीना नाराज हो जाते थे तो उसको महल के बड़े कमरे में जमीन पर बैठने का हुक्म दिया जाता था। वह उसी हालत में कई दिन तक बैठा रहता था और उसको बिल्ली के समान म्याऊं-म्याऊं करना या मुर्गी के समान कुड़कुड़ाना पड़ता था और खाना ज़मीन पर मुह लगाकर चुगना पड़ता था।

ये प्रथाएं अब मिट गई हैं, किन्तु पूरी तरह नहीं। आजकल भी खुशामदी मुसाहिब अपने प्रभुओं को खुश करने के लिए अपनी आवाज में म्याऊं-म्याऊं और कुड़कुड़ाहट की रमक ले आते हैं। बहुत-से ऐसे हैं, जो जमीन पर झुककर अपनी रोजी प्राप्त करते हैं।

यह बड़ी खुशी की बात है कि राजा गलती कर ही नहीं सकता। इसलिए वह जो कुछ करे उसकी तारीफ करने में कोई गलती नहीं, उसमें तो खुशी-ही-खुशी है।

६

सत्रहवीं सदी के बच्चों के व्यापार का सम्बन्ध, जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, एक दूसरे व्यवसाय से था। इस व्यापार में लगे हुए कामप्र-चिको लोग यह व्यवसाय भी करते थे। वे बच्चों को खरीदते थे, उनके कोमल शरीर को अपने हुनर से खास तरह का बनाते थे और फिर उन्हें बेच देते थे।

इलेक्टर अपनी प्रजा को दूकान में विक्री के लिए रख छोड़ता था। 'आइये, खरीदिए, यह विक्री के लिए है।'

बहुत समय तक काम्प्रेचिको अपना काम कुछ दब-छिपकर करते थे। कभी-कभी समाज पाप के व्यापार पर भी संरक्षण की छाया डाल दिया करता है, जिसके अन्दर वह व्यापार चुपचाप बढ़ा करता है। हमारे ही जमाने में इस तरह का एक गिरोह था। उसका मुखिया प्रसिद्ध बदमाश रैमन सेलस था, जिसने सन् १८३४ से १८६६ तक स्पेन के तीन जिलों को तंग कर रखा था।

इंग्लैंड में स्टुअर्ट राजाओं के ज़माने में राज-दरबार की काम्प्रेचिको लोगों की ओर कुछ बुरी दृष्टि नहीं थी। कभी-कभी तो राज्य के काम में उनका उपयोग किया जाता था। राजा द्वितीय जेम्स के लिए तो वे प्रायः शाही हथियार थे। वह ज़माना ऐसा था कि जब कोई सरदार राजा को जरा खिलाफ या बाधक मालूम होता था, तो उसके घराने को छिन्न-भिन्न कर दिया जाता था, उसका उत्तराधिकारी गायब कर दिया जाता था और दूसरे हकदार दबा दिये जाते थे। कभी-कभी एक घराने की एक शाखा को फायदा पहुंचाने की गरज से किसी दूसरी शाखा को धोखा दिया जाता था।

काम्प्रेचिको शक्ल बिगाड़ने में सिद्धहस्त थे। इसलिए उनके ज़रिये राजा की नीति में बहुत मदद मिल सकती थी। शक्ल बदल देना, जान से मार डालने की अपेक्षा ज्यादा अच्छा था। ये बिगड़ी हुई शक्ल के आदमी सड़कों पर लुढ़कते फिरते थे और किसीको कोई सन्देह या आश्चर्य नहींहोता था।

काम्प्रेचिको मनुष्य उसी तरह काम करते थे जैसे कि चीन-निवासी पेड़ों पर करते हैं। उनका भी खास हुनर था, किन्तु वह हुनर अब गायब हो गया है। अच्छा-सा बालक उनके हाथ में पहुँचकर भद्दा, बदशक्ल और बौना बन जाता था, जिसे देखकर हंसी आती थी और आश्चर्य भी। वे छोटे-से बच्चे पर ऐसी कारीगरी करते थे कि फिर उसके माता-पिता भी नहीं पहचान सकते थे।

कभी-कभी वे पीठ की रीढ़ सीधी रहने देते थे और चेहरे को बदल देते थे। वे बच्चे को उसी तरह बदल देते थे जैसे कि जेबी रूमाल बदला जा सकता है। उनके अंगों की हड्डियां ऐसी चतुराई से खिसकाकर जमा दी जाती थीं कि हरएक को भ्रम होता था कि इसमें नई हड्डी जोड़ी गई है।

काम्प्रेचिको बच्चे का चेहरा ही नहीं गायब करते थे, वे उसकी स्मृति भी गायब कर देते थे। बच्चे की असलियत यथाशक्ति बिगाड़ दी जाती

थी। बच्चे को अपने अंग-भंग होने की जरा भी याद नहीं रहती थी। यह भयंकर जर्राही उसके चेहरे पर अपने निशान छोड़ देती थी, किन्तु स्मृति पर उसका कोई निशान नहीं रहता था। उसको कुछ याद भी रहता था तो ज्यादा-से-ज्यादा यह कि एक दिन उसे आदमियों ने पकड़ लिया था, बाद में वह बेहोश हो गया और अन्त में वह चंगा हो गया। पर चंगा कैसे हुआ, यह उसे नहीं मालूम। गंधक के तेजाब से जलने और लोहे से चमड़ी और मांस के कटने की उसे जरा भी याद नहीं रहती थी।

काम्प्रेचिको अपने छोटे-से मरीज को कोई दवा खिलाकर बेहोश कर देते थे, जिससे उसे किसी तरह का दर्द नहीं मालूम होता था। वह दवा चीनवालों को पुराने जमाने से मालूम थी। चीनवाले आविष्कार करने में सदा अव्वल रहे हैं—छापे की कल, गोला-बारूद, गुब्बारे, क्लोरोफार्म सबमें। फर्क सिर्फ इतना ही है कि यूरोप में जो आविष्कार होता है, उसका जन्म होकर उसमें एकदम जान आ जाती है, वह एकदम नई और आश्चर्य-जनक चीज बन जाता है; किन्तु जो आविष्कार चीन में होता है वह इल्ली से तितली न बनकर बीच में ही रह जाता है और उसी मृतप्राय अवस्था में रहा आता है।

५

राजा जेम्स द्वितीय काम्प्रेचिको लोगों के खिलाफ नहीं था। कारण स्पष्ट है, वह उनका उपयोग करता था। कम-से-कम एक से ज्यादा वार उसने उनका उपयोग किया है। यह वात नहीं कि हम जिससे घृणा करते हैं उसका उपयोग नहीं करते। यह नीच व्यापार, ऊंचे व्यापार का, जिसे राजा की नीति कहते हैं, साधन-स्वरूप था। इसलिए जान-बूझकर उसे उसी बुरी हालत में तो रहने दिया गया था, परन्तु उसे तंग नहीं किया जाता था। उसपर निगरानी नहीं रखी जाती थी, परन्तु उसपर ध्यान अवश्य रक्खा जाता था। इतना ही काफी था—कानून ने एक आंख बन्द कर दी थी, राजा ने दूसरी खोल दी थी।

काम्प्रेचिको का कोई कट्टर धार्मिक फिरका नहीं था। वे सिर्फ व्यापारी थे। वे गिरोह बांधकर रहते थे और कभी यहां, कभी वहां, अपने डेरे जमा दिया करते थे। वे गम्भीर और धार्मिक थे और चोरी करना उनके स्वभाव में नहीं था। वे ईमानदार थे। लोग उनके बारे में चाहे जो खयाल करते हों, वे कभी-कभी तो अन्तःकरण से ईमानदारी पर कायम रहते थे। वे दरवाजा खोलकर भीतर जाते, बच्चे का सौदा करते, कीमत चुकाते और अपना रास्ता लेते थे। उनके सारे काम सज्जनतापूर्वक होते थे।

उनमें सभी देशों के लोग शामिल थे। अंग्रेज, फ्रांसीसी, कैस्टीलियन, जर्मन, इटालियन। विचारों की एकता, विश्वासों की एकता, धन्धे की एकता, इस प्रकार का मेल कायम कर देती है। इन सबके मिलने से उनकी एक नई भाषा ही बन गई थी, जो सबकी खिचड़ी-सी थी।

काम्प्रेचिको की कोई विशेष जाति नहीं थी। वे एक संघ थे। संघ के बजाय उन्हें तल-छट कहना चाहिए, जहां पर कि दुनिया-भर के गुंडे और उठाईगीरे आकर जमा हो जाते थे और जुर्म ही उनका व्यापार रहता था।

घूमते रहना उनके जीवन का नियम था। उन देशों में भी जहां उनके धन्धे से, कभी-कभी, राजशक्ति को सहायता मिलती थी, उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता था। राजा उस कारीगरी का उपयोग करते थे और कारीगरों को फांसी पर चढ़ा देते थे। राजा की मर्जी जो ठहरी!

काम्प्रेचिको गरीब थे। यह संभव है कि इस व्यापार के थोक ठेकेदार धनवान हों।

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, उनका संघ था और उसके नियम, शपथ, सिद्धान्त—सारांश यह कि पूरा कानून था।

वे लोग समय-समय पर निश्चित स्थानों पर इकट्ठे हुआ करते थे और उनके नेता आपस में परामर्श भी किया करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में उनके

मिलने के चार स्थान मुख्य थे : एक स्पेन में, दूसरा जर्मनी में, तीसरा फ्रांस में और चौथा इंग्लैण्ड में।

६

इंग्लैंड का कानून आवारा लोगों के सख्त खिलाफ रहा है। वहां के एक खास कानून के मुताबिक बे-घर-बार के आदमी जहरी सांप, भेड़ियों वगैरा से भी भयंकर माने जाते थे। इंग्लैंड के कानून ने देश से भेड़ियों को तो निकाल ही दिया था। वह अब आवारा लोगों को भी निकाल बाहर करने में लगा था। इस मामले में आयरिश लोग अंग्रेजों के बिल्कुल खिलाफ हैं। आयरिश लोग अपने देवताओं से भेड़िये के स्वास्थ्य की प्रार्थना करते हैं और उसको अपना 'धार्मिक पिता' कहते हैं।

तो भी अंग्रेजों का कानून, जैसा कि हम बता चुके हैं, भेड़ियों के साथ रिआयत करता था और उनको कुत्ते के समान पालने की इजाजत दे देता था। इसी प्रकार वह आवारा को भी रहने की इजाजत देकर उन्हें एक तरह से अपनी प्रजा मान लेता था। आवारापन में जो स्वतन्त्रता है उससे कानून घबराता था। इसलिए किसी मनुष्य पर आवारापन का संशय होते ही उसे सख्त सज़ा मिलती थी। लोहा और आग उसके लिए तैयार थे। कानून आवारापन को जला देना ही उचित समझता था।

काम्प्रेचिको ईसाई थे। पर वे ईसाइयों से भी ज्यादा कैथोलिक थे और कैथोलिकों से भी ज्यादा थे रोमन। उनका विश्वास इतना नाजुक और पवित्र था कि वे दूसरे धर्म के आवारों से मिलना पसंद नहीं करते थे।

जब तक इंग्लैंड में स्टुअर्टों का राज्य था, तबतक कुछ हद तक काम्प्रेचिकों की रक्षा की जाती थी। राजा द्वितीय जेम्स धर्मात्मा था। वह यहूदियों और दूसरे आवारों को तो तंग करता था, किन्तु काम्प्रेचिकों के साथ अच्छा बर्ताव करता था। वह मनुष्य बेचता था और काम्प्रेचिको मनुष्य

जाय तो वे खतरे में पड़ जायं। इस प्रकार वे राजनैतिक दृष्टि से बहुत काम के थे। इसके अलावा वे ईसाई धर्म के प्रधान 'पवित्र पिता' पोप के लिए गवये तैयार करते थे। वे ईसाइयों की प्रधान देवी मेरी के भक्त थे। इन बातों से पोप के अनुयायी स्टुआर्ट राजा उनसे बहुत खुश थे। राजा द्वितीय जेम्स ऐसे धार्मिक आदमियों के खिलाफ कैसे हो सकता था, जो कि भक्ति-भाव से कुमारीदेवी—मेरी—के लिए खोजे सेवक तैयार करते थे? सन् १६८८ में इंग्लैंड के राजघराने में परिवर्तन हो गया, स्टुआर्टों के स्थान पर ऑरेंज घराना कायम हुआ और द्वितीय जेम्स की गद्दी पर तृतीय विलियम बैठा।

देशनिकाले के बाद द्वितीय जेम्स की विदेश में मृत्यु हुई। उसकी कब्र पर चमत्कार होने लगा और उसकी मिट्टी से ऑटन के बिशप का भगंदर रोग दूर हो गया। राजा की धार्मिकता का यह असर था!

राजा विलियम के विचार और कार्य जेम्स से भिन्न थे। इसलिए उसने काम्प्रेचिकों के साथ सख्ती करनी शुरू की। उसने उन्हें नष्ट करने की पूरी कोशिश की।

उनके खिलाफ शुरू में ही उसने एक कानून बनाया, जो बच्चे खरीदने वालों के लिए वज्रापात के समान था। उस कानून के अनुसार जो काम्प्रेचिको पकड़े जाते थे और सजा पाते थे, उनके कन्धे पर जलते हुए लाल लोहे से 'ब' का निशान कर दिया जाता था, जिसका मतलब था बदमाश; बाएं हाथ पर 'चो' का निशान बनाया जाता था, जिसका मतलब था चोर; दाहिने हाथ पर 'ह' का निशान कर दिया जाता था, जिसका मतलब होता था हत्यारा। उनके मुखिया, जो कि ऊपर से भिखारी दीखने पर भी धनवान माने जाते थे, पकड़कर शिकंजे में कस दिये जाते थे और उनके कपाल पर 'शि' का निशान दाग दिया जाता था।

जो लोग मालूम होने पर भी काम्प्रेचिकों की खबर नहीं देते थे, उनकी जायदाद जब्त हो जाती थी और वे जीवन-भर के लिए कैद कर दिये जाते थे।

पहला खण्ड

: १ :

रात काली, पर मनुष्य...

१. संध्या के धूमिल प्रकाश में

यूरोप की भूमि पर उत्तर की तेज हवा बिना रुके बह रही थी। इंग्लैंड में उसकी तेजी और भी ज्यादा थी। जनवरी के आखिर में, जब कि सबसे ज्यादा सर्दी थी, एक दिन शाम के वक्त पोर्टलैंड की खाड़ी के एक खतरनाक खांचे में कोई असाधारण बात हो रही थी, जिसके कारण समुद्री पक्षी आकाश में चिल्ला-चिल्लाकर मुहाने के आस-पास चक्कर लगाते थे, किन्तु भीतर जाने का साहस नहीं करते थे।

खाड़ी का यह खांचा एकांत स्थान में होने के कारण और सागर-तूफान के समय बहुत भयंकर हो जाता था। इसलिए जो जहाज छिपना चाहता था, उसके लिए यह स्थान सुविधाजनक था। यहां पर पानी बहुत गहरा था और इस समय एक छोटी-सी नाव चट्टान से लगी हुई थी। दिन-भर से कुहरे में छिपा हुआ सूर्य अभी-अभी अस्त हुआ। एक प्रकार की गहरी अन्धकारपूर्ण उदासी छा रही थी, जो कि सूर्य के निराश की निशा के समान थी।

संध्या के धुंधले प्रकाश में गौर से देखने पर किनारे के नजदीक एक नाव दिखाई दे रही थी। नाव में चढ़ने-उतरने की हलचल के सिवाय और कोई हलचल नहीं दीखती थी। उस हलचल में भय और आतुरता का आभास था। पैरों की आहट, मुंह का शब्द, यहांतक कि सांस भी नहीं सुनाई देती थी।

तटों पर वस्तियां नहीं होती थीं और न उस मासम में रास्ते ही सुरक्षित थे।

मौसम चाहे जैसा दीखता हो, उस नाव में जो लोग रवाना होनेवाले थे, वे अपनी तैयारी में लगे हुए थे। वे जल्दी-जल्दी किनारे पर आ-जा रहे थे। उनको अलग से पहचानना कठिन था। यह वतलाना भी असम्भव था कि वे जवान हैं या बूढ़े। संध्या के धुधलेपन ने उनकी आकृतियों को मिली-जुली और अस्पष्ट-सी बना दिया था। उनके चेहरों पर अन्धकार का आवरण पड़ा हुआ था। वे रात्रि के छाया-चित्रों के समान दिखाई देते थे। गिनती में वे आठ थे। उनमें एक या दो औरतें भी मालूम होती थीं, परन्तु कपड़ों पर से उनको पहचान लेना कठिन था—वे कपड न तो पुरुषों के-से थे, न स्त्रियों के-से। चीथडों में न पुरुषत्व होता है, न स्त्रीत्व।

वे सव लंबे चोगे पहने हुए थे, जिनमें कई जगह पैवंद लगे थे। उनकी आंखों को छोड़ शरीर का सारा भाग ढका हुआ था, जिससे एक तो ठंडी हवा से उनकी रक्षा होती थी, दूसरे कोई उन्हें पहचान भी नहीं सकता था। किन्तु इन लंबे कपड़ों के कारण उनके चलने-फिरने में वाधा नहीं पड़ती थी।

वड़ी-वड़ी छायाओं के वीच एक छोटी छाया भी इधर-उधर फिरती दिखाई देती थी। वह या तो वौना था या वालक।

वह वालक की छाया थी।

२. नाव का प्रस्थान

उस नाव के आदमियों में एक मुखिया मालूम होता था। वह पैरों में चप्पल पहने था और उसके चीथडों में जरी का काम था। वह एक भड़कीली जाकिट पहने था जो चोगे के अन्दर से मछली के पेट के समान चमकती थी।

आदमी की वंडी वच्चे के लिए चोगा है, इस सिद्धान्त के अनुसार वह वालक अपने चीथड़ों पर एक मल्लाह की वंडी पहने था, जो कि उसके घुटने के नीचे तक लटक रही थी।

ऊंचाई से वह वालक दस-ग्यारह साल का मालूम होता था। उसके पैर नंगे थे।

नाव के कर्मचारी सिर्फ तीन थे, एक कप्तान और दो मल्लाह।

वह नाव, मालूम होता है स्पेन से आई थी और वहीं लौटनेवाली थी। इसमें संदेह नहीं कि वह नाव किसी चोरी के काम में लगी हुई थी।

उसमें जो आदमी चढ़े थे, वे कानाफूंसी कर रहे थे। इस कानाफूंसी में कई भाषाओं के शब्द मिले थे। स्पेनिश, जर्मन, फ्रांसीसी, गेलिक और

पहला खण्ड

: १ :

रात काली, पर मनुष्य...

१. संध्या के धूमिल प्रकाश में

यूरोप की भूमि पर उत्तर की तेज हवा बिना रुके बह रही थी। इंग्लैंड में उसकी तेजी और भी ज्यादा थी। जनवरी के आखिर में, जब कि सबसे ज्यादा सर्दी थी, एक दिन शाम के वक्त पोर्टलैंड की खाड़ी के एक खतरनाक खांचे में कोई असाधारण बात हो रही थी, जिसके कारण समुद्री पक्षी आकाश में चिल्ला-चिल्लाकर मुहाने के आस-पास चक्कर लगाते थे, किन्तु भीतर जाने का साहस नहीं करते थे।

खाड़ी का यह खांचा एकांत स्थान में होने के कारण और खासकर तूफान के समय बहुत भयंकर हो जाता था। इसलिए जो जहाज छिपना चाहता था, उसके लिए यह स्थान सुविधाजनक था। यहां पर पानी बहुत गहरा था और इस समय एक छोटी-सी नाव चट्टान में लगी हुई थी। दिन-भर से कुहरे में छिपा हुआ सूर्य अभी-अभी अस्त हुआ। एक प्रकार की गहरी अन्धकारपूर्ण उदासी छा चली थी, जो कि सूर्य के वियोग की चिंता के समान थी।

संध्या के धुंधले प्रकाश में गौर से देखने पर किनारे के नजदीक एक नाव दिखाई दे रही थी। नाव में चढ़ने-उतरने की हलचल के अलावा और कोई हलचल नहीं दीखती थी। उस हलचल में भय और व्याकुलता का आभास था। पैरों की आहट, मुंह का शब्द, यहांतक कि सांस भी नहीं सुनाई देती थी।

पोर्टलैंड के दूसरे एक खांचे में भी कुछ नावें दिखाई देती थीं। पर उनके अलावा जहांतक दृष्टि जाती थी, कोई सजीव वस्तु नहीं दीखती थी और न मकानों का, न जहाज का कोई नाम-निशान था। उस जमाने में समुद्र-

तटों पर बस्तियां नहीं होती थीं और न उस मौसम में रास्ते ही सुरक्षित थे।

मौसम चाहे जैसा दीखता हो, उस नाव में जो लोग रवाना होनेवाले थे, वे अपनी तैयारी में लगे हुए थे। वे जल्दी-जल्दी किनारे पर आ-जा रहे थे। उनको अलग से पहचानना कठिन था। यह बतलाना भी असम्भव था कि वे जवान हैं या बूढ़े। संध्या के धुधलेपन ने उनकी आकृतियों को मिली-जुली और अस्पष्ट-सी बना दिया था। उनके चेहरों पर अन्धकार का आवरण पड़ा हुआ था। वे रात्रि के छाया-चित्रों के समान दिखाई देते थे। गिनती में वे आठ थे। उनमें एक या दो औरतें भी मालूम होती थीं, परन्तु कपड़ों पर से उनको पहचान लेना कठिन था—वे कपड न तो पुरुषों के-से थे, न स्त्रियों के-से। चीथडों में न पुरुषत्व होता है, न स्त्रीत्व।

वे सब लंबे चोगे पहने हुए थे, जिनमें कई जगह पैवंद लगे थे। उनकी आंखों को छोड़ शरीर का सारा भाग ढका हुआ था, जिससे एक तो ठंडी हवा से उनकी रक्षा होती थी, दूसरे कोई उन्हें पहचान भी नहीं सकता था। किन्तु इन लंबे कपडों के कारण उनके चलने-फिरने में बाधा नहीं पड़ती थी।

बड़ी-बड़ी छायाओं के बीच एक छोटी छाया भी इधर-उधर फिरती दिखाई देती थी। वह या तो बौना था या बालक।

वह बालक की छाया थी।

२. नाव का प्रस्थान

उस नाव के आदमियों में एक मुखिया मालूम होता था। वह पैरों में चप्पल पहने था और उसके चीथडों में जरी का काम था। वह एक भड़कीली जाकिट पहने था जो चोगे के अन्दर से मछली के पेट के समान चमकती थी।

आदमी की बंडी बच्चे के लिए चोगा है, इस सिद्धान्त के अनुसार वह बालक अपने चीथड़ों पर एक मल्लाह की बंडी पहने था, जो कि उसके घुटने के नीचे तक लटक रही थी।

ऊंचाई से वह बालक दस-ग्यारह साल का मालूम होता था। उसके पैर नंगे थे।

नाव के कर्मचारी सिर्फ तीन थे, एक कप्तान और दो मल्लाह।

वह नाव, मालूम होता है स्पेन से आई थी और वहीं लौटनेवाली थी। इसमें संदेह नहीं कि वह नाव किसी चोरी के काम में लगी हुई थी।

उसमें जो आदमी चढ़े थे, वे कानाफूंसी कर रहे थे। इस कानाफूंसी में कई भाषाओं के शब्द मिले थे। स्पेनिश, जर्मन, फ्रांसीसी, गेलिक और

पहला खण्ड

: १ :

रात काली, पर मनुष्य...

१. संध्या के धूमिल प्रकाश में

यूरोप की भूमि पर उत्तर की तेज हवा विना रुके बह रही थी। इंग्लैंड में उसकी तेजी और भी ज्यादा थी। जनवरी के आखिर में, जब कि सबसे ज्यादा सर्दी थी, एक दिन शाम के वक्त पोर्टलैंड की खाड़ी के एक खतरनाक खांचे में कोई असाधारण बात हो रही थी, जिसके कारण समुद्री पक्षी आकाश में चिल्ला-चिल्लाकर मुहाने के आस-पास चक्कर लगाते थे, किन्तु भीतर जाने का साहस नहीं करते थे।

खाड़ी का यह खांचा एकांत स्थान में होने के कारण और खासकर तूफान के समय बहुत भयंकर हो जाता था। इसलिए जो जहाज छिपाना चाहता था, उसके लिए यह स्थान सुविधाजनक था। यहां पर पानी बहुत गहरा था और इस समय एक छोटी-सी नाव चट्टान से लगी हुई थी। दिन-भर से कुहरे में छिपा हुआ सूर्य अभी-अभी अस्त हुआ। एक प्रकार की गहरी अन्धकारपूर्ण उदासी छा चली थी, जो कि सूर्य के वियोग की चिंता के समान थी।

संध्या के धुंधले प्रकाश में गौर से देखने पर किनारे के नजदीक एक नाव दिखाई दे रही थी। नाव में चढने-उतरने की हलचल के अलावा और कोई हलचल नहीं दीखती थी। उस हलचल में भय और व्याकुलता का आभास था। पैरों की आहट, मुह का शब्द, यहांतक कि सांस भी नहीं सुनाई देती थी।

पोर्टलैंड के दूसरे एक खांचे में भी कुछ नावें दिखाई देती थीं। पर उनके अलावा जहांतक दृष्टि जाती थी, कोई सजीव वस्तु नहीं दीखती थी और न मकानों का, न जहाज का कोई नाम-निशान था। उस जमाने में समुद्र-

तटों पर बस्तियां नहीं होती थीं और न उस मौसम में रास्ते ही सुरक्षित थे।

मौसम चाहे जैसा दीखता हो, उस नाव में जो लोग रवाना होनेवाले थे, वे अपनी तैयारी में लगे हुए थे। वे जल्दी-जल्दी किनारे पर आ-जा रहे थे। उनको अलग से पहचानना कठिन था। यह बतलाना भी असम्भव था कि वे जवान हैं या बूढ़े। संध्या के धुंधलेपन ने उनकी आकृतियों को मिली-जुली और अस्पष्ट-सी बना दिया था। उनके चेहरों पर अन्धकार का आवरण पड़ा हुआ था। वे रात्रि के छाया-चित्रों के समान दिखाई देते थे। गिनती में वे आठ थे। उनमें एक या दो औरतें भी मालूम होती थीं, परन्तु कपड़ों पर से उनको पहचान लेना कठिन था—वे कपड़े न तो पुरुषों के-से थे, न स्त्रियों के-से। चीथड़ों में न पुरुषत्व होता है, न स्त्रीत्व।

वे सब लंबे चोगे पहने हुए थे, जिनमें कई जगह पैवंद लगे थे। उनकी आंखों को छोड़ शरीर का सारा भाग ढका हुआ था, जिससे एक तो ठंडी हवा से उनकी रक्षा होती थी, दूसरे कोई उन्हें पहचान भी नहीं सकता था। किन्तु इन लंबे कपड़ों के कारण उनके चलने-फिरने में बाधा नहीं पड़ती थी।

बड़ी-बड़ी छायाओं के बीच एक छोटी छाया भी इधर-उधर फिरती दिखाई देती थी। वह या तो बौना था या बालक।

वह बालक की छाया थी।

२. नाव का प्रस्थान

उस नाव के आदमियों में एक मुखिया मालूम होता था। वह पैरों में चप्पल पहने था और उसके चीथड़ों में जरी का काम था। वह एक भड़कीली जाकिट पहने था जो चोगे के अन्दर से मछली के पेट के समान चमकती थी।

आदमी की बंडी बच्चे के लिए चोगा है, इस सिद्धान्त के अनुसार वह बालक अपने चीथड़ों पर एक मल्लाह की बंडी पहने था, जो कि उसके घुटने के नीचे तक लटक रही थी।

ऊंचाई से वह बालक दस-ग्यारह साल का मालूम होता था। उसके पैर नंगे थे।

नाव के कर्मचारी सिर्फ तीन थे, एक कप्तान और दो मल्लाह।

वह नाव, मालूम होता है स्पेन से आई थी और वहीं लौटनेवाली थी। इसमें संदेह नहीं कि वह नाव किसी चोरी के काम में लगी हुई थी।

उसमें जो आदमी चढ़े थे, वे कानाफूंसी कर रहे थे। इस कानाफूंसी में कई भाषाओं के शब्द मिले थे। स्पेनिश, जर्मन, फ्रांसीसी, गेलिक और

वास्क। उनकी भाषा में गंवारूपन था। वे भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के थे, परन्तु सब एक गिरोह के थे।

नाव के सामने के सिरे पर बालक ईसामसीह और उनकी माता की तस्वीर खुदी हुई थी और उसके पास एक लालटेन लगी थी, जो उन पवित्र मूर्तियों के सामने प्रकाश का भी काम देती थी, साथ ही समुद्र पर उजाला भी करती थी। किन्तु वह लालटेन इस समय बुझी हुई थी, जिससे प्रकट होता था कि नाववाले अपना काम छिपे-छिपे करना चाहते थे।

मूर्ति के नीचे सुनहले रंग में लिखा था 'मेटूटिना'। यह नाव का नाम था।

रवाना होने की हड़बड़ी के कारण चट्टान पर सारा सामान बिखरा पड़ा था और वे यात्री उसको उठा-उठाकर नाव में चढ़ा रहे थे। नाव से किनारे पर और किनारे से नाव पर लगातार दौड़-सी लगी थी। हरएक अपने काम में लगा हुआ था। उनमें जो स्त्रियां दीखती थीं वे भी पुरुषों के समान ही काम कर रही थीं। उन्होंने बालक पर बहुत बोझ लाद दिया था।

इसमें सन्देह नहीं कि उस बालक के मां-बाप वहां नहीं थे। उसकी जान की किसीको परवा नहीं थी। वे उससे कसकर काम ले रहे थे। वह बालक परिवार में रहनेवाला तो नहीं मालूम होता था, परन्तु उस गिरोह का गुलाम मालूम होता था। वह काम करता था, परन्तु उससे कोई बोलता नहीं था।

फिर भी वह दूसरों के समान ही फुर्ती से काम कर रहा था और उसका भी यही इरादा दीखता था कि जितनी जल्दी हो सके, रवाना हो जायं। पर उसे शायद यह नहीं मालूम था कि क्यों जल्दी रवाना होना है। वह दूसरों को जल्दी करते देखकर खुद भी जल्दी कर रहा था।

नाव में सारा सामान पहुंच गया। अब आदमियों का नाव पर चढ़ना बाकी था। वे दोनों स्त्रियां नाव के अंदर थीं। बालक को मिलाकर छहों आदमी किनारे पर थे। नाव रवाना होने की हलचल शुरू हो गई। कप्तान ने नाव का पंखा पकड़ा और किनारे से बंधा हुआ रस्सा काटने के लिए एक मल्लाह ने कुल्हाड़ी उठाई, जिससे शीघ्रता सूचित होती थी। जब जल्दी नहीं होती है तब रस्सा काटा नहीं जाता, उसकी गांठ खोल दी जाती है।

किनारे खड़े मनुष्यों को मुखिया ने नाव पर चढ़ने का हुक्म दिया। बालक पटिये की ओर दौड़ा, ताकि वह सबसे पहले नाव पर चढ़ जाए। जैसे ही उसने पटिये पर पैर रखा कि दो आदमी जल्दी से उसको धक्का देते हुए आगे बढ़ गए और वह पानी में गिरते-गिरते बचा। तीसरा भी आगे

चला गया और चौथे ने एक घूंसा लगाकर उसे पीछे धकेल दिया। पांचवां, जोकि मुखिया था, कूदकर नाव में पहुंच गया और उसने पटिये को ठोकर मारकर पानी में गिरा दिया। कुल्हाड़ी के एक झटके में रस्सा कट गया, पतवारें चलने लगीं, नाव किनारे से रवाना हो गई और वह बालक जमीन पर अकेला रह गया।

३. बालक अकेला रह गया

बालक चट्टान पर स्थिर खड़ा रहा। उसकी आंखें नाव पर जमी हुई थीं। न उसने किसीको पुकारा, न प्रार्थना की। यद्यपि उसे ऐसा होने का ख्याल तक नहीं था, तो भी उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। उसी प्रकार की नीरवता नाव में भी थी। बालक न तो रोया, न चिल्लाया। आदमियों ने बालक को विदाई का एक शब्द भी नहीं कहा। बीच के बढ़ते हुए अंतर को दोनों चुपचाप देख रहे थे। श्मशान-घाट पर भूतों के विदा होने का-सा दृश्य वहां था। बालक मानो चट्टान से कील दिया गया हो। वह दूर होती हुई नाव को देख रहा था। मालूम होता था कि उसने अपनी अवस्था को अच्छी तरह समझ लिया था।

कुछ क्षण बाद नाव उस खांचे के पार हो गई और धीरे-धीरे आंखों से ओझल हो गई। वह समुद्र में चली गई।

बालक ने उसको लोप होते देखा। वह चकित और स्वप्नमय था। अपने जीवन की अंधकारपूर्ण वास्तविकता का भाव उसकी विमूढ़ता को और भी उलझा रहा था। ऐसा मालूम होता था कि इस प्राणी के प्रभात-काल में ही अनुभवों का उदय हो रहा था। क्या यह संभव है कि वह उचित-अनुचित का निर्णय कर रहा था? अत्यन्त शैशवावस्था में आया हुआ अनुभव कभी-कभी बालक के अन्तःकरण की गुप्त गहराई में किसी प्रकार की भयंकर तराजू—हमें नहीं मालूम किस प्रकार की—तैयार कर देता है, जिसमें उसकी बेचारी छोटी-सी आत्मा परमात्मा को तोलती है।

अपनेको निरपराध मानता हुआ वह चुप रहा। कोई शिकायत नहीं! जो निर्दोष है वह किसीको दोष नहीं देता।

इस प्रकार रुखाई के साथ अलग किये जाने पर भी वह व्याकुल नहीं हुआ। उसके अंतःकरण में एक प्रकार की दृढ़ता आ गई। जीवन के प्रारंभ-काल में ही भाग्य के इस सहसा नाशकारी आघात से वह बालक झुका नहीं। उसने वज्र का प्रहार अविचलित भाव से सह लिया।

उसके आश्चर्य में खिन्नता का लेश-मात्र भी न देखकर कोई कह सकता है कि जो लोग उसको छोड़कर गए थे, उनमें ऐसा कोई नहीं था जो

उसको प्यार करता हो या जिसको वह प्यार करता हो।

विचारों में मग्न होने के कारण वह ठंड को भूल गया। एकाएक लहर ने उसके पांव भिगो दिए—समुद्र बढ़ रहा था। हवा के एक झोंके ने उसके बाल बिखरा दिये। उत्तरी हवा तेज हो चली थी। वह कांप उठा। सिर से पैर तक उसे जागृति की कंपकंपी आ गई। उसने चारों ओर दृष्टि डाली।

वह अकेला था!

आजतक उस नाव में बैठे हुए मनुष्यों के अलावा वह किसीको नहीं जानता था और यही मनुष्य अब चोरी से चल दिये!

यह बात यद्यपि विचित्र है, तो भी हमें बतानी ही पड़ेगी कि वह केवल इन मनुष्यों को जानता था, किन्तु उनको पहचानता न था। वह बता नहीं सकता था कि वे कौन थे। उसका बचपन उनके बीच में बीता था, परन्तु उसने कभी यह अनुभव नहीं किया कि वह भी उनमें से एक था। वह उनसे भिन्न था।

उसके पास पैसा नहीं था, पैरों में जूते नहीं, शरीर पर पूरे कपड़े नहीं और जेब में रोटी का टुकड़ा भी नहीं।

सरदी की रात थी। उसे कई मील पैदल चलना पड़ेगा, तब कहीं मनुष्यों की बस्ती मिल सकेगी। उसे यह पता नहीं था कि वह कहां है। वह अपनेको जीवन के घेरे के बाहर अनुभव करने लगा। उसने अनुभव किया कि आदमी ने उसका साथ छोड़ दिया।

वह दस बरस का बालक मरुस्थल के बीच में था। एक ओर अनन्त गहराई थी, जिसमें अंधेरी रात बढ़ रही थी; और दूसरी ओर भी अनन्त गहराई थी, जिसमें से उठती हुई लहरों की आवाज आ रही थी।

उसने अपनी छोटी-छोटी और दुबली बाहें फैलाईं और जम्हाई ली।

फिर एकाएक जैसे उसने निश्चय कर लिया हो, वह घूमकर गिलहरी के समान फुर्ती से चट्टान पर चढ़ने लगा। वह जमीन की ओर भागा जा रहा था, मानो उसे किसी विशेष स्थान पर पहुंचना हो, परन्तु उसे पता नहीं कि वह कहां जा रहा था। वह बिना उद्देश्य के जा रहा था—वह भाग्य के सामने भाग रहा था।

ऊपर की समतल भूमि पर पहुंचते ही बालक रुक गया, ठंड से जमी हुई जमीन पर मजबूती से अपने पैर जमाए और आस-पास देखा।

उसके पीछे था समुद्र, सामने जमीन, ऊपर आकाश, परन्तु आकाश था तारा-विहीन। आकाश-मंडल सघन कुहरे से आच्छादित था। किनारे पर आग या गरमी की सूचक एक चिनगारी भी नहीं, आदमियों से बसा हुआ एक मकान भी नहीं। जैसा कि आकाश में, वैसा ही पृथ्वी पर भी—

कोई प्रकाश नहीं था। नीचे एक भी दीपक नहीं, ऊपर एक भी सितारा नहीं।

हवा में तूफान के आसार नजर आते थे। ऐसा मालूम होता था, मानो प्रकृति के तत्त्व पुरुष का स्वरूप धारण कर रहे हों और एकाएक वायु किसी गूढ़ परिवर्तन के पश्चात् दैत्यरूप बननेवाली हो।

अब प्रलय होनेवाला था!

प्रतिक्षण नई-नई नावें किनारे की ओर भागती दिखाई देती थीं, दूर-दूर के जहाज भी सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ रहे थे। पनाह लेने की दौड़ हो रही थी। दक्षिण की ओर अंधकार घना हो गया। ऊपर छाये हुए तूफान के भार के कारण लहरों में उदासी और शिथिलता आ गई थी। वास्तव में यह समय समुद्र पर रवाना होने का नहीं था। तो भी वह नाव रवाना हुई थी!

वह अंतरीप के दक्षिण की ओर जा रही थी और खाड़ी पार करके खुले हुए समुद्र में पहुंच गई थी। एकाएक हवा का झोंका आया। नाव अभी भी दीख रही थी, उसने पाल तान दिये, मानो वह तूफान से पूरा फायदा उठाना चाहती हो। उत्तरी हवा थी, क्रुद्ध और उद्विग्न। एकाएक बाजू से झोंका लगने से नाव डगमगाई, किन्तु फिर संभलकर रास्ते से लग गई। वह यात्रा नहीं कर रही थी—भाग रही थी। उसे समुद्र का उतना डर नहीं था जितना कि जमीन का, हवा के हमले का उतना खयाल नहीं था जितना कि आदमी का।

४. वे थे कौन?

पर वे कौन थे, जो उस बालक को पीछे छोड़कर भाग गए थे?

क्या वे काम्प्रेचिको थे?

हमें मालूम है कि राजा तृतीय विलियम और पार्लामेंट ने काम्प्रेचिकों के विरुद्ध बहुत कड़ा कानून बनाया था।

कुछ कानून ऐसे हैं जो बिखराने का काम करते हैं। काम्प्रेचिकों के विरुद्ध बना हुआ कानून सभी प्रकार के आवारा लोगों पर लागू था, इसलिए वे सब भागने लगे।

हालत यह थी कि जो पीछे रहा उसपर शैतान सवार हुआ। ज्यादातर काम्प्रेचिको स्पेन को भाग गये।

बालकों की रक्षा के कानून का पहले-पहल यह विचित्र परिणाम हुआ कि बहुत-से बालक इस प्रकार अकेले छोड़ दिये गए।

इसके कारण स्थान-स्थान पर खोये हुए, या यों कहना चाहिए कि छोड़े

हुए, बच्चों के झुंड-के-झुंड इकट्ठे हो गये। बात बिलकुल सीधी है। जिस आवारा गिरोह के साथ कोई बालक दिखाई देता था उसी पर शक किया जाता था। साथ में बालक का होना ही मुजरिम करार दिये जाने के लिए काफी था।

"बहुत मुमकिन है ये काम्प्रेचिको होंगे।" यही बात जज, वकील और पुलिसवालों के दिमाग में आ जाती थी। इसलिए गिरफ्तारी और जांच की धूम थी। कई बेचारे अभागे, जिनको दर-दर घूमकर भीख मांगने की नौबत आ गई थी, इस बात से घबरा रहे थे कि कहीं काम्प्रेचिको समझकर पकड़ न लिये जायं। काम्प्रेचिकों पर यह दोषारोपण था कि वे दूसरों के बच्चों का व्यापार करते थे। किन्तु गरीबी और कंगाली की हालत में आपसी सम्बन्ध इतना ढीला रहता है कि स्वयं माता और पिता को यह साबित करना मुश्किल हो जाता है कि उनका अपना बालक उन्हींका है।

तुम्हें यह बालक कैसे मिला? वे कैसे साबित करें कि यह परमात्मा ने दिया है! बालक विपत्ति का चिह्न हो गया—वे उससे अपना पिंड छुड़ाने लगे। बिना बोझे के भागना आसान होता है, इसलिए माता-पिताओं ने बच्चों को छोड़ देने का निश्चय किया—कहीं जंगल में कहीं समुद्र के किनारे और कहीं कुएं में।

छोटे-छोटे हौजों तक में बालक डूबे हुए मिले!

समस्त यूरोप ने काम्प्रेचिकों को नष्ट करने में इंग्लैंड का अनुकरण किया। शिकार को उत्तेजना मिल गई। उन्हें गिरफ्तार करने में प्रत्येक देश की पुलिस एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करने लगी।

काम्प्रेचिकों को तरह-तरह की सजाएं दी जाती थीं। उनके नाक-कान काट लिये जाते थे। इसपर भी वे काले पानी भेजे जाने से नहीं बचते थे। इसलिए सभी तरह के आवारों में भगदड़ मच गई। वे रवाना होते समय भयभीत रहते थे और पहुंचते समय कांपते थे! यूरोप के प्रत्येक समुद्र-तट पर उनकी निगरानी की जाती थी। ऐसे गिरोह के लिए बालक को साथ लेकर जाना असम्भव था, क्योंकि बालक के साथ कहीं पर भी पहुंचना भयंकर था।

बालक को छोड़ देना बहुत आसान काम था।

पर पोर्टलैंड के इस एकान्त अंधकार में उस बालक को किसने छोड़ा है?

ऊपर से तो यही मालूम होता है कि छोड़नेवाले काम्प्रेचिको थे।

: २ :

सागर की लहरों पर

१. नाव में

मेटूटिना—यह नाव—समुद्र में चल दी थी। एक तो रात, दूसरे बर्फीला तूफान, इन विपत्तियों का उसने निराशापूर्ण दृढ़ता से सामना किया। कुछ भी हो, उसे चेतावनी काफी मिल चुकी थी।

उसमें तीन मल्लाह और सात यात्री थे, जिनमें दो स्त्रियां थीं। जमीन से दूर, खुले समुद्र में आ जाने के कारण वे अब छिपे हुए नहीं रहे, अब हर-एक व्यक्ति मुंह खोलकर बातचीत करता था। रवानगी उनके लिए रिहाई थी।

वे लोग उड़े जा रहे थे, बचकर भाग रहे थे, उनमें पशुओं का-सा आह्लाद था। एक हँसता था तो दूसरा गाता था। वह हँसी सूखी थी, किन्तु स्वतन्त्र थी। वह गाना धीमा था, किन्तु स्वच्छन्द।

गाना देहाती था, जिसका विषय कुछ भी नहीं—खेत, झाड़ी, झाड़ी के बीच से दीखनेवाला घोड़ा, उसपर का सवार, सवार की कलगी, कलगी का हिलना—बस, गाने के लिए इससे अधिक और क्या चाहिए?

रवानगी के समय हरेक को अपनी-अपनी मनोवृत्ति के अनुसार संतोष या उदासी मालूम होती है। नाव के सभी मनुष्य आनन्दित थे, सिवा एक बूढ़े के, जिसके सिर पर टोप था। उसका चेहरा पीला था। चेहरा अन्तः-करण की प्रतिच्छाया है। यह सोचना गलत है कि विचार का कोई रंग नहीं होता। उस चेहरे में कुछ अज्ञेयता थी। उसका रहस्य गूढ़ था। देखते ही यह अनुभव होने लगता था कि उस मनुष्य को आनेवाली विपत्ति का आभास और उसका परिणाम भी दीख गया था। उसकी दुर्गम शान्ति में, जो कि शायद चेहरे पर ही थी—दो प्रकार की जड़ता दिखाई देती थी। एक तो हृदय की जड़ता, जैसी जल्लाद में होती है; और दूसरी मन की जड़ता, जैसी न्यायाधीश में होती है। बुढ़ापे के कारण उसके शरीर में फुर्ती नहीं रही

थी। वह नाव की छत पर धीरे-धीरे टहल रहा था। वह किसीकी तरफ नहीं देखता था। उसकी आंखों से निश्चय और अमंगल टपकता था। उसकी पुतलियों में अन्धकार का मनन करती हुई, अन्तःकरण की वेदनाओं से पीड़ित आत्मा का अविचल प्रकाश अस्पष्ट रूप से छाया हुआ था।

समय-समय पर गिरोह का मुखिया उसके कान में कुछ कह जाया करता था। वह बूढ़ा सिर हिलाकर उत्तर देता था, मानो बिजली रात्रि से परामर्श कर रही हो।

२. काल-मेघ

नाव पर दो मनुष्य विचारमग्न थे—एक तो वह बूढ़ा और दूसरा नाव का कप्तान। कप्तान का ध्यान समुद्र में था और बूढ़े का आकाश पर। पहला पानी पर से अपनी आंख नहीं उठाता था और दूसरा आकाश से अपनी आंख नहीं हटाता था। कप्तान समुद्र की अवस्था से चिन्तित था और बूढ़ा आकाश पर सदेह कर रहा था। नाव का पंखा कप्तान ने अपने हाथ में पकड़ रखा था। उसका किसी पर विश्वास नहीं था।

हवा का रुख क्षण-क्षण में बदलता था। होका (दिशासूचक यंत्र) की सुई अस्थिर हो रही थी। नाव की गति भी संशयास्पद थी। कप्तान नाव को सावधानी और दृढ़ता से चला रहा था। लहरों का ज़रा-सा परिवर्तन भी उसकी दृष्टि से नहीं बचता था।

अन्य यात्रियों को कोई चिन्ता तो नहीं थी, पर उनका प्रारम्भिक आह्लाद लुप्त हो चुका था। बूढ़ा नाव के अगले सिरे पर अविचल भाव से खड़ा था और कप्तान पंखे के पास था।

दूर आकाश में एक छोटे-से नीले धब्बे को देखते ही एकाएक बूढ़े के चेहरे का भाव बदल गया। सहसा उसके मुंह से निकल पड़ा—"अच्छा, मैं तो तैयार हूं।"

एक मल्लाह को पंखा संभालकर कप्तान बूढ़े के पास आया और अभिवादन करके खड़ा हो गया।

बूढ़े ने कप्तान की ओर देखकर कहा—"कप्तान, वह देखते हो, आकाश में क्या है?"

"हां, डॉक्टरसाहब, वह तो बादल का टुकड़ा है।"

"नहीं, वह एक भयंकर तूफान का दूत है, बरफ का मेघ है। तूफान बहुत भयंकर होगा। प्राणान्त निकट समझो। पूर्व, मृत्यु की दिशा है। नाव पश्चिम को चलाओ!"

"पर डॉक्टरसाहब, हवा सामने होगी, मस्तूल टूट जायंगे। हवा का

रुख़ बदलते ही नाव की दिशा भी बदल देंगे।"

"हवा रात-भर नहीं बदलेगी। तूफान बारह सौ मील लम्बा है। नाव पश्चिम को चलाओ!"

कप्तान ने स्वीकार किया। अब बूढ़े ने घूमकर कप्तान के चेहरे को देखा और धीरे-धीरे, मानो शब्दों को उसके दिमाग में जमाते हुए ये शब्द कहे, "तब जाओ, शीघ्रता करो! यदि आज रात को समुद्र के बीच घंटी की आवाज सुनाई दे तो नाव डूब जायगी।"

"इसका मतलब ?"

बूढ़े ने उत्तर नहीं दिया।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह बोला—

"समय आ गया है जब कि पापियों को अपने पाप का प्रक्षालन करना पड़ेगा।"

कप्तान ने दबी ज़बान से कहा—

"यह सिद्ध की अपेक्षा पागल अधिक है।"

नाव पश्चिम ओर ही चलने लगी। हवा और समुद्र दोनों बढ़ रहे थे।

नीला बादल आकाश के कोने-कोने में फैल गया। विचित्रता यह थी कि हवा सामने की होते हुए भी वह फैल रहा था।

पाव घंटा बीत गया। उसके बाद जब कप्तान ने पंखे के पास से अगले सिरे पर जाकर देखा तो वह बूढ़ा वहां नहीं था। कप्तान के अलग होते ही बूढ़ा कोठरी के अन्दर चला गया था। वह अंगीठी के पास गया और उसने एक नोट-बुक और दवात निकाली और नोट-बुक में से एक चमड़े का टुकड़ा निकालकर उसकी पीठ पर रसोई की रोशनी के सहारे वह स्याही से लिखने लगा। लहरों की हलचल से लिखने में बाधा पड़ती थी। परंतु वह इसी प्रकार थोड़ी देर तक लिखता रहा।

लिखते-लिखते बूढ़े का ध्यान एक शराब की बोतल पर गया, जिसमें से रसोइया शराब ढालकर पी रहा था। बूढ़े का ध्यान उसकी ओर इसलिए नहीं गया कि वह शराब की बोतल थी, वरन् इसलिए कि उसपर एक नाम सफेद कागज पर लाल अक्षरों में लिखा था।

बूढ़े ने एक बार रुककर धीरे-धीरे उसको पढ़ा—

"हार्डक्वानन"। फिर रसोइया से कहा, "मैंने यह बोतल पहले कभी नहीं देखी थी। क्या यह हार्डक्वानन की है ?"

रसोइए ने उत्तर दिया, "हां, हमारे साथी बेचारे हार्डक्वानन की है।"

"वही हार्डक्वानन, फ्लैंडर्सवाला ?"

"हां।"

"जो चैथम की काल-कोठरी में क़ैद है ?"

"यह उसीकी बोतल है। वह मेरा मित्र था। मैं उसकी याददाश्त के तौर पर इसको अपने साथ रखता हूं। उससे कब मिलना हो सकेगा ? यह वह बोतल है, जिसे वह अपनी कमर से लटकाये रहता था।"

डाक्टर ने फिर अपनी कलम उठाई और टुकड़े पर सावधानी से लिखना शुरू किया। उसे इस बात की चिन्ता थी कि अक्षर साफ़-साफ़ पढ़े जा सकें। आखिर बुढ़ापे के कारण हिलते हुए हाथ से और हिलती हुई नाव पर जो कुछ लिखना था, वह उसने लिख डाला।

फिर वह उठकर अंगीठी के पास गया और उसकी आंच पर झुककर उसने चमड़े के टुकड़े की स्याही सुखाई, फिर उसको मोड़कर नोट-बुक में रखा, दवात अपनी जेब में रखी और फिर छत पर चला गया।

३. हवा और लहरों का तांडव

छत पर खड़े-खड़े डाक्टर ने सारी स्थिति का निरीक्षण कर लिया। उसके मन में अन्धकारपूर्ण विचार उठने लगे और वह उनमें विलीन हो गया, जैसे कि खोदनेवाला खदान के अन्दर घुसता हो। पर उसका ध्यान समुद्र की गति पर जमा रहा।

समुद्र की यंत्रणाएं प्रारम्भ हो चुकी थीं। सारा समुद्र चीख रहा था। उधर हवा और लहरों का ताण्डव जारी था। उनके बीच समुद्र की जो हालत थी, उसका वर्णन नहीं हो सकता। फेन की झाड़ियों, पहाड़ियों और स्वप्नों के मिश्रण का वर्णन कैसे हो सकता है ? एक साथ खदकों और टीलों, उपत्यकाओं और शिखरों और पिघलते हुए उफानों का वर्णन कौन कर सकता है ? समुद्र की सभी बातें अवर्णनीय हैं। अब हवा उत्तर की ओर से बहने लगी थी। वह इतनी तेज थी कि कप्तान ने सारे पाल तान देने का निश्चय कर लिया। नाव मानो उड़ी जा रही थी। नाव के चारों ओर सिवा पानी के कुछ नहीं था !

एकाएक रात भयंकर हो गई !

दूरी या विस्तार कुछ नहीं रहा। आसमान स्वयं कालिमा बन गया और उसने चारों ओर से नाव को ढंक लिया। बरफ गिरने लगी, उसके बड़े-बड़े टुकड़े दीखने भी लगे।

दूर से बढ़ती हुई मेघों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी। वह था आकाश का गर्जन। उसकी तुलना किसीसे नहीं हो सकती। वह जैसे समग्र विश्व का पाशविक चीत्कार था।

४. भयंकर तूफान

एकाएक एक मधुर, किन्तु भयंकर ध्वनि सुनाई दी। सब चौंक उठे। खतरे की घंटी ! मृत्यु की पूर्व सूचना ! कप्तान ने अपनी बोलने की तुरही उठाई और वह प्रबन्ध की आज्ञाएं देने लगा।

"पाल तान दो। देखो, वह बाईं तरफ का रस्सा ढीला है, उसे खींच दो। पश्चिम की ओर, समुद्र में,—हां चले चलो। तरंगना के पास, जहां घण्टी बज रही है। देखो, वह पाल झुक गया, उसे ऊंचा करो। अभी भी मौका है !"

कप्तान की आज्ञाओं का तत्काल पालन हो रहा था। मल्लाहों के अलावा सब यात्री भी काम में भिड़ गए थे।

परन्तु यह सारी तैयारी और सावधानी होने पर भी नाव क्षण-क्षण असहाय होती जा रही थी। हवा और लहरों के आघात भयंकर हो चले थे। पलक मारते ही धड़ाका हुआ। ऊपर के पाल रस्सों से टूटकर उड़ गए, मस्तूल उखड़कर दूर जा पड़े। और छत यहां से वहां तक साफ हो गई !

चुंबक के आकर्षक प्रवाहों के कारण जंजीरें बेकार होने लगीं। उन प्रवाहों के धक्कों से नाव का प्रत्येक भाग कांपने लगा। एक लहर आई और दिशासूचक यन्त्र तथा दूरबीन को बहा ले गई। दूसरी ने आकर टंगी हुई डोंगी को समुद्र में फेंक दिया। तीसरी ने सामने की मूर्ति और लालटेन गायब कर दी। नाव पर सिर्फ पतवारें बच गईं।

लालटेन की जगह प्रकाश के लिए लकड़ी का ठूंड तेल और डामर में भिगोकर सामने के सिरे पर लटका दिया गया और उसमें आग लगाई गई।

मस्तूल वगैरा के उखड़ने और भारी चीजों के लुढ़कने से ऊपर की छत जगह-जगह टूट गई।

कप्तान फिर भी दृढ़तापूर्वक पंखे के पास बैठा था। उसने कहा, "अभी भी अवसर है ! नीचे के तख्ते जैसे-के-तैसे कायम हैं। कुल्हाड़ियां ले लो, ऊपर की छत तोड़कर पानी में फेंक दो।"

निराशा की उत्तेजना से सब लोग भिड़ गये। छत साफ हो गई।

कप्तान ने कहा, "अब रस्सा लेकर मुझे पंखे से बांध दो।" उन्होंने उसे बांध दिया।

फिर एक भयंकर लहर आई। सारी नाव फेन के बादलों से ढक गई ! इस अंधेरे की गड़बड़ी में फिर एक धड़ाका सुनाई दिया ! फेन बह गया,

नाव फिर दीखने लगी। पर पंखा और कप्तान दोनों प्रवाह में बह गये। अब !

गिरोह का मुखिया चिल्ला उठा, "लंगर को जाने दो। कप्तान को बचा लो।"

उन्होंने किसी तरह कप्तान को पकड़ लिया। लंगर छूट गया। उसमें बंधा हुआ तारों का रस्सा कच्चे धागे के समान टूट गया। अब नाव में लंगर नहीं रहा।

अब वह नाव क्या थी, खंडहर थी। चंद मिनटों के अन्दर यह सब हो गया !

घंटी अभी भी निराशापूर्ण स्वर से बज रही थी।

मेट्टिना अब लहरों के झोंकों के साथ छोटे-से लकड़ी के तख्ते के समान लुढ़कती फिरती थी। सौभाग्य की बात यह थी कि उसका अगला हिस्सा ऐसा बना था कि उसमें पानी की एक भी बूंद नहीं घुस सकती थी। इससे नाव उलटने से बच गई।

घंटी की आवाज धीमी हो चली। अब वह बिल्कुल बन्द हो गई। नाव इस समय कहां थी ? तरंगने से कितनी दूर ? नाववाले अनुभव कर रहे थे कि उत्तर-पश्चिम की हवा उन्हें विपत्ति के मुख में बहा ले जा रही है। वह बहना नहीं था, दौड़ना था।

एकाएक उस भयंकर तूफान में लाल रोशनी दिखाई देने लगी।

मल्लाह चिल्ला उठे, "लाइट-हाउस !"

वह वास्तव में कास्केट्स का प्रकाश था।

अच्छी मजबूत नाव के लिए, जिसका पंखा ठीक-ठीक काम करता हो, कास्केट्स का प्रकाश बहुत उपयोगी था, मानो वह कहता था 'सावधान'। वह उसे उथली भूमि से सावधान करता था। किन्तु अशक्त नाव के लिए वह नितान्त भयंकर था। जिस नाव का अगला सिरा बेकार हो, जो लहरों को रोक न सकती हो, जो तूफान के आघात से सुरक्षित न हो, जो बिना डैनों की मछली या बिना पंखों के पक्षी के समान हो, वह तो जिधर हवा ले जायगी, उधर ही जायगी। उसको तो यह लाइट हाउस अन्त ही दिखाता है—वह दिखाता है वह जगह, जहां पर कि नाव को गायब होना है—वह अंतिम समाधि पर प्रकाश डालता है। वह कब्र का दीपक है !

५. चट्टान के सामने

मेट्टिना के विपद्ग्रस्त सवार इस गूढ़ विडंबना को समझ गये। लाइट-हाउस को देखकर पहले तो उनका उत्साह थोड़ा बढ़ा था, परन्तु फिर वे

निराश हो गए। अब कुछ नहीं हो सकता था। प्रयत्न करना भी व्यर्थ था। नाव कास्केट्स की चट्टानों की ओर जा रही थी। बच नहीं सकते। पानी उथला होता गया! चट्टानों की तली की गुफाओं में पानी के तेज प्रवाह से उठनेवाला शोर सुनाई देने लगा। लाइट-हाउस के पास ही ये चट्टानें बराबर-बराबर सीध पर दूर तक चली गई थीं। उनके बीच में गली-सी बन गई थी। यह गली जहाजों और मनुष्यों के अस्थिपंजरों से पटी पड़ी थी। जैसे-जैसे नाव उसके पास पहुंचती जाती थी, उसके असली स्वरूप की भयंकरता बढ़ती जाती थी।

एक स्त्री चुपचाप माला जपने लगी।

वे चट्टान के पास पहुंच गए। वे टकराने ही वाले थे कि मुखिया ने चिल्लाकर कहा, "कोई बहादुर रस्सा लेकर चट्टान पर पहुंच जाये! कोई तैर सकता है?"

नाव पर कोई तैरना नहीं जानता था, मल्लाह भी नहीं। जहाज़ पर काम करनेवालों के लिए तैरना न जानना कोई असाधारण बात नहीं है।

नाव पर एक खंभा ढीला होकर हिल रहा था। मुखिया ने खंभा पकड़ लिया और कहा, "इसे यहां से निकाल दो।" खंभा निकाल लिया गया। यह सोचा गया कि इस खंभे को चट्टान से अड़ाकर नाव को टकराने से बचाया जाये। छहों आदमियों ने उस खंभे को आड़ा करके पूरी मज़बूती से पकड़ा।

कुछ मिनट बीत गए, ऐसे ही मिनटों में मनुष्य के बाल सफेद हो जाते हैं। नाव और चट्टान की टक्कर होनेवाली थी। चट्टान, मुजरिम के समान, आघात की प्रतीक्षा कर रही थी।

एक अदम्य लहर आई, उसने नाव को ऊपर उठा लिया और एक क्षण के लिए उसको ऐसे हिलाया जैसे गोफन में पत्थर हिलाया जाता है।

मुखिया ने कहा, "संभलना! यह सिर्फ चट्टान है और हम मनुष्य हैं!"

मनुष्यों ने बल्ली को मजबूती से पकड़ा। लहर ने नाव को उठाकर ज़ोर से चट्टान पर फेंका। जबरदस्त धक्का लगा!

उसके बाद फेन का बादल छा गया और वह दुर्घटना उसमें छिप गई।

जब यह बादल हटा और लहरें चट्टान से टकराकर वापस हुईं तो मालूम हुआ कि मेट्रूटिना चट्टान से दूर हट गई थी। उस बल्ली ने चट्टान से अड़कर नाव को टकराने से बचा लिया था। वे छः मनुष्य नाव पर पानी में डुबकियां खा रहे थे और नाव बीच समुद्र में भागी जा रही थी।

कास्केट्स का प्रकाश दूरी के कारण धुंधला होता गया। अन्त में वह दृष्टि की ओट हो गया।

अब न घंटी की आवाज थी, न प्रकाश-स्तम्भ का उजाला। दोनों की धमकियां नहीं रहीं। किन्तु उनका लोप और भी भयंकर मालूम होने लगा। एक में आवाज थी और दूसरे में प्रकाश। उनमें कुछ-कुछ मनुष्य का संसर्ग था। वे दूर होते चले।

किन्तु कुछ ही दूर जाने पर सहसा उस अन्धकार में उन्हें कुछ और भयंकर-सा दिखाई दिया। वह पहाड़ के समान ऊंचा और अटल खड़ा था।

तूफान नाव को उसीकी ओर ले जा रहा था।

वे जान गये कि वह क्या है; वह ओरटेच का पर्वत-खंड था।

कास्केट्स की टक्कर तो चिन्दियां बिखेर देती है, लेकिन ओरटेच की टक्कर तो चकनाचूर कर देती है। बात सीधी-सी और स्पष्ट थी। एक लहर आई और सब खत्म!

यह क्षण महान् चिन्ता का था। नाववालों ने अंधेरे में देखा कि लहर आ रही है। वह नाव को कहांतक ले जायगी? यदि वह नाव से आकर टकराई तो नाव चट्टान से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगी। पर यदि वह भाग्य से नाव से नीचे से निकल जाय...

और, ओह, यही हुआ। लहर नाव से नीचे से निकल गई। सबने सन्तोष की सांस ली। किन्तु लहर लौटने पर क्या करेगी? पर वह लौटी और नाव को दूर समुद्र के खतरे से परे बहा ले गई। यह दूसरी विजय थी!

६. मौत का खिलौना

कुहरा घना हो गया था। उन अभागों को पता नहीं था कि वे कहां हैं। ऊपर से ओलों की तीव्र वर्षा हो रही थी, तो भी सब लोग खुली छत पर ही थे। स्त्रियों ने भी नीचे जाने से इन्कार कर दिया था। चाहे जितनी निराशा हो, यदि नाव डूबने ही वाली हो तो, सब कोई यही चाहते हैं कि खुली हवा में डूबें। मृत्यु निकट होने पर, सिर के ऊपर की छत कफ़न की चादर के समान दीखती है।

अब समुद्र की लहरें उबलती हुई दीखती थीं, जिससे प्रकट होता था कि अन्तरीप निकट था। नाव वास्तव में आरिग्नी अन्तरीप के किनारे पर पहुंच गई थी।

यहां समुद्र उथला है। पानी की सतह के नीचे मीलों तक चट्टानें फैली

हैं। नावों को तोड़ने का यन्त्र यहां छिपा हुआ है, जिससे टकराकर समुद्र उबलता-सा दीखता है।

नाववालों ने इसे देखा। पहले तो समझ में नहीं आया, पर फिर समझ गए, नाव उसी ओर जा रही थी।

फिर हवा और लहर के धक्के से मेटटिना 'सिंज' की ओर जा रही थी। सिंज एक तेज प्रवाह है, जो कि भँवरों में गुंथी हुई माला के समान होता है। एक से बचे तो दूसरे के अंदर। सिंज में पड़ते ही नाव चक्कर खाने लगती है और अंत में नीचे की किसी नुकीली चट्टान से टकराकर उसका सामने का सिरा फट जाता है। तब नाव रुक जाती है, उसका पिछला हिस्सा ऊपर उठता है। वह फिरकी के समान घूमने लगता है और अन्त में वह डूबकर नीचे तली में जाता है। फेन का घेरा फैलने लगता है और लहरों की सतह पर कुछ नहीं दिखाई देता। नीचे से सिर्फ कुछ घुटी हुई सांसों के बुलबुले इधर-उधर उठते रहते हैं।

कोई अनुभवी कर्णधार उस नाव पर होता तो वह भावी विपत्ति से सबको सावधान कर देता। लेकिन कर्णधार के स्थान पर उनके पास अंतःप्रवृत्ति थी। अत्यन्त विपत्ति की अवस्था में मनुष्यों के अन्दर दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। लेकिन अंतरीप के पार कैसे जायं ? कोई उपाय नहीं था। हरेक लहर नाव को आगे बढ़ाकर अन्तरीप की दूरी कम कर रही थी।

एकाएक नाव पीछे हटी, मानो किसी राक्षस ने उसे घूंसा मार दिया हो। एक गरजती हुई लहर आई और नाव को खुले समुद्र में ले गई।

यह सहायता कहां से आ गई ? हवा से। तूफ़ान की दिशा बदल गई थी।

अभी तक लहर उनसे खिलवाड़ कर रही थी, अब हवा की बारी आ गई। उन्होंने कास्केट्स से अपनी रक्षा की थी, औरटेच के पास लहर ने उनके साथ मित्रता दिखाई थी। अब हवा मित्र बन गई।

समुद्र की खन्दकें अनिश्चित रहती हैं। वे शायद नित्य का स्वरूप हैं। उनसे सामना होने पर न तो आशा करनी चाहिए, न निराशा। वे बनाती भी हैं और बिगाड़ती भी। समुद्र अपना मनोरंजन भी तो करता है।

यह पीड़न-क्रिया बीच में जब रुकती है तो उतने ही में रक्षा की आशा बंधने लगती है। गहरी विपत्ति के बीच भी आदमी बहुत जल्दी रक्षा का विश्वास कर लेता है। तूफान की धमकी में जरा-सी भी रुकावट काफी होती है। वे कहने लगते हैं, अब तो खतरे से बाहर हो गये। अपनेको दफनाये हुए समझकर भी वे पुनरुत्थान की घोषणा करने लगते हैं। जो प्राप्त नहीं है उसका जोरों से आलिंगन करने लगते हैं। इसमें शक नहीं कि

दुर्भाग्य गया, अब तो बच गये और परमात्मा को भी छुट्टी ! किन्तु अज्ञान को इस प्रकार छुट्टी देने की जल्दी नहीं करनी चाहिए।

हवा ने जिनको बचाया था उनके साथ वह अब क्रूरता दिखाने लगी ! वह सेवा कर रही थी, किन्तु क्रोध के साथ। उसकी सहायता दया-रहित थी।

वह अब नाव पर पत्थर बरसा रही थी। हर लहर के साथ ओले गोलियों के समान नाव की छत पर लुढ़कते फिरते थे। जमे हुए और तरल पानी की मार से नाव जर्जरित हो चली थी।

सौभाग्य की बात है कि निराशा के हाथ बहुत मजबूत होते हैं। डर के मारे बालक की मुट्ठी में राक्षस की ताकत आ जाती है। भयभीत बालिका की गुलाबी उंगलियां लोहे के अन्दर धंस सकती हैं। उसी ताकत के सहारे नाव के आदमी किसी प्रकार उस पर चिपटे रहे। एकाएक उनकी चिंता दूर हो गई।

तूफान बन्द हो गया। हवा रुक गई। दिशाओं का तुमुल नाद अब नहीं रहा। आकाश तक उठा हुआ पानी का बवंडर एकाएक समुद्र में गोता-सा लगा गया। ओलों के बजाय बरफ पड़ने लगी, आहिस्ता-आहिस्ता। बाढ़ गायब हो गई। समुद्र शान्त हो गया। बर्फ के तूफान में अक्सर ऐसा हुआ ही करता है।

अब नाव सोये हुए पानी पर तैर रही थी। शोर नहीं, गड़बड़ नहीं, प्रकाश नहीं। अन्धकार की शान्ति सब पर छाई थी।

पिछली विपत्तियों के झकझोरे हुए अभागों के लिए यह शान्ति महान् सम्पदा थी, मानो सजा खत्म हो गई। चारों ओर और ऊपर ऐसे लक्षण दीखने लगे कि मानो सब स्वीकार कर रहे हैं कि वे बच गये। उनमें आत्म-विश्वास जागृत हो गया। उनका हृदय प्रफुल्लित हो उठा। वे खड़े होकर चलने-फिरने भी लगे। घबराहट बिल्कुल न रही। हवा से बच गये, फेन से बच गये, तूफान से बच गये, शोर से बच गये। अब तो सभी बातें उनके पक्ष में थीं। तीन या चार घण्टे में सूर्योदय हो जायगा और कोई आने-जानेवाली नाव उन्हें देख लेगी और बचा लेगी। नया जीवन मिला। आश्चर्य तो यह है कि वे तूफान के शुरू से अन्त तक ऊपर ही तैरते रहे। उन्होंने कहा—"सब बीत गया !"

वास्तव में सब बीत चुका था।

एक मल्लाह नाव के तलघर में रस्सा लाने को गया। वह ऊपर आया और बोला—

"तलघर तो भर गया है !"

"किससे ?"

"पानी से।"

मुखिया चिल्ला उठा।

"मतलब ?"

मल्लाह ने कहा, "मतलब यह कि आध घण्टे के अन्दर नाव डूब जायगी।"

७. शान्ति की गोद में

नाव की पेंदी में छेद हो गया था। उसमें से पानी अन्दर भर रहा था। कोई नहीं कह सकता कब से ? क्या कास्केट्स से टक्कर हुई तब से ? या औरटेच के निकट ? या आरिग्नी के पास ? सम्भव है वहां नीचे किसी चट्टान की रगड़ लगी हो और किसीको मालूम न हुई हो। जहां भाले चल रहे हों, वहां सुई की चुभन किसे मालूम हो सकती है !

अन्त फिर निकट आ गया !

पानी निश्चित, अटल और भयंकर रूप से नाव के अन्दर बढ़ रहा था। परिणामस्वरूप नाव डूबती जा रही थी। यह सब धीरे-धीरे हो रहा था। प्रशान्त समुद्र के अन्दर से पृथ्वी का केन्द्र बिना क्रोध के, बिना ज्ञान के, बिना उत्तेजना के, बिना इच्छा के, बिना चिन्ता के, उस नाव को नीचे की ओर खींच रहा था। अब समुद्र उनकी ओर ऊपर को नहीं बढ़ रहा था, अब वे ही समुद्र के अन्दर नीचे जा रहे थे। वे अपनी कब्र खुद खोद रहे थे। उनका वजन ही कब्र खोदने का औजार बन गया था।

मुखिया ने कहा, "अब नाव का वजन हलका करना चाहिए।"

छत का सारा सामान फेंक दिया गया। कोठरी भी साफ कर दी गई और सब चीजें भी पानी में फेंक दी गई।

रस्सियां, रस्से, जजीरें, फटे हुए पाल, नाव में लगा हुआ फालतू लोहा, गरज यह कि जो-कुछ फेंका जा सकता था, सब फेंक दिया गया।

नाव हलकी हो जाने से बहुत धीरे-धीरे डूब रही थी, परन्तु डूब जरूर रही थी।

"और भी कोई ऐसी चीज है जिसे हम फेंक सकते हैं ?"

वह बूढ़ा डाक्टर, जिसको सब कोई भूल गये थे, अपनी जगह से उठा और बोला—

"हां !"

मुखिया ने पूछा, "क्या ?"

बूढ़े ने जवाब दिया, "हमारा पाप !"

वे सब कांप उठे और चिल्लाये, "तथास्तु !"

बूढ़े ने खड़े होकर अपने हाथ आसमान की ओर उठाते हुए कहा, "घुटने टेको !"

वे हिचके—हिचकना घुटने टेकने की प्रस्तावना है।

डाक्टर कहता रहा—

"हम अपने पाप समुद्र में फेंक दें, उनके भार से हम दबे जा रहे हैं, उन्हींके कारण यह नाव डूब रही है। अब हमें रक्षा का विचार नहीं करना चाहिए—हम तो अब मुक्ति का विचार करें। हमारा अंतिम पाप, सबसे बड़ा, जो हमने अभी किया है. या कहना चाहिए अभी पूरा किया है—अरे आतताइयो—वही हमें दबा रहा है। जो लोग किसीको यह सोचकर अकेला छोड़ देते हैं कि वह अकेला होने के कारण मर जायेगा, उनका समुद्र को भुलावा देने का प्रयत्न करना अपवित्र धृष्टता है। जो बालक के साथ पाप करता है वह ईश्वर के साथ पाप करता है। यह सच है कि हमें मजबूर होकर समुद्र पर रवाना होना पड़ा, किन्तु अवश्य ही यह नरक-प्रवेश के समान था। तूफान हमारे पाप की चेतावनी पाकर, आ पहुंचा। यह ठीक ही हुआ। अब सोच मत करो ! अंधेरे में नजदीक ही होग का अन्तरीप है। वह फ़्रांस देश है। हमारे लिए तो एक ही सुरक्षित जगह थी, स्पेन। फ्रांस हमारे लिए इंग्लैंड की अपेक्षा कम भयंकर नहीं है। यदि हम समुद्र से बच जाते तो फांसी पर चढ़ते। डूबना या फांसी—तीसरा मार्ग नहीं। ईश्वर ने हमारा मार्ग निश्चित कर दिया है। उसे हम धन्यवाद दें। उसने हमें ऐसी समाधि दी है, जो शुद्ध कर देती है। भाइयो, अवश्यम्भावी का इसमें हाथ है। याद करो, हमने ही तो अभी-अभी उस बालक को अकेला छोड़ दिया था और मैं बोल रहा हूं, इसी समय शायद हमारे सिर के ऊपर उसकी आत्मा उस सर्वद्रष्टा न्यायाधीश के सामने हम पर दोषारोपण कर रही होगी। हमें इस तूफान की शान्ति से पूरा लाभ उठाना चाहिए। यदि हम अभी भी चाहते हैं तो हमें, जहांतक हो सके, अपने किये हुए कुकर्म को मिटाने की कोशिश करनी चाहिए। यदि बालक हमारे बाद जीवित रहे तो हम उसकी सहायता कर जायं। यदि वह मर जाय तो हम उससे क्षमा प्राप्त करने की कोशिश कर जायें। हम अपने पाप को दूर निकालकर फेंक दें। हम उसके भार से अपने अन्तःकरण को हलका करें। हम इस बात का प्रयत्न करें कि हमारी आत्माएं परमात्मा के सामने न डूबने पावें, क्योंकि वह डूबना इस नाव के डूबने से अधिक भयंकर है। शरीर मछलियों के पास जाता है, आत्मा शैतान के। अपने आप पर दया करो ! घुटने टेको, पश्चात्ताप की नाव कभी डूबती नहीं। तुम कहते हो, तुम्हारा

दिशासूचक यंत्र खो गया! तुम गलती करते हो। तुम्हारे पास अभी भी प्रार्थना है, जो तुम्हें ठीक दिशा बतायेगी।"

भेड़िये भेड़ बन गए—इस प्रकार के परिवर्तन अन्त-काल के समय हो जाया करते हैं। शेर सूली को चाटने लगता है। जब मृत्यु का अंधेरा फाटक खुलता है, तब विश्वास कठिन और अविश्वास असम्भव हो जाता है।

अन्त का दुःख कार्यकाल की समाप्ति का दुःख है। उस नाशकारी क्षण में मनुष्य अपनी जिम्मेदारी को बटी हुई पाता है। जो कुछ हो चुका वह, आगे होनेवाले के साथ उलझ जाता है। अतीत लौटकर आता है और भविष्य में मिल जाता है। जो कुछ ज्ञात है वह भी अज्ञात के समान अन्धकारमय हो जाता है। और दोनों खंदकें, एक तो वह जो कि उसके अपराधों से भरी पड़ी है, और दूसरी वह जो कि उसकी पूर्व कल्पनाओं से भरी हुई है, आपस में अपनी प्रतिध्वनियां गुंजाने लगती हैं। वह इन दोनों खंदकों की गड़बड़ी ही है जो कि मरनेवाले को डरा देती है।

वे जीवन के इस ओर आशा का एक-एक कण खर्च कर चुके थे। इसलिए अब दूसरी ओर मुड़े। अब बचाव का कोई और अवसर रहा था तो वह उसकी अंधेरी छाया में था। वे इसे समझ गए। वह उनके ऊपर गर्जना के साथ चमक उठा। उसके बाद भय का संचार हुआ। मरते हुए मनुष्य की समझ में जो कुछ आता है वह ऐसा है जो कि बिजली की चमक में दिखाई देता है। सबकुछ और फिर कुछ नहीं। तुम देखते हो और फिर सब अंधकार। मृत्यु के बाद आंख फिर से खुलेगी और वह जो कि क्षणिक चमक थी, सूर्य बन जायगी।

उन्होंने बूढ़े से चिल्लाकर कहा, "तेरे सिवा और कोई नहीं, हम तेरी आज्ञा मानेंगे, बता, हम क्या करें?"

बूढ़े डाक्टर ने जवाब दिया, "प्रश्न यह है कि उन अज्ञात कगार को पार करके जीवन के उस किनारे पर कैसे पहुंचें जो कि कब्र के उस पार है। मुझमें सबसे अधिक ज्ञान है इसलिए मेरा खतरा तुमसे अधिक है। यह तुमने ठीक किया कि जिसपर सबसे अधिक बोझ है, उसीपर तुम पुल पसन्द करने का भार छोड़ते हो।"

फिर उसने कहा—

"ज्ञान वह वज़न है जो अन्तःकरण के भार को बढ़ा देता है।

फिर वह बोला—

"अभी हमें कितना समय मिल सकता है?"

एक मल्लाह ने पानी की लकीर देखकर कहा—

"पाव घण्टे से कुछ ही ज्यादा।"

डाक्टर बोला, "ठीक !"

डाक्टर ने अपनी जेब से दवात और कलम निकाली, साथ ही नोटबुक भी निकाली और उसके अन्दर से एक चमड़े का टुकड़ा निकाला। वही, जिसकी पीठ पर उसने कुछ घण्टे पहले बीसेक टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींची थीं।

फिर उसने कहा, "रोशनी !"

बरफ गिरने से पहले सभी मशालें एक-एक करके बुझ गई थीं। केवल एक बची थी। एक आदमी उसको लेकर डाक्टर के पास आकर खड़ा हो गया।

डाक्टर ने नोटबुक अपनी जेब में रख ली, दवात-कलम जमीन पर रख दीं और उस टुकड़े को खोलते हुए बोला—

"सुनो !"

और तब समुद्र के बीच उस डूबती हुई नाव पर, कब्र के कांपते हुए फर्श पर, डाक्टर ने गम्भीरता से पढ़ना शुरू किया और उसको सारी छायाएं ध्यान से सुनने लगीं। उन अभागों ने अपने-अपने सिर झुका लिये। मशाल की हिलती हुई ज्वाला ने उनके चेहरों के पीलेपन को गहरा कर दिया। डाक्टर ने जो कुछ लिखा था वह अंग्रेजी भाषा में था। जब कभी किसीके दुःखी चेहरे से यह मालूम होता था कि यह बात उसकी समझ में नहीं आई तो डाक्टर रुककर उसका मतलब, फ्रांसीसी, स्पेनिश, बास्क या इटालियन भाषा में समझा देता था। उनके रुंधे हुए श्वास और हृदय की धड़कन सुनाई देती थी। वह टूटी हुई नाव अधिकाधिक डूबती जा रही थी।

पढ़ना समाप्त होने पर डाक्टर ने वह टुकड़ा फैलाकर नीचे रख दिया और लिखे हुए के नीचे की खाली जगह में उसने खुद अपने दस्तखत किये, 'जेर्नार्डस जीस्टेमंड : डाक्टर।'

फिर दूसरों की ओर घूमकर उसने कहा, "आओ, दस्तखत करो !"

एक-एक करके उन सबों ने अपने उपनामों सहित दस्तखत कर दिये। प्रधान ने अपना नाम लिखा, 'गियांगिरेट'। एक स्त्री लिखना नहीं जानती थी, इसलिए उसने कलम से निशानी कर दी और डाक्टर ने उस निशानी के पास उस स्त्री का नाम लिख दिया।

उन दस्तखतों के नीचे डाक्टर ने यह नोट और जोड़ा—

"नाव के तीन कर्मचारियों में से एक कप्तान समुद्र में डूब गया, बाकी के दोनों मौजूद हैं और वे भी दस्तखत करते हैं।"

इसके बाद दोनों मल्लाहों ने भी दस्तखत कर दिये।

तब डाक्टर ने रसोइया से कहा, "तुम्हारे पास हार्डक्वानन की बोतल है न ?"

"जी हां !"

"मुझे दो !"

रसोइए ने बोतल में बची हुई शराब पी डाली और बोतल डाक्टर के हाथ में दे दी।

पानी नाव में बढ़ रहा था। नाव समुद्र के अन्दर डूबती जा रही थी। नाव की किनार के ऊपर से हल्की-सी लहर आ जाया करती थी। सब-के-सब नाव के बीचों-बीच खड़े थे।

डाक्टर ने दस्तखतों की स्याही मशाल की गर्मी से सुखाई और उस टुकड़े की बहुत छोटी तह करके बोतल के अन्दर रख दिया और काग मांगा।

रसोइए ने कहा, "पता नहीं, कहां है ?"

एक मल्लाह बोला, "यह रस्से का टुकड़ा है।"

डाक्टर ने रस्से के टुकड़े से कुप्पी का मुह बन्द कर दिया और थोड़ा-सा डामर मांगा। एक मल्लाह ने जाकर सामने की डामर की मशाल बुझा दी और जिस बरतन में डामर जल रहा था, उसे पिघले हुए डामर-सहित लाकर डाक्टर को दे दिया।

कुप्पी के चारों तरफ डामर पोत दिया गया।

डाक्टर ने कहा, "बस हो गया।" सबने अपनी-अपनी भाषा में कहा, "तथास्तु !"

डाक्टर उन लोगों से अलग होकर नाव के अगले सिरे की तरफ गया और वहां पहुंचकर गहरी आवाज़ में बोला, "क्या तू मेरे पास है ?"

शायद वह किसी छाया से बोल रहा था।

नाव डूब रही थी।

डाक्टर के पीछे सब स्वप्न देख रहे थे। प्रार्थना के भाव ने उनपर अधिकार कर लिया था। वे झुके नहीं, झुका दिये गए। उन्होंने हाथ जोड़कर क्षमा-याचना का भाव धारण किया। समुद्र की कोई विचित्र प्रतिच्छाया उनके दुष्ट चेहरों को मृदुल बना रही थी।

डाक्टर उनकी ओर मुड़ा। उसका भूतकाल चाहे जैसा रहा हो, वह इस विपत्ति के बीच महान् था।

प्रकृति की गहरी शांति उसपर छाई हुई थी। उसके चेहरे पर ईश्वरेच्छा की महत्ता का आभास अंकित था।

इस बूढ़े और विचारशील वाणी ने अनजाने ही पादरी का-सा भाव धारण कर लिया और कहा, "सुनो!"

उसने एक क्षण विचारपूर्ण दृष्टि से समुद्र के विस्तार की ओर देखा और कहा, "अब हम मरनेवाले हैं!"

फिर उसने मल्लाह के हाथ में से मशाल ले ली और उसको हिलाया।

उसमें से एक चिनगारी उड़ी और अंधकार में गायब हो गई।

तब डाक्टर ने वह मशाल समुद्र में फेंक दी।

मशाल बुझ गई। अब प्रकाश नहीं रहा। दीर्घ, अथाह समुद्र के अलावा कुछ न रहा। वह कब्र को भरता हुआ मालूम होता था।

अन्धकार में डाक्टर, यह कहते हुए सुनाई दिया—

"आओ, प्रार्थना करें!" सब घुटनों के बल झुक गए।

बर्फ पर नहीं, वे पानी में घुटने टेके हुए थे।

अब सिर्फ चन्द मिनट ही बाकी थे।

बरफ के गाले गिर रहे थे, मानो उनपर आंसू बह रहे हों। उस बूढ़े की आकृति अन्धकार में धुंधली-धुंधली दिखाई देती थी। वह छाया की बोलती हुई मूर्त्ति के समान मालूम होता था। डाक्टर ने क्रास का चिह्न बनाया और अपनी आवाज़ उठाई। उसके पैर के नीचे वह अदृश्य कपकंपी मालूम हुई जैसी कि प्रायः नाव के बिल्कुल डूब जाने के एक क्षण पहले हुआ करती है।

डाक्टर ने प्रार्थना प्रारंभ की। उसके पीछे सब उसको अपनी-अपनी भाषा में दुहराते जाते थे।

कुछ वाक्यों के बाद उन मनुष्यों की आवाज़ सुनाई नहीं दी।

उसने पीछे की ओर देखा, उन सबके सिर पानी के अन्दर थे! वे घुटने टेके हुए ही पानी में डूब गए!

डाक्टर ने वह बोतल अपने दाहिने हाथ में ली और उसको सिर के ऊपर उठाया।

नाव पानी के नीचे जा रही थी। डूबते हुए डाक्टर ने बची हुई प्रार्थना पूरी की।

एक क्षण के लिए उसके कंधे पानी के ऊपर थे, फिर सिर ही रह गया, फिर दाहिना हाथ बोतल लिये हुए दिखाई देता रहा मानो वह उसे ऊपर अनन्त को दिखा रहा हो।

अब उसका हाथ भी गायब हो गया! बरफ पड़ती रही।

सिर्फ एक चीज पानी पर तैर रही थी, लहरें उसको अंधकार में बहा ले गई, वह थी बोतल जो कि घास के आवरण के कारण तैर रही थी।

: ३ :

अन्धकार में बालक

१. अनाथ उद्धारक बना

ज़मीन पर जो तूफान चल रहा था वह समुद्र के तूफान से कम तेज़ नहीं था। उस बालक के आस-पास प्रकृति की वही उन्मत्त स्वच्छन्दता व्याप्त थी। उसकी अन्धी शक्तियां अपना सारा क्रोध प्रकट कर रही थीं और बेचारा निर्बल और निरपराध बालक उसका बलि बन रहा था। अन्धकार अन्धा होता है। निर्जीव वस्तुओं के अन्दर जिस दयालुता के होने का खयाल किया जाता है वह उनमें नहीं रहती।

ज़मीन पर हवा बहुत कम थी। वहां की ठंड में अवर्णनीय मौन-भाव था। वहा ओले नहीं गिर रहे थे, किन्तु गिरती हुई बरफ की गहराई भयंकर थी।

ओले मारते हैं, तंग करते हैं, बदन छील देते हैं, सुन्न कर देते हैं, हड्डी तोड़ देते हैं। बरफ के गाले इससे भी बुरा करते हैं। नरम और निष्ठुर बरफ का गाला अपना काम चुपचाप करता है; उसे हाथ लगाइए और वह पिघल जाता है। वह शुद्ध है, ठीक जैसा कि कपटी स्पष्ट रहता है। उन सफेद-सफेद कणों के एक-दूसरे पर जमते-जमते ढेर हो जाने से ही वे भयंकर हो जाते हैं, जैसे कि धूर्त धीरे-धीरे पातकी हो जाता है।

यहां पर उसकी विपत्ति का स्वरूप बदल गया। अब नीचे उतरते समय यह भय था कि कगार की तली में न गिर पड़े। बीच में जगह-जगह गड्ढे हो रहे थे। कगारों के बाद अब उसे गड्ढों का सामना करना था। समुद्र के किनारे पर प्रत्येक वस्तु में धोखा रहता है—चट्टान फिसलनी रहती है, बालू होती है। सहारे की जगह केवल जाल रहती है।

कुछ ऊंची भूमि पार करने के बाद वह मैदान में पहुंचा। मैदान अगम्य अन्धकार की गहराई में छिपा हुआ था। वह इधर-उधर पगडंडी ढूंढ़ने लगा। एकाएक वह नीचे झुका। उसको बरफ में पैरों के चिह्नों के समान

इस बूढ़े और विचारशील वाणी ने अनजाने ही पादरी का-सा भाव धारण कर लिया और कहा, "सुनो !"

उसने एक क्षण विचारपूर्ण दृष्टि से समुद्र के विस्तार की ओर देखा और कहा, "अब हम मरनेवाले हैं !"

फिर उसने मल्लाह के हाथ में से मशाल ले ली और उसको हिलाया।

उसमें से एक चिनगारी उड़ी और अंधकार में गायब हो गई।

तब डाक्टर ने वह मशाल समुद्र में फेंक दी।

मशाल बुझ गई। अब प्रकाश नहीं रहा। दीर्घ, अथाह समुद्र के अलावा कुछ न रहा। वह कब्र को भरता हुआ मालूम होता था।

अन्धकार में डाक्टर, यह कहते हुए सुनाई दिया—

"आओ, प्रार्थना करें !" सब घुटनों के बल झुक गए।

बर्फ पर नहीं, वे पानी में घुटने टेके हुए थे।

अब सिर्फ चन्द मिनट ही बाकी थे।

बरफ के गाले गिर रहे थे, मानो उनपर आंसू बह रहे हों। उस बूढ़े की आकृति अन्धकार में धुंधली-धुंधली दिखाई देती थी। वह छाया की बोलती हुई मूर्त्ति के समान मालूम होता था। डाक्टर ने क्रास का चिह्न बनाया और अपनी आवाज़ उठाई। उसके पैर के नीचे वह अदृश्य कंपकंपी मालूम हुई जैसी कि प्रायः नाव के बिल्कुल डूब जाने के एक क्षण पहले हुआ करती है।

डाक्टर ने प्रार्थना प्रारंभ की। उसके पीछे सब उसको अपनी-अपनी भाषा में दुहराते जाते थे।

कुछ वाक्यों के बाद उन मनुष्यों की आवाज सुनाई नहीं दी।

उसने पीछे की ओर देखा, उन सबके सिर पानी के अन्दर थे ! वे घुटने टेके हुए ही पानी में डूब गए !

डाक्टर ने वह बोतल अपने दाहिने हाथ में ली और उसको सिर के ऊपर उठाया।

नाव पानी के नीचे जा रही थी। डूबते हुए डाक्टर ने बची हुई प्रार्थना पूरी की।

एक क्षण के लिए उसके कंधे पानी के ऊपर थे, फिर सिर ही रह गया, फिर दाहिना हाथ बोतल लिये हुए दिखाई देता रहा मानो वह उसे ऊपर अनन्त को दिखा रहा हो।

: ३ :

अन्धकार में बालक

१. अनाथ उद्धारक बना

ज़मीन पर जो तूफान चल रहा था वह समुद्र के तूफान से कम तेज़ नहीं था। उस बालक के आस-पास प्रकृति की वही उन्मत्त स्वच्छन्दता व्याप्त थी। उसकी अन्धी शक्तियां अपना सारा क्रोध प्रकट कर रही थीं और बेचारा निर्बल और निरपराध बालक उसका बलि बन रहा था। अन्धकार अन्धा होता है। निर्जीव वस्तुओं के अन्दर जिस दयालुता के होने का खयाल किया जाता है वह उनमें नहीं रहती।

ज़मीन पर हवा बहुत कम थी। वहां की ठंड में अवर्णनीय मौन-भाव था। वहा ओले नहीं गिर रहे थे, किन्तु गिरती हुई बरफ की गहराई भयंकर थी।

ओले मारते हैं, तंग करते हैं, बदन छील देते हैं, सुन्न कर देते हैं, हड्डी तोड़ देते हैं। बरफ के गाले इससे भी बुरा करते हैं। नरम और निष्ठुर बरफ का गाला अपना काम चुपचाप करता है; उसे हाथ लगाइए और वह पिघल जाता है। वह शुद्ध है, ठीक जैसा कि कपटी स्पष्ट रहता है। उन सफेद-सफेद कणों के एक-दूसरे पर जमते-जमते ढेर हो जाने से ही वे भयंकर हो जाते हैं, जैसे कि धूर्त धीरे-धीरे पातकी हो जाता है।

यहां पर उसकी विपत्ति का स्वरूप बदल गया। अब नीचे उतरते समय यह भय था कि कगार की तली में न गिर पड़े। बीच में जगह-जगह गड्ढे हो रहे थे। कगारों के बाद अब उसे गड्ढों का सामना करना था। समुद्र के किनारे पर प्रत्येक वस्तु में धोखा रहता है—चट्टान फिसलनी रहती है, बालू होती है। सहारे की जगह केवल जाल रहती है।

कुछ ऊंची भूमि पार करने के बाद वह मैदान में पहुंचा। मैदान अगम्य अन्धकार की गहराई में छिपा हुआ था। वह इधर-उधर पगडंडी ढूंढ़ने लगा। एकाएक वह नीचे झुका। उसको बरफ में पैरों के चिह्नों के समान

कुछ दिखाई दिया।

वे वास्तव में पैरों के चिह्न थे। वरफ की सफेदी में वे साफ-साफ कटे हुए दीखते थे। उसने उन्हें ध्यान से देखा। वे आदमी के पैर के बराबर बड़े नहीं थे, और बच्चे के बराबर छोटे भी नहीं थे।

संभवत: वे स्त्री के पैरों के चिह्न थे। वे लगातार चले गए थे। वे अभी ताजे थे, किन्तु वरफ के कारण कुछ-कुछ मिट रहे थे। उस रास्ते से एक स्त्री अभी-अभी गई थी। वह भी उन चिह्नों को देखता हुआ उसी ओर चला।

वह इसी मार्ग पर कुछ समय तक चलता रहा। दुर्भाग्य से पैरों के निशान कम स्पष्ट होते जा रहे थे। वरफ घनी गिर रही थी। यह वही समय था जब कि समुद्र में नाव वरफ के तूफान में घिरी थी।

एकाएक या तो वरफ से ढक जाने के कारण या अन्य किसी कारण से पैरों के चिह्न समाप्त हो गए। अब भूमि के ऊपर सफेद चादर और आसमान पर काली चादर के अलावा कुछ नहीं रहा। ऐसा मालूम होता था कि वह पैदल यात्री वहां से उड़ गया हो। बालक व्याकुल होकर नीचे झुका और पद-चिह्नों को ढूंढ़ने लगा, किन्तु व्यर्थ!

जब वह उठा तो उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसने कोई अस्पष्ट आवाज सुनी, किन्तु उसे इस बात का निश्चय नहीं था कि उसने क्या सुना। वह आवाज किसीका स्वर, सांस, छाया के समान मालूम होती थी। वह जानवर की अपेक्षा मनुष्य से अधिक मिलती थी। उसमें जीवन की अपेक्षा मृत्यु का भाव अधिक था। वह आवाज थी, किन्तु स्वप्न की आवाज थी।

उसने देखा, किन्तु दिखाई कुछ नहीं दिया।

उसके सामने विस्तृत और नितान्त एकान्त था। उसने सुनने की चेष्टा की। उसे जो कुछ सुनने का ध्यान हुआ था वह शायद लुप्त हो गया। शायद वह उसकी कल्पना थी। उसने फिर ध्यान दिया, परन्तु अब बिल्कुल नीरवता थी।

कुहरे में भी भ्रम था।

वह फिर चलने लगा। वह इधर-उधर घूम रहा था। अब उसका कोई निश्चित मार्ग नहीं था।

जब वह आगे बढ़ा तो फिर वह आवाज शुरू हुई। इस समय उसे कोई सन्देह नहीं रह गया। वह कराहना-सा था।

वह लौटा। अन्धकार में अपनी आंखें दौड़ाने लगा। वह आवाज फिर सुनाई दी। यदि परलोक चिल्ला सकता तो उसकी आवाज भी इसी प्रकार की होती।

कोई भी आवाज इतनी तेज़, भेदक और इतनी निर्बल नहीं हो सकती जितनी कि यह आवाज़ थी।

वह डर गया और भागने का विचार करने लगा।

फिर वही कराह! यह चौथी वार थी। उसमें विचित्र प्रकार का दुःख और शिकायत थी। ऐसा मालूम होता था कि इस प्रयत्न के वाद सम्भवतः वह आवाज़ बन्द हो जायेगी। वह खत्म होती हुई आवाज़ थी।

बालक उस ओर बढ़ा जिधर से आवाज़ आ रही थी।

उसने अपने सामने कुछ क़दम पर बरफ में मनुष्य के क़द के बराबर एक टीला देखा—नीचा और संकरा—जैसा कि कब्र के ऊपर रहता है।

उसी समय आवाज़ फिर चीखी। वह उस टीले के नीचे से आ रही थी। बालक झुका और बैठकर हाथ से उस टीले को साफ करने लगा।

जैसे-जैसे बरफ हटती जाती थी, वैसे-वैसे नीचे से मनुष्य-शरीर का आकार निकलता आता था। एकाएक हटी हुई बरफ में से एक पीला चेहरा दिखाई दिया।

वह स्त्री का चेहरा था। उसके बिखरे हुए बाल बरफ में सन रहे थे। वह स्त्री मरी हुई थी।

बालक फिर बरफ हटाने लगा।

उसे अपने हाथ के नीचे कुछ हिलता हुआ मालूम हुआ। बालक ने जल्दी से बरफ हटा दी और एक छोटा-सा शरीर निकल आया।

वह छोटी-सी लड़की थी।

वह चीथड़ों से ढकी हुई थी जो इतने कम थे कि उसके हाथ-पैर हिलाने से वे बिल्कुल अलग हो गए थे। नीचे उसके दुर्बल अंगों और ऊपर उसकी गरम सांस के कारण बरफ कुछ-कुछ पिघल गई थी। कोई भी स्त्री कह देती कि वह पांच या छः महीने की होगी। मुमकिन है एक साल की हो; क्योंकि गरीबी में बाढ़ बहुत कम होती है। जब उसके चेहरे को हवा लगी तो वह चिल्ला उठी। उसकी मां ने उसके कराहने को नहीं सुना। इससे मालूम होता है कि वह बिल्कुल मर चुकी थी।

बालक ने उस बच्चे को गोद में उठा लिया। माता का अकड़ा हुआ शरीर देखने में भयंकर था। उसके चेहरे से प्रेत की-सी रोशनी निकल रही थी। लाश पर बरफ का प्रकाश पड़ रहा था। इंसान और बरफ एकाकार हो गये थे। उसके स्तनों का नंगापन दारुण था। उनका उद्देश्य पूरा हो चुका था। उनके ऊपर जीवन का भव्य उत्सर्ग था। उस जीवन का जिसको कि मरते हुए एक जीव ने दूसरे जीव को अर्पण किया था। कुमारी की पवित्रता के बजाय उसपर माता का गौरव था। एक स्तन के अग्र भाग पर एक

सफेद मोती था। वह दूध की बूंद थी जो जम गई था।

खुलासा यह कि जिस मैदान में वह अकेला बालक जा रहा था, उसमें एक भिखारिन अपनी बच्ची को दूध पिलाती हुई और आसरे की जगह ढूंढ़ती हुई कुछ घण्टे पहले मार्ग भूल गई थी। ठंड से ठिठुरकर वह तूफान में गिर पड़ी और फिर उठ नहीं सकी। ऊपर से गिरती हुई बरफ ने उसको ढक दिया। जबतक उसमें शक्ति थी, उसने छोटी-सी बच्ची को छाती से दबाये रखा और इस प्रकार अन्त में वह मर गई।

जब वह बच्ची उसकी गोद में पहुंची तो उसने रोना बन्द कर दिया। दोनों बच्चों के चेहरे एक-दूसरे से छूने लगे और बच्ची के लाल-लाल होंठ बालक का गाल ढूंढ़ने लगे मानो वह स्तन हो। वह छोटी-सी बच्ची करीब-करीब उस अवस्था तक पहुंच गई थी जब कि खून जम जाने के कारण हृदय की गति भी रुकने लगती है। उसकी मां ने अपनी मृत्यु की ठंडक उसे छुआ दी थी। मुर्दा मौत का संसर्ग कराता है। उसकी ठंडक संक्रामक होती है। उसके पैर, हाथ, बाजुओं और घुटनों को ठंड से मानो लकवा मार गया था। उस बालक ने इस भयंकर ठंड का अनुभव किया। उसके पास अभी भी एक कपड़ा सूखा और गरम था—उसकी जाकट। उसने बच्ची को मुर्दे की छाती पर रख दिया, अपनी जाकट निकाली, उसमें बच्ची को लपेट लिया, फिर उसको उठा लिया और वह अपने रास्ते पर चलने लगा। अब वह करीब-करीब बिल्कुल नंगा हो गया था और उत्तरी हवा ज़ोरों से चल रही थी, जिसके कारण वह बरफ के गालों की बौछार से ढक गया था।

बच्ची को फिर बालक का गाल मिल गया, वह उसे चूमने लगी और गर्मी से आराम मिलने के कारण सो गई। यह उन दो आत्माओं का अन्धकार में पहला चुम्बन था।

माता वहां पड़ी हुई थी। उसकी पीठ पर बरफ थी और चेहरे पर रात; किन्तु शायद उस समय, जब बालक ने अपना कपड़ा उतारकर बच्ची को ढांका और वह स्वयं नंगा हो गया, माता ने अनन्त की गहराई में से उसको देखा।

२. विचित्र उदारता

बालक थकावट और भूख से निर्बल हो गया था, तो भी पहले की अपेक्षा वह अधिक दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ रहा था। उस समय उसकी ताकत कम थी और बोझ अधिक। उसके बदन पर जो थोड़े से कपड़े बचे थे वे बरफ में कड़े हो जाने के कारण कांच के समान तेज हो

हो गए थे और उनसे उसका चमड़ा कट रहा था। वह अधिक ठंडा हो गया, किन्तु बच्ची अधिक गरम होने लगी।

बालक पूर्व की ओर बढ़ा जा रहा था। छोटी बच्ची दो-तीन बार चिल्लाई। तब उसने अपनी चाल बदली और झूल-झूलकर चलना शुरू किया। इससे बच्ची को आराम मिला, वह चुप हो गई और अन्त में सो गई। वह बार-बार बच्ची की गरदन के पास जाकट को कड़ा कर देता था ताकि कहीं से बरफ या पिघली हुई बरफ की बूंद भीतर न चली जाय।

वह मदान ऊंचा-नीचा था और जहां गड्ढे थे वहां तो बालक कभी-कभी बरफ में करीब-करीब पूरा समा जाता था। तो भी वह घुटनों से बरफ को हटाता हुआ आगे बढ़ रहा था।

घाटी पार करके ऊपर के मैदान में पहुंचने पर उसे मालूम हुआ कि वहां पर बरफ जम गई है। इसके अलावा एक नई विपत्ति और सामने आ गई। वह बेहद थक गया था। डर था कि वह कहीं गिर न पड़े, क्योंकि गिरने पर बरफ उसको जमीन के साथ जिन्दा जमा देगी। इस समय पैर फिसलना मौत था और गलत कदम कब्र। गोद में छोटी बच्ची होने के कारण मार्ग चलने में भयंकर कठिनाइयां हो रही थीं। वह केवल वजन ही नहीं था जो कि थकावट और निर्बलता के कारण बहुत ज़्यादा भारी मालूम होता था, किन्तु वह बाधा भी थी। उसके कारण बालक के दोनों हाथ रुके हुए थे और बरफ पर चलने वाले के लिए दोनों हाथों का खुला रहना बहुत ज़रूरी था, ताकि उनसे चलने में शरीर का संतुलन बराबर रखा जा सके।

वह गिरते, फिसलते, झुकते, हटते और किसी प्रकार वज़न को साधते हुए चल रहा था। उसका यह कार्य आश्चर्यजनक था। सम्भवतः इस कष्ट के मार्ग पर छाया की दूरी से जागरूक आंखें—माता की आंखें और परमात्मा की आंखें—उसको लगातार देख रही थीं।

सहसा बरफ का तूफान रुका और उसे दूर धुंधली-सी चिमनियां और मकानों की छतें दिखाई दीं। छतें—मकान—आश्रय। अन्त में वह वहाँ आ पहुंचा। वह आशा के अमिट उत्साह का अनुभव करने लगा। नाव का मल्लाह जब 'अहा! ज़मीन' चिल्ला उठता है तब वह कुछ ऐसे ही भाव का अनुभव करता है।

वह तेजी से चलने लगा। हां, तो आखिर को वह मनुष्यों के पास आ गया। वह बहुत जल्दी जीवित प्राणियों के बीच पहुंचेगा। अब किसी प्रकार का डर नहीं। उसके अन्दर सहसा गर्मी—सुरक्षा का उदय हुआ। अबतक वह जिस अवस्था में था वह बीत गई। अब न रात थी, न ठंड, न

तूफान। उसे ऐसा मालूम होने लगा कि अब सारी विपत्तियां पीछे छूट गईं। अब उसे बच्ची का भार नहीं मालूम होता था। अब वह दौड़ने-सा लगा।

वह बस्ती के निकट पहुंचा। यह तो वेमथ शहर था। परन्तु वह विशाल शहर रात्रि की गोद में नीरव सोया हुआ था। एक और बात थी। उन दिनों लन्दन में प्लेग का प्रकोप था। इसलिए लोगों को डर था कि कहीं वहां के भगोड़े हमारे शहर में घुसकर यहां भी वह बीमारी न फैला दें। इसलिए वे कुछ निठुर भी हो गये थे। बेचारे बालक ने कई दरवाजे खटखटाए। छतों पर आंखें दौड़ाई। हर मकान के दरवाज़े से कान लगा-लगाकर सुनने की कोशिश की कि कहीं अन्दर से जागते हुए आदमियों की आवाज़ तो नहीं आ रही है। पर सब व्यर्थ हुआ। आखिर लाचार हो वह आगे को बढ़ा। निराशा ने उसके पैर ढीले कर दिये। बोझा और भी भारी मालूम होने लगा। भूख और थकावट के मारे वह मरा जा रहा था कि एकाएक उसने एक विचित्र धमकी और दांतों की विचित्र-सी कटकटाहट सुनी।

वह किसीको भी पीछे डराकर भगाने के लिए काफी थी। पर वह आगे बढ़ा। जिनके लिए निःशब्दता दारुण होती है उनके लिए गुर्राहट भी सन्तोषदायक होती है। इस प्रकार का चिह्न भी उस भयंकर गुर्राहट से उसे दिलासा देनेवाला मिला। वह धमकी आश्वासन थी। यहां पर कोई प्राणी जीता-जागता तो था, फिर चाहे वह जंगली जानवर ही क्यों न हो। वह उस ओर बढ़ा, जिधर से गुर्राहट आ रही थी।

वह एक दीवार के कोने में मुड़ा। दीवार के पीछे बरफ और समुद्र की प्रतिछाया के धुंधले प्रकाश में उसने कोई चीज मानो सहारे के लिए रखी देखी। यदि वह मांद नहीं थी तो गाड़ी थी। उसमें पहिये थे—वह गाड़ी थी। उसपर छत थी—वह घर था। छत के ऊपर चिमनी उठी हुई थी और चिमनी से धुआं निकल रहा था। धुआं लाल रंग का था, जिसका मतलब यह था कि भीतर खूब आग जल रही है। पीछे की ओर लम्बे-लम्बे कब्ज़ों से मालूम होता था कि दरवाज़ा है और उस दरवाज़े के बीच के चौकोर छेद में गाड़ी के अन्दर का प्रकाश दीखता था। बालक उसके पास पहुंचा।

जो गुर्रा रहा था उसने उसे आते देखा और वह क्रुद्ध हुआ। अब गुर्राहट नहीं रही, अब तो गर्जन प्रारम्भ हुआ। बालक ने तेज आवाज सुनी, मानो जंजीर जोर से तन गई हो और एकाएक दरवाजे के नीचे, पिछले पहियों के बीच, तेज सफेद दांतों की दो पंक्तियां चमकने लगीं। जब कि

पहियों के बीच मुंह निकला था उसी समय ऊपर खिड़की में से एक सिर बाहर निकला।

सिर ने कहा, "चुप रहो!"

मुंह चुप हो गया।

सिर फिर बोला, "क्या यहां कोई है?"

बालक ने उत्तर दिया, "हां।"

"कौन?"

"मैं।"

"तुम? तुम कौन हो? कहां से आये?"

"मैं थक गया हूं।"

"क्या बजा है?"

"मैं ठंड से ठिठुर गया हूं।"

"तुम वहां क्या करते हो?"

"मैं भूखा हूं।"

सिर ने जवाब दिया, "हर कोई नवाब के समान सुखी नहीं हो सकता। चले जाओ!"

सिर भीतर हो गया और खिड़की बन्द।

बालक ने सिर नीचे झुका लिया, सोते हुए बच्चे को कसकर चिपका लिया और चलने के लिए हिम्मत बांधी। वह कुछ कदम चल चुका था और तेज़ी से बढ़ा जा रहा था।

पर जिस समय खिड़की बन्द हुई, उसी समय दरवाज़ा खुल गया था। सीढ़ी नीचे डाल दी गई थी और जिस आवाज़ ने बालक से बातचीत की थी, उसने भीतर से गुस्से में चिल्लाकर कहा, "तो भीतर क्यों नहीं आता?"

बालक लौटा।

आवाज़ ने फिर कहा, "भीतर आ! किसने ऐसा आदमी यहां भेजा है, जो भूखा है, ठिठुर रहा है और भीतर नहीं आता?"

बालक अपनेको एक साथ लौटाये और बुलाये जाते देखकर स्थिर खड़ा रहा।

आवाज़ बोली—

"अबे पाजी के बच्चे, तुझे अंदर आने को कहा गया है न!"

बालक ने निश्चय कर लिया और सबसे नीचे की सीढ़ी पर पैर रखा।

गाड़ी के नीचे जोरों से गुर्राहट हुई। बालक पीछे हटा। खुले हुए जबड़े

सामने बढ़ आये।

आदमी की आवाज़ ने कहा, "चुप!"

जबड़े पीछे हट गए, गुर्राहट बन्द हो गई।

आदमी ने कहा, "ऊपर आओ!"

बालक ने कठिनाई से वे तीनों सीढ़ियां चढ़ीं और देहली पर जाकर रुक गया।

गाडी में कोई लालटेन नहीं जल रही थी, शायद गरीबी के कारण। अंगीठी के ऊपर के छेद में से लाल रोशनी निकल रही थी; वही लालटेन का काम दे रही थी। अंगीठी पर रखी डेगची और पतीली में से भाप निकल रही थी, जिससे प्रकट होता था कि उनमें कोई खाने की चीज़ है। उसमें से सुस्वादु सुगन्धि आ रही थी। झोंपड़ी में एक पेटी, एक स्टूल और छत में एक लालटेन लटक रही थी, जो गुल थी। इनके अलावा बीच की दीवार में कुछ तख्ते टंगे थे और कुछ हुक लगे थे, जिनमें कई तरह की चीजें लटक रही थीं। उन तख्तों पर कुछ गिलास, तांबे के बरतन, शीशियां और कई तरह की विचित्र वस्तुएं रखी थीं। वे पकाने के बरतन और विज्ञान के यंत्र थे। गाड़ी का आकार विषम चोकोर था। सामने की ओर अंगीठी थी। वह मुश्किल से बड़ी पेटी के बराबर थी। उसके अन्दर की सभी चीजें धुंधली थीं। तो भी छत पर आग के पड़े हुए प्रकाश में बड़े-बड़े अक्षरों में यह साफ पढ़ा जाता था—

'दार्शनिक उर्सस'

बालक वास्तव में होमो और उर्सस के मकान में प्रवेश कर रहा था। उनमें से एक को उसने गुर्राते हुए और दूसरे को बोलते हुए अभी-अभी सुना था।

बालक ने देहली पर पहुंचकर अंगीठी के पास एक ऊंचा, दुबला-पतला और बूढ़ा आदमी खड़ा हुआ देखा। उसका सिर छत से लगा हुआ था, वह पैर के पंजों के बल ऊंचा उठ नहीं सकता था, क्योंकि छत उससे ऊंची नहीं थी।

उस आदमी ने जो कि उर्सस था, कहा, "भीतर आओ!"

बालक भीतर गया।

"अपना बोझा रख दो!"

बालक ने अपनी गठरी सावधानी से पेटी के ऊपर रख दी, इस भय से कि कहीं वह जागकर डर न जाय।

आदमी ने कहा, "तुम कितने आहिस्ता से उसे रख रहे हो। यदि यह

कोई पुरानी चीज़ होती तो भी इससे अधिक सावधानी से नहीं रखी जाती। या तुम्हें अपने चीथड़ों के फटने की फिकर लगी है? बेकार गुंडा, इस समय सड़कों पर चक्कर काटता है! कौन है तू? बोल! लेकिन नहीं। बोल मत! तुझे ठंड लग रही है। अपनेको जल्दी से गरमा ले!" और उसने बालक को ठेलकर आग के सामने कर दिया।

"अरे, कितना गीला है! भीतर तक जम गया है! खूब अच्छी हालत में मकान में आया है! चल, ये चीथड़े उतार, बदमाश कहीं का!" और उसने तेज़ी से एक हाथ से बालक के चीथड़े खींचे और दूसरे से खूंटी पर से एक कमीज और जाकट उतारी।

"ले, ये कपड़े।"

उसने ढेर में से एक ऊन का टुकड़ा निकाला और उससे आग के सामने थके हुए और चकित बालक का सारा शरीर रगड़ा। बालक नंगा था। उसका शरीर गरमा रहा था। उसे मालूम होने लगा कि मानो वह स्वर्ग को देख रहा है और छू रहा है। शरीर रगड़ने के बाद उसने बालक के पैर पोंछे।

"अबे बावले, इधर आ! कहीं पाला तो नहीं मार गया है? मैं मूर्ख सोच रहा था कि तेरा कोई अंग ठंड से जम गया है, पीछे पैर का हिस्सा या आगे के पंजे। अब वे बेकार नहीं होने पायेंगे। कपड़े पहन ले!"

बालक ने कमीज़ पहनी और आदमी ने झट से उसे जाकट पहना दी।

"अब..."

३. आतिथ्य

बालक इस विचित्र उदारता से अपने-आपको अभ्यस्त करने की कोशिश कर ही रहा था कि उस आदमी ने पैर से स्टूल को आगे सरका दिया और बच्चे को आगे धकेलकर उसपर बैठा दिया। फिर उसने उंगली से पतीली की ओर इशारा किया, जो कि अंगीठी पर चढ़ी हुई थी। बालक ने पतीली में जो कुछ देखा वह उसके लिए स्वर्ग था—अर्थात् आलू और मांस।

"तू भूखा है? खा ले!"

आदमी ने एक टोकरी से कड़ी रोटी का टुकड़ा और लोहे का कांटा निकाला और बालक को दे दिया। बालक हिचका।

"शायद तू यह आशा करता होगा कि मैं तेरे लिए दस्तरखान बिछाऊंगा!" यह कहकर उस आदमी ने पतीली बालक की गोद में रख दी।

"खा ले!"

भूख ने आश्चर्य को दबा दिया। बालक खाने लगा। बेचारा खा क्या रहा था, निगल रहा था। मुंह में रोटी के टूटने की आह्लादमयी कचर-कचर उस छोटी-सी झोंपड़ी में फैल गई। आदमी गुर्राया।

"इतनी जल्दी नहीं बे! जब ऐसे छोकड़े भूखे होते हैं तो बड़ी भद्दी तरह से खाते हैं। तुझे किसी लार्ड को खाना खाते हुए देखना चाहिए। मैंने अपने ज़माने में ड्यूक लोगों को भोजन पाते देखा है। वे खाते नहीं हैं, यही तो शान है। वे पीते हैं। अबे सुअर, ठूंस नहीं, पेट भरकर खा!"

कानों की अनुपस्थिति भूखे पेट का आवश्यक अंग है। इसलिए उस बालक का ध्यान इन तेज़ बातों की ओर नहीं गया। इस समय तो वह दो कठिनाइयों और दो आनन्दों में मग्न था, भोजन और गरमी में।

उर्सस मानो अपने प्रति बड़बड़ाता रहा।

"टुकड़े खा ले। आजकल का जमाना ही ऐसा है। टुकड़खोरों की शान का ठिकाना नहीं! यह छोकड़ा भूख से भी कुछ ज्यादा लगता है। यह पागल है। जान पड़ता है, इसे पागल कुत्ते ने काटा है। शायद इसे प्लेग हुआ है। क्योंरे चोर, तुझे प्लेग तो नहीं है? कहीं इसका प्लेग होमो को लग जाय तो! नहीं, कभी नहीं। सारी बस्ती मर जाय, पर मेरा भेड़िया न मरे। लेकिन हां, मैं भी तो भूखा हूं। आज की रात मैं भूख से तंग था। मैं अकेला था। मैंने आग जलाई। मेरे पास केवल एक आलू था, एक टुकड़ा रोटी थी, एक निवाला मांस था और एक बूंद दूध था। इन्हें मैंने गरम होने को रखा। मैंने कहा—अच्छा! चलो, अब खावेंगे—कि धम्म से यह मगरमच्छ उसी बीच में टपक पड़ा। यह मेरे भोजन और मेरे बीच में आ डटा। देखो मेरी देगची किस तरह सफाचट हो गई! खा, भुक्कड़, खा!"

ठीक उसी समय एक चीत्कार, करुणाजनक और दीर्घ चीत्कार, झोंपड़ी में उठा। आदमी ध्यान से सुनने लगा।

"रोता है? पाजी! रोता क्यों है?"

बालक उसकी ओर घूमा। यह प्रकट था कि वह नहीं रो रहा था। उसका तो मुंह भरा था।

रोना जारी रहा।

आदमी पेटी के पास गया।

"हां, तो यह तेरी पुटलिया रोती है! रोती हुई पुटलिया! यह तेरी पुटलिया किसलिए चिल्लाती है?

उसने जाकट खोली। एक बच्चे का सिर बाहर निकाला, मुंह खुला था और वह रो रहा था।

आदमी बोला—"अरे, यह लो, यह दूसरा भी निकल पड़ा! देखता

नहीं, इसे प्यास लगी है? इस छोटे-से बच्चे को दूध मिलना चाहिए। तो अब मुझे दूध भी नहीं मिलेगा!"

उसने पटिये पर बिखरी हुई चीज़ों में से कपड़े की पट्टी, स्पंज और एक बोतल ढूंढ़ निकाली, गुस्से से कहते हुए कि "कैसा भटियारखाना फैला है!"

फिर उसने छोटे बच्चे की ओर देखा। "यह तो लड़की है! इसकी चीख से मालूम होता था। यह तो बिल्कुल ही भीग गई है।" उसने बालक के समान उसके भी शरीर से चीथड़े खींचकर फेंक दिये और उसे एक मोटे, साफ और सूखे कपड़े में लपेट दिया। इस प्रकार जल्दी-जल्दी और लापरवाही से कपड़े पहनाये जाने पर बच्ची चिढ़ गई। वह ज़ोरों से रोने लगी।

आदमी बोला, "यह तो निदर्यतापूर्वक चीख रही है!"

उसने दांत से स्पंज का टुकड़ा तोड़ा, पट्टी में से एक चौकोर टुकड़ा फाड़ा और कुछ धागे निकाले। अंगीठी पर से दूध का बरतन उतारा, शीशी में दूध ढाला. शीशी की गरदन में आधी दूर तक स्पंज घुसा दिया, स्पंज को कपड़े के टुकड़े से ढांक दिया, काग को धागों से बांध दिया, शीशी को अपने गाल से लगाया, यह जानने के लिए कि वह ज़्यादा गरम तो नहीं है और उस रोती हुई पुटलिया को अपनी बाईं बगल में उठा लिया। "ले, ब्यालू कर, जानवर! मैं तुझे दूध पिलाता हूं, दूध!" और उसने बच्ची के मुंह में बोतल का मुंह दे दिया।

छोटी-सी बच्ची जल्दी-जल्दी पीने लगी।

इस बीच में बालक ने खाना बन्द कर दिया था। बच्ची को दूध पीते देखकर वह भोजन करना भूल गया। एक क्षण पहले, जब वह खा रहा था, उसके चेहरे का भाव सन्तोष का था। अब वह कृतज्ञता का था। वह बच्ची के जीवन को ताज़ा होते हुए बड़े गौर से देख रहा था। जिस पुनरुत्थान का उसने प्रारम्भ किया था, उसकी पूर्ति होते देख उसकी आंखों में अमिट तेज आ गया था। उर्सस गुस्से से मुंह-ही-मुंह में बड़बड़ाता रहा। वह बालक बीच में उर्सस की ओर अनिर्वचनीय भाव से, जिसको कि वह बेचारा अनुभव करता था, किन्तु प्रकट करने में असमर्थ था, डबडबाई आंखों से देखता था। उर्सस उससे गुस्से से बोला. "क्यों, खाता है कि नहीं?"

बालक ने कांपते हुए और आंसू-भरी आंखों से कहा, "और आप? आप कुछ नहीं लेंगे?"

"आप इस सबको खा डालने की मेहरबानी करेंगे या नहीं? यह तेरे लिए ज़्यादा नहीं है; क्योंकि जो कुछ था वह मेरे लिए काफी नहीं था।"

बालक ने अपना कांटा उठाया, लेकिन खाया नहीं।

उर्सस ने चिल्लाकर कहा, "खा! मुझसे तुझे क्या मतलब? मेरे बारे में बोलनेवाला तू कौन? बेवकूफ़, गधा, पाजी, लुच्चा, सुअर, नंगा, खा! मैं कहता हूं! यहां आया है तो खा-पी और सोजा; नहीं तो मैं तुम दोनों को लात मारकर निकाल दूंगा।"

धमकी सुनकर बालक ने फिर खाना शुरू कर दिया।

बच्ची दूध पीते-पीते सो गई थी। उर्सस ने आहिस्ता से उठकर पेटी पर रीछ का चमड़ा बिछाया और उसपर बच्ची को चुपके से आगे की तरफ सुला दिया।

बालक ने खाना खत्म कर दिया था। बरतन खाली ही नहीं हुआ था, सफाचट हो गया था। उसने कपड़े पर पड़े हुए टुकड़े भी बीन-बीनकर खा लिये।

उर्सस ने उसकी ओर घूमकर कहा, "यह काफी नहीं है। अब तुझसे बात करनी है। मुह सिर्फ खाने के लिए ही नहीं बना है, वह बोलने के लिए भी बना है। अब तेरा पेट भर चुका है और तू गरमा भी चुका है। इसलिए जानवर के बच्चे, सावधान हो जा! तुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर देना पड़ेगा। तू कहां से आया?"

बालक ने कहा,

"मुझे नहीं मालूम।"

"इसका क्या मतलब? तुझे नहीं मालूम!"

"मैं शाम को समुद्र के किनारे अकेला छोड दिया गया था।"

"अरे छोकड़े, तेरा नाम क्या है...यह बिल्कुल किसी कामका नहीं मालूम होता, यहांतक कि इसके परिवारवालों ने इसे छोड़ दिया है।"

"मेरा कोई परिवार नहीं।"

"ऐसी बात बोल जो मेरी समझ में आये। याद रख, जो कोई झूठे ही हां-में-हां मिलाता है, वह मुझे जरा भी पसंद नहीं आता। जब तेरी बहन है तो तेरे दूसरे रिश्तेदार भी होने चाहिए।"

"यह मेरी बहन नहीं है।"

"यह तेरी बहन नहीं है?"

"नहीं।"

"तो फिर यह कौन है?"

"यह तो मुझे रास्ते में पड़ी मिली।"

"पड़ी मिली?"

"हां।"

"क्या यह रास्ते में मिली? और तूने इसे उठा लिया!"

"हां।"
"कहां ? अगर झूठ बोला तो ज़ान से मार डालूंगा।"
"एक स्त्री की छाती पर, जो बरफ में मरी पड़ी थी।"
"कब ?"
"एक घंटा पहले।"
"कहां ?"
"यहां से कोई एक मील दूर।"

उर्सस की टेढ़ी भौंहें और भी तन गई और उसकी आकृति ऐसी हो गई जैसी कि विकार के कारण ज्ञानी की हो जाया करती है।

"मरी हुई ! उसके लिए अच्छा ही हुआ। उसे बरफ में ही पड़ी रहने देना चाहिए। वहीं वह आराम से है। किस तरफ ?"
"समुद्र की तरफ।"
"तूने पुल पार किया था ?"
"हां।"

उर्सस ने पीछे की खिड़की खोली और बाहर का दृश्य देखा। अवस्था सुधरी नहीं थी।

उसने खिड़की बन्द कर ली।

वह खिड़की के टूटे हुए शीशे के पास गया। उसने छेद को कपड़ा ठूंसकर बन्द कर दिया। अंगीठी में कोयला भर दिया। पेटी पर रीछ का चमड़ा पूरा फैला दिया। एक मोटी किताब कोने से उठाकर तकिये के लिए चमड़े के नीचे जमा दी और सोई हुई बच्ची का सिर उस पर रख दिया।

फिर उसने बालक से कहा—
"वहां लेट जा !"

बालक बच्ची के पास जाकर लेट गया।

उर्सस ने उन दोनों बच्चों के ऊपर चमड़ा लपेट दिया और उनके पैरों के नीचे दबा दिया।

उसने भंडारिये में से एक कपड़े का कमरपट्टा निकाला, जिसमें बड़ी-सी जेब थी। इसमें शक नहीं कि उसमें कुछ औज़ार और दवाओं की शीशियां भी थीं।

फिर उसने छत से लटका हुआ लालटेन उतारा और उसे जलाया। वह काला था। जलाने पर भी उससे इतना प्रकाश नहीं हुआ कि बच्चों की शक्ल दिखाई देती।

उर्सस ने दरवाजा आधा खोला और कहा—

"मैं बाहर जाता हूं। डरना मत ! मैं जल्दी ही वापस आ जाऊंगा। तुम सो जाओ !"

फिर सीढ़ियां नीची करके उसने होमो को बुलाया। होमो ने प्रेमपूर्ण गुर्राहट से जवाब दिया।

उर्सस हाथ में लालटेन लेकर नीचे उतरा। फिर सीढ़ियां ऊपर चढ़ा दी गई और दरवाजा बन्द कर दिया गया। बच्चे अकेले रह गए।

बाहर से आवाज आई। वह उर्सस की आवाज थी, "ए लड़के, जिसने मेरा खाना अभी खाया है, तू सोया कि नहीं ?"

बालक ने उत्तर दिया, "नहीं।"

"ठीक, अगर वह रोये तो उसको बचा हुआ दूध पिला देना !"

बाहर सांकल खुलने की आवाज़ हुई और आदमी के चलने तथा जानवर के पंजों की मिली-जुली आवाज़ दूर होती हुई सुनाई दी और अन्त में बन्द हो गई। कुछ मिनट बाद दोनों बच्चों को गहरी नींद आ गई।

वे छोटे से बालक और बालिका पास-पास नंगे लेटे हुए, उन शांत घड़ियों में छायाओं के दिव्य संमिश्रण में एक-दूसरे से मिल गए थे। उस उम्र में जैसे स्वप्न देखना संभव है, वैसे स्वप्न एक से दूसरे की ओर उड़कर पहुंच रहे थे। उनकी बन्द पलकों के अन्दर शायद सितारों का प्रकाश चमक रहा था। यदि उनकी अवस्था के लिए विवाह का शब्द अनुपयुक्त न हो तो वे स्वर्गीय ढंग के पति और पत्नी थे। ऐसे अंधकार में ऐसी पवित्रता, ऐसे आलिंगन में ऐसी शुद्धता, इस लोक में स्वर्ग के ऐसे सुख का अनुभव केवल बच्चों को ही प्राप्त हो सकता है। छोटे बच्चों की महानता तक कोई भी विशालता नहीं पहुंच सकती। सब गहराइयों से यह ज्यादा गहरी है। दो बच्चों के, नींद में दिव्यरूप से मिले हुए मुखों पर—उन मुखों पर जिनका मिलना चुंबन भी नहीं कहला सकता—जो करुणा का राग छाया रहता है उसकी बराबरी, मृत्यु के पश्चात् अनन्त काल तक रहनेवाला भयंकर बंधन, टूटे हुए जहाज के प्रति समुद्र की प्रबल शत्रुता, गड़े हुए शरीरों के ऊपर की बरफ की सफेदी भी नहीं कर सकते। शायद यह शादी है, शायद यह बरबादी है ! उनके सम्मिलन पर अज्ञान का भार था। यह लुभाता है, यह डराता है। किसे मालूम, क्या करना है ? सरलता सद्गुण से ऊंची है। सरलता पवित्र अज्ञान है। वे सोये थे, वे शांत थे। वे गरम थे। एक-दूसरे से लिपटे हुए उनके नंगे शरीर, उनकी आत्माओं के क्वारेपन के साथ सम्मिलित हो रहे थे, मानो वे अनन्त के घोंसले में लेटे हों।

४. दूसरे दिन

अंगीठी में अभी भी थोड़ी-सी आग बाकी थी। प्रातःकाल हो आया और दिन का प्रकाश बढ़ने लगा। बालक की अपेक्षा बालिका अधिक गहरी नींद में थी। अन्त में सूर्य-प्रकाश की एक तेज किरण खिड़की के शीशे से पार होकर बालक के चेहरे पर पहुंची और उसने आंखें खोल दीं। बच्चे नींद के बाद सब बातें भूल जाते हैं। वह बालक कुछ-कुछ तंद्रा में लेटा रहा, यह बिना जाने कि वह कहां है, या उसके पास क्या है। उसने कोई बात याद करने की कोशिश भी नहीं की। वह छत को ताकता रहा और उसपर लिखे हुए शब्दों 'दार्शनिक उर्सस' की ओर स्वप्नवत् देखते हुए उन्हें समझने की कोशिश करने लगा। वह पढ़ा-लिखा नहीं था।

बाहर के ताले में चाबी लगने की आवाज़ सुनाई दी। इस पर उसने सिर घुमाया।

दरवाज़ा खुला। सीढ़ियां नीचे की गई। उर्सस लौट आया था। वह सीढ़ियों पर चढ़ा। उसके हाथ में बुझा कंडील था। साथ ही चार पंजों की आवाज़ सीढ़ियों पर सुनाई दी। यह होमो था, जो कि उर्सस के पीछे-पीछे घर लौटा था।

बालक कुछ चौंककर जाग गया। भेड़िया शायद भूखा था, इसलिए उसने जम्हाई ली जिससे अत्यन्त सफेद दांतों की दो पंक्तियां चमक उठीं। वह सीढ़ियों पर कुछ रुककर अन्दर आ गया। यह देख वह लड़का रीछ के चमड़े के अन्दर से निकलकर गहरी नींद में सोई हुई बच्ची के सामने खड़ा हो गया।

उर्सस ने लालटेन को छत के कीले से टांग दिया और चुपचाप कुछ सोचते हुए अपना कमरपट्टा खोलकर भंडारिये में रख दिया। उसने किसी की ओर नहीं देखा और न वह कुछ देखता हुआ ही मालूम होता था। उसकी आंखें कांच के समान चमक रही थीं। उसके मन में कोई गहरी बात घुल रही थी। अन्त में उसके विचार, उसकी आदत के मुताबिक, जल्दी-जल्दी शब्दों में प्रकट होने लगे। वह बोला—

"सब झगड़ों से छूट गई! मर गई! बिल्कुल मर गई!"

वह झुका और उसने अंगीठी में कुछ कोयला डाला और अंगीठी को कुरेदते हुए कहा, "बड़ी मुश्किल से उसे ढूंढ़ सका। अज्ञात की शरारत से वह दो फुट गहरी बरफ के नीचे दब गई थी। यदि होमो, जो कि अपनी नाक से उसी तरह साफ-साफ देखता है जैसा कि कोलम्बस अपने मन से देखता था, साथ न होता तो मैं अभी भी वहीं पर बरफ को कुरेदते हुए

मौत से आंख-मिचौनी खेलता होता। वह कितनी ठंडी थी! मैंने उसका हाथ छुआ—बिल्कुल पत्थर! उसकी आंखों में कितनी चुप्पी थी! पर कोई इतना मूर्ख कैसे हो सकता है कि छोटे से बच्चे को छोड़कर मर जाये? पर अब इस सन्दूक के अन्दर तीन का रहना सुविधाजनक नहीं होगा। यह तो खासा बड़ा परिवार हो गया! एक लड़का और एक लड़की!"

जब उर्संस बोल रहा था, होमो सरकते-सरकते अंगीठी के पास तक पहुंच गया। सोई हुई बच्ची का हाथ पेटी के बाजू से अंगीठी की तरफ लटक रहा था। भेड़िया उसे चाटने लगा। वह इतनी नरमी से चाट रहा था कि बच्ची की नींद टूटने नहीं पाई।

उर्संस ने घूमकर देखा।

"शाबाश, होमो! मैं पिता बनूंगा और तू काका!"

फिर वह ज्ञानी की-सी सावधानी से आग ठीक करने में लग गया। उसका स्वगत-भाषण जारी रहा—

"गोद लेना तय हुआ। होमो राजी है!"

वह सीधा खड़ा हुआ।

"मैं जानना चाहता हूं कि उस स्त्री की मौत के लिए जिम्मेदार कौन है? आदमी है या...?"

उसने आंखें ऊपर उठाईं, किन्तु वह छत के पार देख रहा था और उसके होंठ बोले—

"तू है!"

फिर उसकी आंखें झुक गईं, मानो भार से, और वह बोला—

"रात ने उस स्त्री को मारने का कष्ट उठाया।"

उसकी आंखें उठते ही जागे हुए बालक की आंखों से मिलीं। बालक ध्यान से सुन रहा था। उर्संस ने एकाएक उससे पूछा—

"तू क्यों हँस रहा है, बे?"

बालक ने जवाब दिया—

"मैं नहीं हँसता।"

उर्संस को धक्का-सा लगा; फिर उसने कुछ क्षण बड़े ध्यान से देखा और कहा—

"तब तो तू भयंकर है!"

रात को उस गाड़ी के भीतर इतना अंधेरा था कि उर्संस ने अभी तक उस बालक का चेहरा नहीं देखा था। अब दिन के प्रकाश ने उसे दिखा दिया। उसने अपनी दोनों हथेलियां बालक के दोनों कंधों पर रखकर उसको अधिकाधिक गहराई से देखते हुए, कहा—

"अब ज़्यादा मत हँस !"

"लड़के ने कहा, "मैं हँस नहीं रहा हूं।"

उर्सस को सिर से पैर तक कंपकंपी आ गई।

"तू हँसता है, मैं कहता जो हूं !"

फिर लड़के को ज़ोर से पकड़कर, यदि उसका भाव दया का न होता तो वह क्रोध का मालूम होता, उसने सख़्ती से पूछा—

"ऐसा तुझे किसने बनाया ?"

बालक बोला—

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"तेरे चेहरे पर यह हँसी कितने समय से है ?"

बालक ने कहा, "मैं सदा से ऐसा ही हूं।"

उर्सस पेटी की ओर मुड़ा, आहिस्ता से यह कहते हुए, "मैंने सोचा था कि यह काम अब बन्द हो गया है।"

उसने पेटी पर जो किताब तकिये के बतौर रखी थी, वह धीरे से उठाई, ताकि बच्ची जाग न जाय।

फिर वह बोला, "ज़रा 'कांपचेस्ट'[१] में तो देखूं।"

उसने कुछ पृष्ठ उलटे और एक जगह रुककर वह पढ़ने लगा, "बेशक, यही तो है !"

फिर उसने किताब भंडारिये पर रख दी, यह बड़बड़ाते हुए कि, "इस तरह के मामले में बहुत गहरी छानबीन करना ठीक नहीं। हम सतह पर ही रहेंगे। हँसते रहो, बेटा !"

उसी समय छोटी बच्ची जाग उठी। उसकी चीख ही अभिवादन थी।

उर्सस ने कहा, "आओ दाई, उसे दूध पिलाओ।"

बालक उठ बैठा। उर्सस ने अंगीठी पर से बोतल उठाकर बच्ची को चूसने के लिए दी।

अब सूरज निकल आया था। वह क्षितिज पर था। उसकी लाल किरणें शीशे में से चमक रही थीं और बच्ची के चेहरे पर पड़ रही थीं। बच्ची का चेहरा उर्सस की ओर था। उसकी आंखों की पुतलियां सूर्य की ओर जमी हुई थीं और उनमें सूर्य का लाल बिम्ब दर्पण के समान चमक रहा था। पुतलियां स्थिर थीं, उसी प्रकार पलकें भी।

उर्सस बोल उठा, "अरे, यह तो अंधी है !"

---

[१] पुस्तक का नाम।

मौत से आंख-मिचौनी खेलता होता। वह कितनी ठंडी थी! मैंने उसका हाथ छुआ—बिल्कुल पत्थर! उसकी आंखों में कितनी चुप्पी थी! पर कोई इतना मूर्ख कैसे हो सकता है कि छोटे से बच्चे को छोड़कर मर जाये? पर अब इस सन्दूक के अन्दर तीन का रहना सुविधाजनक नहीं होगा। यह तो खासा बड़ा परिवार हो गया! एक लड़का और एक लड़की!"

जब उर्सस बोल रहा था, होमो सरकते-सरकते अंगीठी के पास तक पहुंच गया। सोई हुई बच्ची का हाथ पेटी के बाजू से अंगीठी की तरफ लटक रहा था। भेड़िया उसे चाटने लगा। वह इतनी नरमी से चाट रहा था कि बच्ची की नींद टूटने नहीं पाई।

उर्सस ने घूमकर देखा।

"शाबाश, होमो! मैं पिता बनूंगा और तू काका!"

फिर वह ज्ञानी की-सी सावधानी से आग ठीक करने में लग गया। उसका स्वगत-भाषण जारी रहा—

"गोद लेना तय हुआ। होमो राजी है!"

वह सीधा खड़ा हुआ।

"मैं जानना चाहता हूं कि उस स्त्री की मौत के लिए जिम्मेदार कौन है? आदमी है या...?"

उसने आंखें ऊपर उठाईं, किन्तु वह छत के पार देख रहा था और उसके होंठ बोले—

"तू है!"

फिर उसकी आंखें झुक गईं, मानो भार से, और वह बोला—

"रात ने उस स्त्री को मारने का कष्ट उठाया।"

उसकी आंखें उठते ही जागे हुए बालक की आंखों से मिलीं। बालक ध्यान से सुन रहा था। उर्सस ने एकाएक उससे पूछा—

"तू क्यों हंस रहा है, बे?"

बालक ने जवाब दिया—

"मैं नहीं हँसता।"

उर्सस को धक्का-सा लगा; फिर उसने कुछ क्षण बड़े ध्यान से देखा और कहा—

"तब तो तू भयंकर है!"

रात को उस गाड़ी के भीतर इतना अंधेरा था कि उर्सस ने अभी तक उस बालक का चेहरा नहीं देखा था। अब दिन के प्रकाश ने उसे दिखा दिया। उसने अपनी दोनों हथेलियां बालक के दोनों कंधों पर रखकर उसे अधिकाधिक गहराई से देखते हुए, कहा—

"अब ज़्यादा मत हँस !"

"लड़के ने कहा, "मैं हँस नहीं रहा हूं।"

उर्सस को सिर से पैर तक कंपकंपी आ गई।

"तू हँसता है, मैं कहता जो हूं !"

फिर लड़के को जोर से पकड़कर, यदि उसका भाव दया का न होता तो वह क्रोध का मालूम होता, उसने सख्ती से पूछा—

"ऐसा तुझे किसने बनाया ?"

बालक बोला—

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"तेरे चेहरे पर यह हंसी कितने समय से है ?"

बालक ने कहा, "मैं सदा से ऐसा ही हूं।"

उर्सस पेटी की ओर मुड़ा, आहिस्ता से यह कहते हुए, "मैंने सोचा था कि यह काम अब बन्द हो गया है।"

उसने पेटी पर जो किताब तकिये के बतौर रखी थी, वह धीरे से उठाई, ताकि बच्ची जाग न जाय।

फिर वह बोला, "ज़रा 'कांपचेस्ट'[1] में तो देखूं।"

उसने कुछ पृष्ठ उलटे और एक जगह रुककर वह पढ़ने लगा, "बेशक, यही तो है !"

फिर उसने किताब भंडारिये पर रख दी, यह बड़बड़ाते हुए कि, "इस तरह के मामले में बहुत गहरी छानबीन करना ठीक नहीं। हम सतह पर ही रहेंगे। हँसते रहो, बेटा !"

उसी समय छोटी बच्ची जाग उठी। उसकी चीख ही अभिवादन थी।

उर्सस ने कहा, "आओ दाई, उसे दूध पिलाओ।"

बालक उठ बैठा। उर्सस ने अंगीठी पर से बोतल उठाकर बच्ची को चूसने के लिए दी।

अब सूरज निकल आया था। वह क्षितिज पर था। उसकी लाल किरणें शीशे में से चमक रही थीं और बच्ची के चेहरे पर पड़ रही थीं। बच्ची का चेहरा उर्सस की ओर था। उसकी आंखों की पुतलियां सूर्य की ओर जमी हुई थीं और उनमें सूर्य का लाल बिम्ब दर्पण के समान चमक रहा था। पुतलियां स्थिर थीं, उसी प्रकार पलकें भी।

उर्सस बोल उठा, "अरे, यह तो अंधी है !"

---

[1] पुस्तक का नाम।

दूसरा खण्ड

: १ :

भूतकाल की स्थायी उपस्थिति

१. लार्ड क्लैनचार्ली

१

उन दिनों लार्ड लीनल क्लैनचार्ली के बारे में एक पुरानी किंवदन्ती प्रचलित थी।

लीनस बैरन क्लैनचार्ली क्रामवेल के ज़माने में हुआ था। वह इंग्लैंड के उन थोड़े से लार्डों में से था जिन्होंने रिपब्लिक, प्रजातन्त्र, को स्वीकार किया था। उसके प्रजातन्त्र को स्वीकार करने का कारण यह मालूम होता है कि उस समय प्रजातन्त्र की विजय हो रही थी। ऐसी हालत में यह तो मामूली व्यवहार की बात थी कि जबतक प्रजातन्त्र का वर्चस्व था तबतक लार्ड क्लैनचार्ली उसका साथ देता; परन्तु क्रान्ति का अन्त हो जाने और पार्लमिंटरी शासन-प्रणाली का पतन हो जाने के बाद भी लार्ड क्लैन-चार्ली प्रजातन्त्र का ही भक्त बना रहा। उसके लिए नये हाउस आफ लार्ड्स् का मेम्बर बन जाना आसान बात थी, और जैसा कि अक्सर हुआ करता है, राजगद्दी की पुनःस्थापना के समय उसे क्षमा भी मिल सकती थी। इसके अलावा इंग्लेंड का नया राजा द्वितीय चार्ल्स, जो उसकी सत्ता को स्वीकार करनेवालों के प्रति दयालुता का व्यवहार करता था, तो भी लार्ड क्लैनचार्ली ने इस नये अवसर के अनुकूल कार्य नहीं किया।

उस आनन्द से उसने अपना मुंह मोड़ लिया। वह स्वयं देश छोड़कर चला गया। जबकि वह लार्ड बन सकता था, उसने विद्रोही बने रहना पसन्द किया। इस तरह वर्षों गुजर गए। वह बूढ़ा हो गया, किन्तु मृत प्रजा-सत्ता के प्रति उसकी भक्ति ज्यों-की-त्यों बनी रही और इसलिए उसको मज़ाक का मुकुट पहनना पड़ा, जो कि ऐसी मूर्खता का स्वाभाविक पारितोषिक है।

वह स्विट्ज़रलैंड चला गया था और वहां जेनेवा-झील के किनारे एक ऊंचे खंडहर में रहता था। मृदुल प्रकाश, तेज़ हवा और बादलों से परिपूर्ण अनन्त शिखरोंवाली आल्प्स की पर्वतमालाएं उसको घेरे हुए थीं और वह वहां पर पर्वतों की विस्तृत छायाओं के बीच छिपा हुआ रहता था। किसी आते-जाते पथिक से भी उसकी भेंट शायद ही होती थी। वह अपने देश से भी दूर था और अपने जमाने से भी। उस जमाने में जो लोग राजनैतिक मामलों के जानकार थे, उनको व्यवस्थित सत्ता का विरोध करना किसी प्रकार भी न्याय्य नहीं मालूम होता था। इंग्लैंड सुखी था, राजतंत्र की पुनःस्थापना पति और पत्नी के बीच मेल हो जाने के समान है। राजा और प्रजा एक दूसरे से मिलते हैं, इससे अधिक सुन्दर और सुखमय अवस्था और कौन-सी हो सकती है! इंग्लैंड आनन्द से फूल रहा था। राजा की प्राप्ति ही बड़ी भारी बात है—इससे भी अधिक यह कि वह राजा चित्ताकर्षक था। राजा द्वितीय चार्ल्स प्रेमी था, आनन्दप्रिय था, उसपर भी शासन करने की योग्यता रखता था। वह वास्तव में सज्जन था। प्रजा उस पर मुग्ध थी। उसने हनोवर[1] से युद्ध किया था। युद्ध का कारण सिवा उसके और किसीको नहीं मालूम। उसने डनकर्क[2] फ्रांस को बेच दिया था, राजनीति के दांव-पेंच के लिए। व्हिग लार्ड, जिनके बारे में चैम्बरलैन कहता है कि "उच्च घरानों के बहुत-सों को इस पापिष्ठ प्रजा-तन्त्र की हवा लग गई थी," जमाने का रंग धारण करते हुए बुद्धिमानी के साथ होनहार के सामने झुक गए और हॉउस आफ लॉर्डस् को सुशोभित करने लगे। इसके लिए राजभक्ति की शपथ लेना ही काफी था। प्रजा को गौरवान्वित शासन, अच्छा राजा और दैवी कृपा से आदरणीय राजकुमार भी प्राप्त हो गये थे। मॉङ्क और बाद में जेफ्रीज़ जैसे बड़े-बड़े आदमी सिंहा-सन के रक्षक बनकर आगे बढ़े थे और उनकी राजभक्ति तथा उत्साह के बदले में उनको ऊंची-ऊंची नियुक्तियां और बड़ी बड़ी तनख्वाहों के पद दिये गए थे। लार्ड क्लैनचार्ली से ये बातें छिपी नहीं थीं और यदि वह चाहता तो ऐसे महापुरुषों के साथ सम्मान और शान से बैठ सकता था। इस समय इंग्लैंड अपने राजा की कृपा से उन्नति के शिखर पर पहुंच गया था। लंदन भोजों और उत्सवों से जगमगा रहा था। प्रत्येक मनुष्य धनवान और उत्साही हो रहा था और राज-दरबार में वीरता, प्रसन्नता और शान की बाढ़-सी आ रही थी। पर उस समय लार्ड क्लैनचार्ली इन राग-रंगों से दूर आल्प्स के एकांत में दिन काट रहा था। वह उदासी से भरे हुए

[1] जर्मनी की एक रियासत। [2] इंग्लैंड का एक शासित प्रदेश।

अनिर्वचनीय धुंधले-से प्रकाश में साधारण आदमियों के समान कपड़े पहने रहता था। उसका चेहरा मारे चिन्ताओं के पीला हो रहा था।

वह अन्यमनस्क था, मानो कब्र की राह पर खड़ा हो। उसे तूफान और शीत ऋतु की परवा न थी। जहां जी चाहता, भटकता था। कभी झीलों के किनारे घंटों खड़ा रहता तो कभी उन बर्फीली घाटियों में घूमता रहता। भला ऐसे विचार-मग्न, पागल, एकाकी, सनकी बूढे को देखकर किसे न हंसी आयेगी ?

सचमुच वह पागल-सा था। इस एकांतवास से प्रकट होनेवाली उसकी उद्धतता को देखकर समझदार आदमियों को आघात पहुंचता था।

२

अपने साथ के आदमियों को जिद करते देखना अच्छा नहीं मालूम होता। जिद्दी आदमी दोष के समान हैं और हमें उनपर हँसने का हक है।

लार्ड क्लैनचार्ली की यह सनक अति की सीमा तक जा पहुंची थी और समझदार आदमियों की रीति है कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'। आप चाहें विरोध करें, चाहें दोष भी दें, किन्तु कीजिये यह सज्जनता के साथ। यह सब ढंग से कीजिये और सदा 'राजा की जय' भी पुकारते रहिये। व्यवहार-कुशलता ही सच्चा सद्गुण है—परमात्मा सोच-समझकर ही सब काम करता है। जो योग्य होता है उसीके सिर पर वह मुकुट रखता है। क्या तुम परमात्मा से भी अधिक बुद्धि रखने का दावा करते हो ! जब मामला तय हो जाये, जब एक के स्थान पर दूसरा शासन स्थापित हो जाये, जब सफलता की तराजू में सच और झूठ का तोल हो जाये, एक ओर हार और दूसरी ओर जीत का मुकाबला हो जाये, तब तो शक की कोई गुंजाइश ही नहीं। ईमानदार आदमी विजेता के पक्ष में हो जाता है। हां, इससे उसकी सम्पत्ति और परिवार की प्रतिष्ठा जरूर बढ़ जाती है, पर क्या वह इस तुच्छ लोभ के लिए वैसा काम करता है ? वह तो केवल लोकहित का ध्यान करके हृदय से अपना हाथ विजेता की ओर बढ़ाता है।

जरा ख्याल कीजिये, यदि कोई भी मनुष्य राज का कार्य करना स्वीकार न करे तो राजा की अवस्था क्या हो जाये ? क्या सारा कारोबार बिल्कुल रुक न जाये ? प्रत्येक अच्छे नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी जगह पर कायम रहे। अपनी गुप्त इच्छाओं का बलिदान करना सीखे। खाली जगह तो भरनी ही पड़ेगी और किसी-न-किसी को अवश्य ही आत्म-त्याग करना पड़ेगा। सार्वजनिक कार्यों के प्रति ईमानदारी ही सच्ची राज-भक्ति है। यदि सार्वजनिक कार्यकर्ता कार्य छोड़ दें तो सारा राज्य अपंग हो जाये। यह अभिमान ! कैसी अवज्ञा ! कैसी उद्दंडता ! अरे

मैं हैरान हूं, तुम अपनेको क्या समझते हो ? तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि हम भी उतने ही अच्छे हैं जितने कि तुम हो। यदि हम चाहें तो तुमसे भी अधिक अदम्य और विकट हो सकते हैं और तुमसे भी अधिक बुरे काम कर सकते हैं; किन्तु हम समझदार होना ज्यादा पसन्द करते हैं। समझे !

३

जैसा कि हम अभी कह चुके हैं, आनन्द का प्याला लबालब भर रहा था। राजा की हत्या करनेवालों को फांसी पर लटकाने से सार्वजनिक आह्लाद और भी बढ़ गया था।[1] राजगद्दी की पुनः स्थापना मुस्कराहट के समान है। किन्तु ऐसे समय की फांसियां बेमौके नहीं होतीं, क्योंकि जनता की अन्तरात्मा को भी तो सन्तोष होना चाहिए। इसके बाद जनता की एकमात्र महत्वाकांक्षा अच्छी प्रजा बनना था। कानून के विरोध का भाव निकल गया था। राजपद का पुनर्निर्माण हुआ था। मनुष्य राजनीति की मूर्खता के प्रभाव को दूर कर चुके थे। वे मुंह बनाकर क्रांति को चिढ़ाते थे। वे प्रजातन्त्र का मज़ाक उड़ाते थे और उस ज़माने पर जबकि "अधिकार, स्वतन्त्रता, उन्नति" के शब्द हरेक ज़बान पर थे, वे हँसते थे कि ये सब कोरी डींगें हैं ! व्यवहार-ज्ञान का फिर उदय होना प्रशंसनीय था। इंग्लैंड स्वप्न देख रहा था। ऐसी भूलों को सुधार लेना कितने आनन्द की बात है ! और इसके समान पागलपन भी क्या कोई अन्य हो सकता है ! ज़रा सोचिये, यदि प्रत्येक मनुष्य अपना अधिकार चलाने लगे तो हमारी अवस्था क्या हो जाये ! खयाल कीजिये कि राजकाज में हरेक का हाथ रहे तो कैसी गड़बड़ी मच जाये ? क्या तुम कल्पना भी कर सकते हो कि किसी नगर का शासन सब नगर-निवासी करें ! अरे, नगर-निवासी तो घोड़े हैं, वे घोड़े हांकनेवाले नहीं बन सकते। किसी मामले का निर्णय वोट (मत) द्वारा करना उस मामले को हवा में उड़ा देने के समान है। क्या तुम राजकाज को बादलों के समान उड़ा दोगे ? अगर खुद प्रलय-देवता को इमारत बनाने का काम दिया जाय तो क्या खंडहर होगा ! पर ज़रा गहराई से विचार कीजिये आप जिसे स्वाधीनता कहते हैं उसमें कितना स्वेच्छाचार है ! मुझसे पूछो तो मैं तो मौज उड़ाना चाहता हूं, शासन करना नहीं चाहता।

---

[1] जब प्रजातन्त्र स्थापित हुआ तो इंग्लैंड के राजा द्वितीय चार्ल्स पर बाकायदा मुकदमा चलाकर उसे कत्ल किया गया था। प्रजातन्त्र के नष्ट होते ही राज्यहत्या के लिए प्रजातन्त्र के मुखियाओं को फांसी की सजा दी गई थी। प्रजातन्त्र का प्रधान क्रामवेल उस समय तक मर चुका था। उसकी लाश कब्र में से निकालकर फांसी पर टांगी गई थी !

वोट देना आफ़त है। मैं तो नाचना चाहता हूं। राजा परमात्मा है और वह सबकी फिकर रखता है। वास्तव में राजा कितना उदार है! ओहो! वह हमारे लिए इतना कष्ट उठाता है! इसके अलावा उसमें यह गुण पैदाइश से ही रहता है। वह इस काम को अच्छी तरह जानता है। यह काम उसीका है। संधि, विग्रह, कानून, आर्थिक-व्यवस्था—जनता को इन बातों से क्या मतलब? हां, लोगों को कर देना पड़ता है। यह तो राज-सेवा है। उनके लिए यह काफी है। राजनीति में उनके लिए भी स्थान है। उनसे दो मुख्य चीजें मिलती हैं, सिपाही और धन। कर देना और सैनिक सेवा भी करना, क्या प्रजा का यह कम सन्मान है? उन्हें इससे ज्यादा और क्या चाहिए? वे सैनिक और आर्थिक भुजाएं हैं। कितना भव्य पद! राजा उनके लिए राज्य करता है। उसके लिए राजा को पुरस्कार मिलना चाहिए। प्रजा टैक्स और राजा के खर्च के रूप में राजा को तनख्वा देती है जिसका कि वह हकदार है। प्रजा अपना धन और खून देती है, उसके बदले में राजा उसका नेतृत्व करता है। अपना नेतृत्व खुद करने की इच्छा, कितनी मूर्खता का विचार है! प्रजा को सदा पथप्रदर्शक की आवश्यकता रहती है। प्रजा क्योंकि अज्ञानी होने के कारण अंधी है, इसलिए क्या अंधे के साथ उसका कुत्ता नहीं होता? फिर प्रजा के पास कुत्ते के बजाय शेर है, वह शेर राजा है, जो कि कुत्ते का-सा काम करना मंजूर करता है। यह उसकी कितनी भारी मेहरबानी है! किन्तु यह बताइए कि लोग अज्ञानी क्यों हैं? क्योंकि उसमें उनका फायदा है। अज्ञान सद्गुण का संरक्षक है। जहां सोचने की शक्ति नहीं, वहां महत्वाकांक्षा नहीं। अज्ञानी का अंधकार उपयोगी है; क्योंकि वह अंधकार उसे अंधा बना देता है, और अंधा होने के कारण उसे लोभ नहीं होता, जिससे वह निर्दोष बना रहता है। जो पढ़ा-लिखा है, वह सोचता है। जो सोचता है वह तर्क करता है। किन्तु तर्क न करना ही प्रजा का धर्म है और उसीमें उसका सुख भी है। ये सत्यनाएं अकाट्य हैं। समाज उन्हीं पर स्थापित है।

हम जानते हैं कि सन् १६५० में पार्लामेंट ने यह प्रतिज्ञा निश्चित की थी, "मैं बिना राजा, बादशाह या लार्ड के, रिपब्लिक के प्रति ईमानदार रहने का वादा करता हूं।" इस भयंकर प्रतिज्ञा का बहाना लेकर, लार्ड क्लैनचार्ली राज्य के बाहर रहने को चला गया था और सार्वजनिक आनन्द के समय वह सोचता था कि मुझको उदासी धारण करने का अधिकार है। जो कुछ अब विद्यमान नहीं रहा, उसके प्रति उसका आदर-भाव अभी तक कायम था।

उसको क्षमा करना असम्भव था। दयालु-से-दयालु ने भी उसका [illegible]

छोड़ दिया था। उसके मित्रों ने यह जाहिर करना शुरू कर दिया था कि वह रिपब्लिकनों के साथ इसलिए शामिल हुआ था कि रिपब्लिकनों के भीतर घुसकर उनकी कमजोरियों को देखे, ताकि जब राजा को गद्दी पर बैठाने का पवित्र अवसर आये, तब अधिक सफलता के साथ रिपब्लिकनों पर आक्रमण कर सके। इस प्रकार उचित अवसर आने पर दुश्मन पर पीछे से मर्मान्तिक आघात करने की ताक में छिपे बैठे रहना राजभक्ति का एक अंग है। लोग क्लैनचार्ली के कार्य को अनुकूल दृष्टि से देखने के इतने इच्छुक थे कि वे आशा करते थे कि वह भी इसी प्रकार व्यवहार करेगा; किन्तु रिपब्लिक के सिद्धांतों में उसकी यह विचित्र दृढ़ता देखकर क्लैन-चार्ली के बारे में लोगों का खयाल उतना ऊंचा नहीं रहा। प्रकट था कि लार्ड क्लैनचार्ली का विश्वास अटल हो चुका था—अर्थात् वह बुद्धू था!

जो लोग उसकी ओर नरमी दिखाते थे उनमें से कुछ का कहना था कि उसमें बच्चों जैसी जिद है, और कुछ का कहना था कि बुढ़ापे का हठ है।

जो दृढ़ और न्यायी थे वे और भी आगे बढ़े। वे तो इस राज-शत्रु का नाम ही मिटा देना चाहते थे। मूर्खता के भी अधिकार रहते हैं, किन्तु उसकी सीमा भी होती है। कोई आदमी चाहे पशु बन जाये, परन्तु उसे बलवाई होने का कोई अधिकार नहीं है। और, आखिर को, यह लार्ड क्लैनचार्ली था क्या चीज? भगोड़ा! यह अपने दल (रईसों) से भागकर शत्रुओं (जनता) के दल में जा मिला था। यह ईमानदार आदमी विश्वासघाती था। यह सच है कि उसने बलवान् के साथ विश्वासघात किया था और निर्बल के साथ ईमानदारी। यह सच है कि जो पक्ष उसने छोड़ा था वह विजयी पक्ष था और जो पक्ष उसने स्वीकार किया था वह विजित था। यह भी सच है कि इस विश्वासघात के कारण उसका सबकुछ छिन गया—उसके राजनैतिक अधिकार और उसका घर-द्वार, उसकी उपाधि और उसका देश। उसको कुछ नहीं मिला और उसका मजाक उड़ाया गया। उसे कोई लाभ नहीं हुआ और देश-निकाला सहना पड़ा। किन्तु इन सबसे साबित क्या होता है? यही न कि वह बेवकूफ था!

स्पष्ट है कि वह मूर्ख और विश्वासघाती दोनों था। आदमी जितना चाहे उतना बड़ा मूर्ख बना रहे, परन्तु दूसरों के लिए बुरा उदाहरण न बने। मूर्खों को विनम्र होना चाहिए और उसके बदले में वे राजसत्ता की नींव बनने का कार्य कर सकते हैं। क्लैनचार्ली के मन का ओछापन समझ में नहीं आता था। उसकी आंखें अभी भी क्रान्ति की माया से चौंधिया रही थीं। उसने अपनेको रिपब्लिक के प्रवाह में बह जाने दिया था और अब अपने आपको उठाकर बाहर फेंक दिया। वह तो अपने देश के लिए अपमानस्वरूप

था ! उसने जो भाव धारण किया था वह प्रत्यक्ष महापातक था। उसकी अनुपस्थिति ही अपमान थी। वह सार्वजनिक आनन्द से उसी प्रकार दूर रहा जैसे कि लोग प्लेग से दूर रहते हैं। उसने राजभक्ति को छूत की बीमारी माना और राजगद्दी की पुनःस्थापना के सार्वजनिक आनन्द के समय वह शोकसूचक काली पताका के समान था।

मांक को देखिये। वह रिपब्लिकन सेना का सेनापति था। राजा द्वितीय चार्ल्स उसकी ईमानदारी की तारीफ सुनकर उसको पत्र लिखता है। मांक में सद्गुण और व्यवहार-ज्ञान दोनों हैं। पहले तो वह रिपब्लिकन बनता है, फिर एकाएक अपनी सेना ले जाकर बलवाई पार्लामेंट को तोड़ देता है और राजा को फिर से सिंहासन पर बैठा देता है। मांक एकदम एलबीमारली के ड्यूक की उपाधि पाता है, समाज-रक्षक की हैसियत से उसका सम्मान होता है, उसे खूब धन मिलता है, उसके जमाने पर उसका गौरव छा जाता है, वह 'नाइट आफ गार्टर' की उपाधि से विभूषित किया जाता है और यह आशा बंधती है कि वह वेस्टमिन्स्टर[1] ऐब्रे में दफनाया जायगा। ब्रिटिश ईमानदारी के इनाम में यह गौरव मिला करता है !

लार्ड क्लैनचार्ली कर्तव्य के इस ऊंचे भाव तक नहीं उठ सकता था। उसमें देश-बहिष्कृत का मद और गर्व था। वह खोखले शब्दों से ही मनुष्य था। अभिमान के कारण उसकी जबान बन्द थी। 'अन्तरात्मा' और 'आत्माभिमान' अन्त में शब्द ही हैं; हमें तो गहराई तक जाना चाहिए। लार्ड क्लैनचार्ली उस गहराई तक नहीं पहुंचा था। उसकी दृष्टि इकहरी थी, वह दूसरा पहलू नहीं देखता था। वह आदमी राजनीतिज्ञ हो ही नहीं सकता जो कि इस तरह बारीक ख्यालों के पीछे मतवाला हो जाये। अन्तरात्मा की अधिकता निर्बलता उत्पन्न करती है। जब राजदण्ड छीनना हो तब सिद्धांत लूला पड़ जाता है और जब सौभाग्यश्री का आलिंगन करना हो तब वह नपुंसक हो जाता है। सिद्धान्तों का विश्वास मत करो। वे तुम्हें न जाने कहां घसीटकर ले जायंगे। विचारहीन भक्ति उस नसैनी के समान है जो कि गुफा के अन्दर जाती है—एक सीढ़ी नीचे, फिर नीचे, फिर नीचे और तुम अंधकार में पहुंच गये। जो चतुर हैं वे ऊपर चढ़ आते हैं, जो मूर्ख हैं वे वहीं रह जाते हैं। अन्तरात्मा को इस प्रकार की उग्रता नहीं धारण करने देना चाहिए। यदि वह उग्र बनी रही तो अन्त में वह राजनैतिक पाखण्ड के घने अंधकार में पहुंच जाती है। तब आदर्शी ना

[1] लंदन का प्रधान गिरजाघर, जहां पर इंग्लैंड के राजा और राष्ट्रीय ख्याति के राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक, चित्रकार वगैरा दफनाये जाते हैं।

सर्वनाश हो जाता है। लार्ड क्लैनचार्ली की भी यही अवस्था हुई।

सिद्धान्त खंदक में ले जाकर छोड़ते है।

वह जेनेवा-झील के किनारे पीछे की ओर हाथ बांधे घूमा करता था।

लदन में कभी-कभी इस निर्वासित की चर्चा हुआ करती थी। लोकमत की अदालत में उस पर इलज़ाम भी लगते थे। उसके पक्ष और विपक्ष में बहसें भी होती थीं। नतीजा यह होता था कि वह बेवकूफ समझकर बरी कर दिया जाता था।

पहले प्रजातंत्र के बहुत-से उत्साही मित्र अब स्टुअर्ट राजा के पक्ष में हो गए थे। इसके लिए उनकी तारीफ होती थी। वे स्वभावतः क्लैनचार्ली की थोड़ी-बहुत बुराई कर दिया करते थे। पर ज़िद्दी लोग शिकायतों की कब परवा करते हैं? राज-दरबार में प्रतिष्ठित और कृपापात्र समझदार आदमी उसके इस अप्रिय व्यवहार से ऊब उठे थे और उन्हें यह कहते हुए बड़ी खुशी होती थी कि "वह राजा के पक्ष में नहीं आया, इसका कारण यह है कि उसको काफी धन नहीं मिला," इत्यादि। "वह चांसलर का पद लेना चाहता था, लेकिन वह पद राजा ने हाइड को दे दिया।" उसका एक पुराना मित्र तो चुपके से यहांतक कह दिया करता था कि "यह बात खुद उसने मुझसे कही है।" यद्यपि क्लैनचार्ली बहुत दूर एकान्त में रहता था तो भी दूसरे निर्वासितों के द्वारा इनमें की कुछ-कुछ बातें उसके पास तक पहुंच जाती थीं। वह सुनकर कंधे हिला देता था, जो कि ह्रास की निशानी है। एक बार इस हरकत के साथ धीमी-सी आवाज में उसने ये शब्द भी कह दिये थे—"जो लोग ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं, उन पर मुझे दया आती है।"

८

चार्ल्स द्वितीय नेक आदमी था। वह उसकी परवा नहीं करता था। चार्ल्स की अधीनता में इंग्लैंड का सुख आनन्द से भी अधिक था, वह मुग्ध-सा था। राजा की पुनःस्थापना पुराने तैलचित्र के समान है, जो कि पुराना होने के कारण काला पड़ गया हो, और अब जिस पर फिर से वार्निश चढ़ाई गई हो। उससे समस्त भूतकाल फिर से प्रकट हो जाता है, पुरानी अच्छी प्रथाएं वापस आ जाती हैं, सुन्दर स्त्रियां शासन करने लगती हैं। ईवलीन ने लिखा है, "विलासिता, अधार्मिकता, ईश्वर के प्रति तुच्छता! मैंने इतवार की शाम राजा को क्रीड़ा-भवन में अपनी रखेलियों, पोर्टसमथ, क्लीवलैंड, मैजेरिन तथा दूसरी दो-तीन के साथ, सबको प्रायः नंगा देखा।" हम समझते हैं कि इस वर्णन से ईवलिन का शिकायत करने का स्वभाव प्रकट होता है; क्योंकि प्युरिटन-मतावलम्बी होने के कारण उसकी शिकायत

करने की आदत थी और उसमें रिपब्लिक की भक्ति का भी दूषण था। राजा के भोग-विलासों और आनन्दोत्सवों के उदाहरणों के लाभ को वह नहीं समझता था, आखिर को उनमे विलासिता तो कायम रहती है। वह व्यभिचार की उपयोगिता नहीं जानता था। सिद्धान्त यह है : कि यदि तुम सुन्दर स्त्रियां चाहते हो तो व्यभिचार को नष्ट मत करो। यदि तुम नष्ट करोगे तो तुम उन मूर्खों के समान होगे जो कि तितली को तो चाहते है, परन्तु उसके अंड-कोष को नष्ट कर देते हैं।

चार्ल्स द्वितीय को, जैसा कि हम कह चुके हैं यह मुश्किल से याद होगा कि क्लैनचार्ली नाम का कोई विद्रोही कहीं पर है। किन्तु द्वितीय जेम्स अधिक सावधान था। चार्ल्स का शासन नम्र था। उसका तरीका ही वैसा था। हमें कहना पड़ेगा कि उसके कारण उसका शासन कुछ खराब नहीं था। मल्लाह हवा के असर को कम करने के लिए बाँध हुए रस्से में कभी-कभी एक ढीली गांठ लगा देते हैं और उसे कसने का काम तूफान पर छोड़ देते हैं। तूफान और जनता की मूर्खता ऐसी ही होती है।

वह ढीली गांठ बहुत जल्दी कड़ी हो जाती है। उसी प्रकार चार्ल्स का शासन भी कड़ा हो गया।

घर में दो वलवाइयों को शरण दी थी, इसलिए वह फांसी पर चढ़ा दी गई! एक दूसरा वलवाई इतना सच्चा था कि उसने बता दिया कि अमुक एना वैप्टिस्ट स्त्री ने मुझे पनाह दी थी, इसलिए उस वलवाई को तो क्षमा कर दिया गया और वह स्त्री जिंदा जला दी गई! कर्क ने एक-दूसरे मौके पर एक शहर को, सजा दी, यह कहकर कि मैं जानता हूं कि तुम्हारे सिद्धान्त रिपब्लिकन हैं। उसके उन्नीस प्रतिनिधियों को फांसी पर लटका दिया। ये सख्तियां अवश्य ही जायज थीं; क्योंकि यह न भूल जाना चाहिए कि क्राम-वेल के जमाने में उन लोगों ने गिरजाघरों की देवमूर्तियों के नाक-कान काट डाले थे। जेम्स द्वितीय, जिसने कि जेफ्रीज और कर्क को पसन्द करने की बुद्धिमानी की थी, नितान्त धार्मिक आदमी था। उसकी तपश्चर्या इस बात में थी कि वह कुरूप स्त्रियों को रखे हुए था।

यह हो नहीं सकता कि ऐसा राजा लार्ड क्लैनचार्ली के समान वलवाई का कुछ खयाल न रखता। वंशानुगत लार्ड के पद का भविष्य पर बहुत असर पड़ता है और यह प्रकट था कि उस लार्ड के बारे में यदि किसी अह-तियात की जरूरत थी तो उसके बारे में राजा जेम्स हिचकनेवाला नहीं था।

२. लार्ड डेविड डिरी-मोयर

१

लार्ड लीनस क्लैनचार्ली सदा से ही वहिष्कृत और बूढ़ा नहीं था। उसमें कभी जवानी और जोश भी था। उस समय जवानी के मद में उससे गल-तियां भी हो गई थीं। उस समय यह जाहिर हुआ था कि उसके एक जारज लड़का हुआ था। यह लड़का रिपब्लिक के आखिरी वक्त, जबकि वह देश छोड़कर बाहर जा रहा था, पैदा हुआ था। यह जारज बाद में चार्ल्स द्वितीय के दरबार में हुजूरे के तौर से पला था। वह लार्ड डेविड डिरी-मोयर कह-लाता था। लार्ड की उपाधि उसको शिष्टाचार के कारण मिली थी, क्योंकि उसकी मां ऊंचे खानदान की थी। जब लार्ड क्लैनचार्ली बेवकूफ की तरह स्विट्जरलैंड में जा छिपा था तब इस माता ने सुन्दरी होने के कारण संकोच छोड़ने का निश्चय कर लिया था और उसके नये प्रेमी ने, जो कि निःसंशय ज्यादा ऊंचे खानदान का और राजपक्ष का था, खुद राजा ही था, उस स्त्री को पहले रिपब्लिकन से प्यार करने के लिए क्षमा कर दिया।

वह कुछ समय तक राजा चार्ल्स की रखेल के तौर पर रही। रिपब्लि-कन से ऐसी सुन्दर स्त्री हस्तगत करने के कारण राजा प्रसन्न था, और छोटा लार्ड डेविड अब राजा का विजय-पुत्र था। उस स्त्री ने लार्ड डेविड

को राजा से चोबदार का पद दिलवा दिया था। इस पद के कारण लार्ड डेविड डिरी-मोयर को राजा के खर्च से भोजन मिलता था और वह स्वभावतः स्टुअर्ट-राजवंश का कट्टर अनुयायी हो गया था। एक समय लार्ड डेविड उन एक सौ सत्तर अफसरों में से था जिन्हें बड़ी तलवार बांधने का अधिकार था। बाद में पेंशनरों की श्रेणी में उसका तबादला होजाने के कारण वह उन चालीस अफ़सरों की श्रेणी में दाखिल हो गया जिनको सुनहला फ़रसा रखने का हक था। इसके अलावा राजा आठवें हेनरी के बनाये हुए शरीर-रक्षा-दल का सदस्य होने के कारण उसको राजा के टेबल पर भोजन परोसने का भी अधिकार मिल गया। इस प्रकार जब उसका पिता विदेश में बूढ़ा हो रहा था, उस समय लार्ड डेविड राजा चार्ल्स की अधीनता में उन्नति कर रहा था।

इसके बाद राजा जेम्स द्वितीय के ज़माने में भी उसकी उन्नति जारी रही।

राजा मर गया। राजा की बड़ी उम्र हो!

ड्यूक ऑफ यार्क के गद्दी पर बैठने के समय उसे लार्ड डेविड डिरी-मोयर कहलाने की इजाज़त मिल गई; क्योंकि उस समय उसकी मां के मर जाने के कारण मां की ज़मींदारी का मालिक भी वही बना था।

एक दिन यह घोषित हुआ कि बूढ़े निर्वासित लार्ड क्लैनचार्ली के बारे में कई घटनाएं हो गई हैं। सबसे मुख्य यह है कि वह मर गया। मृत्यु इतना तो भला काम करती है कि मरने के बाद मनुष्यों के बारे में कुछ चर्चा होने लगती है। लोग लार्ड क्लैनचार्ली के जीवन के आखिरी दिनों के बारे में जो कुछ जानते थे, या उनका ख्याल था कि वे जानते थे, उसकी चर्चा करने लगे।

के समय लार्ड क्लैनचार्ली की उम्र उनसठ साल की होनी चाहिए और लड़के के जन्म के समय साठ साल की होनी चाहिए। लड़का पैदा होने के कुछ ही समय बाद वह मर गया होगा और लड़का बिना मां-बाप का अनाथ रह गया होगा। उनका यह भी कहना था कि लड़का सूर्य-प्रकाश के समान—जैसा कि परिस्तान की कहानियों में रहा करता था, सुन्दर था। जाहिरा इन अफवाहों की कोई बुनियाद तो थी ही नहीं। राजा ने यह घोषणा करके इन तमाम अफवाहों का अन्त कर दिया कि लार्ड डेविड डिरी-मोयर अपने स्वाभाविक पिता लार्ड लीनस क्लैनचार्ली का एकमात्र उत्तराधिकारी निश्चित हो चुका है; क्योंकि उसका कोई और पुत्र नहीं है और किसी अन्य सन्तान या वंशज का अधिकार सिद्ध नहीं होता। साथ ही इस घोषणा की हॉउस ऑफ लार्ड्स में रजिस्टरी भी करा दी गई। इसके अनुसार राजा ने लार्ड डिरी मोयर को मृत लार्ड लीनस क्लैनचार्ली की उपाधियां, अधिकार और स्वत्व भी प्रदान कर दिये, इस एक शर्त पर कि लार्ड डेविड एक खास लड़की के साथ, बड़ी होने पर, शादी करेगा। यह लड़की अभी कुछ महीनों की ही थी और उसको राजा ने पालने के अन्दर ही, पता नहीं क्यों, या शायद सबको मालूम था कि किसलिए, डचेज बना दिया था। यह छोटी-सी बच्ची डचेज जोशियाना कहलाती थी।

इस छोटी-सी डचेज़ को राजा ने क्लैनचार्ली के पीयरेस की उपाधि दी थी। वह पीयरेस थी जबतक कि कोई पीयर न बने। वह पीयर इसका पति होगा। इस पीयरेस के साथ क्लैनचार्ली और हैकरपील की दो जागीरें थीं। इंग्लैंड में दो तरह की जमीनें हैं, एक ऊंची और दूसरी साधारण। लार्डों की जमीन ऊंची कहलाती थी। क्लैनचार्ली-हैकरपील की जागीरें, अभी तो लेडी जोशियाना की सम्पत्ति थीं और राजा ने तय कर दिया था कि जोशियाना से शादी होने पर लार्ड डिरी-मोयर बैरन क्लैनचार्ली बनेगा।

क्लैनचार्ली की जायदाद के अलावा लेडी जोशियाना के पास निजी संपत्ति भी थी। यह सम्पत्ति उसे ड्यूक ऑफ यार्क की प्रधान सहचरी से मिली थी।

३

चार्ल्स और जेम्स के जमाने में सुखोपभोग करने के बाद लार्ड डेविड राजा विलियम के ज़माने में भी बराबर उन्नति ही करता रहा। जेम्स के प्रति उसकी जो भक्ति थी, वह उसे निर्वासन के समय राजा जेम्स के साथ न ले जा सकी। वह पुराने राजा को प्यार करता रहा, परन्तु नये अधिकारी की सेवा करने की भलमनसाहत भी उसमें थी। स्थल-सेना से

जल-सेना में उसका तबादला हो गया, वहां भी उसने नाम कमाया। सब बातों को देखते हुए वह अच्छा आदमी था। उसमें दुर्गुणों की भी बहुत कुछ नज़ाकत थी। वह दूसरों के समान कुछ-कुछ कवि भी था। अच्छा सरकारी कर्मचारी था। अच्छा राज-सेवक था। भोजों, उत्सवों, स्त्रियों के स्वागतों, सभाओं और युद्ध-क्षेत्र में वह बहुत दिलचस्पी लेता था। एक सज्जन के रूप में वह सेवा के लिए सदा प्रस्तुत रहता था। वह अत्यन्त गर्विष्ठ था। जो चीज़ देखनी हो उसके अनुसार उसकी दृष्टि तेज या मन्द थी। उसका झुकाव ईमानदारी की ओर था। अवसर के अनुसार वह विनम्र या उद्धत था। पहली मुलाकात के वक्त वह सच्चा और स्पष्ट रहता था, परन्तु उसके बाद में असली भाव छिपा लेने की उसमें शक्ति थी। राजा की मुस्कराहट और भौंहों पर उसकी बारीक निगाह रहती। तलवार के सामने लापरवाह था, राजा का ज़रा-सा इशारा पाते ही वीरता और आज्ञाकारिता के साथ वह अपना जीवन झोंक देने को तैयार रहता था; वह हर तरह का अपमान कर सकता था, परन्तु अभद्रता नहीं। वह सज्जनता और शिष्टाचार से परिपूर्ण था और बड़े-बड़े अवसरों पर राजा के सामने घुटने टेकने में गर्व अनुभव करता था। वह आनन्दी और साहसी था। ऊपर से पक्का मुसाहिब और अन्दर से पक्का वीर। पैंतालीस की उम्र में भी बिल्कुल जवान। लार्ड डेविड फ़रासीसी गाने गाया करता था, जो राजा चार्ल्स को बहुत अच्छे लगते थे। वह भाषण-सौंदर्य और शाइस्ता ज़बान को बहुत पसन्द करता था।

उसकी मां से उसे जीवन-निर्वाह के लिए काफी आय मिली थी, करीब १०,००० पौंड सालाना की। शान, फैयाज़ी और नवीनता में उसका सानी कोई नहीं था। उसकी फैशन निराली थी, उसका हैट सब से निराला रहता था, उसके जूतों के से फीते किसी के पास नहीं थे। अपनी फैशनों की नकल होते ही वह उन्हें बदल देता था।

२. डचेज़ जोसियाना

अधेड़ उम्र के जवानों की भरमार थी। वे बुढ़ापे तक जवान छैला बने रहते थे। इस कार्य में बड़े-बड़े बालोंवाली विग टोपियां उन्हें मदद करती थीं। बाद में पाउडर सहायक बन गया। स्त्रियां भी बुढ़ापे में चमकती फिरती थीं। उस समय का रिवाज ही ऐसा था।

जोशियाना और डेविड एक विशेष प्रकार का हास-विलास किया करते थे। वे एक-दूसरे को प्यार नहीं करते थे, व्यंग किया करते थे। वे एक-दूसरे के साथ रहने से ही सन्तुष्ट थे। जल्दी से फंसना क्यों कर लिया जाये? उस जमाने के उपन्यास भी प्रेमियों को उसी अवस्था में ले जाकर छोड़ देते थे, जो कि सबसे अच्छी मालूम होती थी। इसके अलावा जोशियाना अपने को जारज जानती हुई भी राजकुमारी मानती थी और हर मामले में डेविड पर अपना अधिकार चलाती थी। वह लॉर्ड डेविड पर मोहित थी। लार्ड डेविड सुन्दर भी था, किन्तु यह बात अलहदा है। असली बात यह थी कि वह डेविड को फैशनेबल समझती थी।

फैशनेबल होने में सबकुछ है। लार्ड डेविड सुन्दर था, यह अच्छी बात थी। लेकिन खूबसूरत होने में खतरा यह है कि नीरसता आ जाती है; किन्तु डेविड नीरस नहीं था। वह बाजी लगाता था, घूसेबाजी करता था और कर्ज लेता था। जोशियाना उसके घोड़ों, उसके कुत्तों, उसकी हार-जीतों और उसकी प्रेयसियों की बड़ी-बड़ी तारीफें किया करती थी। उधर लार्ड डेविड भी डचेज जोशियाना की मनोहरता के सामने झुका करता था। डचेज जोशियाना, कुंवारी, धर्माधर्म के विचार से रहित, बेदाग, गर्वीली, अगम्य और धृष्ट थी। वह जोशियाना पर कविता लिखा करता था और जोशियाना उन्हें कभी-कभी पढ़ लिया करती थी। उन कविताओं में वह कहा करता था कि जोशियाना को पाना सितारों पर पहुंच जाने के समान है। लेकिन इससे सितारों तक की उड़ान को साल-भर टाल देने में कोई बाधा नहीं पड़ती थी। वह जोशियाना के हृदय के बाहरी कोने में खड़े रहना पसन्द करता था और इससे दोनों को सुविधा थी। राज-दरबार में सब लोग इस देरी की सुरुचि की सराहना करते थे। लेडी जोशियाना कहती थी, "यह तो आफत है कि मैं लार्ड डेविड से शादी करने के लिए मजबूर हूं। मैं तो उसे प्यार करने के अलावा और कोई दूसरी बात नहीं चाहती।"

जोशियाना सुन्दरी थी। उसके अंग-अंग से प्रभा छिटकती थी। वह खूब ऊंची थी। उसके बाल उस रंग के थे, जो कि लाल-सुनहले कहलाते हैं। वह हृष्ट-पुष्ट, सबल और गुलाब के रंग की थी। उसमें अत्यन्त धृष्टता और वाक्चातुर्य था। उसकी आंखें अत्यन्त सुग्राह्य थीं। उसके न तो कोई प्रेमी थे, न पवित्रता थी। उसने अपने आस-पास गर्व की दीवार खींच रखी थी।

थी। उसके हृदय में विकार कभी आया ही नहीं, किन्तु वह समस्त विकारों से अच्छी तरह परिचित थी। उसे उद्देश्य की पूर्ति से घृणा थी, किन्तु पूर्ति की आकांक्षा में उसे मजा आता था। वह कुंवारी थी, किन्तु कल्पना की अवस्था में हर तरह का व्यभिचार कर चुकी थी। वह वास्तविक सती के स्वरूप में वास्तविक कुलटा थी। उच्च वंश के मद के कारण वह आकर्षक, पर साथ ही अगम्य भी थी। तो भी अपने पतन की योजना करने में उसे आनन्द आता था। वह गौरव के प्रभा-मंडल में रहती थी और कुछ-कुछ चाहती थी कि वहां से नीचे उतरे। शायद वह जानने के लिए उत्सुक रहती थी कि ऊपर से नीचे गिरने में कैसा लगता है। गलती करना उसके लिए मनोरंजन था। शाही स्वच्छन्दता को प्रयोग करने का अधिकार है। और साधारण स्त्री के लिए जो बात कमज़ोर थी, वह उसके लिए केवल विनोद थी। जोशियाना हर बात में—जन्म में, सुन्दरता में, उपहास में, तेजस्विता में—प्रायः रानी थी। लुई डी बौफ्लर्स के प्रति, जो कि अपनी उंगलियों के बीच घोड़े की नाल तोड़ देता था, उसे एक क्षण के लिए आसक्ति मालूम हुई थी। उसे इस बात का अफसोस था कि बलवान् हर-क्यूलीज़[1] जीवित नहीं है। वह किसी विलासपूर्ण और उच्चतम आदर्श की अस्पष्ट प्रतीक्षा में रहती थी।

उसकी गर्दन सुडौल थी, वक्षस्थल भव्य था, जो कि शाही हृदय के ऊपर सुन्दरतापूर्वक उछलता था, दृष्टि जीवन और ज्योति से परिपूर्ण थी, मुख-मंडल पवित्र और अभिमानयुक्त था; और कौन जाने! यदि सतह के नीचे अर्ध पारदर्शक और धुंधली गहराई में कुछ विषम अमानुषिक आकृति हो।

२

यह सब होते हुए भी वह छैला थी। उस समय यही फैशन थी। इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ को देखिये। एलिजाबेथ जिस तरह की स्त्री थी उस तरह की स्त्रियों की प्रधानता इंग्लैंड में तीन शताब्दियों—सोलहवीं, सत्रहवीं और अठारहवीं—तक कायम रही है। एलिजाबेथ इंग्लिश से भी ज़्यादा थी—एंग्लिकन थी। इसलिए एपिस्कोपेलियन चर्च (पंथ) के प्रति उसकी गहरी भक्ति थी, जिसके कारण रोम के पोप उससे रुष्ट थे और उन्होंने उसे धर्म से बहिष्कृत कर दिया था। एलिजाबेथ को शाप देते समय पोप छठवें सिक्स्टस के मुंह में शाप भी प्रेम-प्रलाप बन गया।

---

[1] यह महावीर पश्चिम में वीरता और बल का अवतार समझा जाता है।

रानी एलिजाबेथ की बहन मेरी स्टुअर्ट्स, जिसको कि इस मामले में एलिजाबेथ के धर्म की बजाय स्त्रीत्व से अधिक दिलचस्पी थी, एलिजाबेथ के प्रति बहुत कम आदर-भाव रखती थी। उसने रानी की हैसियत से रानी को और छैला की हैसियत से छैला को पत्र में लिखा, "तुम इसलिए शादी नहीं करना चाहती कि शादी हो जाने पर तुम्हें प्यार करने की आजादी नहीं रहेगी।" मेरी स्टुअर्ट पंखे से खेलती थी और एलिजाबेथ कुल्हाड़ी से। मुकाबला बेमेल था। कुरूप एलिजाबेथ ने अपने को सुन्दरी करार दिया था। इटालियन ढंग से अपने होंठ चबाती थी। स्पेनिश ढंग से आंखें मट-काती थी। उसके पास तीन हजार तरह की पोशाकें थीं। वह आयर्लैंड-निवासियों को उनके कंधों की चौड़ाई के कारण पसन्द करती थी। अपने पेटीकोट को चुन्नटों और गोटों से सजाती थी। गुलाब के फूलों को प्यार करती थी। गाली देती थी, कसमें खाती थी और पैर पटकती थी। अपनी माननीय सहेलियों को घूंसे जमाती थी। डडले को शैतान के हवाले करती थी। चांसलर (कोषाध्यक्ष) बर्ले को मारती थी और वह बेचारा बुड्ढा रोता था। मैथ्यू पर थूकती थी। हैटन को गिलगिली देती थी। एसेक्स के कान खींचती थी। बासोम्पियर को अपनी टांगें दिखाती थी और यह एलिजाबेथ कुंआरी थी!

आजकल उस गुजरे हुए जमाने को याद करके इंग्लैंड की आंख कुछ नीची हो जाती है। उसकी याद कुछ बेचैनी पैदा कर देती है, परन्तु इंग्लैंड को उस जमाने का गर्व है!

जोशियाना पुष्ट और स्वस्थ थी, पर जैसा हम कह चुके हैं, वह कुंआरी भी थी।

यदि स्त्री शब्द का मतलब दोष है, क्योंकि मुझे मालूम नहीं कि (ईसाई धर्म का) कौंसिल ने क्या निश्चय किया था, तो उस जमाने के समान स्त्रियां कभी स्त्रीवत् नहीं थीं। उस जमाने में स्त्रियां अपनी बुराइयों को अपने सौंदर्य से और कमजोरियों को सर्वज्ञता से नहीं ढंकती थीं; वे अपने पापों से अन्य किसी जमाने में इतनी शान के साथ कभी नहीं मुक्त हुई। निषिद्ध फल को विहित बनाने से ईव का पतन हुआ। विहित फल को निषिद्ध बनाने से अब उसकी विजय हुई। इसीमें उसकी श्रेष्ठता है। अठारहवीं शताब्दी में पत्नी अपने पति को बाहर करके दरवाजा लगा लेती है। वह ईडन के बाग़ में शैतान के साथ अपनेको बन्द कर लेती है। ऐडम बाहर रह जाता है।

३

जोशियाना की सारी अंतःप्रेरणा उसको बाजाब्ता विवाह करने के बजाय छैलापन के सामने झुकने के लिए विवश करती है। छैलापन के सामने झुकने में पंडिताई है, उसमें साहित्य का रस है।

अंग्रेजों का पुराना खयाल था कि कुंवारी रहना शासन करना है और पत्नी बन जाना प्रजा बन जाना है। जोशियाना जहांतक हो सके इस पराभव की घड़ी को दूर रखना चाहती थी। उसे अन्त में लार्ड डेविड से विवाह करना ही पड़ेगा, क्योंकि राजा की ऐसी ही मर्जी है। वह मजबूर थी। कितनी करुण अवस्था! जोशियाना लार्ड डेविड की सराहना करती थी और उसका खूब प्रदर्शन करती थी। उनके बीच में चुपचाप यह समझौता हो गया था कि न तो यह लगन पूरी की जाय, न तोड़ी जाय। वे एक-दूसरे से छिप रहे थे। इस प्रेम के नाच में वे एक कदम आगे रखते थे तो दो कदम पीछे हटते थे।

विवाह करना अनुचित बात है, उसमे रंग फीका पड़ जाता है और बुढ़ापा आ जाता है। विवाह में सारी चमक गायब हो जाती है। पुरोहित द्वारा तुम्हारे हाथ में पकड़ाई हुई स्त्री कितनी नीरस वस्तु है! विवाह की पाशविकता विशेष अवस्थाएं उत्पन्न कर देती है। पसन्द को मार देती है। व्याकरण के नियमों के समान जकड़ देती है। आन्तरिक स्फूर्ति के स्थान पर नियम कायम करती है। प्रेम करने का हुक्म देती है; जीवन के रहस्यों को बखेरती है; राजा और प्रजा दोनों के अधिकारों को घटाती है। तराजू की डांडी मारकर पुरुष और स्त्री दोनों की सुन्दर समानता को बिगाड़ देती है। एक शारीरिक बल से बलवान, दूसरी स्त्री की अबलता में सर्वशक्तिमान—एक ओर शक्ति, दूसरी ओर सुन्दरता; एक को मालिक

और दूसरी को चाकर बनाती है। जब विवाह न हो तो एक गुनाम है और दूसरी रानी।

प्रेम को घसीटकर नीचे पटक देना, कितना भद्दा है! उसे अशिष्टता से वंचित करना कितना नीरस है!

लार्ड डेविड की उम्र पक चली थी। चालीस! यह विशेष समय है। उसको इसका ध्यान ही नहीं था, वास्तव में वह तीस से ज्यादा का नहीं दीखता था। जोशियाना को पाने की बजाय उसकी इच्छा करना उसे ज्यादा अच्छा मालूम होता था। उसको दूसरी स्त्रियां प्राप्त थीं। उसके पास कई प्रेमिकाएं थीं, किन्तु जोशियाना के पास केवल स्वप्न थे।

डचेज जोशियाना में एक विशेषता थी। उसकी एक आंख नीली थी और दूसरी काली। उसकी पुतलियां प्रेम और घृणा, आनन्द और कष्ट के लिए बनी थीं। उसकी दृष्टि में रात और दिन मिले हुए थे।

४. फैशन का नेता

जोशियाना अब उठी थी। यह बात इतनी स्वाभाविक थी कि इसके कहने की भी जरूरत नहीं।

पहले की अपेक्षा दूसरा होना अधिक कठिन है। उसमें मौलिकता तो कम रहती है, किन्तु साहस अधिक रहता है। पहला नवीनता में मस्त होकर खतरे की परवा नहीं करता, दूसरा खन्दक को देखता है और उसमें कूद पड़ता है। लार्ड डेविड विग न पहनने की खन्दक में कूद पड़ा। बाद में दूसरे लोग भी इनकी नक़ल करने लगे। इन दो बलवाइयों का अनुकरण करते हुए दूसरों में बाल रखाने का साहस उत्पन्न हो गया। इस मामले को ज़रा दबाने के लिए बालों में पाउडर लगाने की प्रथा जारी की गई।

ऐसी बड़ी-बड़ी बातों के कारण लार्ड डेविड की सब ओर तारीफ थी। कोई भी क्लब ऐसा नहीं था, जिसका वह नेता न हो। कोई भी घूंसों की बाज़ी ऐसी नहीं होती थी, जिसमें वह रैफ़री (पंच) न बनता हो।

ऊंचे दर्जे के कई क्लबों के नियम उसने बनाये थे और शौकीन लोगों के लिए कई क्लब स्थापित किये थे। उनमें से एक लेडी गिनी १७७२ तक लन्दन के पालमाल स्थान में मौजूद था। लेडी गिनी क्लब में इंग्लैंड के लार्ड-खानदानों के युवक इकट्ठे हुआ करते थे। वहां पर पचास गिन्नियों से कम की बाजी नहीं लगती थी और मेज पर हर वक्त बीस हज़ार गिन्नियों से कम नहीं रहती थीं। हर खिलाड़ी के पास एक छोटी-सी तिपाई रहती थी, जिसपर उसका चाय का प्याला और एक सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ कटोरा रहता था जिसमें गिन्नियां रखी जाती थीं। खिलाड़ियों की बांहों और छातियों पर चमड़े के पट्टे रहते थे, ताकि उनकी पोशाक का जरी का काम बिगड़ने न पाये। उनकी आंखों पर परछाईं के लिए उठी हुई पट्टी रहती थी, ताकि रोशनी से उनका बचाव हो और घुंघराले बालों को ठीक जमाये रखने के लिए सिर पर चौड़ी किनार के हैट रहते थे, जो फूलों से सजे रहते थे। उनके चेहरों पर बुरका पड़ा रहता था ताकि उनकी उत्तेजना का भाव प्रकट न होने पाये, खासकर क्विज़ के खेल के समय, इसके अलावा उनके कोट उल्टे मुड़े रहते थे, यह शुभ शकुन माना जाता था। लार्ड डेविड बीफस्टेक क्लब (अर्थात् गौमांस क्लब), सर्ली क्लब (कर्कश क्लब), स्प्लिट फार्दिंग क्लब (टूटा पैसा क्लब), क्रास क्लब, स्कैचपेनी क्लब (खोटी छदाम क्लब), सील्डनॉट (मुहर लगी हुई गांठ) जो कि राज-पक्ष का था, और मार्टिन्स स्क्रिबलर्स क्लब, (लिक्खाड़ क्लब), जिसको स्विफ्ट ने, मिल्टन के स्थापित किये हुए रोटा क्लब के स्थान की पूर्ति करने के लिए जारी किया था।

यद्यपि लार्ड डेविड खूबसूरत था, तो भी वह अग्ली-क्लब (बदशक्ल क्लब) का मेम्बर था। यह क्लब बदसूरती के लिए समर्पित था। उसके मेम्बरों ने यह तय कर रखा था कि वे सुन्दर स्त्री के बारे में नहीं, किन्तु

किसी भद्दी शक्ल के आदमी के बारे में लड़ेंगे। क्लब का हॉल बीभत्स तस्वीरों से सजाया गया था। प्रसिद्ध बदसूरतों की तस्वीरें वहांपर थीं। जिस दिन सुन्दरी मिसेज विसार्ट को चेचक निकली, उस दिन उसकी खुशी में बदशक्ल-क्लब ने उसके नाम पर शराब पीकर उत्सव मनाया। यह क्लब उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक कायम था।

राजा द्वितीय चार्ल्स के गद्दी पर बैठने के बाद क्लबवाइशों के क्लब तोड़ दिये गए थे। मूरफ़ील्ड के पास की छोटी-सी सड़क पर काफ्स-हेड-क्लब (बछड़े के सिर का क्लब) था, यह तोड़ दिया गया था। इसका नाम बछड़े के सिर का क्लब इसलिए पड़ा कि ३० जनवरी को, जिस दिन राजा प्रथम चार्ल्स की गर्दन (काटने) से खून बहा था, इस क्लब के मेम्बरों ने क्रामवेल की तारीफ में बछड़े की खोपड़ी में लाल शराब भरकर पी थी। रिपब्लिकन क्लबों के स्थान पर मनार्किकल (राजपक्ष के) क्लब कायम हुए थे, जहांपर लोग शाइस्तगी के साथ मनोरंजन करते थे।

एक हेल-फ़ायर (नरकाग्नि) क्लब था, जहां पर पापी होने का खेल खेला जाता था। वहां अधर्माचरण की बाजी लगती थी। वहां नरक का नीलाम होता था और वह सबसे बड़े व्यभिचारी को मिलता था।

एक बटिंग (सिरमार) क्लब था; यह नाम इसलिए पड़ा कि उसके मेंबर दूसरे आदमियों की छाती में सिर मारते थे। वे सड़क पर से किसी चौड़ी छातीवाले बोड़म आदमी को पकड़ लाते थे। वे उसको शराब का एक घड़ा देते थे, और यदि वह इन्कार करता था तो सब उसे पीने पर मजबूर करते थे, इसके बदले में उस आदमी को इस बात पर राजी होना पड़ता था कि मेंबर लोग उसकी छाती पर अपना सिर बार-बार मारें। और इस सिर मारने पर वे लोग दांव लगाते थे। एक दिन एक गागनगर्ड नाम का मजबूत हट्टा-कट्टा वेल्स-निवासी तीसरी बार के सिर मारने से मर गया। मामला गम्भीर हो गया। उसकी जांच हुई और जूरी ने फैसला दे दिया कि "यह बहुत ज्यादा शराब पी लेने के कारण हृदय फट जाने से मर गया है।" गागनगर्ड ने वास्तव में घड़ा-भर शराब पी ली थी।

एक लखपती युवक लार्ड ने रात को एक फूस की झोपड़ी लगाकर में आग लगा दी। इस कौतुक को देखकर सारा लंदन शहर कहकहा लगाकर हंस पड़ा, और उस लखपती युवक को 'विनोदराज' की उपाधि दी गई। फन-क्लब के सब मेंबर सबने ऊंची श्रेणी के रईस थे। वे रात को, जबकि सब शहरवाले सो जाते थे, लन्दन शहर में इधर-उधर दौड़ते-फिरते थे और बीच-बीच में मकानों के रोशनदान तोड़ देते, नलों की टोंटियां काट देते थे, खाली हौज भर देते थे, बोए खेत खोद डालते थे, लैम्प बुझा देते थे, छतों के नीचे के लकड़ी के खंभे आरी से काट देते थे, खिड़कियों के कांच फोड़ देते थे; यह सारा विनोद खासकर गरीबों के मुहल्लों में होता था। इस प्रकार का वर्ताव धनवानों का गरीबों के साथ होता था। इसलिए किसी तरह की शिकायत नहीं होने पाती थी। इस विनोद में यही खूबी थी। यह व्यवहार अभी भी थोड़ा-बहुत कायम है। इंग्लैण्ड में और अंग्रेजी राज्य के बहुत-से स्थानों में उदाहरणार्थ गर्नजी में—रात को तुम्हारा मकान थोड़ा बहुत टूट-फूट जाता है, या अहाते की दीवार टूट जाती है, या दरवाजे का खट-खटा गायब हो जाता है। यदि ये काम गरीब आदमी करते तो वे जेल में ठूंस दिये जाते, किन्तु ये काम तो विनोदी युवक रईस करते हैं।

सबसे ज्यादा फैशनेबल क्लब का अध्यक्ष बादशाह था; वह उसमें अपने सिर पर अर्धचन्द्र धारण करता था और ग्रेंड मोहाक[1] (Grand Mohawk) कहलाता था। इस मोहाक (गुंडा) क्लब ने फन-क्लब को भी मात कर दिया था। मोहाक-क्लब का एक महान् उद्देश्य था पीड़ा पहुंचाना। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सब साधन जायज़ थे। मोहाक बनने के लिए मेंबरों को पीड़क होने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। चाहे जो हो, चाहे जब, चाहे जिसको, और चाहे जहां पीड़ा पहुंचाना उनका धर्म था। मोहाक-क्लब के हरेक मेंबर को किसी-न-किसी प्रकार की पीड़न-कला में दक्षता प्राप्त करनी पड़ती थी। एक था 'नृत्यदक्ष', अर्थात् वह मेंबर यह अच्छी तरह जानता था कि किस प्रकार देहातियों को पिंडलियों और जांघों में तलवार की नोक चुभाकर इधर-उधर नचाया जाता है। दूसरे मेंबर किसी

---

१ अठारहवीं शताब्दी में लंदन की सड़कों पर घूमनेवाले गुंडों को मोहाक कहते थे। ग्रेंड मोहाक का मतलब है महागुंडा। मोहाक उत्तरी अमरीका के मूल निवासी जंगली इंडियनों को भी कहते हैं। वे उत्सवों के समय अपने सिर पर जानवरों के सींग बांधते थे, जो कि अर्धचन्द्राकार दीखते थे। शायद इसीलिए मोहाक-क्लब का अध्यक्ष सिर पर अर्धचन्द्र धारण करता था।

किसी भद्दी शक्ल के आदमी के बारे में लड़ेंगे। क्लब का हॉल बीभत्स तस्वीरों से सजाया गया था। प्रसिद्ध बदसूरतों की तस्वीरें वहांपर थीं। जिस दिन सुन्दरी मिसेज विसार्ट को चेचक निकली, उस दिन उसकी खुशी में बदशक्ल-क्लब ने उसके नाम पर शराब पीकर उत्सव मनाया। यह क्लब उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक कायम था।

राजा द्वितीय चार्ल्स के गद्दी पर बैठने के बाद बलवाइयों के क्लब तोड़ दिये गए थे। मूरफ़ील्ड के पास की छोटी-सी सड़क पर काफ्स-हेड-क्लब (बछड़े के सिर का क्लब) था, यह तोड़ दिया गया था। इसका नाम बछड़े के सिर का क्लब इसलिए पड़ा कि ३० जनवरी को, जिस दिन राजा प्रथम चार्ल्स की गर्दन (काटने) से खून बहा था, इस क्लब के मेम्बरों ने क्रामवेल की तारीफ में बछड़े की खोपड़ी में लाल शराब भरकर पी थी। रिपब्लिकन क्लबों के स्थान पर मनार्किकल (राजपक्ष के) क्लब कायम हुए थे, जहांपर लोग शाइस्तगी के साथ मनोरंजन करते थे।

एक हेल-फ़ायर (नरकाग्नि) क्लब था, जहां पर पापी होने का खेल खेला जाता था। वहां अधर्माचरण की बाज़ी लगती थी। वहां नरक का नीलाम होता था और वह सबसे बड़े व्यभिचारी को मिलता था।

एक बटिंग (सिरमार) क्लब था; यह नाम इसलिए पड़ा कि उसके मेंबर दूसरे आदमियों की छाती में सिर मारते थे। वे सड़क पर से किसी चौड़ी छातीवाले बौड़म आदमी को पकड़ लाते थे। वे उसको शराब का एक घड़ा देते थे, और यदि वह इन्कार करता था तो सब उसे लेने पर मजबूर करते थे, इसके बदले में उस आदमी को इस बात पर राजी होना पड़ता था कि मेंबर लोग उसकी छाती पर अपना सिर चार बार मारें। और इस सिर मारने पर वे लोग दांव लगाते थे। एक दिन एक गागनगर्ड नाम का मज़बूत हट्टा-कट्टा वेल्स-निवासी तीसरी बार के सिर मारने में मर गया। मामला गंभीर हो गया। उसकी जांच हुई और जूरी ने फैसला दे दिया कि "यह बहुत ज्यादा शराब पी लेने के कारण हृदय फूल जाने से मर गया है।" गागनगर्ड ने वास्तव में घड़ा-भर शराब पी ली थी।

एक फन (विनोद) क्लब था। विनोद का अनुवाद उपहास और हास्य से नहीं हो सकता। विनोद का प्रहसन के साथ वही सम्बन्ध, है जो कि मिर्च का नमक के साथ है। किसीके मकान में घुसकर कीमती शीशा तोड़ देना, परिवार की तस्वीरें फोड़ डालना, कुत्ते को जहर दे देना, बिल्ली को चिड़िया-खाने में छोड़ देना 'जरा विनोद करना' कहलाता है। किसीको झूठ-मूठ बुरे समाचार कह देना, ताकि वह शोक मनाने लगे, विनोद है। किसी सुन्दर मूर्ति का हाथ तोड़ देना बढ़िया विनोद है। राजा द्वितीय जेम्स के ज़माने में

एक लखपती युवक लार्ड ने रात को एक फूस की झोपड़ी लगाकर में आग लगा दी। इस कौतुक को देखकर सारा लंदन शहर कहकहा लगाकर हंस पड़ा, और उस लखपती युवक को 'विनोदराज' की उपाधि दी गई। फन-क्लब के सब मेंबर सबसे ऊंची श्रेणी के रईस थे। वे रात को, जबकि सब शहरवाले सो जाते थे, लन्दन शहर में इधर-उधर दौड़ते-फिरते थे और बीच-बीच में मकानों के रोशनदान तोड़ देते, नलों की टोंटियां काट देते थे, खाली हौज भर देते थे, बोए खेत खोद डालते थे, लैम्प बुझा देते थे, छतों के नीचे के लकड़ी के खंभे आरी से काट देते थे, खिड़कियों के कांच फोड़ देते थे; यह सारा विनोद खासकर गरीबों के मुहल्लों में होता था। इस प्रकार का बर्ताव धनवानों का गरीबों के साथ होता था। इसलिए किसी तरह की शिकायत नहीं होने पाती थी। इस विनोद में यही खूबी थी। यह व्यवहार अभी भी थोड़ा-बहुत कायम है। इंग्लैण्ड में और अंग्रेज़ी राज्य के बहुत-से स्थानों में उदाहरणार्थ गर्नज़ी में—रात को तुम्हारा मकान थोड़ा बहुत टूट-फूट जाता है, या अहाते की दीवार टूट जाती है, या दरवाजे का खट-खटा गायब हो जाता है। यदि ये काम गरीब आदमी करते तो वे जेल में ठूंस दिये जाते, किन्तु ये काम तो विनोदी युवक रईस करते हैं।

सबसे ज्यादा फैशनेबल क्लब का अध्यक्ष बादशाह था; वह उसमें अपने सिर पर अर्धचन्द्र धारण करता था और ग्रैंड मोहाक[1] (Grand Mohawk) कहलाता था। इस मोहाक (गुंडा) क्लब ने फन-क्लब को भी मात कर दिया था। मोहाक-क्लब का एक महान् उद्देश्य था पीड़ा पहुंचाना। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सब साधन जायज़ थे। मोहाक बनने के लिए मेंबरों को पीड़क होने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। चाहे जो हो, चाहे जब, चाहे जिसको, और चाहे जहां पीड़ा पहुंचाना उनका धर्म था। मोहाक-क्लब के हरेक मेंबर को किसी-न-किसी प्रकार की पीड़न-कला में दक्षता प्राप्त करनी पड़ती थी। एक था 'नृत्यदक्ष', अर्थात् वह मेंबर यह अच्छी तरह जानना था कि किस प्रकार देहातियों को पिंडलियों और जांघों में तलवार की नोक चुभाकर इधर-उधर नचाया जाता है। दूसरे मेंबर किसी

[1] अठारहवीं शताब्दी में लंदन की सड़कों पर घूमनेवाले गुंडों को मोहाक कहते थे। ग्रैंड मोहाक का मतलब है महागुंडा। मोहाक उत्तरी अमरीका के मूल निवासी जंगली इंडियनों को भी कहते हैं। वे उत्सवों के समय अपने सिर पर जानवरों के सींग बांधते थे, जो कि अर्धचन्द्राकार दीखते थे। शायद इसीलिए मोहाक-क्लब का अध्यक्ष सिर पर अर्धचन्द्र धारण करता था।

आदमी को पसीने से तर करने की कला जानते थे, अर्थात् किसी गरीब को पकड़कर कुछ रईस सज्जन हाथ में चौधारी नंगी तलवारें[1] लेकर उसे घेर लेते थे, ताकि किसी-न-किसीकी तरफ उसकी पीठ रहती थी। जिस की तरफ पीठ रहती थी वह पीछे से तलवार चुभा देता था। वह बेचारा कूदकर पीछे पलटता था कि फिर पीछे से दूसरा आदमी तलवार चुभाकर उसे याद दिलाता था कि उच्च कुल का कोई सज्जन उसके पीछे है। इस तरह जिसकी तरफ उसकी पीठ होती थी वह तलवार चुभाता जाता था। जब वह इस तरह छिदते-छिदते काफी उछल-कूदकर नाच चुकता था तब वे लोग नौकरों को हुक्म देकर उसे डंडों से खूब पिटवाते थे। दूसरे 'शेर बनाने' में निपुण थे; अर्थात् वे विनोद में किसी राहगीर को रोक लेते थे, उसकी नाक पर घूसा मारकर उसमें से खून बहाते थे और फिर हाथों के दोनों अंगूठे उसकी आंखों में घसेड़ देते थे। यदि उसकी आंखें निकल पड़ती थीं तो उसे कुछ रकम दी जाती थी।

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में लंदन के धनवान शौकीन इस तरह अपना जी बहलाया करते थे।

लार्ड डेविड डिरी-मोयर इन सारे खिलवाड़ों में अपनी शान और उदारता का समावेश कर दिया करता था। दूसरों के समान वह भी किसी फूस की झोंपड़ी के भीतर रहनेवालों को झुलसाने के लिए उसमें आग लगा दिया करता था, किन्तु बाद में वह उनके लिए पत्थर का पक्का मकान बनवा देता था। उसने एक बार दो स्त्रियों का अपमान किया; उनमें से एक अविवाहित थी। उसको उसने कुछ धन दे दिया। दूसरी विवाहित थी, उसके पति को उसने एक गिरजाघर का पादरी बनवा दिया।

मुर्गों की लड़ाई हो या आदमियों की कुश्ती हो, सब जगह लार्ड डेविड का निर्णय नियम बन जाता था। जहांपर वह पंच रहता था वहां किसी तरह का अन्याय या ज्यादती नहीं होने पाती थी। घूसे-बाजी की शिक्षा उससे बढ़िया कोई नहीं दे सकता था।

इस तरह लार्ड डेविड सार्वजनिक जीवन की तैयारी कर रहा था। पूरा सज्जन बनना सरल बात नहीं थी।

वह खुले मैदान के प्रदर्शनों, तमाशों, जंगली जानवरों के सरकसों, भांड़ों की लीलाओं, बहुरूपियों के खेलों, विदूषकों के प्रहसनों, हँसी-दिल्लगी के नाटकों और मेलों से बहुत दिलचस्पी रखता था। सच्चा रईस तो वही

---

[1] ये तलवारें अंगरेजी में 'रेपियर' कहलाती हैं और भोंकने के काम में आती हैं। इनमें चारों तरफ़ चार धारें होती हैं।

है, जिसमें मामूली लोगों की गन्ध हो। इसलिए लार्ड डेविड लन्दन के गरीबों की बस्तियों, खेल-तमाशों और सरायों में अक्सर जाया करता था। गरीब लोगों में मिल जाने और अपनी असलियत को छिपाने की गरज से वह मल्लाहों के से कपड़े पहन लिया करता था। जिन निचली श्रेणी के आदमियों से वह मिलता-जुलता था, वे उससे बहुत खुश थे। उन्हें स्वप्न में भी खयाल नहीं था कि वह लार्ड है। वे उसे 'टाम जिम जैक' के नाम से पुकारते थे। वह सबसे नीची श्रेणी के आदमियों में इसी नाम से मशहूर था। वह गुंडाई भी उस्तादी के साथ करता था और जरूरत पड़ने पर घूंसों से भी काम लेता था। उसके शौकीनी जीवन के इस पहलू से लेडी जोशियाना बहुत खुश थी।

५. रानी ऐन

१

इस जोड़ी के ऊपर इंग्लैंड की रानी ऐन थी। रानी ऐन साधारण स्त्री थी। वह खुशमिजाज, दयालु और कुछ हद तक साधु थी। उसका कोई भी गुण सदाचार की सीमा तक नहीं पहुंचा और न कोई दुराचार तक ही बढ़ा। उसका मोटा शरीर फूला हुआ था, उसका मजाक स्थूल होता था, और उसका अच्छा स्वभाव मूर्खतापूर्ण था। वह जिद्दिन और कमजोर थी। पत्नी की हैसियत से वह ईमानदार और बेईमान दोनों थी। उसके कई प्रेमी थे, जिनको उसने अपना दिल दे रखा था; उसका एक पति भी था, जिसके लिए उसने अपनी शय्या रख छोड़ी थी। ईसाई की हैसियत से वह काफिर और कट्टर धार्मिक दोनों थी। उसमें एक सुन्दरता थी, उसकी गरदन बहुत सुहावनी थी। बाकी का अंग कुछ ढंग का नहीं था। उसमें भद्दा नखरा और पवित्रता भी थी। उसका चमड़ा सफेद और चिकना था, जिसका वह बहुत-सा हिस्सा दिखाया करती थी। उसने बड़े मोतियों का कड़ा-कंठा पहनने का फैशन जारी किया था। उसका कपाल संकरा था, होंठ विलासी थे, गाल गुदगुदे थे, आंखें बड़ी-बड़ी थीं और दृष्टि छोटी थी। दृष्टि का छोटापन उसके मन में भी पहुंच गया था। कभी-कभी प्रफुल्लता, जो कि उसके क्रोध के समान ही भारी थी, प्रकट होने के अलावा वह एक प्रकार से नीरव कुरकुराहट और कुरकुराती हुई नीरवता धारण किये रहती थी। उसके मुंह से शब्द पूरी तरह नहीं निकलते थे, उसका मतलब अन्दाज से ही समझना पड़ता था। उसमें अच्छी स्त्री और शरारती शैतान का मिश्रण था। उसकी पसन्द आकस्मिक अधिक होती थी, जो कि बिल्कुल स्त्री-स्वभाव के अनुकूल है। उसके बदन से सदा गुस्से की बू आती थी। वह अपने विचार

ज़ाहिर नहीं करती थी, उसके विचार उसके वदन से भभकते थे। इस हंसिनी में कुछ-कुछ सिंहिनी का अंश था।

उसको विनोद, तंग करना और मज़ाक का व्यवहार पसन्द आता था। अच्छे स्वभाव की होने के कारण उसका आदर्श था कि किसीको दुखी न होने दिया जाय, और सबको तंग किया जाय। अक्सर उसकी जबान पर सख्त बातें रहा करती थीं। यदि वह जरा बढ़ती तो वह एलिजाबेथ के समान कसमें खाने लगती। वह बार-बार अपने लहंगे की जेब से एक छोटी-सी चांदी की डिबिया निकाला करती थी, जिसपर 'रा' और 'ऐ' अक्षरों के बीच में उसकी उभरी हुई तस्वीर थी। उस डिबिया को वह खोलती थी, उसके अंदर से उंगली से थोड़ा-सा पोमेड निकालती थी और उससे अपने होंठ लाल करती थी। होंठ रंगने के बाद हँस देती थी। वह मोटी रोटी की बहुत ही शौकीन थी। उसे मोटाई का गर्व था।

उसका विवाह डेनमार्क के राजकुमार से हुआ था। उसके कुंवारेपन के मुआवजे में डेनमार्क ने ६२५० पौंड सालाना का दहेज उसे दिया था। यह बात चार्टर में दर्ज है कि यह कुंवारेपन के बदले में था। उसका पिता द्वितीय जेम्स स्पष्ट-वक्ता और क्रूर था।

वह पशु थी। साथ ही वह भीतर से नरम थी। उसके स्वभाव में परस्पर विरोध दीखता था, परन्तु वह विरोध बाहरी था। क्रोध के आवेग में वह बिल्कुल बदल जाती थी। शक्कर गर्म करने से उबलने लगती है न!

ऐन लोकप्रिय थी। अंग्रेज़ इतिहास-लेखकों की दृष्टि में एलिजाबेथ भव्य थी और ऐन अच्छे स्वभाववाली। वे जैसा कहते हैं वैसा ही हो! परन्तु इन स्त्रियों के शासन में कोई सौंदर्य नहीं है। इंग्लैंड का पक्का विश्वास है कि उनका आचरण विशुद्ध था और हम उस विश्वास का विरोध नहीं करते। एलिजाबेथ कुंवारी थी, सिर्फ एसेक्स से उसकी छेड़-छाड़ थी। ऐन पतिव्रता थी, सिर्फ बोलिंगब्रुक से वह उलझी हुई थी।

२

लोगों में यह एक बेवकूफी की आदत है कि वे जो कुछ करते हैं, उसका श्रेय राजा को देते हैं। वे युद्ध करते हैं, पर गौरव किसका होता है? राजा का! वे देते हैं। पर उदारता किसकी? राजा की! फिर लोग उसको इतना धनवान होने के कारण प्यार करते हैं। राजा उनसे एक अशरफी पाता है और एक पैसा वापस करता है। वह कितना उदार है! भीमकाय कुर्सी अपने ऊपर की बौनी मूर्ति की तारीफ करती है। यह कितना महान है, यह मेरी पीठ पर है! बौने का ऊंचे आदमी से ऊंचा होने का तरीका बहुत अच्छा है। यह कि खुद उसकी पीठ पर सवार हो जाय। किन्तु आश्चर्य तो

इस बात का है कि वह भीमकाय उस बौने को अपनी पीठ पर चढ़ने देता है और मूर्खता यह है कि वह फिर उस बौने को ऊंचाई की तारीफ करता है। मनुष्य कितना भोला है ! यह नियम है कि केवल राजा की मूर्ति ही घोड़े पर सवार बने, और किसीकी नहीं। वह इस अवस्था के लिए बिल्कुल मौजू है। राजा सवार है और प्रजा घोड़ा है। केवल अंतर इतना ही है कि घोड़ा क्रमशः बदलता जाता है। वह प्रारंभ में गधा होता है और अन्त में शेर बन जाता है। तब वह अपने सवार को गिरा देता है, जैसा कि इंग्लैंड में १६४२ मे और फ्रांस में १७८६ में हुआ।[१] कभी-कभी वह अपने सवार को खा जाता है, जैसा १६४८ में इंग्लैंड में और १७६३ में फ्रांस में हुआ।[२] लेकिन, क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि वह शेर फिर से गधा बन जाय ? पर ऐसा होता है। इंग्लैंड में यही अवस्था हो रही थी। उसने राजा की पूजा के रूप में लद्दू जीन अपने ऊपर चढ़ा ली थी। जैसा कि हम अभी कह चुके हैं, रानी ऐन लोकप्रिय थी। वह कौन-सा काम करती थी, जिसके लिए वह लोकप्रिय थी ? कुछ नहीं। बस, यही तो इंग्लैंड के राजा से उम्मीद की जाती है। उस 'कुछ नहीं' के लिए उसको सालाना १२,५०,००० पौंड मिलते हैं।

३

रानी ऐन जोशियाना से कुछ-कुछ जलती थी। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि उसके खयाल में जोशियाना सुन्दर थी। दूसरा यह कि उसके खयाल में जोशियाना की जिसके साथ सगाई हुई थी वह सुन्दर था। ये दो कारण किसी भी स्त्री की ईर्ष्या के लिए काफी थे। रानी के लिए तो एक ही काफी है। उसकी ईर्ष्या का एक कारण यह भी था कि जोशियाना उसकी बहन थी। ऐन नहीं चाहती थी कि स्त्रियां सुन्दर हों। वह सुन्दर होना नेकचलनी के विरुद्ध समझती थी, क्योंकि वह स्वयं कुरूप थी। परन्तु वह अपनी इच्छा से ऐसी नहीं बनी थी। उसके प्युरिटन होने का एक कारण उसकी कुरूपता भी थी। जोशियाना सुन्दरी और विदुषी

---

[१] १६४२ में इंग्लैंड की प्रजा ने क्रामवेल के नेतृत्व में बलवा करके राजा को गद्दी से उतारकर प्रजातन्त्र स्थापित किया। उसी प्रकार १७८६ में फ्रांस का राजा गद्दी से उतारा गया।

[२] १६४८ में प्रजातन्त्रवादियों ने इंग्लैंड के राजा चार्ल्स की गर्दन काट ली और १७६३ में फ्रांस के प्रजातन्त्रियों ने फ्रांस के राजा लुई को कत्ल कर डाला।

[३] प्यूरिटन लोग हर तरह के आमोद, प्रमोद, सुन्दरता, सजावट,

थी, इसलिए रानी उससे जलती थी। इसके अलावा कुरूप रानी को सुन्दर बहन पसन्द नहीं आ सकती।

एक और शिकायत थी, जोशियाना का 'अनुचित जन्म'। ऐन एक साधारण स्त्री 'एन हाइड' की लड़की थी। राजा जेम्स को, जब कि वह ड्यूक ऑफ़ यार्क था, उस स्त्री के साथ मजबूर होकर बाज़ाप्ता शादी करनी पड़ी थी। ऐन की नसों में यह हल्के दर्जे का खून होने से वह अनुभव करती थी कि वह अधूरे राजवंश की है, और जोशियाना का जन्म नाजायज तरीके से होने के कारण अपने जन्म की अनुचितता की ओर भी उसका ध्यान खिंच जाता था, हालांकि वह अनौचित्य इतना बड़ा नहीं था जितना कि जोशियाना के जन्म-सम्बन्धी था। दोनों दुःखी थीं। एक को अपने असमान जन्म पर दुःख था, तो दूसरी को अपने नाजायज जन्म पर। दोनों की यह समानता दुःखदायी थी। जोशियाना को रानी से यह कहने का अधिकार था कि "मेरी मां कम-से-कम तुम्हारी मां से बुरी नहीं थी।" राज-दरबार के आदमी इस तरह की बात कहते नहीं थे, परन्तु सोचते जरूर थे। रानी ऐन इससे कुढ़ती थी। यह जोशियाना क्यों हुई? इसे जन्म लेने की सूझी ही क्यों? कुछ रिश्तेदारियां बाधक हुआ करती हैं। तो भी ऐन जोशियाना को देखकर मुस्करा देती थी। यदि वह उसकी बहन न होती तो शायद उसे चाहने भी लगती।

६. बारकिल फ़ीड्रो

यह जानना लाभदायक है कि आपके आस-पास के लोग कौन-कौन-से काम किया करते हैं, इसलिए बुद्धिमानी तो यही कहती है कि उनकी थोड़ी बहुत निगरानी रखी जाय। जोशियाना ने लार्ड डेविड की निगरानी के लिए अपना एक प्राणी छोड़ रखा था। उसपर जोशियाना का पूर्ण विश्वास था। उसका नाम था बारकिल फ़ीड्रो।

लार्ड डेविड ने भी चुपचाप जोशियाना की निगरानी के लिए अपना एक प्राणी तैनात कर रखा था, जिसपर उसका पूर्ण विश्वास था और उसका भी नाम था बारकिल फीड्रो।

और क्या रानी ऐन के लिए यह आवश्यक नहीं था कि वह अपनी नाजायज बहन डचेज जोशियाना और अपने भावी नाजायज बहनोई लार्ड डेविड के सारे कार्यों और व्यवहारों पर गुप्त रूप से नज़र रखे?

विलासिता, राग-रंग इत्यादि के विरुद्ध थे। वे सादा और त्याग का जीवन पसन्द करते थे।

इसलिए उसने भी अपना एक प्राणी उन दोनों पर नियुक्त कर रखा था, जिसपर उसका पूर्ण विश्वास था। उसका भी नाम था बारकिल फ़ीड्रो। बारकिल फ़ीड्रो की उंगली उस पूरे सरगम—जोशियाना, लार्ड डेविड और रानी—पर थी। दो स्त्रियों के बीच में एक आदमी! उनके बीच कितनी राग राग-रागनियां नहीं निकल सकती थीं! आत्माओं का कैसा सम्मिश्रण था!

तीन कानों में मंत्र फूंकने का यह भव्य पद बारकिल फ़ीड्रो को कुछ एकदम नहीं मिल गया।

बारकिल फ़ीड्रो में दीमक की-सी सिफत थी, वह पेंदी से चोटी तक छेद करना जानता था। दूसरे जेम्स के कारनामों और पुरानी यादगारों, ईमानदारी के किस्सों और हृदयस्पर्शी कहानियों का लगातार बखान करते-करते वह जोशियाना के हृदय तक छेद करते हुए पहुंच गया।

जोशियाना इस निर्धन और वाक्चतुर मनुष्य को चाहने लगी, इन दोनों गुणों का सम्मिलन मजेदार होता है। उसने बारकिल फ़ीड्रो को लार्ड डिरी-मोयर के सामने पेश किया, उसे अपने नौकरों के साथ रहने को जगह दी, और उसे अपने घर में नियुक्त कर लिया। वह उसपर दयालुता दिखाने लगी और कभी-कभी उससे बोल भी लेती थी। इसके बाद बारकिल फ़ीड्रो को कभी ठंड नहीं सहनी पड़ी और न कभी भूख सहनी पड़ी। जोशियाना उससे 'तू' करके बोलती थी। उस समय की ऊंचे खानदान की महिलाओं का यही फैशन था।

बारकिल फ़ीड्रो के लिए यह 'तू' करके बुलाया जाना सफलता का चिह्न था, वह इससे बेहद खुश था। उसने इस तिरस्कारमय परिचय के लिए प्रयत्न किया था। वह मन-ही-मन कहा करता था, "लेडी जोशियाना मुझसे 'तू' कहकर बोलती है।" और वह खुशी में अपने हाथ मलता था। उसने इसके द्वारा अपनी उन्नति की अगली मंजिल तय करने का लाभ उठाया। अब वह जोशियाना के खानगी कमरे में सदा हाजिर रहने लगा। वह किसी तरह बाधक नहीं होता था, सामने नहीं आता था, डचेज़ उसके सामने प्रायः अपने कपड़े तक बदल सकती थी। किन्तु बारकिल फ़ीड्रो की यह अवस्था दूसरे की इच्छा पर निर्भर थी, इसलिए, और बारकिल फ़ीड्रो किसी ऊंचे पद की कोशिश में था।

एक दिन बारकिल फ़ीड्रो ने जोशियाना से कहा—

"सरकार, मेरा भाग्य चमकाने की कृपा करेंगी?"

"तू क्या चाहता है?"

"पद!"

"पद ? अपने लिए !"

"जी, सरकार।"

"कैसी बात ! तू पद मांगता है—तू, जो कि किसी काम का नहीं है !"

"इसीलिए तो।"

जोशियाना ज़ोर से हँस पड़ी !

"जिन पदों के लिए तू अयोग्य है, उनमें से तू कौन-सा चाहता है ?"

"समुद्र की बोतलों के काग निकालने का पद !"

जोशियाना और भी ज़ोर से हँसी।

"तेरा क्या मतलब है ? क्या मज़ाक कर रहा है ?"

"नहीं, सरकार !"

डचेज़ ने कहा, "अपना दिल बहलाने के लिए, मैं तेरी बातों का जवाब गम्भीरता से दूंगी। हां, तू क्या होना चाहता है ? बोल फिर से !"

"समुद्र की बोतलों का काग खोलनेवाला।"

"राज-दरबार सबकुछ कर सकता है। क्या इस तरह का कोई पद है ?"

"है, सरकार !"

"मैं तो यह बात आज पहले-पहल सुनती हूं। ख़ैर, आगे ?"

"इस तरह का पद है।"

"कसम खा अपनी आत्मा की, जो कि तेरे पास नहीं है।"

"मैं कसम खाता हूं।"

"मुझे तेरा विश्वास नहीं होता।"

"धन्यवाद, सरकार !"

"तो तू क्या चाहता है ? ज़रा फिर से कह तो।"

"समुद्र की बोतलों के काग खोलना।"

"यह तो ऐसा काम है, जिसमें कोई तकलीफ नहीं हो सकती। यह घोड़े के पुतले की सईसी करने के समान है।"

"बिल्कुल ठीक, सरकार !"

"कुछ काम नहीं। ठीक यह काम तेरे लायक है, और तू उसीके लायक है।"

"तब तो सरकार ने भी कबूल कर लिया कि मैं किसी काम के लायक हूं।"

"चल ! तू अब फजूल बकने लगा। क्या ऐसा कोई पद है ?"

बारकिल फ़ीड्रो ने एकाएक आदरयुक्त गम्भीरता का भाव धारण

किया और बोला, "सरकार, इंग्लैंड के लार्ड हाई ऐडमिरल का पद बड़ा गौरवपूर्ण है। सरकार, किसी समय उसपर आपके भव्य पिताजी, राजा द्वितीय जेम्स थे और आजकल आपके एक तेजस्वी बहनोई साहब हैं, कम्बरलैंड के ड्यूक डेनमार्क के जार्ज..."

"यह नई बात तू क्या सुनाता है? यह तो सब मैं भी जानती हूं।"

"लेकिन एक बात ऐसी है, जो सरकार को भी नहीं मालूम है। समुद्र में तीन तरह की चीजें रहती हैं। एक तो वे, जो कि तल में रहती हैं, वे लैगन कहलाती हैं। दूसरी वे, जो कि पानी पर तैरती हैं, वे फ्लोट्सम कहलाती हैं। तीसरी वे, जिनको कि समुद्र जमीन पर फेंक देता है, वे जेट्सम कहलाती हैं।"

"अच्छा?"

"इन तीनों चीजों—लैगन, फ्लोट्सम और जेट्सम—पर लार्ड हाई एडमिरल का अधिकार रहता है।"

"मतलब?"

"आप समझ गईं, सरकार?"

"यही तो जानना चाहती हूं।"

"जो कुछ समुद्र के भीतर है, जो कुछ समुद्र में डूबता है, जो कुछ समुद्र में तैरता है, जो कुछ समुद्र किनारे पर फेंक देता है—उस सब पर इंग्लैंड के ऐडमिरल का अधिकार है।"

"सब पर! सचमुच? और फिर?"

"सिवा स्टर्जन मछली के, जिसपर सिर्फ राजा का अधिकार है।"

जोशियाना बोली, "मैं तो सोचती थी कि इस सब पर नेप्च्यून (वरुणदेव) का अधिकार होना चाहिए।"

"वरुण तो मूर्ख है। उसने सबकुछ छोड़ दिया है। उसने अंग्रेजों को हरेक चीज ले लेने की इजाजत दे रखी है।"

"पहले अपनी बात पूरी कर!"

"इस तरह के माल को 'समुद्र की भेंट' नाम दिया गया है।"

"यही सही!"

"समुद्र असीम है। वहां कुछ-न-कुछ सदा तैरता रहता है, किनारे पर फिकता रहता है। यह समुद्र की देनगी है—टैक्स है, जो कि समुद्र इंग्लैंड को देता है।"

"खैर, भई, किस्सा तो खत्म कर!"

"सरकार समझीं! इस तरह समुद्र एक नया सरकारी विभाग बनाता है।"

"कहां ?"

"ऐडमिरेल्टी में।"

"कौनसा विभाग ?"

"समुद्र की भेंट का विभाग !"

"अच्छा ?"

"यह विभाग तीन हिस्सों में विभक्त किया गया है—लैगन, फ्लोट्सम और जेट्सम—और हरेक पर एक-एक अफसर रहता है।"

"अच्छा फिर ?"

"समुद्र पर से जहाज ज़मीन पर के आदमियों को सूचना देने के लिए पत्र लिखता है, कि वह फ़लां जगह पर है। उसको जल-राक्षस मिला है। उसको समुद्र का किनारा दीखता है। वह विपत्ति में है। वह टकराने-वाला है। वह डूबता है, आदि-आदि ! कप्तान एक बोतल लेता है, उसके अन्दर वह खबर का कागज भर देता है, ऊपर से काग लगा देता है और उस बोतल को समुद्र में फेंक देता है। यदि वह बोतल नीचे बैठ जाती है तो लैगन अफसर के हल्के में पहुंच जाती है। यदि वह तैरती रहती है तो वह फ्लोट्सम अफ़सर के हल्के में रहती है। यदि वह किनारे से लग जाती है तो उसका सम्बन्ध जेट्सम अफ़सर से रहता है !

"और तू जेट्सम अफसर होना चाहता है ?"

"बिल्कुल वही !"

"और उसे तू समुद्र की बोतलों के काग खोलना कहता है।"

"क्योंकि उसका यही काम है।"

"तू पहले दो के मुकाबले में इसीको क्यों पसन्द करता है ?"

"क्योंकि वह इस समय खाली है।"

"यह पद कैसा है ?"

"सरकार, १५६८ में एपीडियम प्रोमोन्टोरियम में समुद्र-तट पर मछली मारते हुए एक आदमी को एक डामर पुती हुई बोतल मिली थी। उसमें से एक परचा निकला, जिससे इंग्लैंड को यह खबर मालूम हुई कि हालैंड ने बिना बताये नोवा जेम्ला नाम के एक अज्ञात प्रदेश पर अधिकार कर लिया है। यह अधिकार जून १५६६ में हुआ था; उस देश में रीछ आदमियों को खा जाते हैं। उस देश में लोग शीत ऋतु कैसी बिताते हैं, इसका वर्णन एक कागज में मिला था, जो कि उस द्वीप पर बने हुए लकड़ी के मकान की चिमनी के बीच बंदूक के सन्दूक के अन्दर बन्द मिला था। उसे डच लोगों ने वहां रखा था और वे सब मर गये थे। और वह चिमनी

पीपे की बनाई गई थी, जिसके दोनों सिरे छांट दिये गए थे और जो छप्पर में धंसा दिया गया था।"

"मैं तेरी इस ऊटपटांग बकवास का मतलब नहीं समझी।"

"खैर, एलिजाबेथ समझ गई थीं। हालैंड का एक देश अधिक होना इंग्लैण्ड के लिए एक देश कम होना था। जिस बोतल ने यह सूचना दी थी, वह बहुत महत्व की समझी गई और उसी समय आज्ञा प्रचारित की गई कि जिस किसीको समुद्र के किनारे मुहरबन्द बोतल मिले, वह उसको इंग्लैण्ड के हाई ऐडमिरल के पास पहुंचा दे, वरना वह फांसी पर चढ़ा दिया जायगा। एडमिरल ऐसी बोतलों को एक अफसर के जिम्मे करता है, और वह अफसर यदि आवश्यक समझता है तो बोतल के अन्दर की चीजें रानी के सामने पेश करता है।"

"क्या ऐडमिरेल्टी में ऐसी बहुत-सी बोतलें आती हैं?"

"बहुत थोड़ी। पर इससे क्या! वह पद अभी भी कायम है। उस पद के लिए ऐडमिरेल्टी में कमरा और रहने की जगह है।"

"और इस 'कुछ न करने' के काम के लिए तनख्वा क्या है?"

"एक सौ गिनी सालाना।"

"और इतने-से के लिए तू मुझे तकलीफ देना चाहता है?"

"यह मेरे जीवन-निर्वाह के लिए काफी है।"

"भिखारी के समान।"

"यह मेरे जैसे आदमी के योग्य है।"

"एक सौ गिनी! नगण्य!"

"जिससे आपका एक मिनट गुजरता होता है, उससे हमारा साल-भर गुजर जाता है। गरीबी में यही तो फायदा है।"

"जा, तुझे वह जगह मिल जायेगी।"

एक हफ्ते के बाद जोशियाना के प्रयत्नों से और लार्ड डेविड डिरी-मोयर के प्रभाव से बारकिल फ़ीड्रो, दूसरे के आश्रय से निकलकर सुरक्षित रूप से रहने का स्थान, भोजन और एक सौ गिनी तनख्वा पर ऐडमिरेल्टी में प्रस्थापित हो गया।

७. बारकिल फ़ीड्रो का मार्ग बनाना

एक काम सबसे भारी है—कृतघ्न होना।

बारकिल फीड्रो में इसकी कमी नहीं थी।

"जोशियाना से इतने अधिक फ़ायदे उठाने पर स्वभावत: उसके मन में एक विचार उठता था—उससे बदला लेने का। जोशियाना सुन्दर,

महान्, जवान, धनवान, प्रभावशाली और तेजस्वी थी; और बारकिल फ़ीड्रो कुरूप, छोटा, बूढ़ा, गरीब, आश्रित और तुच्छ था। इसलिए उसे इन सब बातों का बदला लेना ही चाहिए।

जब कोई आदमी अन्धकार से बना हो, तो वह प्रकाश की इतनी किरणों को कैसे क्षमा कर दे!

बारकिल फ़ीड्रो आयरिश था और उसने आयरलैण्ड का परित्याग कर रखा था, यह भी बुरी ही बात थी।

बारकिल फ़ीड्रो के पक्ष में एक चीज थी—वह यह कि उसका पेट बहुत बड़ा था। बड़ा पेट दयालुता की निशानी समझा जाता है। किन्तु बारकिल फ़ीड्रो का पेट उसके दंभ का पोषक था; क्योंकि वह द्वेष-पूर्ण था।

बारकिल फ़ीड्रो की उम्र क्या थी? उम्र क्या, वह उसके उस समय के उद्देश्य के लायक ही थी। वह झुर्रियों और सफेद बालों के कारण तो बूढ़ा था, किन्तु मन की तेजी में जवान था। वह फुर्तीला और भारी था। एक तरह का अरना भैंसानुमा बन्दर। राजपक्षवादी? अवश्य। प्रजा-तन्त्रवादी? कौन जाने। कैथोलिक, शायद! प्रोटेस्टेण्ट? निःसंशय। पुराने राजवंश के पक्ष में! संभवतः। नये वंश के पक्ष में? प्रकट ही है। किसीके पक्ष में होने में प्रभुता है, बशर्ते कि साथ-साथ तुम उसके विरुद्ध भी होओ। बारकिल फ़ीड्रो इसी बुद्धिमानी का अनुयायी था।

समुद्र की शीशियों के काग खोलनेवाले का पद उतना भद्दा नहीं था, जितना कि बारकिल फ़ीड्रो के शब्दों में प्रकट होता था। उस जमाने में इंग्लैंड में इस बात की शिकायतें और उनसे सनसनी फैली हुई थी कि किसी जहाज के डूब जाने पर किनारे के लोग उसका सामान लूट लिया करते हैं, और समुद्र पर जो कुछ बहता हुआ मिलता है, उसे अपने घर में रख लेते हैं। इसलिए सरकार ने इस मामले में एक सुधार किया वह यह कि डूबे जहाज़ का सामान और माल वगैरा देहातियों के हाथ में पड़ने की बजाय ऐडमिरेल्टी में ज़ब्त हो जाय। इंग्लैंड के किनारे पर बहकर लगा हुआ सभी सामान—व्यापारी माल, जहाजों के टूटे हुए मस्तूल; पीपे, पेटियां वगैरा सबपर इंग्लैंड के लार्ड ऐडमिरल का अधिकार होता है, किन्तु—और इसीमें बारकिल फ़ीड्रो की मांगी हुई जगह का महत्व है—उन तैरती हुई चीज़ों की ओर, जिनमें कि कोई संदेश रहता था, ऐडमिरेल्टी विशेष ध्यान देती थी। जहाज़ों के डूबने के सम्बन्ध में इंग्लैंड बहुत सावधान था। उसका जीवन जहाज चलाने की कला पर निर्भर होने के कारण जहाजों के डूबने की उसे बहुत चिन्ता रहती थी। समुद्र इंग्लैंड को सदा सतर्क बनाये रहना

है। नष्ट होते हुए जहाज पर से समुद्र में फेंकी हुई छोटी-सी शीशी में आखिरी समाचार रहता है, जो कि हर तरह से महत्वपूर्ण होता है। जहाज कैसे डूबा, उसपर कितने यात्री या मल्लाह थे, कहां, किस समय और कैसे डूबा, हवा कैसी थी, किन प्रवाहों में जहाज आ गया, यात्रियों का आखिरी सन्देश क्या था, आदि बातें ऐसी होती हैं, जिनके जान लेने से इंग्लैंड-जैसे राष्ट्र को बहुत फायदा होता है।

बारकिल फ़ीड्रो जिस पद पर नियुक्त हुआ था, वह एक शताब्दी पहले तोड़ दिया गया था, किन्तु वह वास्तव में उपयोगी था। उस पद का आखिरी अफसर लिंकनशियर के डॉडिंगटन का विलियम हेसी नाम का आदमी था। उस पद का अधिकारी एक प्रकार से समुद्र की वस्तुओं का संरक्षक था। समुद्र द्वारा इंग्लैंड के किनारे पर फेंके हुए सभी मुहरबन्द बरतन, बोतलें, कुप्पियां, घड़े वगैरा उसके पास लाये जाते थे। उन्हें खोलने का हक उसीको था। सबसे पहले उनके भीतर का रहस्य उसे ही मालूम होता था। वह उन्हें तरतीब से जमाकर उनपर अपने दस्तखत के टिकट लगा देता था। हां, इसके बारे में एक बात की सावधानी ज़रूर रखी जाती थी और वह यह कि इनमें से कोई भी बोतल ऐडमिरेल्टी के दो ज्यूररों (पंचों) की मौजूदगी के बिना नहीं खोली जाती थी। ये ज्यूरर सब बातें गुप्त रखने की कसम खाते थे और दफ्तर की बाज़ाप्ता रिपोर्ट के ऊपर जेट्सम अफसर के साथ दस्तखत करते थे। परन्तु वे ज्यूरर सब बातें गुप्त रखने के लिए बाध्य थे। इसलिए बारकिल फ़ीड्रो को इस मामले में थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता रहती थी। कुछ हदतक किसी बात को दबा देना या ज़ाहिर कर देना उसके हाथ में था। जैसा कि बारकिल फ़ीड्रो ने कहा था कि इस तरह के तैरते हुए संदेश बहुत कम आते हों सो बात नहीं। कुछ संदेश तो जल्दी किनारे से लगते थे, और कुछ वर्षों बाद पहुंचते थे। यह सब हवा और पानी के प्रवाह पर निर्भर था। इस समय समुद्र में बोतलें फेंकने की प्रथा, मानता मानने की प्रथा के समान, कम हो गई है। किन्तु उन धार्मिक ज़मानों में लोग मरते समय परमात्मा और मनुष्यों के पास अपने अन्तिम विचार इस प्रकार भेजकर खुश होते थे; और कभी-कभी तो इस प्रकार समुद्र से ऐडमिरेल्टी में आये हुए सन्देश बहुत-से जमा हो जाते थे। एटलीन के हॉल में रखे हुए एक परचे से, जिसमें राजा जेम्स के ज़माने के, इंग्लैंड के ग्रेंड ट्रेज़रर (खजाञ्ची) के हाथ का लेख है, यह मालूम होता है कि, एक साल के भीतर, सन् १६१५ में डूबते हुए जहाजों के समाचारवाली बावन कुप्पियां, बोतलें और डामर पुते हुए बरतन ऐडमिरेल्टी में पहुंचे थे और कागजात भी दर्ज किये गए थे।

राज-दरबार की नियुक्तियां पानी पर पड़ी हुई तेल की बूंद के समान एकदम फैलने लगती हैं। इसी तरह दरबान खज़ान्ची बन जाता है और साईस पुलिस-कप्तान। बारकिल फ़ीड्रो जिस पद को चाहता था, उस पद का अफसर कान्फिडेन्शल (विश्वस्त) रहता था। एलिजाबेथ चाहती थी कि वह विश्वस्त हो। राज-दरबार में विश्वास की बात करना साजिश की बात करना है, और साज़िश की बात में शामिल होने के मानी हैं अपनी उन्नति की ताली ढूंढ़ लेना। यह पद विशेष महत्व की वस्तु समझा जाता था। उसके अफसर को महल में प्रवेश करने (जिसे नम्र-प्रवेश कहते हैं) यहांतक कि शयनागार में भी प्रवेश करने का अधिकार था; क्योंकि उस समय यह प्रथा थी कि महत्व के अवसरों पर वह समुद्र में मिली हुई वस्तुओं की सूचना राजधानी को तुरन्त दे; ये वस्तुएं प्रायः विचित्र रहती थीं—विपत्तिग्रस्त मनुष्यों के मृत्युलेख मातृभूमि के लिए भेजे हुए अंतिम संदेश, जहाज़ की रफ्तार नापने के यन्त्रों की गलती की पकड़, व्यापारी माल की सूची, समुद्र पर किये हुए जुर्म, राजा को दी हुई जायदादों के दानपत्र, इत्यादि। उस अफसर को इन सब चीजों के सारे कागज़ात राजा-रानी के सामने पेश करने पड़ते थे। यह समुद्र का काला मन्त्रिमंडल था।

जब कभी जेट्सम अफसर समुद्र से मिला हुआ इस तरह का कोई कागज लेकर रानी एलिजाबेथ के पास पहुंचता था तो वह पूछा करती थी, "वरुण, मेरे लिए क्या लिखता है?"

रास्ता कुरेदा जा चुका था, कीड़ा सफल हुआ। बारकिल फ़ीड्रो रानी के पास तक पहुंच गया।

वह यही चाहता था।

क्या सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए? नहीं।

क्या दूसरों को नष्ट करने के लिए? इसमें अधिक सुख है।

दूसरों को कष्ट देने में आनन्द है।

अपने अन्दर दूसरों को कष्ट पहुचाने की, अस्पष्ट किन्तु असन्तोष्य, इच्छा का होना और उसका कभी दृष्टि की ओट न होना, हर किसीको प्राप्त नहीं है।

बारकिल फ़ीड्रो में इस उद्देश्य की दृढ़ता थी।

जैसे बुल-डॉग अपने जबड़ों से जकड़ लेता है, उसी तरह वह अपने विचारों को जकड़े हुए था।

अपनेको असांत्वनीय समझने में उसे बड़ा सन्तोष मिलता था। जब-तक उसके दांतों के नीचे कोई शिकार दबा रहता था, या उसकी आत्मा में कुकर्म का संकल्प रहता था, तबतक उसे अन्य किसी वस्तु की आवश्य-

कता नहीं रहती थी।

उसका पड़ोसी जिस ठंड से पीड़ित था, उसने कांपते हुए वह दुखी था। द्वेषी होना धनाढ्यता है। ऐसा मनुष्य गरीब समझा जाता है, और वास्तव में वह रहता भी गरीब है; परन्तु उसका द्वेष ही समस्त संपत्ति है, और वह इस संपत्ति को पसन्द करता है। जिसने जिसको सन्तोष मिलता है, उसके लिए उसीमें सन्तोष है। किसीका बुरा करना, किसीके भले के समान है। बुरा उसके लिए जिसे कि सहना पड़ता है, भला उसके लिए जो कि सहाता है। इंग्लैंड की पार्लमेंट को बारूद से उड़ा देने के षड्यंत्र में गे-फाक्स का साथी केट्सबाई बोला, "कोई मुझे एक लाख पौंड दे तो भी मैं पार्लमेंट के मेम्बरों को सुरंग के धड़ाके से उड़ते हुए देखने का आनन्द न छोड़ूं।"

बारकिल फ़ीड्रो क्या था ?

सबसे नीच और भयंकर जन्तु—ईर्ष्यालु !

ईर्ष्या एक ऐसी वस्तु है, जिसे राज-दरबार में आसानी से जगह मिल जाती है।

राज-दरबार में उद्धत मनुष्यों की, ठलुओं की, गप्पों के भूखे धनवान बेकारों की, घास के ढेर में सुई ढूंढ़नेवालों की, टुच्चों की, मजाक उड़ानेवालों की, बातूनी बेवकूफों की, और उन लोगों की भरमार रहती है, जो कि ईर्ष्यालु के अलावा और किसीसे बात नहीं कर सकते।

दूसरों की बुराई सुनने में कैसी ताज़गी मालूम होती है !

ख़ुफ़िया बनने के लिए ईर्ष्या बहुत अच्छा गुण है। स्वाभाविक ईर्ष्या और उस सामाजिक कार्य ख़ुफ़ियागीरी के बीच पूरी समानता है। ख़ुफ़िया कुत्ते के समान दूसरे के लिए शिकार करता है। ईर्ष्यालु बिल्ली के समान अपने ख़ुद के लिए शिकार करता है।

ईर्ष्यालु आदमी होता है 'भयंकर मैं !'

बारकिल फीड्रो चतुर था, रहस्यमय था। वह हर चीज को अपने अन्दर रखता था और घृणा के साथ झूमा करता था। विशाल नीचता में सम्मिलित है विशाल अहमन्यता। वह जिनका मनोरंजन करता था, वे उसे चाहते थे, और दूसरे सबसे घृणा करते थे, उनके बारे में वह अनुभव करता था कि वे उसकी अवज्ञा करते हैं और जो उसे चाहते थे उनके बारे में वह सोचता था कि वे उससे तिरस्कार करते हैं। वह बड़ी खामोशी धारण किये रहता और उसका सारा विष उसके इस विद्वेषपूर्ण संयम में चुपचाप पकता रहता था। वह रुष्ट था, मानो बदमाशों को रुष्ट होने का अधिकार है वह चुपचाप क्रोध का बलिदान बन रहा था। हर चीज को निगल जाना

ही उसे सूझता था। उसकी ऊपरी सतह पर मुस्कराहट थी। वह कृपालु, तत्पर, सरल, प्रेमी और अनुग्रही था। मतलब के सामने मान-अपमान की तो उसे परवाह थी ही नहीं। वह हर जगह और हर आदमी के सामने झुक जाता। उसे ज़मीन तक झुकाने के लिए ज़रा-सा झोंका काफी होता था। अरे, कमर की रीढ़ यदि बेंत की बनी होती तो सम्पत्ति प्राप्त करने में कितना सुभीता होता! इस तरह के छिपे हुए और जहरीले प्राणी उतने विरले नहीं है, जितना कि सोचा जाता है। हमारे आस-पास रेंगनेवाले अपशकुनों की भरमार है। ये लोग दुष्ट क्यों होते हैं? बहुत बारीक प्रश्न है। स्वप्नदर्शी लगातार इसपर मनन करता है और ज्ञानी सदा सोचा करता है।

धीरज, अ-मादकता, सदाचार, गम्भीरता, आत्म-संयम, रम्यता, आदर, सौजन्य, सुशीलता. सादगी, और पवित्रता ने मिलकर बारकिल-फ़ीड्रो को सम्पूर्ण कर दिया था; पर वह इन सद्गुणों को धारण करके उन्हें कलंकित कर रहा था।

कुछ ही समय में बारकिल फ़ीड्रो ने राज-दरबार में अपना पैर जमा लिया।

८. घृणा भी उतनी ही बलवती, जितनी प्रीति

राज-दरबार में बल प्राप्त करने का एक ही उपाय है, छोटापन। यदि तुम बलवान होना चाहते हो तो छोटे बने रहो। नाचीज बनो। ज़मीन पर पड़ा हुआ कुडलीदार सांप एक साथ अनन्त और 'कुछ-नहीं' का आकार दीखता है।

इस प्रकार का सर्प-समान सौभाग्य बारकिल फ़ीड्रो को प्राप्त था।

राजाओं के कानों पर उनका अपना अधिकार नहीं होता; इसीलिए आमतौर पर वे बेचारे अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार नहीं होते। जिसके अपने निज के विचार नहीं, उसके अपने निज के कोई कार्य नहीं।

बारकिल फ़ीड्रो को निमित्त मिलते ही रानी के साथ उसका सम्बन्ध वैसा ही हो गया जैसा कि डचेज़ जोशियाना के साथ था।

राजदरबार में चक्रों के अन्दर चक्र होते हैं। बारकिल फीड्रो उन सबको घुमानेवाली शक्ति बन गया। आपने खयाल किया होगा कि किसी-किसी कल में सारे पुर्जों को घुमानेवाला चक्र कितना छोटा होता है।

धीरे-धीरे बारकिल फ़ीड्रो ने चालाकी से उन सब रहस्यों का पता लगा लिया, जिनसे कि बड़े आदमी छोटों के काबू में हो जाया करते हैं।

राजा यह नहीं पसन्द करते कि उनके आस-पास के आदमी अपनेको बड़ा समझें। दूसरों का मजाक उड़ाये जाते देख उन्हें बहुत खुशी होती है।

वारकिल फ़ीड्रो की बुद्धिमत्ता इसी में थी कि वह सदा लार्डों और राजकुमारों को छोटा दिखाया करता था, ताकि मुकाबले में राजासाहब बहुत बड़े मालूम हों।

ऊपर से कुछ भी नहीं और जड़ में सबकुछ। इस प्रकार था वारकिल फ़ीड्रो का रानी पर प्रभाव। राजदरबार की इन बुरी घासों को उखाड़ना बहुत कठिन है—उनकी जड़ें तो गहरी रहती हैं, किन्तु वे जमीन के ऊपर पकड़ में नहीं आतीं।

दिन-पर-दिन रानी की कृपा वारकिल फ़ीड्रो पर बढ़ने लगी। रानी की परिचारिका सैरा जेनिंग्ज़ मशहूर थी; पर वारकिल फ़ीड्रो को कोई नहीं जानता। उसके अस्तित्व की ओर किसीका ध्यान नहीं। वारकिल फ़ीड्रो का नाम इतिहास तक नहीं पहुंचा।

प्रकृति के समान मन भी शून्यता को पसन्द नहीं करता। इस शून्यता में प्रकृति प्रेम भर देती है। मन बहुधा घृणा से भरता है। घृणा उसमें समा जाती है।

अस्पष्ट घृणा मधुर होती है और कुछ समय के लिए काफी होती है; किन्तु अंत में उसका कोई-न-कोई उद्देश्य हो ही जाता है। समस्त संसार पर फैली हुई घृणा, एकान्त प्रेम के समान थका देती है। बिना उद्देश्य की घृणा बिना निशाने की चांदमारी के समान है। उस खेल में, जिस चीज में मजा आता है वह है, छेदने के लिए दिल। केवल गौरव के लिए कोई घृणा नहीं कर सकता; कुछ-न-कुछ निशाना चाहिए—खत्म करने के लिए आदमी, स्त्री, कोई भी हो, चाहिए ज़रूर!

विचार गोली हैं। वारकिल फ़ीड्रो ने, पहले ही दिन से जोशियाना को अपने दिल के बुरे इरादों का निशाना बनाया। इरादा और बन्दूक एक समान हैं। वारकिल फ़ीड्रो जोशियाना को ताक कर अपनी गुप्त घृणा का वार कर रहा था। इससे आपको आश्चर्य होता है! उस पक्षी ने आपका क्या बिगाड़ा है, जिसपर आप गोली चलाते हैं? आप कहते हैं, हम उसे खाना चाहते हैं? वारकिल फ़ीड्रो भी तो यही करना चाहता था।

जोशियाना के हृदय पर वार नहीं हो सकता था। जो जगह गूढ़ रहती है वहां आघात नहीं हो सकता; परन्तु उसके सिर पर चोट की जा सकती थी—अर्थात् उसके गर्व पर। वह वहीं पर अपनेको मजबूत समझती थी और वही स्थान उसका कमजोर था।

वारकिल फ़ीड्रो यह बात जान गया था। यदि जोशियाना वारकिल फ़ीड्रो के अन्धकार के आर-पार देख सकती, यदि वह जान सकती कि उसकी मुस्कराहट के पीछे क्या छिपा है, तो वह मानिनी, यद्यपि इतने ऊंचे

पद पर थी, तो भी कांप जाती। किन्तु वह गहरी नींद में सोई थी, बारकिल फीड्रो के अन्दर जो कुछ था उसका ज्ञान उसे बिल्कुल नहीं था।

बारकिल फ़ीड्रो जो दुष्कर्म करने जा रहा था, उसका मजा उसे पहले से ही आ रहा था और वह खूब खुश था। उसे अभी तक नहीं मालूम था कि वह जोशियाना के साथ क्या करेगा; किन्तु उसने कुछ-न-कुछ करने का निश्चय कर लिया था। इस तरह का निर्णय करना ही बहुत भारी काम था। जोशियाना को नष्ट कर देना बहुत बड़ी विजय थी। वह इतने अधिक की उम्मीद नहीं करता था; परन्तु उसको नीचा दिखाना, छोटा बनाना, अफसोस में डालना, उसकी गर्वीली आंखों को गुस्से के आंसुओं से लाल कर देना—कितनी भारी विजय है! उसे उसकी पूरी आशा थी। वह दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी, अपने पड़ोसी को सदा कष्ट देने में तत्पर, और अपने उद्देश्य से न हटनेवाला था। उसको प्रकृति ने व्यर्थ नहीं बनाया था। वह अच्छी तरह जानता था कि जोशियाना के जिरह-बख्तर की कमज़ोरी का पता कैसे लगाया जा सकता है और उस उच्च महिला का खून कैसे बहाया जा सकता है।

हम फिर पूछते हैं कि ऐसा करने से उसको क्या फायदा होता? बेहद फायदा—यही कि जिसने तुम्हारे साथ भलाई की है, उसके साथ बुराई करने का फायदा। द्वेषी आदमी क्या है? वह कृतघ्न है। वह उस अग्नि से घृणा करता है, जो कि उसे प्रकाश देती है और गर्मी पहुचाती है। जोशियाना के अंग-अंग पर नश्तर लगाकर काटना, उसका जीते-जी अंग-विच्छेद करना, वह जब चीखती हो उस समय धीरे-धीरे उसके अंदर चाकू घुमाना—इस बात के खयाल से ही बारकिल फ़ीड्रो खुश हो जाता था।

इस नतीजे पर पहुंचने के लिए यह ज़रूरी है कि खुद भी कुछ पीड़ा सहे और उसने अपनी इच्छा से पीडा सही भी। हम कभी-कभी अपनी ही संडसी से अपने बदन में चिमटी ले लेते हैं। चाकू बन्द करते समय हमारी उंगली कट जाती है। पर इससे क्या? इसमें कोई हर्ज़ नहीं कि जोशियाना के कष्ट का थोड़ा-सा हिस्सा उसे मिल जाय। जल्लाद लाल गरम लोहे से कैदी को दागते समय खुद को ज़रा-सा चटका लग जाने की परवा नहीं करता। चूंकि दूसरे को बहुत ज्यादा तकलीफ है, उसे अपनी तकलीफ मालूम नहीं होती। मजलूम की छटपटाहट को देखकर ज़ालिम खुद अपनी तकलीफ भूल जाता है।

जोशियाना अभिमान और अज्ञान के कारण यह समझती थी कि वह पूर्णरूप से सुरक्षित है, इसलिए वह सब तरह के खतरों को तुच्छ समझती थी। स्त्रियों का अवज्ञा करने का स्वभाव प्रसिद्ध है। जोशियाना का निर-

स्कार विचार-रहित, इच्छा-रहित और अविश्वास रहित था। बारकिल फ़ीड़ो को वह इतना तुच्छ समझती थी कि यदि कोई उनसे कहता कि इस प्रकार का भी कोई प्राणी मौजूद है, तो उसे आश्चर्य होता। वह इस आदमी के सामने चलती, फिरती और हँसती रहती थी और यह उसकी ओर सदा बुरी निगाह से देखा करता था। वह अवसर की ताक में था। इस स्त्री के जीवन में निराशा की छाया डालने का उसका निश्चय बढ़ता जाता था। घृणा का तूफ़ान अदम्य है!

अपने निश्चय के बारे में उसके पास उत्कृष्ट कारण मौजूद थे। यह नहीं सोचना चाहिए कि दुष्टों में आत्म-प्रशंसा का अभाव रहता है। वे मन-ही-मन ऊंची-ऊंची बातें करते हुए हरएक तफ़सील की छानबीन करते है, और वे हर चीज़ की कड़ी परीक्षा करते हैं। कैसे ? इस जोशियाना ने उसपर दया दिखाई थी! उसने अपनी विशाल संपत्ति से कुछ जूठन भिखारी के समान उसके सामने फेंक दी थी। उसने उसे ऐसा पद दिला दिया था जो कि उसकी योग्यता से कहीं नीचा था। हां, जो बारकिल फ़ीड़ो करीब-करीब पादरी था, विविध और गंभीर ज्ञान का भंडार और विद्वान था, और जिसमें बिशप होने का माद्दा था, उस बारकिल फ़ीड़ो को समुद्र की गन्दगी से सनी हुई और मूर्खता से भरी हुई बोतलों के काग गंभीरता-पूर्वक निकालते हुए और जादू-टोने की किताबों के समान गन्दे परचों और मैले मृत्यु-पत्रों तथा उसी तरह के अन्य अस्पष्ट लेखों का मतलब निकालते हुए, रजिस्टर आफिस की सड़ी हुई कोठरियों में जीवन बिताना पड़े! इसमें सारा दोष जोशियाना का है। सबसे बुरी बात तो यह है कि यह जानवर की बच्ची उससे, 'तू' करके बोलती है! और तिसपर भी वह बदला न ले—इस व्यवहार की सज़ा न दे! तब तो संसार से न्याय उठ जायगा।

६. वह ज्वाला

जोशियाना! कौन? यह विलासिनी—यह स्वप्न देखनेवाली कामुक औरत! अवसर नहीं मिलता तबतक की कुंवारी, अभी तक न छीना हुआ यह मांस का टुकड़ा, राजकुमारी का मुकुट धारण किये हुए यह साहसी भिखारिन; यह गर्व से अपनेको देवी समझनेवाली मानवी! यह जो कि अभी तक आगन्तुक के हाथ में सिर्फ इसलिए नहीं पड़ी है कि ईश्वर की यही इच्छा है; यह पतित राजा की जारज लड़की, जिसमें अपनी मर्यादा कायम रखने की बुद्धि नहीं थी! यह जो केवल भाग्य के ज़ोर पर डचेज बनी बैठी है, जोकि सुन्दरी होने के कारण देवी बनने का नाट्य करती है और जोकि यदि धनवान न होती तो वेश्या का काम करती; यह स्त्री यह

एक निर्वासित आदमी की सम्पति को लूटनेवाली, यह शान दिखानेवाली कंचनी; चूंकि एक दिन उस बारकिल फ़ीड्रो के पास रहने और खाने के लिए पैसा नहीं था, इसलिए उस स्त्री को यह साहस करने का अवसर मिला कि वह अपने मकान में भोजन के टेबल के एक कोने पर उसे बिठा ले और अपने महल के किसी बिल में उसे रहने की अनुमति दे! कहां? इससे क्या? कहीं भी। शायद अनाज के कोठे में, शायद तलघर में। पर इससे क्या? अपने खानसामाओं से कुछ अच्छी हालत में, अपने घोड़ों से कुछ बुरी हालत में। उसने उसकी, उस बारकिल फ़ीड्रो की, विपत्ति का दुरुपयोग किया, और उसके साथ विश्वासघातपूर्ण भलाई करने की जल्दी की; धनवान लोग गरीबों को नीचा दिखाने और कुत्तों के समान, बांधने के लिए, अक्सर ऐसा ही करते हैं। इसके अलावा, उसने बारकिल फ़ीड्रो के लिए जो कुछ किया उसमें उसको क्या त्याग करना पड़ा? उपकार का तो मूल्य उतना ही है, जितना कि उसके लिए त्यागना पड़ता है। उसके मकान में खाली कमरे थे। उसने बारकिल फ़ीड्रो को आसरा दिया! ओहो! बड़ा भारी काम किया, सचमुच। क्या उसके कारण उसे एक चमचा भर भी कम शोरबा खाना पड़ा? ज़रूरत से ज़्यादा उमड़ते हुए घृणित ऐशोआराम में ज़रा-सी भी कमी आई? नहीं। उसमें वृद्धि हुई अभिमान की। अभिमान भी तो शौकीनी है। उंगली की अंगूठी के समान एक अच्छा काम, एक चतुर आदमी की सहायता, एक पादरी को आश्रयदान है। वह शान मार सकती है, "मैं दया दिखाती हूं। मैं विद्वानों का पेट भरती हूं। मैं उसका हित करती हूं। उस बेचारे का सौभाग्य कि मेरे पास आ गया! मैं विद्वानों की संरक्षिका हूं!" यह सब इसलिए कि उसने अपनी छत के नीचे एक भद्दी-सी कोठरी में सोने के लिए मुझे एक छोटी-सी खटोली दे दी थी। ऐडमिरेल्टी की जगह बारकिल फ़ीड्रो को जोशियाना की वजह से ही मिली थी। हे ईश्वर, बड़ी अच्छी जगह! बारकिल फ़ीड्रो जो कुछ था वह जोशियाना की कृपा का ही फल था। उसने बारकिल फ़ीड्रो को बनाया था। यही सही। जी हां, बनाया था—कुछ नहीं से भी बदतर। इस भद्दी अवस्था में वह दबा जाता था, उसकी ज़बान पर ताला लगा था, और उसकी सूरत बिगड़ रही थी। जोशियाना को वह किस चीज़ का देनदार था? उन धन्यवादों का, जिनकी कि एक कुबड़े बालक की तरफ से उसको पैदा करनेवाली माता हक़दार रहती है। ज़रा देखो तो इन विशेषाधिकारियों को, इन सौभाग्य-मंडित श्रीमानों को, इन नये-नये चमकनेवालों को, इन सम्पदा के दुलारों को! और उस प्रतिभाशाली बारकिल फ़ीड्रो को जिसे मजबूर होकर इन सीढ़ियों के नीचे खड़े रहना पड़ता है, इनके चपरासियों को झुककर सलाम करना

पड़ता है, मकान के ऊपर चढ़ना हो तो वह रात को ही चढ़ सकता है, उसे शिष्टता दिखानी पड़ती है, परिश्रमी तथा आनन्दी बनना पड़ता है, और सदा अपने चेहरे पर आदर का भाव धारण किये रहना पड़ता है! क्या यह गुस्से से होंठ चबाने के लिए काफी था! विद्वान बारकिल फ़ीड़ो ने यह व्यवहार! और उस मूर्ख लार्ड डिरी-मोयर से ? उसके सामने तो यह बेव-कूफ अपने गले में मोतियों की माला डाले हुए सम्मोहन-लीलाएं किया करती थी! छोकड़ी कहीं की!

किसीको अपने ऊपर उपकार मत करने दो। उससे उन्हें जो सुविधा मिलती है, उससे वे बेजा फायदा उठावेंगे। उनके सामने तुम भूखे मरते हुए कभी मत जाना। वे तुम्हारी मदद करेंगे। वह भूखों मर रहा था, इसलिए इस स्त्री को उसे टुकड़ा देने का काफी बहाना मिल गया। उस क्षण से वह उस स्त्री का नौकर बन गया; पेट की आग जीवन-भर की जंजीर तैयार कर देती है! अनुग्रहीत होना बिक जाना है। सुखी और बलवान उस अवसर का फायदा उठाये बिना नहीं रहते। तुम हाथ आगे बढ़ाते हो और वे उस-पर एक पैसा रख देते हैं; वे तुम्हारी कमज़ोरी की नाजुक हालत में तुमको गुलाम बना लेते हैं, और गुलाम भी बड़ी बुरी तरह का। उदारता के कर्य का गुलाम—गुलाम ऐसा कि जिसे अपने गुलाम बनानेवाले को मज-बूरन प्यार करना पड़ता है। कितना कलंक! कितनी अशिष्टता! तुम्हारे आत्म-सम्मान पर कितना आघात! सर्वनाश। तुम्हें सज़ा दे दी जाती है कि जीवन-भर इस आदमी को अच्छा समझो, उस औरत को सुन्दर समझो, पीछे की श्रेणी में रहो, समर्थन करो, सराहना करो, प्रशंसा करो, पूजा करो, दण्डवत् प्रणाम करो, बार-बार झुककर अपने घुटने सुजाओ, क्रोध से जब तुम अपने होंठ चबा रहे हो, जब तुम अपने गुस्से की चीख को गले में घोंट रहे हो, और जब तुम्हारे अन्दर समुद्र से भी ज़्यादा भयंकर तूफान और कड़वा फेन उठ रहा हो, तब भी अपने शब्दों में शक्कर ही घोले रहो!

इसी तरह धनवान लोग गरीबों को कैदी बनाते हैं।

तुम्हारे साथ की हुई भलाई का यह कीचड़ तुम्हें सदा के लिए गन्दा दागी कर देता है।

दान का प्रतिकार नहीं। कृतज्ञता लकवा है, उपकार चिकटा और कुत्सित मसाला है, जोकि तुम्हारी स्वतन्त्रता को जकड़ देता है। इस बात को वे घृणित, धनवान् और बिगड़े हुए आदमी, जिनकी दया ने तुम्हें इस तरह हानि पहुंचाई है, अच्छी तरह जानते हैं। वह तो हो चुका, तुम अब उनके प्राणी हो। तुम्हें उन्होंने खरीद लिया है—कैसे ? अपने कुत्ते के

खाने में से तुम्हारे सामने एक हड्डी फेंककर। वह हड्डी उन्होंने तुम्हारे सिर पर फेंकी है। तुम्हें चोट भी लगी और तुम्हारा उपकार भी हुआ, दोनों एक ही हैं। तुमने उस हड्डी को चबाया—हां या नहीं? तुम्हें कुत्ते की मांद में जगह भी तो मिल गई थी। तब तो धन्यवाद दो, धन्यवाद! अपने मालिकों की पूजा करो। अनन्तकाल तक उसके सामने घुटने टेको। उपकार मानने का तो तात्पर्य यह है कि तुमने अपना छोटापन स्वीकार कर लिया। उसका मतलब है कि तुम अनुभव करते हो कि वे देवता हैं, और तुम गरीब शैतान हो। तुम्हारा छोटापन उनको बड़प्पन देता है। तुम्हारी झुकी हुई आकृति को ज़्यादा सीधी बनाती है। उनकी आवाज़ के स्वर में गर्व की ध्वनि रहती उनकी आकृति है। उनके पारिस्परिक मामले—उनके विवाह, उनके संस्कार, उनके जन्मोत्सव, उनकी सन्तान—सभीसे तुम्हारा सम्बन्ध रहता है। उनके घर में भेड़िये का बच्चा हुआ है; हां, तब तुम्हें उसकी प्रशंसा का गीत बनाना पड़ेगा। तुम कवि हो, क्योंकि तुम नीच हो। यह आसमान के तारे तोड़ने के लिए काफी नहीं है! और भी ज़रा झुको कि वे अपने उतरे हुए जूते तुम्हें पहनाने लगेंगे।

पतिदेव से श्रीमतीजी पूछती हैं—"वह कौन है, जो तुमने रख छोड़ा है, प्रियतम? वह कितना भद्दा है! है कौन वह?"

श्रीमान् कहते हैं—"मैं नहीं जानता। कोई पंडित-वंडित होगा, पड़ा है, अपने यहां खाता है।"

ये मूर्ख इस तरह बातचीत करते हैं और यह भी नहीं कि दबी हुई आवाज में। तुम सब सुनते हो, और फिर भी विनम्र बने रहते हो। यदि तुम बीमार पड़े, तो तुम्हारे मालिक डाक्टर बुलवा देंगे—अपना डाक्टर नहीं। कभी-कभी वे तुम्हारा हाल-चाल भी पूछ लेते हैं। तुमसे बिल्कुल भिन्न श्रेणी के होने के कारण और तुम्हारी पहुंच के बाहर ऊंचाई पर रहने के कारण, वे तुमसे प्रेम भी दिखाते हैं। उनकी ऊंचाई उन्हें सरल बना देती है। वे जानते हैं, कि समानता तो असम्भव है। तिरस्कार की अधिकता के कारण वे नम्र दिखाई देते हैं। मेज पर भोजन करते समय वे तुम्हारी तरफ देखकर जरा सिर हिला देते हैं। कभी-कभी वे इस बात की जानकारी रखने की कृपा भी करते हैं कि तुम्हारा पूरा नाम क्या है? वे तुम्हारे सारे विचारों और भावों को कुचलकर सिर्फ यह दिखाते हैं कि वे तुम्हारे रक्षक हैं। वे तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। क्या यह सब सहना ही चाहिए?

इसमें शक नहीं कि वह जोशियाना को सजा देने के लिए उत्सुक था। उसे तो सिखाना ही पड़ेगा कि उसका मुकाबला किस आदमी से पड़ा है!

अरे मेरे धनवानो, तुम सारी वस्तुएं नहीं खा सकते ! तुम्हारा पेट हमारे पेट से बड़ा नहीं है। खाने को बहुत-सा होने के कारण तुम्हें अजीर्ण हो जाता है, तब अन्त में बचा हुआ अन्न फेंक देने की बजाय उसे बांट देना तुम पसन्द करते हो। और इस तरह एक गरीब की ओर फेंके हुए कौर को तुम दयाकर उदारता का स्वरूप देते हो ! अरे, तुम हमें रोटी देते हो, तुम हमें आश्रय देते हो, तुम हमें कपड़े देते हो, तुम हमें नौकरी देते हो और तुम अपनी उद्धतता, मर्खता, क्रूरता, मूढ़ता और अविचार की पराकाष्ठा करके यह विश्वास करने लगते हो कि हम कृतज्ञ हैं ! वह रोटी गुलामी की रोटी है, वह आश्रय चपरासी की कोठरी है, वह कपड़ा वर्दी है, वह नौकरी दासता है। यह सच है कि तनख्वा मिलती है, किन्तु वह हमें पशु बना देती है।

हा, तुम हमें भोजन और स्थान देकर हमारा अपमान करते हो, अपने को अधिकारी समझते हो और यह सोचते हो कि हम तुम्हारे ऋणी हैं और तुम हमारी कृतज्ञता की आशा करते हो ! ठीक है, हम तुम्हारा मेदा खा जायेंगे और तुम्हारे हृदय के रेशे-रेशे को दांतों से चबा डालेंगे।

यह जोशियाना ! इसमें क्या गुण था ? उसने यह आश्चर्यजनक कार्य संपादित किया था कि वह अपने पिता की मूर्खता और अपनी माता की निर्लज्जता का सबूत बनकर इस संसार में आई थी। उसने इस संसार में होने की हमपर मेहरबानी की है, और इस तरह उसने समाज में कलंकित होने की जो कृपा की है, उसके लिए उसे लाखों रुपये दिये जाते हैं। उसके पास जायदादें और किले हैं, अनेक पार्क, शिकारगाहें, झीलें, जंगलात और उनके अलावा, पता नहीं क्या-क्या है; और यह सब होते हुए वह मूर्खताएं करती है और उसकी प्रशंसा में कविताएं की जाती हैं ! और बारकिल फीड्रो, जिसने अध्ययन किया है, मेहनत की है, कष्ट उठाया है, अपनी आंखों और दिमाग को बड़ी-बड़ी किताबों से भर दिया है, पुराने ग्रन्थों और विज्ञान के अध्ययन में जिसका शरीर मैला हो रहा है, जो वाक्चातुर्य से परिपूर्ण है, जो सेनाओं को लड़ाई में कटा सकता है, जो यदि चाहे तो महाकवियों के समान दुःखान्त नाटक लिख सकता है, जो कि बादशाह होने के लायक है—वह बारकिल फीड्रो इस दर्जे तक नीचे गिर गया कि इस नाचीज़ जोशियाना को अवसर मिला कि उसे भूखा मरने से बचावे ! भाग्य के इन घृणित कृपापात्रों का यह दुःसाहस और कहांतक बढ़ेगा ? वे हमारे प्रति उदार होने का, हमारी रक्षा करने का, और हमारे ऊपर मुस्कराने का ढोंग करते हैं। बस, अब हम उनका खून पीयेंगे और उसके बाद अपने होंठ चाटेंगे। यह कितना भयंकर अन्याय है कि राजदरबार की यह नीच

ज़ात औरत उपकार करने की शक्ति रखे, और उससे कहीं ज्यादा ऊंचे दर्जे के आदमी को उसके हाथ से टपकनेवाली मेहरबानी का मुहताज होकर जीना पड़े! और यह समाज-व्यवस्था कैसी है कि जिसकी नींव ऐसी असमानता और अन्याय पर जमी है? क्या यह सबसे अच्छा न होगा कि उसकी सारी चीज़ें, मखमली कपड़े, भोज, आनन्दोत्सव, नाच, शराब, मेहमानी देनेवाले अभिमानी और लेनेवाले मूर्ख इन सबको उठाकर छत से नीचे फेंक दिया जाय, और वह सब उठाकर उस कपटी ईश्वर के ऊपर फेंक दिया जाये, और फिर सारी दुनिया को उठाकर आसमान पर पटक दिया जाय? पर इसे देर लगेगी। तबतक अभी तो अपने पंजे में जोशियाना को ही दबोचना ठीक रहेगा।

इस प्रकार के स्वप्न देखने में बारकिल फ़ीड्रो मस्त था। उसकी आत्मा का रोष उबल रहा था। द्वेषी आदमी की आदत होती है कि वह दोष को अपने ऊपर से बिल्कुल हटा देता है; वह अपनी निजी शिकायतों को सार्वजनिक अन्यायों में शामिल कर देता है।

इस क्रूर प्राणी के मस्तिष्क में घृणापूर्ण विकारों के सभी प्रकार के वीभत्स स्वरूप चक्कर लगाया करते थे। पन्द्रहवीं शताब्दी के पुराने नक्शों के कोनों में बिना आकार और नाम की बड़ी-बड़ी अस्पष्ट जगहें बनी रहती थीं और उनपर लिखा रहता था वहां शेर रहते हैं। ऐसे अंधकारपूर्ण कोने मनुष्य के अंदर भी हैं। हमारे अंदर मनोविकार बढ़ते और गुर्राते हैं, और हम अपनी आत्माओं के अदृष्ट हिस्सों के बारे में कह सकते हैं कि "यहां शेर रहते हैं।"

यह सोचना भयप्रद है कि हमारे अन्दर के निर्णय में न्याय नहीं है। निर्णय सापेक्ष है। न्यायाधीश और न्यायी में अन्तर है।

दुष्ट मनुष्य अन्तरात्मा को अधिकारपूर्वक गलत रास्ते पर ले जाते हैं। असत्य की भी कसरतें होती हैं। कुतर्की कपटी होता है और वह कपटी कभी-कभी सुबुद्धि को भी पशु बना देता है।

एक प्रकार का तर्क अत्यन्त असरल, अदम्य और चपल होता है; वह बुराई की सेवा में सदा तैयार रहता है, और अंधेरे में सत्य की हत्या करने का गौरव प्राप्त करता है। ये हैं शैतान के, ईश्वर पर किये हुए आघात।

सबसे बुरी बात तो यह है कि बारकिल फ़ीड्रो को कुछ पूर्वाभास होता था। वह एक भारी काम करने चला था, और उसको डर रहा था कि अन्त में कहीं यह न हो कि जो कुछ बुराई पैदा की जाये वह परिश्रम के परिमाण में बहुत थोड़ी हो।

बारकिल फ़ीड्रो बड़ा सतर्क था। क्या यह हो सकता था कि वह अपना

निशाना चूक जाय ?—बड़ी-बड़ी चट्टानों को उलट देनेवाली शक्ति एक मिजाजवाली औरत के सिर में धक्का लगाकर ही ठंडी पड़ जाय, तोप के गोले से चूहे का बच्चा मारा जाय—हाथी की ताकत लगाकर सिर्फ चींटी कुचली जाय—घृणा से पसीने-पसीने हो जायं, और वह भी फजूल ! जब कि वह अपनेको शत्रुता का इतना भयंकर यंत्र समझता हो जो कि सारी दुनिया को छार-छार कर सकता है। उस समय क्या यह अपमानकारक नहीं है ? समस्त चक्रों के भीतर के चक्रों को प्रगति दे दी जाय, और छेद करनेवाली बलवान मशीन अन्धकार में ज़ोरों के साथ चलाई जाय, और नतीजा यह हो कि कोमल बालिका की गुलाबी उंगली के छोर पर ज़रा-सी चुभन ही हो पाये ! परमात्मा इस प्रकार अपनी शक्तियों को महान स्वरूप में खर्च किया करता है। पर्वत खिसककर कभी-कभी सिर्फ कुकुरमुत्ते को ही कुचला करता है।

इसके अलावा, जबकि राज-दरबार का मैदान भयंकर है तो इससे ज़्यादा भयंकर कुछ नहीं कि तुम अपने दुश्मन पर वार करो और वार खाली जाय। पहली बात तो यह है कि उससे तुम्हारा भेद खुल जाता है और वह चिढ़ जाता है; किन्तु इसके अलावा सबसे बड़ी बात है कि मालिक नाराज हो जाता है। राजा अनाड़ियों को पसन्द नहीं करते। सूजन और भद्दे घाव न हों। चाहे जिसको मार डालो, पर खून न बहने दो। जो कत्ल कर देता है, वह है चालाक; जो घाव करता है वह है अनाड़ी। राजा अपने सेवकों को लंगड़े किये जाना पसन्द नहीं करते। वे अपने कमरे में घड़े का फूटना पसन्द नहीं करते। राजा का महल साफ-सुथरा रहना चाहिए। तोड़ दो, और उसकी जगह दूसरा लाकर रख दो; इसमें कोई हर्ज नहीं। इसके अलावा, राजाओं को स्वभावतः दूसरों की निन्दा में मज़ा आता है, इसलिए यह काम उनकी रुचि के अनुकूल ही होता है। बदनामी करो, लेकिन बुरा काम मत करो, या करो भी तो उसे शान के साथ होने दो।

कटार भोंक दो, खरोंचो मत। हां, आलपीन में जहर लगा हो तो बात दूसरी है। यह तो तारीफ की ही बात है; बारकिल फीड्रो यही कर रहा था। किसी कारण से भी बारकिल फीड्रो अपना निश्चय नहीं छोड़ता। वह तो अब अवसर की तलाश में था। कैसा अवसर आनेवाला है ? इससे क्या ! वह तो तलाश में है। अत्यन्त दुष्ट के द्वेष में आत्म-प्रेम सम्मिलित रहता है। तुमसे ऊंचे पदवाले भाग्यवान की स्थिति में छेद और गड्ढे करना और सुरक्षित स्थान में रहकर छिपे-छिपे उसकी जड़ काटना—हम फिर कहते हैं कि बेहद मज़ेदार काम है। ऐसे खेल का खिलाड़ी उत्सुक हो उठता है, वह मस्त हो जाता है। वह उस काम में इतना लीन हो जाता है, मानो

वह महाकाव्य रच रहा हो। अत्यन्त नीचे होकर अत्यन्त महान पर आक्रमण करना स्वयं एक तेजस्वी कार्य है। शेर के शरीर का पिस्सू होने में भी शान है।

बहादुर शेर पिस्सू के काटने का अनुभव करता है और अपना प्रबल क्रोध उस परमाणु के खिलाफ खर्च करता है। दूसरे शेर से लड़ने में उसे कम थकावट होती है। देखो, खिलाड़ी कैसे पैंतरा बदलते हैं। शेर, हारकर पिस्सू के डंक की चुभन का अनुभव करता है। वह पिस्सू कह सकता है "मेरी नसों में शेर का खून है।"

तो भी इस तरह के विचारों से बारकिल फ़ीड्रो के अभिमान की आकांक्षाओं को अधूरी ही तृप्ति मिलती थी। सांत्वनाएं तो अधिक-से-अधिक ऊपरी उपशमन ही हैं! तंग करना एक बात है; पीड़ित करना उससे कहीं ज्यादा अच्छा है। बारकिल फ़ीड्रो के दिल में एक विचार था, जो बराबर लगातार उठा करता था, यह कि कहीं उसकी सफलता जोशियाना की ऊपरी चमड़ी में खुजली पैदा करने तक ही न रह जाय। वह इससे अधिक और क्या आशा कर सकता था—वह कितनी महान थी और यह उसके विरुद्ध कितना तुच्छ था! उसके लिए खरोंट तो कुछ भी नहीं हैं, जाकि अपने बलि-पशु की खाल खिंचने पर उसमें से लाल-लाल खून बहते देखने और उसे अपने सामने नंगी से भी अधिक—अर्थात् खाल के आवरण से भी रहित अवस्था में उसकी चीखें सुनने के लिए लालायित हो! इस तरह की आकांक्षा के रखते हुए शक्तिरहित होना कितना दुःखदायी है!

शोक है कि संसार में कोई भी वस्तु सम्पूर्ण नहीं है!

तो भी, उसने अपने दिल को किसी तरह समझा लिया। वह ज्यादा नहीं कर सकता था, इसलिए उसने अपने स्वप्न का आधा हिस्सा ही देखने में सन्तोष माना। विश्वासघातपूर्ण छल करना भी तो आखिर एक उद्देश्य है।

वह कैसा मनुष्य है, जो कि अपने साथ किये हुए उपकार के बदले में अपकार करता है! ऐसे आदमियों में बारकिल फ़ीड्रो का दर्जा बहुत ऊंचा था। आमतौर से कृतघ्नता विस्मृति है। इस आदमी में जो कि करना में बेजोड़ था, कृतघ्नता की प्रचंडता थी। अनाड़ी कृतघ्न के अन्दर तो सिर्फ राख रहती है; बारकिल फ़ीड्रो के अन्दर क्या था? भट्ठी—भट्ठी जो कि चारों ओर से घृणा, मौन और विक्षेप से घिरी हुई थी, और ईंधन के लिए जोशियाना की प्रतीक्षा में थी। किसी भी मनुष्य ने किसी भी स्त्री से इस हद तक अकारण घृणा कभी नहीं की होगी। उसका वह स्वप्न! उसका

ध्यान, उसकी धारणा, उसका रोष कितना दारुण था !

शायद वारकिल फ़ीड्रो उससे कुछ प्यार करता था।

१०. वारकिल फ़ीड्रो घात में

ऊपर लिखे कारणों से, अब वारकिल फ़ीड्रो का एक ही अनन्य निश्चय था, वह यह कि जोशियाना के मर्म-स्थान का पता लगाना, और वहीं पर वार करना। इच्छा-मात्र काफी है; अब शक्ति की आवश्यकता है। वह अपना कार्य प्रारम्भ कैसे करे? यही प्रश्न था।

अधूरे बदमाश जो कुछ दुष्टता करना चाहते हैं, उसका सारा इन्त-जाम बड़ी सावधानी से कर रखते हैं। मौके पर जो कुछ सामने आ जाय उसे जा या बेजा तरीके से पकड़कर जबरन अपना काम निकाल लेने की ताकत वे अपने में अनुभव नहीं करते। जो पूरे बदमाश होते हैं, वे इस तरह की तैयारियों से घृणा करते हैं। वे बदमाशियां करने के लिए अकेले ही निकल पड़ते हैं, जो कुछ सामने आ जाय उसका उपयोग कर लेने का भरोसा रखते हैं, और फिर, वारकिल फ़ीड्रो के समान, मौके की ताक में डटे रहते हैं। वे जानते हैं कि पहले से तैयार की हुई योजना में मौके पर सामने आई घटना के साथ ठीक न जमने का भी तो खतरा रहता है। पूर्व-निश्चित योजनाओं के द्वारा मनुष्य सभावनाओं पर आधिपत्य नहीं जमा सकता और न अपनी इच्छा के अनुसार उनका संचालन कर सकता है। तुम भावी से कोई सम-झौता नहीं कर सकते। कल तुम्हारी आज्ञा नहीं मानेगा। मौके में शिस्त की कमी अवश्य रहती है।

वारकिल फ़ीड्रो के लिए जमीन रानी ऐन थी। वारकिल फ़ीड्रो रानी के पास पहुंच गया और इतने नजदीक पहुंचा कि कभी-कभी वह सोचता था कि रानी के दिल की धड़कन भी उसे सुनाई देती थी। दोनों बहनों में जब बातचीत हुआ करती थी तब कभी-कभी वह, उनके बिना जाने, वहां हाजिर रहता था। कभी-कभी वह चुपके से बीच में एकाध शब्द कह भी देता था, और वे रोकती नहीं थीं। उससे वह अपनेको और भी छोटा बनाने का लाभ उठाता था। विश्वास उत्पन्न करने का यह भी एक उपाय है।

वारकिल फ़ीड्रो के समान आदमी का रानी के पास पहुंच जाना उस पर अधिकार प्राप्त कर लेने के समान था। वह कह सकता था कि "मेरा उसपर अधिकार है।" अब कमी थी तो उस साधन की, जिसके द्वारा वह अपनी इस शक्ति का उपयोग अपने कार्य के लिए कर सके। दरबार में उसको पैर रखने की जगह मिल गई थी। वहां जम जाने में ही खूबी थी।

अब कोई मौका उसके हाथ से नहीं छूट सकता था। पहली बात जो कि साफ कर लेनी चाहिए, यह है कि रानी अपनी बहन को प्यार करती है कि नहीं। ज़रा भी गलती हुई तो सब मामला बिगड़ जायगा। बारकिल फ़ीड्रो ताकता रहा।

हाथ चलने के पहले खिलाड़ी अपने ताश देख लेता है। उसके पास कितने हुक्म हैं। बारकिल फ़ीड्रो ने शुरू में दोनों स्त्रियों की उम्र की जांच की। जोशियाना, तेईस; ऐन, इकतालीस। ठीक। उसके हाथ में हुक्म थे। जिस क्षण स्त्री की वसंत ऋतु बीत जाती है और शिशिर आ जाती है, उसी क्षण से वह असन्तुष्ट रहने लगती है। गुजरे हुए जमाने के खिलाफ उसके दिल में कड़वाहट पैदा हो जाती है। नव-विकसित सौंदर्य, जो कि दूसरों के लिए सुगंधि है, उसके लिए कांटा हो जाता है। गुलाबों में उसे कांटे ही चुभते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी सारी ताजगी चोरी चली गई है, और जितनी-जितनी दूसरों की सुन्दरता बढ़ती है, उतनी-उतनी उसकी सुन्दरता कम होती जाती है।

इस गुप्त चिढ़ से लाभ उठाना, इस चालीस वर्ष की स्त्री के, जोकि रानी थी, चेहरे की झुर्रियों में गोता लगाना, बारकिल फ़ीड्रो के लिए अच्छा खेल था।

ईर्ष्या द्वेष को भड़काने में अपना गौरव समझती है।

बारकिल फ़ीड्रो अपनी चतुर दृष्टि ऐन पर जमाये हुए था। वह रानी के अन्दर इस तरह देखता था, जैसे कि कोई गंदले पानी में देखता हो।

उसके स्थूल मस्तक में अपरिपक्व भावनाएं और अधूरे विचार चक्कर लगाया करते थे। वे स्पष्ट नहीं थे; उनकी कोई आकृति भी नहीं थी। किन्तु वे, निराकार ही सही, किन्तु थे वास्तविक। रानी यह सोचती थी, रानी वह चाहती थी। यह निर्णय करना कठिन था कि क्या। सड़े हुए पानी के अन्दर आकार-विकारों की जो गड़बड़ हुआ करती है उनको समझना कठिन है। रानी स्वभावतः गूढ़ रहती थी, परन्तु कभी-कभी वह सहसा मूर्खतापूर्ण रहस्य प्रकट करती थी। उनका उसे उसी क्षण उपयोग कर लेना चाहिए। जोशियाना की ओर रानी की क्या भावना थी? वह उसका भला चाहती थी या बुरा?

समस्या यही थी। बारकिल फ़ीड्रो उसको हल करने में भिड़ गया। यह एक बार हल हो जाय कि फिर यह आगे बढ़े।

कई बातें बारकिल फ़ीड्रो की मदद कर रही थीं—सबसे ज्यादा मदद करती थी उसकी अथक निगरानी।

ऐन अपने पति के सम्बन्ध से जर्मनी की रानी की रिश्तेदार होती

थी। उस रानी की, जिसके कि पति के पास एक सौ दासियां थीं। इस रानी की एक छोटी जारज बहन थी, जैसेनिन ड्रीका।

एक दिन, बारकिल फ़ीड्रो की उपस्थिति में रानी ने स्वयं राजदूत से इस ड्रीका के बारे में कुछ बातें पूछीं।

"सुनते हैं, वह धनवान है?"

"बहुत धनवान।"

"उसके अनेक महल हैं?"

"बहन, रानी के महलों से भी भव्य।"

"वह किससे विवाह करेगी?"

"बड़े भारी लार्ड काउंट गोर्मो से।"

"सुन्दर है?"

"मोहक।"

"युवा है?"

"अत्यन्त।"

"ड्रीका रानी के समान सुन्दर है?"

राजदूत ने आवाज धीमी करके कहा, "रानी से भी सुन्दर।"

बारकिल फ़ीड्रो बड़बड़ाया, "यह तो गुस्ताख़ी है।"

रानी चुप रही और फिर बोली—

"ये हरामज़ादियां—"

बारकिल फ़ीड्रो ने बहुवचन को नोट कर लिया।

एक दूसरे समय जबकि रानी गिरजे से बाहर आ रही थी, बारकिल फ़ीड्रो उसके पीछे पास ही था। लार्ड डेविड डिरी-मोयर स्त्रियों की पंक्ति पार करके सामने आया। उसकी सुन्दरता देखकर सब महिलाएं चकित हो गईं। स्त्रियों में उसकी तारीफ गूंज उठी।

"कितना सुन्दर! कितना तेजस्वी! कितनी शान! कितना मोहक!"

रानी गुर्राई, "कितना असह्य!"

बारकिल फ़ीड्रो ने यह सुन लिया। बस, फ़ैसला हो गया।

अब वह डचेज को नुकसान पहुंचा सकता है; रानी नाराज नहीं होगी। पहला मसला तो हल हो गया, किन्तु एक दूसरा सामने आ गया।

वह डचेज को नुकसान पहुंचाये किस तरह? उसको जो भद्दी नौकरी मिली थी, उसमें इस कठिन उद्देश्य के साधने का कौन-सा ज़रिया था?

: २ :

ग्वाइनप्लेन और डीया

१. विचित्र चेहरा

प्रकृति ने ग्वाइनप्लेन पर अपनी कृपा की उदारता दिखाई थी। उसने उसका मुंह एक कान से लगाकर दूसरे कान तक खुला हुआ बनाया था, कान आंखों से चिपटे हुए थे, नाक निराकार थी—जैसी कि विदूषक का चश्मा थामने के लिए ज़रा-सी उठी रहती है, और यह चेहरा ऐसा था कि देखकर कोई भी बिना हँसे न रहता।

हमने अभी कहा कि प्रकृति ने अपनी कृपा के भार से ग्वाइनप्लेन को लाद दिया था। परन्तु क्या यह प्रकृति की ही करतूत थी ? किसीने उसकी सहायता नहीं की ?

आंखों की जगह दो लम्बे छेद, नाक की जगह ज़रा-सा उठा हुआ चपटा ठूंठ और नथुनों के लिए दो छेद, चपटा चेहरा, मुंह की जगह दरार, सबका नतीजा यह था कि उसपर हँसी छाई दीखती थी। यह तो निश्चित है कि प्रकृति इतनी संपूर्णता अकेली नहीं बना सकती।

परन्तु क्या हँसी का अर्थ आनन्द है !

उसकी हँसी खत्म होने के बाद यदि कोई ध्यान से देखे तो मनुष्य की कारीगरी के निशान उसके चेहरे पर दिखाई देंगे। इस तरह का चेहरा अपने-आप नहीं बन जाता। ऐसी नितान्त पूर्णता प्रकृति में कहां ! मनुष्य सौन्दर्य की सृष्टि नहीं कर सकता, वह इस तरह की कुरूपता बना सकता है। क्या ग्वाइनप्लेन बचपन में इतना सुन्दर था कि उसका चेहरा बिगाड़ने की किसीको सूझी ? प्रकट तो यही होता था कि बच्चों को इस तरह कुरूप बनाने का धंधा करनेवाले कारीगरों ने उसके चेहरे पर जौहर दिखाया था। यह स्पष्ट है कि बचपन में ही, किसी गुप्त विज्ञान के द्वारा उसके कोमल मांस को काट-छांटकर इस तरह सावधानी से जमाया गया था। नश्तर लगाकर उसका मुंह चौड़ा कर दिया था, होंठ काट दिये थे, मसूड़े खुले कर दिये थे। कान खींचकर चौड़े कर दिये थे, कोमल अस्थियां काट-

कर आंखें उनके स्थानों से हटा दी थीं, गाल सरका दिये थे, गाल की हड्डी की पेशियां बढ़ा दी थीं, घावों के उभरे हुए हिस्सों और निशानों को दबाकर सतह से मिला दिया था, और छेदों की किनार तक चमड़ा खींचकर चिपका दिया था। इन सबके परिणाम में ग्वाइनप्लेन का चेहरा अद्भुत शिल्प का नमूना बन गया था।

आदमी इस रूप में उत्पन्न नहीं होता।

चाहे जो हुआ हो, ग्वाइनप्लेन के चेहरे के परिवर्तन में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई थी। ग्वाइनप्लेन मनुष्यों की उदासी दूर करने के लिए परमात्मा की देन ही था।

जो कोई ग्वाइनप्लेन को देख लेता था, वह हँसी के मारे अपनी पसलियों को थामने लगता था और ग्वाइनप्लेन का बोल सुनकर तो सब हँसी के मारे ज़मीन पर लोट-पोट हो जाते थे। वह उदासी से उतना ही दूर था जितना कि दक्षिणी ध्रुव से उत्तरी ध्रुव। गुस्सा एक ध्रुव पर और ग्वाइनप्लेन दूसरे ध्रुव पर।

मेलों में और चौराहों पर उसकी धूम रहती थी।

ग्वाइनप्लेन की हँसी दूसरों को हँसाती थी, परन्तु वह स्वयं नहीं हँसता था। उसका चेहरा हँसता था, उसके विचार नहीं। चेहरे के दो विकार संक्रामक होते हैं, हँसना और जंभहाई लेना। उसके शरीर की सारी आकृति में वह छूत भरी हुई थी। उसके समस्त भाव, वे चाहे जो हों, उसके चेहरे की हँसी को बढ़ाते थे या ठीक शब्दों में कहा जाय तो उसे भड़काते थे। उसको आश्चर्य हो, कष्ट हो, क्रोध हो, दया हो, ये सब उसके चेहरे की हँसी को बढ़ाते ही थे। यदि वह रोता था तो भी वह हँसता था। ग्वाइनप्लेन चाहे जैसा हो, वह चाहे जो होना चाहता हो, और वह चाहे जो सोचता हो, उसने ज़रा सिर उठाया कि भीड़ को, यदि भीड़ वहां होती थी तो, एक ही चीज़ दिखाई देती थी—हँसी का सर्वव्यापी विस्फोट!

चिन्ता, निराशा, व्याकुलता और शोक भी उसके अचल चेहरे पर हँसी के रूप में प्रकट होते थे। हर आदमी के अन्दर जो उपहास और व्यंग होता है उसकी मूर्ति उसके चेहरे में प्रत्यक्ष दिखाई देती है।

हां, कभी-कभी, पर बहुत क्वचित्, वह अपने चेहरे का चिरस्थायी भाव कुछ समय के लिए दूर कर सकता था, और उसके ऊपर करुणा का पर्दा डाल सकता था, और तब उसको देखनेवाले को हँसी नहीं आती थी; वह कांप उठता था। पर ग्वाइनप्लेन ऐसा प्रयत्न शायद ही कभी करता था। वह प्रयत्न दारुण होता था और उसका तनाव असह्य था। इसके अलावा होता यह था कि उसका ध्यान ज़रा भी विचलित होते ही या नया

विकार आते ही, एकक्षण के लिए हटी हुई हँसी, समुद्र की लहर के समान, बढ़ी हुई ताकत के साथ लौटकर ग्वाइनप्लेन के चेहरे पर छा जाती थी।

ग्वाइनप्लेन को देखकर सब हंस पड़ते थे और हँसकर अपना मुंह फेर लेते थे। विशेषकर स्त्रियां तो भय से कांपकर उसके पास से हट जाती थीं। वह भयंकर था! उसकी नई-नई हँसी एक बार देखने के बाद किसी स्त्री के लिए तो उसकी ओर फिर से देखना असम्भव था, फिर तो उसकी सूरत का ध्यान भी बुरा लगता था। किन्तु उसका शरीर ऊंचा, सुसंगठित और फुर्तीला था। सिर्फ चेहरे को छोड़ सारा शरीर सुन्दर था।

उसकी चेहरे की हँसी के पीछे एक आत्मा भी थी; और वह, जैसे कि सारी आत्माएं स्वप्न देखा करती हैं, वैसे स्वप्न भी देखती थी।

यह हँसी ग्वाइनप्लेन के लिए हुनर हो गई। वह उसको दूर नहीं कर सकता था, इसलिए उसने उससे फायदा उठाना शुरू किया। उसके द्वारा वह जीविका कमाने लगा।

इस वर्णन से पाठक समझ गये होंगे कि ग्वाइनप्लेन वही बालक था, जो कि एक दिन शीत-ऋतु में सन्ध्या के समय पोर्टलैंड के किनारे छोड़ दिया गया था और बाद में जिसको वेमथ में उर्सस ने आश्रय दिया था।

२. डीया

वह बालक इस समय पूरा मनुष्य हो गया था। पन्द्रह वर्ष हो गये। यह सन् १७०५ की घटना है। ग्वाइनप्लेन इस समय पच्चीस साल का है।

उर्सस ने उन दोनों बालकों को अपने साथ रख लिया था। वे सब साथ-साथ घूमा करते थे। उर्सस और होमो बूढ़े हो गये थे। उर्सस के सिर के बाल प्रायः सब बाल गिर गये थे। भेड़िये के बाल सफेद हो चले थे।

उस मरी हुई स्त्री के ऊपर जो छोटी-सी बालिका मिली थी, वह अब सोलह वर्ष की और खूब बड़ी हो गई थी। उसके बाल भूरे थे और देह सरल, लचीली तथा इतनी नाजुक थी कि डर लगता था कि हड्डी टूट न जाय। वह अत्यन्त सुन्दरी थी। उस शीत ऋतु की हत्यारी रात ने, जिसने कि उस भिखारिन और बच्ची को बरफ में दफना दिया था, उनपर दोहरा वार किया था। उसने मां को मार डाला था और बच्ची को अन्धा कर दिया था। उसके मुख-मंडल से दिन का-सा उत्फुल्ल प्रकाश कभी नहीं हटता था, किन्तु उसके मुंह के कोने दरिद्रता का कड़वापन प्रकट करते थे। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी और साफ थीं। उनमें एक विचित्र गुण था। वे उसके वास्ते तो सदा के लिए बुझ चुकी थीं, किन्तु दूसरों को प्रकाशमय दीखती थीं।

उसकी निर्जीव दृष्टि में दैवी प्रखरता थी। वह रात्रि थी और जिस असीम अन्धकार में वह समाई थी, उसमें वह सितारे के समान प्रकट हो रही थी।

उर्सस को लैटिन भाषा के नामों का शौक था। उसने उसका नाम डीया रखा था। इस मामले में उसने अपने भेड़िये से भी सलाह ली थी। उसने उससे कहा था, "तू मनुष्यों का प्रतिनिधि है, मैं पशुओं का प्रतिनिधि हूं। हम नीचे की दुनिया के हैं, यह बच्ची ऊपर की दुनिया की प्रतिनिधि बनेगी। ऐसी निर्बलता सर्वशक्तिमती होती है। इस प्रकार समस्त विश्व अपनी मानवीय, पाशविक और दैवी तीनों श्रेणियों में हमारी झोंपड़ी में सम्पूर्ण होगा।" भेड़िये ने कोई आपत्ति नहीं की। इसलिए वह अनाथ बच्ची डीया कहलाई। डीया की अर्थ है दिव्य।

उर्सस को ग्वाइनप्लेन के नाम का आविष्कार करने का कष्ट नहीं उठाना पड़ा। जिस समय उसने उस बालक की कुरूपता और बालिका के अन्धेपन का अनुभव किया, उसी समय उसने पूछा था, "लड़के, तेरा नाम क्या है?" और लड़के ने जवाब दिया था, "मुझे ग्वाइनप्लेन कहते हैं।" उर्सस ने कहा था, "अच्छा, तो फिर ग्वाइनप्लेन ही सही।"

डीया खेल-तमाशों में ग्वाइनप्लेन की मदद करती थी। यदि मानवी कष्टों का सारांश निकाला जाय, तो वह होगा ग्वाइनप्लेन और डीया। उनमें से हरेक कब्र के एक-एक हिस्से में पैदा हुआ दीखता था। ग्वाइनप्लेन बीभत्सता में और डीया अन्धकार में, ग्वाइनप्लेन दूसरों के साथ अपनी तुलना कर सकता था। डीया के समान शून्य-दृष्टि होना, जिसमें कि संसार अनुपस्थित है, सबसे बड़ा कष्ट है; डीया के ऊपर परदा था रात्रि का, ग्वाइनप्लेन पर आवरण था कुरूपता का। वह नहीं जानता कि पहले उसका चेहरा कैसा था। मनुष्य उन दोनों के लिए बहुत दूर की चीज़ था। डीया अकेली थी, ग्वाइनप्लेन भी अकेला था। डीया का अकेलापन मृतक के समान था, क्योंकि उसे कुछ नहीं दीखता था। ग्वाइनप्लेन का अकेलापन भूत के समान था, उसे सबकुछ दीखता था। डीया के लिए सारी सृष्टि स्पर्श और श्रवण के अन्दर-ही-अन्दर थी; ग्वाइनप्लेन के लिए जीवन सामने और आस-पास अनन्त भीड़ से भरा था। डीया प्रकाश से वंचित थी, ग्वाइनप्लेन जीवन से बहिष्कृत था। वे दोनों आशा की सीमा से परे थे और दुर्भाग्य की गहराई में पहुंच गये थे, वे उसमें डूब चुके थे। जो कोई उनको ज़रा गौर से देखता था, उसके विचार चुपचाप द्रवित होकर करुणा में परिणत हो जाते थे। इन दोनों ने क्या-क्या न सहा होगा! भाग्य ने इस प्रकार कभी दो निरपराध प्राणियों को घेरकर उनके भविष्य को यन्त्रणा और जीवन को नरक नहीं बनाया होगा।

तो वे भी स्वर्ग में थे !

वे एक-दूसरे से प्यार करते थे !

ग्वाइनप्लेन डीया की पूजा करता था। डीया ग्वाइनप्लेन को अपना आराध्य देव मानती थी।

वह उससे कहा करती थी, "ग्वाइनप्लेन, तुम कितने सुन्दर हो !"

३. अंधी की आंखें

इस संसार में केवल एक स्त्री ने ग्वाइनप्लेन को देखा था। वह अन्धी थी। उसे उर्संस से मालूम हो गया था कि ग्वाइनप्लेन ने उसके लिए क्या-क्या किया था। पोर्टलैंड में उस गिरोह का साथ छूटने के समय से लगाकर वेमथ पहुंचने तक मार्ग में जो-जो कष्ट ग्वाइनप्लेन ने उठाये थे, वे सब उसको उर्संस ने सुना दिये थे। वह जानती थी कि जब वह छोटी-सी थी, अपनी मरी हुई मां की छाती पर खुद भी मर रही थी और दूध पीने के लिए मुर्दे का स्तन चूस रही थी, उस समय एक प्राणी ने, जो उससे ज़रा ही बड़ा था, और जब विश्व उसकी सहायता करने से इन्कार कर रहा था, उस समय मेरी पुकार सुन ली, जब सारा संसार मेरी ओर से बहरा हो गया था तब वह बहरा नहीं था। जब वह बालक अकेला, निर्बल, परित्यक्त, आश्रयहीन निर्जन स्थानों में अकेला किसी तरह घिसटता जा रहा था और थका हुआ था, उस हालत में उसको रात्रि ने एक भार और सौंपा—एक दूसरा बालक, और उसने स्वीकार किया। उसे उस अव्यक्त दानी से, जिसे हम दैव कहते हैं, किसी प्रकार की आशा नहीं थी। उसपर भी उसने मुझे संभाला। स्वयं वस्त्रहीन, कष्ट-पीड़ित और विपत्तिग्रस्त होते हुए भी वह मेरा त्राण-कर्ता बना; जबकि परमात्मा ने मेरे लिए अपना दरवाजा बन्द कर दिया था, उसने अपना हृदय खोल दिया। जो स्वयं खोया हुआ था, उसने मुझे बचाया। जिसके आश्रय के लिए न वृक्ष था न छप्पर, वह मेरे लिए आश्रय बन गया। मेरी मां जाती रही, वह मेरी मां और दाई बन गया। जो स्वयं संसार में अकेला था, उसने मुझ परित्यक्ता को अपनाया। जो स्वयं अन्धकार में समा चुका था, उसने मेरा उद्धार किया। मानो पहले कष्टों का भार काफी नहीं था, सो उसने अपने ऊपर एक कष्ट और उठा लिया। इस संसार में जिसके लिए कुछ भी नहीं रहा था, उसने एक कर्तव्य और ले लिया। जहां हर कोई हिचकता, वहां वह आगे बढ़ा। जहां हर किसी ने इन्कार किया होता, वहां उसने मंजूर कर लिया। उसने मौत के मुंह में हाथ डालकर मुझे बाहर निकाला। वह स्वयं आधा नंगा था, पर उसने मुझे ठण्ड लगती देख अपने चीथड़े दिये। वह भूखा था, उसने मेरा पेट भरने की

चिन्ता की। एक छोटे-से प्राणी के लिए दूसरे छोटे-से प्राणी ने मृत्यु से युद्ध किया। वह मृत्यु के प्रत्येक स्वरूप से लड़ा और यह सब मेरे लिए किया। इस दस वर्ष के भीम ने विशाल रात्रि से लड़ाई लड़ी थी। वह जानती थी कि यह सब उसने उस समय किया जबकि वह बालक था; और अब वह मनुष्य हो गया है, अब वह मुझ निर्बल का बल है, मुझ निर्धन का धन है, मुझ बीमार की दवा है, और मुझ अन्धी की आंख है। उस अज्ञान के अन्धकार में से, जिसका कि वह अपने आस-पास अनुभव करती थी, वह उसकी भक्ति, उसके त्याग और उसके साहस को साफ-साफ पहचान रही थी।

वह ग्वाइनप्लेन का हाथ सदा अपने सिर पर पाती थी। ग्वाइनप्लेन कभी उदासीन, दूर और अदृश्य नहीं रहता था। ग्वाइनप्लेन सहानुभूतिशील, सहायक और मधुर था। इस अनुभव और कृतज्ञता के भाव से डीया सिहर उठती थी, ग्वाइनप्लेन ने डीया को अपने तेज से चकाचौंध कर दिया था।

भीड़ के इतने अधिक सिर होते हैं कि उसमें विचार नहीं होता; उसके इतनी अधिक आंखें होती हैं कि उसमें दृष्टि नहीं रहती। वह स्वयं अस्थिर रहती है और ऊपरी सतह से ही निर्णय किया करती है। उस भीड़ के लिए तो ग्वाइनप्लेन विदूषक, नक्काल, भांड बीभत्स तथा जानवर से ज़रा ही कम था। भीड़ तो केवल उसके चेहरे को जानती थी।

डीया के लिए तो ग्वाइनप्लेन उसका भाई, मित्र, सखा, सहायक, देवता, पति सबकुछ था। जहां भीड़ को शैतान दीखता था, वहां डीया देवता देखती थी। वह डीया—अन्धी डीया, उसकी आत्मा को देख रही थी।

४. सुघड़ जोड़ी

ज्ञानी उर्सस यह सब समझता था। उसे डीया की आसक्ति पसन्द थी। वह कहता था कि अन्धे अदृश्य को देखते हैं। उसका कहना था कि अन्तरात्मा ही आलोक है। ग्वाइनप्लेन की ओर देखते हुए वह कहता था, यह तो आधा राक्षस और आधा देवता है।

उधर ग्वाइनप्लेन भी डीया के प्रेम में पागल था।

डीया आदर्श से चकित थी, ग्वाइनप्लेन प्रत्यक्ष से। ग्वाइनप्लेन कुरूप ही नहीं था, वह बीभत्स भी था। वह अपनी भयंकरता की प्रतिकूल मूर्ति अपने सामने देखता था। डीया मनोहर थी। वह भय था, यह माधुरी थी। डीया उसका स्वप्न थी। वह साकार आलोक थी। उसके सारे शरीर में, उसकी

सुन्दर आकृति में, उसकी कोमल और लचीली गठन में, उसके कन्धों में, उसके सलज्ज अंगों में, जोकि इन्द्रियों के नहीं, किन्तु आत्मा के प्रति उसका स्त्रीत्व प्रकट करते थे, उसकी गौरता में जो कि प्रायः पारदर्शी थी; उसकी इस संसार पर प्रकाट होने से ढकी हुई दृष्टि की स्थिर शांति में; उसकी मुस्कराहट की पवित्र निष्कलंकता में, डीया प्रायः देवता थी, और उस पर भी वह स्त्री थी।

ग्वाइनप्लेन दुर्भाग्य और सौभाग्य का सम्मिलित परिणाम था। दुःख ने उसपर अपना हाथ रखा था और सुख ने भी। उसपर शाप भी था और वरदान भी। वह कौन था ? वह नहीं जानता। जब वह अपनी ओर देखता था तो वह नहीं जानता था कि वह किसकी ओर देख रहा है। वह अज्ञात राक्षस था।

जहां अज्ञात दुष्टता ने पूरी शक्ति लगाकर अत्यन्त कुकर्म कर डाला था, वहां अदृष्ट अच्छाई ने उसे राहत पहुंचाई थी। उसने कुरूप का पूजन सौन्दर्य से कराया था। यह तो तभी सम्भव था जबकि सौन्दर्य उस कुरूप को न देख सके। इस सौभाग्य के लिए दुर्भाग्य की आवश्यकता थी। परमात्मा ने डीया को अन्धी कर दिया था।

उदासी के समय डीया उसके और उसकी निराशा के बीच में देवी के समान उपस्थित हो जाती थी। वह इस सुन्दरी बालिका के माधुर्य से उत्साहित और द्रवित होकर अनुभव करने लगता था कि उसके राक्षसी चेहरे पर सौन्दर्यमय आश्चर्य झलक रहा है। जो भय उत्पन्न करने के लिए बनाया गया था, आश्चर्य है कि उसीकी उज्ज्वल आदर्श के समान सराहना और पूजा हो रही है और वह राक्षस होते हुए भी कभी-कभी सोचने लगता था कि वह सितारा है।

इस प्रकार घृणा असफल हो गई। ग्वाइनप्लेन के पीड़क, वे चाहे जो हों, वह दारुण कलंक उसको चाहे जिसने लगाया हो—निशाना चूक गये। उन्होंने उसको नितांत दुःखी बनाना चाहा था, पर उन्होंने उसको नितान्त सुखी बना दिया। उन्होंने ऐसा घाव लगाया, जोकि राहत पहुंचानेवाला था। जल्लाद की संडासी प्रेयसी की कोमल बांह बन गई।

५. काले बादल में से नीला आकाश

इस प्रकार ये अभागे साथ-साथ रहते थे—डीया का ग्वाइनप्लेन पर विश्वास था, ग्वाइनप्लेन डीया को अपनी समझता था। उनकी विपदावस्था में से नीरव धन्यवाद निकल रहा था। वे कृतज्ञ थे। किसके ? अदृश्य के। अपने हृदयों के कृतज्ञ होओ ! अंधापन भेदक है। यही काफी

है। कृतज्ञता के पंख होते हैं और वह उड़कर अपने ठीक स्थान पर पहुंच जाती है। तुम्हारी प्रार्थना अपना मार्ग जानती है, इतना अच्छा कि जितना तुम भी नहीं जान सकते।

ग्वाइनप्लेन और डीया कृतज्ञ थे। कुरूपता बहिष्कार है और अन्धा-पन खंदक; पर यहां बहिष्कार स्वीकृति और खंदक आवास बन गया।

कुरूप की खिन्नता विकसित होकर मस्ती, आह्लाद, और विश्वास में परिणत हो गई और उस नेत्रहीन बालिका के उदासी-भरे संकोच में एक हाथ बढ़ा और अंधेरे में उसका मार्गदर्शन करने लगा।

दो दुर्भाग्यों ने आदर्श के अंदर प्रवेश करके उनको मोहित कर रखा था। दो शून्यताओं ने आपस में मिलकर एक-दूसरे को भर दिया था। उनमें जो कमी थी वे उसीसे बंधे थे। एक जिसमें गरीब था, दूसरा उसीमें धन-वान था। एक का दुर्भाग्य दूसरे का सौभाग्य था। डीया अंधी न होती तो वह ग्वाइनप्लेन को प्यार करती! ग्वाइप्नलेन कुरूप न होता तो वह डीया को चाहता! यह मेल तो ईश्वर की ही कृपा थी, वरना वे एक-दूसरे के लिए असंभव थे। पारस्परिक महान आवश्यकता ही उनके प्रेम का कारण थी। ग्वाइनप्लेन ने डीया की रक्षा की। डीया ने ग्वाइनप्लेन की रक्षा की।

ग्वाइनप्लेन के मन में एक विचार उठता था, "उसके बिना मेरी क्या हालत होगी?" डीया के मन में भी वही विचार उठता था, "उसके बिना मेरी क्या हालत होगी?" उनकी कल्पना एक-दूसरे के परे जाती ही न थी।

ग्वाइनप्लेन के पैरों की आवाज़ में डीया किसी देव-पुरुष के चरणों की आवाज़ सुनती थी। उनकी गहरी लगन में सुगंधि थी, प्रकाश था, संगीत था, स्वप्न का उज्ज्वल भवन था।

ग्वाइनप्लेन डीया का धर्म था। कभी-कभी वह, उसके प्रेम में मग्न हो-कर उसके सामने—मंदिर की सुंदरी पुजारिन के समान पूजा से पुलकित देवता के सामने घुटने टेककर झुक जाती थी।

कोई दूसरी पवित्रता उनकी प्रीति की बराबरी नहीं कर सकती थी।

ग्वाइनप्लेन की यह अवस्था थी कि उसके भावुक यौवन ने उसको अन्यमनस्क बना दिया था। उसमें जितना अधिक उन्माद आता था उतना ही अधिक वह भीरु होता जाता था।

ये सुखी प्राणी आदर्श में रहते थे। वे दोनों उसके अंदर पति-पत्नी के रूप में थे, परंतु एक-दूसरे से इतने दूर थे जैसे कि दो ग्रह। वे आदर्श के आकाश में एक-दूसरे की ओर वह तरलता प्रसारित करते थे, जोकि अनन्त आकर्षण कहलाती है। और पृथ्वी में लगन उनके चुंबन आत्मा] के चुंबन थे।

पहले वे दोनों एक ही विस्तर पर सोते थे। परंतु एक दिन ग्वाइनप्लेन अपनेको बड़ा अनुभव करने लगा। डीया अभी छोटी ही थी। अब ग्वाइनप्लेन के युवा हृदय में लज्जा का उदय हुआ। उस दिन उसने उर्संस से कहा, "मैं अब से फर्श पर सोऊंगा।" तब से वह डीया से अलग सोने लगा।

जब डीया तेरह वर्ष की थी, तबतक भी उसको सोने की यह व्यवस्था अच्छी नहीं लगती थी। वह अक्सर रात को कहा करती थी, "ग्वाइनप्लेन, आ, मेरे पास आ जा। इससे हमें अच्छी नींद आ जायेगी।" निष्पाप निद्रा के लिए डीया के पास एक आदमी के सोने की आवश्यकता थी।

डीया का नग्नता की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं था। सीधी-सादी डीया कभी-कभी ग्वाइनप्लेन को उन्मत्त बना देती थी। कभी-कभी युवती डीया, शय्या पर बैठे-बैठे अपने लंबे बालों में कंघी किया करती थी। उसकी कमीज़ के बटन खुल जाते थे और शरीर की सुंदरता झलकने लगती थी। वह सुन्दरता ग्वाइनप्लेन को बुलाती थी। ग्वाइनप्लेन शरमाकर आंखें नीची कर लेता था। उसकी समझ में नहीं आता था कि उस सरल लड़की के साथ क्या किया जाय।

६. अन्धेपन की अंतर्दृष्टि

उर्संस सोचता, "किसी दिन मैं इनके साथ बड़ा बुरा छल करूंगा। मैं इनका विवाह कर दूंगा।"

कभी-कभी उर्संस मन में कहा करता था "इनके प्रेम के चक्र में अड़ंगा लगाना पड़ेगा। इनका प्यार बहुत बढ़ गया है।"

इस इरादे से वह एक को दूसरे के विरुद्ध बातें भी कहा करता था। परंतु उसका परिणाम उलटा ही होता था, ग्वाइनप्लेन और डीया का प्रेम दूना बढ़ जाता था।

तो क्या वास्तव में वह उनके प्रेम को बुझा देना चाहता था या कम करना चाहता था?

बात यह है कि जो वस्तु हमें अच्छी लगती है, उसके विरुद्ध थोड़ा-सा बोलना स्वाभाविक है। लोग उसे बुद्धिमानी कहते हैं।

उर्संस ने उनके पालन-पोषण के साथ-साथ उनको शिक्षा भी दी थी। ग्वाइनप्लेन को अपना तत्त्वज्ञान, वैद्यक शास्त्र वग़ैरा सब सिखा दिया था और डीया को संगीत इत्यादि ललित कलाएं।

कभी-कभी ग्वाइनप्लेन अपने आपको दोष दिया करता था। वह अपने सुख में अन्तरात्मा का प्रश्न छेड़ देता। वह सोचने लगा कि जो स्त्री मुझको नहीं देख सकती, उसको प्यार करने देना उसे धोखा देना है।

यदि उसे एकाएक दृष्टि प्राप्त हो जाये तो वह क्या कहे ? पहले जो उसे आकर्षक मालूम होता था, उसे देखकर वह कैसी घृणा से पीछे हट जायेगी ! कैसा मुंह ढक लेगी ! कैसी भागेगी ! वह यह सोचकर चिंतित रहने लगा। उसका कर्तव्य है कि वह अंधे का भ्रम दूर कर दे।

एक दिन उसने डीया से कहा, "तुम जानती हो, मैं अत्यंत कुरूप हूं ?"

वह बोली, "मैं जानती हूं कि तुम अत्यन्त भव्य हो !"

फिर वह बोला, "तुम सुनती हो कि सारा संसार हँस रहा है, और वह इसलिए हँसता है कि मैं वीभत्स हूं।"

वह बोली, "मैं तुम्हें प्यार करती हूं।" कुछ देर बाद डीया बोली, "मैं मर रही थी, तुमने मुझे जिलाया। जब तुम यहां रहते हो तो स्वर्ग मेरे पास रहता है। ज़रा अपना हाथ तो मुझे दो, ताकि मैं स्वर्ग को छू लूं।"

उनके हाथ मिले और उन्होंने एक दूसरे को जकड़ लिया। वे आगे नहीं बोले, किन्तु वे प्रेमातिरेक के कारण चुप थे।

डीया ऐसी मिट्टी की नहीं बनी थी। उसका स्वभाव निराला था। उसका शरीर निर्बल था, हृदय नहीं। उसके हृदय में प्रेम की दैवी दृढ़ता थी।

ग्वाइनप्लेन के उस शब्द से जो गड़बड़ हुई उसका अन्त इस प्रकार हो गया। डीया ने एक दिन कहा, "कुरूपता क्या है? कुकर्म करना कुरूपता है। तुम सदा सुकर्म ही करते हो, इसलिए तुम सुन्दर हो।"

इसके आगे, जैसा कि प्रायः बालक प्रश्न किया करते हैं, उस ढंग से प्रश्न करते हुए, उसने कहा, "देखना ! देखने का क्या मतलब है ? मेरी खुद की हालत तो यह है कि मैं देख नहीं सकती। मालूम यह होता है कि देखने का मतलब छिपाना है।"

ग्वाइनप्लेन ने पूछा, "तुम्हारा क्या मतलब है ?"

डीया बोली, "देखने का मतलब सच्ची बात को छिपाना है।"

ग्वाइनप्लेन ने कहा, "नहीं।"

डीया ने उत्तर दिया, "हां, क्योंकि तुम कहते हो कि तुम कुरूप हो।"

वह थोड़ी देर चुप रही और फिर बोली, "बातें बना रहे हो, और क्या !"

ग्वाइनप्लेन को इस बात की प्रसन्नता हुई कि उसने सच बात कह दी और डीया ने विश्वास नहीं किया। उसकी अन्तरात्मा और प्रीति दोनों सन्तुष्ट हो गई।

इस प्रकार डीया सोलह की हो गई, और ग्वाइनप्लेन प्रायः पच्चीस का। वे पहले दिन की अपेक्षा ज़रा भी आगे नहीं बढ़े थे। उनके विवाह की रात्रि को डीया नौ महीने की थी और ग्वाइनप्लेन दस वर्ष का। उनके प्रेम में एक प्रकार का पवित्र बालकपन उपस्थित था।

चौबीस और सोलह? उर्सस, उनके साथ जो छल करना चाहता था, उसे भूला नहीं था। एक दिन वह बोला,

"आजकल किसी दिन तुम्हें कोई धर्म स्वीकार कर लेना पड़ेगा।"

ग्वाइनप्लेन ने पूछा, "क्यों?"

"इसलिए कि तुम्हारा विवाह हो सके।"

डीया बोली, "वह तो हो चुका है।"

डीया की यह समझ में ही नहीं आता था कि अभी वे जैसे पति-पत्नी हैं, उससे अधिक भी कुछ हो सकेंगे।

सच बात तो यह है कि भ्रम-पूर्ण और कुँवारेपन का सन्तोष, आत्माओं का यह पापरहित सम्मिलन, विवाह-रूपी यह ब्रह्मचर्य उर्सस को नापसन्द नहीं था।

डीया के पास सौंदर्य था। ग्वाइनप्लेन के पास आँखें थीं। हरएक अपना-अपना दहेज लाया था। वे बंधे से भी ज्यादा थे। वे जुड़ गए थे। उनके बीच में कोई अलगाव था तो वह पवित्रता का दिव्य अलगाव था।

ग्वाइनप्लेन चाहे जितने स्वप्न देखता था और डीया के ध्यान तथा अन्तरात्मा की अदालत में विकारों को वह चाहे जितना दबाये रहता था, तो भी वह आखिर मनुष्य ही था। अटल नियमों का उल्लंघन नहीं हो सकता।

स्रष्टा की इच्छा के अनुसार अदृष्ट संक्षोभ अनिवार्य है, वह प्रकृति की प्रत्येक वस्तु के समान उसके अन्दर भी था। इसलिए कभी-कभी वह भीड़ में स्त्रियों की ओर देख लिया करता था, किंतु वह तत्काल अनुभव करने लग जाता कि इस तरह देखना पाप है और वह जल्दी ही पश्चात्ताप के साथ आत्मचिन्तन में लग जाता था।

हम यह भी कह देना चाहते हैं कि उसको वहां से प्रोत्साहन भी नहीं मिलता था। जो स्त्रियां उसकी ओर देखती थीं, उनमें से हरएक के चेहरे पर उसे प्रतीकार, घृणा, तिरस्कार और अस्वीकार ही दिखाई देता था। यह स्पष्ट था कि डीया को छोड़ उसके लिए कोई दूसरी स्त्री प्राप्य नहीं थी। इस सबसे उसको पश्चात्ताप में सहायता मिलती थी।

७. मूर्खता या कविता

उनका सुख संपूर्ण था—इतना सम्पूर्ण कि अब गरीबी भी नहीं रही थी।

सन् १६८० से १७०४ तक बहुत-सा परिवर्तन हो गया था।

ग्वाइनप्लेन प्रसिद्ध हो गया था। उसके खेल-तमाशों में भीड़ लगी रहती थी और अब खूब आमदनी होने लगी थी। उर्सस ने अब अपने मन

के मुताबिक नई गाड़ी बनवा ली थी। उसपर हरा रंग किया गया था। इस-लिए वह 'ग्रीन-बॉक्स' (हरी पेटी) कहलाती थी। यह पहली गाड़ी से बड़ी थी और इसमें ऐसा प्रबंध था कि खेल की जगह थोड़ा-सा परिवर्तन कर देने से पक्का रंगमंच बन जाता था। उर्संस ने गाड़ी खींचने के लिए दो घोड़े भी खरीद लिये थे। इसके अलावा उसने दो स्त्रियां भी नौकर रख ली थीं, फीवी और वीनस। ये दोनों कुरूप और जवान थीं। फीवी खाना पकाती और वीनस गाड़ी को साफ़ रखने का काम करती थी। इसके अलावा खेल के दिन वे डीया को पोशाक पहनाकर सजाती थीं और खुद गाड़ी के ऊपर बैठकर नाटक में देवियों का काम करती थीं। उर्संस कहा करता था, "यह मेरा मन्दिर है।" उर्संस ने बहुत से नाटक तैयार कर रखे थे जो कि ग्वाइनप्लेन और डीया को याद करा दिये गए थे। ये दोनों अपना-अपना अभिनय करते थे। वीनस ढोल बजाती थी और फीवी सितार बजाती थी। उर्संस हर काम में हिस्सा लेता था और होमो को भी बीच-बीच में किसी सज्जन का नाट्य करना पड़ता था। प्रायः जब होमो और उर्संस साथ-साथ मंच पर आते थे—उर्संस खूब कस के रीछ का चमड़ा पहन लेता और होमो अपने भेड़िये के चमड़े में ही रहता, तब कोई नहीं कह सकता था कि इनमें आदमी कौन है और जानवर कौन है? इस बात में उर्संस अपनी प्रशंसा समझता था।

उर्संस के नाटकों का नाम कभी-कभी लैटिन भाषा में रहता था और गाने प्रायः स्पेनिश भाषा में। उस समय इंग्लैंड में स्पेनिश भाषा आमतौर से सब समझ लेते थे। इसके अलावा गिरजाघरों के समान नाटकों में किसी ऐसी भाषा के गानों से, जो कि श्रोता नहीं जानते, कोई बाधा नहीं पड़ती थी, क्योंकि सुननेवाले उस गाने के सुर-ताल के अनुसार मन में अपनी भाषा का गाना गा लिया करते थे, विशेषकर फ्रांस में लोगों ने अपनी धर्म-भक्ति को कायम रखने का यही तरीका अख्तियार कर रखा था। गिरजे में 'बलिदान' के गायन में भक्त लोग गाया करते थे "आओ मचाएं रँगरेलियाँ", और 'पवित्रता' के गायन में गाया करते थे, "प्यारी, मुझे चुंबन दो!"

ट्रेंट की कौंसिल को आज्ञा देकर यह प्रथा बन्द करनी पड़ी थी।

उर्संस ने विशेषकर ग्वाइनप्लेन के लिए एक नाटक तैयार किया था, जिससे वह बहुत प्रसन्न था। वह उसकी सबसे अच्छी रचना थी। उसने अपनी सारी आत्मा उसके अन्दर भर दी थी। अपनी समस्त शक्ति का सार अपनी कृति में भर देना ही सबसे बड़ी सफलता है।

उर्संस ने सावधानी के साथ इस नाटक को सुधार-सुधारकर तैयार किया था। इसका नाम था, 'अंधकार-संहार'। यह था रात्रि का दृश्य।

परदा उठता है और ग्रीन-बाक्स के आस-पास की भीड़ को सिवा अंधकार के कुछ नहीं दिखाई देता। इस अंधकार में तीन अस्पष्ट से आकार रेंगते हुए चलते हैं—एक भेड़िया, एक रीछ, और एक मनुष्य। भेड़िया भेड़िये का काम करता था, उर्सस रीछ का और ग्वाइनप्लेन मनुष्य का। भेड़िया और रीछ प्रकृति के भयंकर विकार थे—बुद्धिरहित भूख और नितांत अज्ञान। दोनों ग्वाइनप्लेन पर आक्रमण करते हैं। यह अंधकार और मनुष्य का युद्ध था। किसीका भी चेहरा पहचान में नहीं आता था। ग्वाइनप्लेन चादर ओढ़े था और उसका चेहरा उसके घने बालों से ढंका था। रीछ गुर्राता था, भेड़िया दांत कटकटाता था, मनुष्य चिल्लाता था। मनुष्य नीचे गिर पड़ा और उन पशुओं ने उसे दबा लिया। उसने सहायता के लिए पुकार मचाई और परमात्मा से हृदयद्रावक प्रार्थना की।

जानवरों के नीचे दबे हुए मनुष्य का यह कष्टमय दृश्य भयंकर था। भीड़ रुकी हुई सांस से यह देख रही थी। एक मिनट और कि अंधकार मनुष्य को निगल जायगा और ये जंगली पशु विजयी होंगे। विकट युद्ध – चीखें, गुर्राहट, फिर एकाएक शान्ति!

अंधकार में से गाने की आवाज आई। हवा का एक झोंका आया और किसीका स्वर सुनाई दिया। अद्भुत संगीत! एकाएक, और न जाने कैसे, या कहां से एक सफेद आकृति दिखाई दी। यह आकृति प्रकाश थी। यह प्रकाश स्त्री थी। यह स्त्री आत्मा थी। डीया! प्रशान्त, सुन्दर, शुभ्र, गंभीर और मधुर डीया धुंधले से प्रकाश-मंडल के साथ सामने आई। प्रभात में ऊषा के समान! वह नवोदित प्रकाश में गाने लगी। वह अदृश्य-दृष्टिगोचर हो रही थी। सबने सोचा कि वे किसी किन्नरी का आलाप सुन रहे हैं या किसी पक्षी का गायन। उसके दर्शन होते ही मनुष्य उत्साहित होकर उठता है और जानवरों को घूंसे मारकर गिरा देता है।

तब वह आगन्तुक चलती हुई—मानो तैरती हुई—स्पेनिश भाषा में यह गीत गाने लगी :

कृपा कर अब यों मत चुप रहो।
नयन जल, बहो; हर्ष में बहो॥
शब्द से जन्मा है अब ज्ञान।
उजाला करता है यह गान॥

फिर नीचे देखकर, मानो उसने नीचे खाई देखी हो, वह गाने लगी :

अरे, उठ भाग, भाग जा रात।
बधाई गाता प्रमुद प्रभात॥

वह गाती जाती थी और वह मनुष्य धीरे-धीरे उठता जाता था। अब

वह लेटने के बजाय घुटनों के बल बैठा था। उसके हाथ आगन्तुक की ओर उठे थे। उसके घुटने उन पशुओं के ऊपर टिके थे और पशु निश्चल पड़े थे, मानो उनपर बिजली गिर गई हो।

वह उस मनुष्य की तरफ मुड़कर गाने लगी :

न रो, हो रोनेवाले शान्त।
स्वर्ग में जा, होकर निर्भ्रान्त॥

और उसके पास पहुंचकर तेजस्वी तारे के समान उसने गाया :

तोड़ दे, बन्धन अपना तोड़।
शोक के काले कपड़े छोड़॥

और उसने अपना हाथ उसके सिर पर रखा। तब एक दूसरी आवाज उठी। यह गम्भीर थी, इसलिए अधिक मधुर थी—वह टूटी हुई थी और विनम्र तथा उत्कंठित गम्भीरता से भरी हुई थी। वह मानवीय संगीत आकाश के संगीत की प्रतिध्वनि कर रहा था। ग्वाइनप्लेन अभी अन्धकार में था। उसका सिर डीया के हाथ की ओर था और वह मरे हुए रीछ तथा भेड़िये पर घुटने टेके हुए था। वह गाने लगा :

अहा हा! आ जा कर ले प्यार।
आत्मा में तेरा दिलदार॥

और एकाएक अन्धकार में से एक प्रकाश की किरण ग्वाइनप्लेन पर पड़ी। तब अंधेरे में से उसका वीभत्स चेहरा पूरी तरह दीख पड़ा।

भीड़ की उत्तेजना का वर्णन करना असम्भव है, मानो हंसी का सूर्य निकल आया हो। सब हँसी के मारे पागल—से हो जाते और तालियों की गड़गड़ाहट का शोर मच जाता था। परदा गिरता था। सब लोग 'ग्वाइन-प्लेन, ग्वाइनप्लेन' की पुकार मचाने लगते थे। लोग ग्वाइनप्लेन के पीछे मतवाले थे। तुमने 'अन्धकार-संहार' देखा है? बड़ा अच्छा खेल है। किन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह सफलता मामूली जनता से ऊंची श्रेणी में नहीं पहुंची। बड़ी भीड़ का मतलब है छोटे आदमियों की भीड़। 'अन्ध-कार-संहार' का टिकट एक आना था। फैशनेबल आदमी एक आनेवाले खेल में कभी नहीं जाते।

ग्रीन-बाक्स खूब लोकप्रिय हो गया था।

थोड़ी कीमत छोटी श्रेणीवालों को आकर्षित करती है। जो ग्रीन-बाक्स का तमाशा देखने को आते थे, वे निर्बल, गरीब और छोटे थे। वे ग्वाइनप्लेन के पास इस तरह दौड़कर जाते थे जैसे कि वे शराब के पास जाया करते थे। वे एक आने में विस्मृति खरीदने को आते थे। ऊंचे प्लेट-फार्म पर से ग्वाइनप्लेन उन गरीबों को गौर से देखा करता था। दूर तक

फैली हुई दुरवस्था के सामने आनेवाले इन नये-नये दृश्यों के चिन्तन में उसकी आत्मा लीन हो जाती थी। मनुष्य की बाहरी आकृति अन्तरात्मा और जीवन-व्यवस्था के प्रभाव से बना करती है और उसमें असंख्य गूढ़ उद्रेकों का परिणाम भी दृष्टिगोचर होता है। ऐसा एक भी कष्ट, एक भी क्रोध, एक भी लज्जा, एक भी निराशा नहीं थी, जिसकी झुर्री ग्वाइनप्लेन ने उन चेहरों पर न देखी हो। उन बालकों के मुंह ने खाना नहीं खाया था। वह आदमी पिता था, वह स्त्री माता थी और उनके पीछे विनाश के मार्ग पर लुढ़कते हुए परिवारों का चित्र कल्पना में उठने लगता था। यहां पर ग्वाइनप्लेन को काम की कमी दीखती थी और वहां पर मनुष्यों की खेती—गुलामी। किसी-किसी के चेहरे पर ऊपरवालों के सुख के स्थूल भार से नीचेवाले के अन्दर उत्पन्न होनेवाली पशुता भी दिखाई देती थी। उस अन्धकार में ग्वाइनप्लेन को एक छोटी-सी दरार दीखती थी, वह यह कि वह और डीया सुखी थे और बाकी के सब अत्यन्त दुःखी। ग्वाइनप्लेन ने ऊपर बलवानों, धनवानों, शानवालों, महानों और भाग्यवानों के पैरों की विचारहीन ठोकरें देखीं। नीचे सम्पत्तिहीनों के पीले चेहरे देखे। इन दोनों संसारों के बीच में उसने, अपने सुख के सहित, जो कि उनके लिए बहुत बड़ा था, अपनेको और डीया को देखा। जो ऊपर थे, वे पैरों से ठुकराते हुए स्वतन्त्रतापूर्वक आते-जाते, खुशियां मनाते और नाचते-फिरते थे; ऊपर कुचलनेवालों दुनिया थी, नीचे कुचली जानेवाली दुनिया थी। यह नाशकारी घटना है। प्रकाश अन्धकार को कुचले, यह सामाजिक कुरीति का परिणाम है। ग्वाइनप्लेन इस क्रूर कुरीति को समझ गया। क्या मनुष्य धूल और दुराचार में, इसी तरह की दुष्ट रुचियों के साथ, अपने अधिकार छोड़कर या इतना नीचा होकर रेंगता रहेगा कि दूसरों का उसे कुचल डालने को जी चाहने लगे! तो फिर इस पार्थिव जीवन में कौन-सी सुन्दरता है!

पहले उसने एक बच्चे की प्राण-रक्षा की थी, इसलिए उसके मन में सारे संसार की रक्षा करने की हास्यास्पद इच्छा होने लगी। चिन्तना का सघन आवरण कभी-कभी उसके व्यक्तित्व को छिपा देता था और वह अनुपात के भाव को यहां तक भूल जाता था, कि वह अपनेसे पूछने लगता था, "गरीबों के लिए क्या किया जा सकता है?" कभी-कभी वह ध्यान में इतना लीन हो जाता कि जोर-जोर से बोलने भी लगता था। "अरे, यदि मैं बलवान होता तो क्या दुःखियों की मदद नहीं करता? किन्तु मैं क्या हूं? एक परमाणु। मैं क्या कर सकता हूं? कुछ नहीं।"

वह गलती पर था। वह दुःखियों के लिए बहुत-कुछ करने की सामर्थ्य

रखता था। वह उन्हें हँसा सकता था, और जैसा कि हम कह चुके हैं, लोगों को हँसाना उनके दुःखों को भुलाना है। वह संसार में कितना बड़ा परोपकारी है, जो कि दूसरों के दुःखों को भुला सकता है!

८. न्याय और सत्य !

ज्ञानी खुफिया होता है। स्वप्नों की निगरानी रखनेवाले उर्सस ने अपने शिष्य के मन की बात ताड़ ली। हमारे हृदय की बातचीत हमारी भौंहों पर एक हलकी-सी आभा छोड़ जाती है, उसको सामुद्रिक की ही आंख देख सकती है। इसलिए ग्वाइनप्लेन के हृदय में जो कुछ हो रहा था, वह उर्सस से न छिप सका। एक दिन जब ग्वाइनप्लेन चिंतन में लीन था, उर्सस ने उसका जाकिट खींचकर कहा—

"मालूम होता है, तू भी ज्ञानी हो गया है! मूर्ख कहीं का! संभल जा! यह काम तेरा नहीं है। तेरा तो बस एक ही काम है—डीया को प्यार करना! तेरे लिए सुख की दो बातें हैं—एक यह कि भीड़ तेरी कुरूपता को देखती है; दूसरी यह कि डीया नहीं देखती। तुझे जो सुख प्राप्त है, तू उसके योग्य नहीं है; क्योंकि कोई भी स्त्री तेरे चेहरे को देखकर तुझे चुम्बन देना स्वीकार नहीं करेगी। मैं देखता हूं कि तू व्याकुल स्वप्न देखता है। ध्यान से सुन। मैं तुझसे अब सच्ची कविता की भाषा में बोलता हूं। डीया को खूब कबाब और पुलाव खाने दे, और छः महीने में वह तुर्क के समान मजबूत हो जायेगी। फिर फौरन उससे विवाह कर लेना, उसको एक बच्चा देना, दो बच्चे देना, तीन बच्चे देना, बच्चों की लम्बी कतार देना। मैं तो इसीको तत्त्वज्ञान कहता हूं। यही एक ऐसा सुख है, जिसमें मूर्खता नहीं है। बच्चों का होना स्वर्ग की झलक है। बच्चे करो, उन्हें झाड़ो-पोंछो, नाक साफ करो, नहलाओ-धुलाओ और सुला दो। अपने आस-पास उनकी भीड़ बढ़ने दो। यदि वे हँसें तो अच्छा है। यदि रोवें तो और भी अच्छा! रोना ही जीना है। छः महीने में दूध पीते हुए, एक वर्ष में रेंगते हुए, दो में पैर चलते हुए, पन्द्रह में ऊंचे होते हुए और बीस में किसी युवती से प्रेम करते हुए देखो। जिसको ये आनन्द प्राप्त हैं, उसको सबकुछ प्राप्त है। मेरी राय तो यह है कि ये सुविधाएं मुझे प्राप्त नहीं थीं और यही कारण है कि मैं पशु हूं। सुन्दर, कविताओं के रचयिता और सबसे पहले साक्षर मनुष्य ईश्वर ने अपने साथी कार्यकर्ता मौजेज से कहा था, 'पैदा करो, संख्या बढ़ाओ!' यही धर्म-वाक्य है। अरे जानवर, संख्या बढ़ा! संसार जो कुछ है सो है। न तो तू उसे सुधार सकता है, न बिगाड़ सकता है। उसकी चिन्ता मत कर! बाहर क्या होता है, उस ओर ध्यान मत

दे। जानता है; बाहर क्या है? बाहर हैं अधिकार से सुखी। मैं कहता हूं कि तू तो प्रसंगवश ही सुखी हो गया है। वे जिस सुख के स्वामी हैं उसका तू चोर है। वे जायज़ मालिक हैं; तू दस्तंदाजी कर रहा है। ऊपर के लोग, जिनको सुख का अधिकार है, यह पसन्द नहीं करते कि उनके नीचे के लोग इतने सुखी रहें। यदि वे तुझसे पूछे कि तुझे सुखी होने का क्या अधिकार है, तो तुझसे जवाब नहीं देते बनेगा। तेरे पास कोई पट्टा नहीं है, और उनके पास है। जुपिटर, अल्ला, विष्णु, सैबथ, किसी-न-किसी ने उन्हें सुख का पासपोर्ट दे रक्खा है। उनसे डर! उनके साथ गड़बड़ न कर, नहीं तो वे तेरे साथ गड़बड़ करेंगे। अभागे! तू जानता है जो अधिकार से सुखी है वह कैसा होता है? वह बड़ी भयंकर चीज है। वह लार्ड है! लार्ड! लार्ड होना क्या चीज है? लार्ड वह है जिसके पास सबकुछ है, और जो खुद सबकुछ है। लार्ड वह है जो अपनी भी प्रकृति से परे है। लार्ड वह है जो जवानी में बुढ़ापे के अधिकार रखता है, और बुढ़ापे में जवानों के समान षड्यंत्रों की सफलता रखता है। यदि वह दुराचारी हो तो भद्र पुरुषों से आदर पाता है; यदि कायर हो तो बहादुर सिपाहियों का सेनापति बनता है। यदि किसी काम का न हो तो दूसरों की मेहनत का मजा उड़ाता है; यदि अपढ़ हो तो विश्वविद्यालय से डिग्री पाता है; यदि मूर्ख हो तो कवियों से प्रशंसा प्राप्त करता है; यदि बदसूरत हो तो स्त्रियों की मुस्कराहट पाता है; यदि खरगोश हो तो शेर का चमड़ा ओढ़ता है। मेरी बात का गलत मतलब न समझना! मैं यह नहीं कहता कि लार्ड को अपढ़, कुरूप, मूर्ख या बूढ़ा होना ही चाहिए। मेरा मतलब यह है कि यह सब होते हुए भी उसमें कोई कमी नहीं आती। अबे लड़के, इस संसार में गाड़ियां हैं, हमारे लार्ड उनके अन्दर बैठते हैं और जनता उनके चक्कों के नीचे कुचली जाती है। ज्ञानी रास्ते से अलग जाकर खड़ा हो जाता है। एक तरफ खड़े हो जाओ और उन्हें जाने दो! मैं तो लार्डों से प्यार करता हूं और उनसे दूर भी रहता हूं।

"बड़े बड़े ही होते हैं। जब लार्ड अपने बारे में बोलते हैं तो वे कहते हैं 'हम'। लार्ड सदा बहुवचन में रहते हैं। उन्होंने बहुत-से बुद्धिमानी के कानून भी बनाये हैं। एक कानून यह भी बनाया है कि जो कोई तीन बरस की उमर के पीपल के पेड़ को काटेगा उसे फांसी की सजा दी जायेगी। लार्ड लार्ड में भी अन्तर होता है। बैरन वाइकाउंट की अनुमति के बिना उसके साथ हाथ नहीं धो सकता। ये वास्तव में बहुत अच्छी बातें हैं; देश की रक्षा इसीसे है। इंग्लैंड के लिए यह कितने सौभाग्य की बात है कि वहां पर पच्चीस ड्यूक, पांच मार्क्विस, छिहत्तर अर्ल, नौ वाइकाउंट और इक्सठ बैरन हैं! कुल

मिलाकर एक सौ छिहत्तर पीयर हैं, जिनमें से कुछ 'माइ लार्ड' हैं और कुछ 'न्यूअर ग्रेस' हैं। यहां-वहां कुछ चीथड़े दिखाई देते हों तो उससे क्या! हर आदमी मखमल और ज़री के कपड़े नहीं पहन सकता। अरे भाई, एक चीज़ दूसरी चीज़ की ही तो बनेगी। गरीब हैं तो क्या हुआ! उन्हींसे तो धनवानों के सुख की शोभा है। मूअरगेट में जो कोढ़ियों का अस्पताल है और सन् १५५३ में राजा छठवें एडवर्ड ने बच्चों के लिए जो क्राइस्ट अस्पताल कायम किया था, उन दोनों में जितना खर्च होता है, उतना तो बैरन चार्ल्स के कुत्तों पर होता है। लीड्स के ड्यूक टामस ग्राजवर्न अपने नौकरों की वर्दियों पर हर साल पांच हज़ार सोने की गिन्नियां खर्च करते है। हमारे लार्ड खर्चीले और शानदार हैं। मैं तो उसके लिए उनकी सराहना ही करता हूं। हमें ईर्ष्यालु मनुष्यों के समान उनकी बुराई नहीं करनी चाहिए। जब कोई सुन्दर दृश्य मेरे पास से गुज़रता है तो मैं पुलकित हो जाता हूं। हमारे पास सुन्दर और उज्ज्वल चन्द्रमा नहीं है, किन्तु चांदनी ही सही, वह भी तो कुछ है। यह कहना कि लार्ड शरारती और फ़जूल हैं, यह कहने के समान है कि राज-व्यवस्था बदल दी जाय। आदमी जानवरों के समान रहने के लिए नहीं बनाये गए हैं। खेत की पत्तियां भेड़ें खा जाती हैं और गड़रिया भेड़ों की ऊन उतार लेता है। मेरी नज़र में तो दोनों एक हैं। मैं तो तत्त्वज्ञानी हूं; मैं जीवन की उतनी ही परवाह करता हूं जितनी कि मक्खी की। जीवन तो बसेरा है। बर्कशायर के अर्ल, बीज हावर्ड के पास शाही सवारी की चौबीस गाड़ियां हैं, जिनमें से एक चांदी की है और एक सोने की। दूसरों के पास चौबीस गाड़ियां नहीं हैं तो शिकायत किस बात की? तुम्हें एक रात को बहुत ठंड लगी थी, इससे उस लार्ड को क्या! लगी तो तुम्हें ही थी न! तुम्हारे ऐसे बहुत-से ठंड और भूख से मरते हैं। यदि सब लोग इस तरह शिकायत करने लगें तो बड़ी गड़बड़ी मचे। नियम यह है कि चुप रहो। मुझे तो इस बात में ज़रा भी शक नहीं कि परमात्मा ने दुखियों को चुप रहने की आज्ञा दे रखी है; वरना उनके निरंतर अनन्त चीत्कार से उसकी आफत आ जाती। इसलिए लोगो, चुप रहो! मैं तो इससे भी ज्यादा अच्छा काम करता हूं; मैं लार्डों को पसन्द करता और सराहता हूं। अभी मैं लार्डों की संख्या गिना रहा था, उसमें दो आर्कबिशपों और चौबीस बिशपों की गिनती करना भूल गया। मुझे याद है, मैंने धार्मिक टैक्स की वसूली के समय रैफो के रेवरेंड डीन के दर्शन किये हैं। उन्होंने पीयरेज को धर्म के साथ जोड़ दिया है, और वे किसानों से बड़े परिमाण में बढ़िया-से-बढ़िया गेहूं ग्रहण करते हैं, जो बिना खेती की मेहनत किये उन्हें मिल जाता है। इससे उन्हें प्रार्थना करने के लिए काफी समय मिलता है।

यह दूसरों पर टैक्स लगाने का अधिकार कितना प्रशंसनीय है ! आमदनी के लिए भट्टी की शराब, लकड़ी, तेल, अनाज, मसाला, लोहा, कोयला वगैरा सैंकड़ों चीज़ों पर टैक्स लगाने का अधिकार है। हमें उनका आदर करना चाहिए। उनकी चाल-ढाल और ठाट-बाट से यही ध्वनि निकलती है 'हम ही तुम्हारे माई-बाप हैं !' और क्यों नहीं ? क्या हम कानून बदल दें ? लार्ड हमारी समाज-व्यवस्था के एक अंग हैं। तू जानता है, स्काटलैंड में एक ड्यूक है जिसकी रियासत नव्वे मील तक चली गई है ? तू जानता है, कैण्टरबरी के आर्कबिशप (पादरी) की आमदनी ४०,००० पौंड सालाना है ? तू जानता है, रानी को सरकारी खजाने से हर साल ७,००,००० पौंड खर्च के लिए मिलते हैं। इसके अलावा उनके पास किले, जंगल, रियासतें, जमींदारियां, सीर, जागीरें, इनाम, लगान, टैक्स, जब्ती और जुर्माने का अधिकार वगैरा भी हैं, जिनसे उन्हें दस लाख पौंड सालाना की आमदनी होती है। जो इतनी बातें सुनकर भी सन्तुष्ट न हों, उनको खुश करना कठिन है।"

ग्वाइनप्लेन ने उदासी से कहा, "धनवानों का स्वर्ग गरीबों के नर्क में बना है।"

६. कवि और दार्शनिक

इसी बीच वहां डीया आ गई। ग्वाइनप्लेन की दृष्टि उसकी ओर फिर गई और उसने उसके सिवा कुछ न देखा। यह प्रेम है। आदमी किसी दूसरे विचार के ज़ोर से एक क्षण के लिए दूसरी तरफ हट जाता है, किन्तु जब प्रेयसी आती है तब वे सब चीज़ें, जिनका उससे संबंध नहीं है, गायब हो जाती हैं; और शायद प्रेयसी को इस बात का पता भी नहीं रहता कि उसके आगमन से हमारे भीतर संसार-भर का परिवर्तन हो रहा है।

एक घटना यहां कह देनी आवश्यक है। 'अंधकार-संहार' के गाने में एक जगह ग्वाइनप्लेन को निशाचर कहकर संबोधन किया जाता था। यह डीया को बुरा लगता था। इसलिए उसने 'निशाचर' की जगह 'शोक के' कहना शुरू कर दिया, जिससे 'निशाचर के काले कपड़े छोड़' की जगह, 'शोक के काले कपड़े छोड़' हो गया। उर्सस ने अपनी कविता में यह हस्तक्षेप सह तो लिया, परन्तु उसे बहुत बुरा लगा।

'अनोखा' ग्वाइनप्लेन का प्रचलित नाम था। उसका असली नाम ग्वाइनप्लेन बहुत कम आदमियों को मालूम था और वह नाम उस उपनाम के बाद तो बिल्कुल गायब हो गया जैसेकि उसका असली स्वरूप हंसी के पीछे गायब हो गया था।

किन्तु उसका असली नाम ग्रीन-बाक्स के सामने एक बड़े तख्ते पर कायम था। उस पर उर्सस ने नीचे लिखा वर्णन बड़े-बड़े अक्षरों में लोगों की जानकारी के लिए लिख रखा था—

"यहां पर ग्वाइनप्लेन है, जिसको दस वर्ष की उम्र में, २९ जनवरी, १६९० की रात को बदमाश काम्प्रेचिकों ने पोर्टलेंड के किनारे पर अकेला छोड़ दिया था। यह छोटा-सा लड़का अब बड़ा हो गया है और अब 'अनोखा' के नाम से मशहूर है।"

तमाशा करनेवालों का जीवन चक्कर खाते हुए प्रकाश के समान है। यह प्रकट होता है और फिर छिपता है, फिर प्रकट होता है और फिर छिपता है। प्रदर्शन के बाद एकान्तवास। नाटक खत्म हो जाने के बाद, उधर दर्शकों की भीड़ धीरे-धीरे सड़कों पर बाहर जाने लगती थी और उनका शोरगुल कम होते-होते गायब हो जाता था, इधर ग्रीन-बाक्स का प्लेटफार्म ऊपर को उठकर बन्द हो जाता था, जैसे कि किले का पुल हो जाता है, और बाहर के आदमियों से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता था। एक ओर विश्व था, दूसरी ओर वह झोंपड़ी थी, और उस झोंपड़ी के अन्दर स्वतन्त्रता, निर्मल अन्तरात्माएं, साहस, भक्ति, निष्पापता, सुख, प्रेम—ये सभी उज्ज्वल ग्रह थे।

आंखोंवाला अंधापन और प्रेममय कुरूपता एक-दूसरे का हाथ दबाये हुए, भौंह-से-भौंह मिलाये हुए, मीठी-मीठी बातें करते हुए और प्रेम में मस्त होकर पास-पास बैठते थे।

उर्सस आमदनी के पैसे गिनता था, उसके बाद सब भोजन करते थे। प्रेम में सभी बातें आदर्श होती हैं। प्रेम में साथ-साथ खाने-पीने में एक-दूसरे को चुपचाप स्पर्श करने के बहुत-से मधुर मौके मिल जाते हैं, जिनके कारण प्रत्येक कौर और घूंट चुंबन बन जाता है। वे एक ही प्याले से शराब पीते थे, मानों दो भ्रमर एक ही फूल से साथ-साथ मधु पी रहे हों। दो प्रेमी आत्माएं दो पक्षियों के समान मधुरिमामय रहती हैं। ग्वाइनप्लेन डीया के लिए काम करने को सदा उत्सुक रहता था, उसको रोटी काट-काटकर देता था, उसको पीने की चीजें ढाल दिया करता था और उसके अत्यन्त निकट रहा करता था।

उर्सस 'हूं' कहके वहां से हट जाता था और उसकी डांट मुस्कराहट में परिणत हो जाती थी।

ग्रीन-बाक्स बड़े-बड़े शहरों में बहुत कम गया था। ग्वाइनप्लेन ने अपनी चौबीस वर्ष की उम्र में सिकपोर्ट्स से बड़ा कोई शहर नहीं देखा था। उसकी प्रसिद्धि बढ़ रही थी। वह मामूली जनता से बढ़कर ऊंची श्रेणी के मनुष्यों

में पहुंचने लगा। जो लोग बाहर की विचित्र वस्तुओं और हर तरह की अद्‌भुत चीज़ों के शौकीन थे और उनके पीछे दौड़ा करते थे, उनको यह मालूम था कि एक अद्‌भुत प्रकार का कुरूप आदमी कहीं पर है और इधर-उधर घूमता फिरता है। वे उसके बारे में बातचीत किया करते थे और उसकी तलाश में रहते थे। 'अनोखा' वास्तव में प्रसिद्ध हो रहा था। 'अन्धकार-संहार' अब गौरवान्वित हो रहा था।

एक दिन उर्सस ने महत्वाकांक्षा के जोश में आकर कहा, "हमें अब लंदन जाना चाहिए!"

: ३ :

प्रथम आघात

१. टैडकास्टर सराय और ग्रीन-वाक्स

टेम्स के एक ओर लंदन है और दूसरी ओर लंदन का हिस्सा साउथ-वर्क है, बीच में पुल है। साउथवर्क में गरीब लोग रहते हैं। वहां एक खुला हुआ वाउलिंग ग्रीन नाम का मैदान है, जिसमें हर तरह के खेल-तमाशों, नक्कालों, थियेटर, सरकस वगैरा का जमघट लगा रहता है। वहां पर कई शराबखाने, इन (सराय), होटल वगैरह थे। उनमें एक 'टैडकास्टर इन' भी थी। इस इन (सराय) के अन्दर एक अहाता था और दूकान के अलावा रहने के लिए एक दुमंजिला मकान भी था। उसके अहाते में दो दरवाज़े थे। सामने का दरवाजा बड़ा था। यह गाड़ियों के लिए था और अक्सर बंद रहता था। पीछे की तरफ़ एक छोटा दरवाजा था, जिसमें से आदमी आया-जाया करते थे। दूकान के अंदर जाने के लिए अहाते में जाना ज़रूरी नहीं था, उसका दरवाज़ा अलग ही था।

टैडकास्टर इन में उसका मालिक और एक नौकर लड़का रहता था। मालिक का नाम मास्टर निकल्स था और लड़के का नाम गोविकम। मास्टर की पत्नी मर गई थी। वह कंजूस था, कानूनों से भय खाता था और उनका पालन करता था। लड़के की उम्र चौदह वर्ष की थी। वह ग्राहकों को शराब ढालकर दिया करता था। उसका चेहरा आनन्दी था और सिर के बाल बारीक कटे हुए थे, जो कि गुलामी की निशानी है।

उर्सस ने अपने निर्णय के अनुसार लंदन पहुंचकर इस टैडकास्टर सराय में अड्डा जमाया।

मास्टर निकल्स कानून का पाबन्द था और भेड़ियों को शहर के अंदर रखना क़ानून के खिलाफ़ था। इसलिए मास्टर निकल्स को होमो के वहां रखने में आपत्ति थी। परन्तु उर्सस ने कुछ ज्यादा किराया देकर मास्टर निकल्स से समझौता कर लिया था।

उर्सस अपने साथियों, अपने खेल और अपनी दवाओं का परिचय देने के लिए सराय के बाहर भीड़ के सामने लम्बा-चौड़ा व्याख्यान दिया करता था, जिसमें संसार-भर के ज्ञान, साहित्य, तत्त्वज्ञान, इतिहास, धर्म-ग्रन्थ, समाज-व्यवस्था सम्बन्धी उल्लेखों की भरमार रहती थी। उसके व्याख्यान का थोड़ा सा नमूना इस प्रकार है—

"लंदन के पुरुषो और स्त्रियो !

"मैं आ गया। मैं हृदय से चाहता हूं कि तुम इस बात से खुश रहो कि तुम अंग्रेज हो। तुम्हारा राष्ट्र महान् है। मैं इससे भी बढ़कर कहूंगा कि तुम्हारी जाति महान् है। तुम्हारी तलवारों से तुम्हारे घूंसे ज्यादा अच्छे हैं। तुम्हारी भूख बहुत तेज है। तुम्हारा राष्ट्र ऐसा है, जो दूसरे राष्ट्रों को खा जाता है—यह कार्य भव्य है! संसार-भर का खून चूसकर इंग्लैंड गौरवान्वित हो रहा है। उपनिवेशों, दूसरे देशों और उद्योग-धन्धों के प्रबन्ध करने और दूसरों को ऐसी हानि पहुचाने में, कि जिससे खुद तुम्हें लाभ हो, तथा राजनीतिज्ञों और तत्त्वज्ञानियों की हैसियत से, तुम अद्वितीय हो। समय आनेवाला है, जबकि पृथ्वी के ऊपर एक तख्ता खड़ा किया जायगा, जिसके एक ओर लिखा होगा 'आदमी' और दूसरी ओर 'अंग्रेज'। मैं यह आपकी बड़ाई कर रहा हूं। मैं न तो अंग्रेज हूं, न आदमी हू; मुझे तो रीछ होने का सौभाग्य प्राप्त है। उससे भी ज्यादा—मैं डाक्टर हू। इसका मतलब है कि मैं सिखाता हूं! क्या? दो तरह की बातें। एक तो वे जिन्हें मैं जानता हूं। दूसरी वे जिन्हें मैं नहीं जानता। मैं अपनी दवाएं बेचता हूं और मैं अपने विचार बेचता हूं। नज़दीक आओ और सुनो! मैं तुम्हें निमन्त्रण देता हूं। अपने कान खोलो! यदि वे छोटे हैं तो उनमें बहुत कम सच्चाई समायेगी और यदि वे बड़े हैं तो उनमें बहुत-सी मूर्खता घुस जायेगी। इसलिए सावधान रहो! मेरा एक साथी है, जो तुम्हें हंसा-येगा; किन्तु मैं तुमसे सोचने को कहूंगा। हम दोनों एक ही बाक्स में रहते हैं। हँसी भी उसी परिवार की है, जिसका कि विचार है। जब लोगों ने डेमाक्रिटस से पूछा, "तुम कैसे जानते हो?" उसने जवाब दिया, "इसलिए कि मैं हंसता हूं।" और यदि मुझसे पूछा जाय कि "तुम क्यों हंसते हो?" तो मैं जवाब दूंगा, "इसलिए कि मैं जानता हूं।" खैर, मैं इस समय हंसी नहीं कर रहा हूं। मैं लोगों के ऐबों को दूर करनेवाला हू! मैंने तुम्हारी बुद्धि साफ करने का कार्य अपने जिम्मे ले रखा है। झूठी नम्रता मुझे अच्छी नहीं लगती। मैं साफ-साफ कहता हूं कि मैं ईश्वर पर विश्वास करता हूं, चाहे वह सही करे, चाहे गलती करे। जहां मैं गंदगी देखता हूं—और गलती गंदगी है—उसे मैं झाड़कर दूर कर देता हूं।

"अब मैं अपने परिवार का परिचय करा देना चाहता हूं। हम चार हैं। पहले मैं अपने मित्र का परिचय देता हूं। वह भेड़िया है। वह अपनी जाति को नहीं छिपाता। उसे देखो! वह पढ़ा-लिखा, गम्भीर और समझदार है। परमात्मा ने शायद उसे किसी विश्वविद्यालय का डाक्टर बनाने का विचार किया था, परन्तु उस पदवी के लिए तो मूर्ख होने की आवश्यकता है, और वह भेड़िया मूर्ख नहीं है। मैं बतला देना चाहता हूं कि उसे कोई विशेष पक्षपात नहीं है और न वह रईसाना है। वह कभी-कभी कुतियों से बात-चीत कर लेता है; लेकिन अधिकार की दृष्टि से देखा जाय तो उसे भेड़ियानियों से ही मिलना-जुलना चाहिए। वह गुर्राता है। इसमें वह मनुष्यों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है। सभ्यता को मान देकर वह भौंकता भी है, यह उसकी महान् कृपा है। होमो पूर्णता को पहुंचा हुआ कुत्ता है। हमें कुत्ते का आदर करना चाहिए। कुत्ता विचित्र प्राणी है! वह जीभ से पसीजता है और दुम से मुस्कराता है। मैं यह भी कहूंगा कि यह भेड़िया अत्यन्त सुशील है। उसमें नम्रता है। वह उदार है और सहायता के लिए सदा तत्पर रहता है और अपने कार्य के बारे में किसीसे एक शब्द भी नहीं कहता। ये उसके सद्गुण हैं। अपने दूसरे मित्र के बारे में मैं केवल इतना ही कहूंगा कि उसको पहले समुद्री चोरों ने तूफानी सागर के किनारे पर अकेला छोड़ दिया था। तीसरी अन्धी है। क्या यह कोई असाधारण बात है? नहीं, हम सब अन्धे हैं। कंजूस अन्धा है; वह सिर्फ सम्पत्ति को देखता है उसके उपयोग को नहीं। फजूलखर्च अन्धा है; वह केवल प्रारम्भ देखता है और अन्त नहीं देखता। कामिनी अन्धी है; वह अपना शृंगार देखती है और झुर्रियां नहीं देखती। विद्वान् अन्धा है; वह अपनी पढ़ी हुई पुस्तकें देखता है और अपना अज्ञान नहीं देखता। ईमानदार अन्धा है; वह सच्चाई देखता है और चोर को नहीं देखता। चोर अन्धा है; वह माल को देखता है, ईश्वर को नहीं देखता। ईश्वर अन्धा है। जिस समय उसने इस संसार की रचना की उस समय उसने यह नहीं देखा कि इसमें किसी तरह शैतान घुस गया है। मैं खुद अन्धा हूं; मैं बोलता हूं और यह नहीं देखता कि तुम सब अन्धे हो। मेरा तो विश्वास है कि यह लड़की राजा की लड़की है। किन्तु मैं यह बात कहना नहीं चाहता, बुद्धिमानी चुप रहने में ही है।

"अन्त में मैं आपको एक छोटा-सा उपदेश देना चाहता हूं। महिलाओ और महाशयो! अपने अच्छे स्वभाव के अन्दर सद्गुण, नम्रता, ईमानदारी, सच्चाई, न्याय और प्रेम की उन्नति करो। रईसो और भद्रपुरुषो, मैं बोल चुका। अब नाटक प्रारम्भ होनेवाला है।"

२. कार्य में विरोधी : घृणा में सम्मिलित

अनोखा ने निःसंशय सबको परास्त कर दिया था। आसपास के सभी खेल-तमाशेवाले नाराज थे। ग्रीन-बाक्स के सामने दूकानें बैठ गई। ग्रीन-बाक्स की आमदनी जितनी बढ़ती जाती थी, आसपास के खेल-तमाशों की आमदनी उतनी ही कम होती जाती थी। अभी तक जो तमाशे सबको पसंद थे वे अब नापसंद हो गए। सारे नक्काल, सारे विदूषक, सारे बहुरूपिये और सारे भांड ग्वाइनप्लेन से ईर्ष्या करने लगे। नाचने-गाने-वालियां ग्वाइनप्लेन की ओर उंगली दिखाकर अपने बच्चों से कहती थी, "कितने शोक की बात है कि तुम्हारा चेहरा उसके समान नहीं है।" कुछ तो अपने बच्चों को सुन्दर होने के कारण बुरी तरह पीटती थीं। अनेक तो यह सोचती थीं कि "यदि हमें ऐसी मूरत बनाने की तरकीब मालूम हो जाय तो हम अपने बच्चों को भी वैसा ही बना दें।"

ग्वाइनप्लेन, सोने के अंडे देनेवाली मुर्गी था। सारी सरायों में शोर मच गया। तमाशेवाले ग्वाइनप्लेन पर मुग्ध भी थे और क्रुद्ध भी। प्रशंसा करनेवाला क्रोध, ईर्ष्या कहलाता है। बाद में वह भौंकने लगता है। पहले तो उन्होंने 'अन्धकार-संहार' के नाटक में गड़बड़ मचाने की कोशिश की, शोरगुल, डांट-फटकार, चीख-पुकार शुरू कर दी! परन्तु दर्शकों में टॉम जिम जैक नाम का एक आदमी था, जो सदा घूंसेबाजी करके शान्ति स्थापित कर दिया करता था। वह भीड़ का नेता था।

जब टॉम जिक जैक के कारण उनकी शरारत नहीं चली तो सब खेल-तमाशेवालों ने सरकार को दरख्वास्त दी। यह मामूली नियम है। हमारी इच्छा के विरुद्ध किसीकी सफलता देखकर पहले तो हम उसके खिलाफ लोगों को भड़काते हैं, और जब उससे भी कुछ नहीं होता तो अदालत में दरख्वास्त देते हैं।

इन तमाशेवालों के साथ एक आदरणीय पादरी भी मिल गए। अनोखा ने धर्मोपदेशकों पर भी आघात कर दिया था। सिर्फ सराय ही खाली नहीं हुई, वहां के पांचों गिरजे भी खाली हो गये। धर्मोपदेश पूरा होने के पहले ही लोग ग्वाइनप्लेन का तमाशा देखने के लिए गिरजा छोड़कर चले जाते थे। उन पांचों गिरजों के पादरियों ने लंदन के विशप से शिकायत की और विशप ने रानी के पास शिकायत भेजी।

इन शिकायतों का कोई कानूनी अधिकार भी था? अवश्य। जुर्म क्या था? यह ग्रीन-बाक्स के साथ एक भेड़िया था। कुत्ते की इजाजत थी। भेड़िये की मुमानियत थी। इंग्लैंड में भेड़िया बागी है।

असल में बहाना होमो का था।

उर्सस को इन सारी साज़िशों का समाचार सरायवाले से मालूम हो गया। वह व्याकुल होने लगा। उसे दो पंजों का डर था—पुलिस और न्यायाधीश का। न्यायाधीश का डर होने के लिए डर होना ही काफ़ी है, उनके लिए अपराधी होने की आवश्यकता नहीं।

उसे लंदन में आने का अफ़सोस होने लगा। उसने कहा, "यह कहावत सच है कि 'ज़्यादा अच्छा अच्छे का दुश्मन होता है।' मैं पहले सोचता था कि यह कहावत मूर्खता से भरी है; परंतु अब मालूम हुआ कि मूर्खता की सच्चाई में भी सच्ची सच्चाई रहती है।"

जबतक लोगों की घृणा से मार-पीट नहीं शुरू होती, तबतक उससे सफलता ही बढ़ती है। उससे ग्रीन-बाक्स को फायदा ही हुआ। इधर-उधर अफवाहें उड़ने लगीं कि उसके अन्दर कोई असाधारण बात छिपी है। इससे अनोखा की प्रसिद्धि और भी ज़्यादा बढ़ने लगी। जिस चीज़ की रोक-टोक की जाती है, उसके पीछे जनता मतवाली होकर दौड़ पड़ती है। संशयास्पद होना भी एक प्रकार की सिफारिश है। जिसकी तरफ उंगली उठाई जाती है, लोग उसको अपनाने लगते हैं। जिसकी निंदा की जाती है, उसमें निषिद्ध फल का स्वाद रहता है। हम उसे चखने के लिए दौड़ते हैं। इसके अलावा यदि प्रशंसा से किसीको चिढ़ होती हो और वह चिढ़नेवाला सरकारी अफसर हो तो प्रशंसा करने में और भी मज़ा आता है। शाम के वक्त मनोरंजन करते हुए यदि मज़लूम के प्रति दयालुता और ज़ालिम के विरोध का कोई काम बन पड़े तो वह सबको पसंद आता है। मनोरंजन के साथ-साथ परोपकार भी होता है। इसलिए जैसे-जैसे अनोखा के खिलाफ बाउलिंग ग्रीन के तमाशेवालों का शोरगुल बढ़ता जाता था, वैसे-वैसे उसकी लोकप्रियता भी बढ़ती जाती थी। दुश्मन का शोर फायदेमन्द होता है; वह विजय को गौरवपूर्ण और ज़ोरदार बनाता है। एक मित्र तो तारीफ करते-करते जल्दी थक जाता है, लेकिन दुश्मन गाली देते हुए नहीं थकता। गाली देने से कोई नुकसान नहीं होता। दुश्मन इस बात को नहीं जानते। वे हमारा अपमान किये बिना नहीं रह सकते, और यही उनका उपयोग है। वे अपनी ज़बान बंद नहीं रख सकते और इस तरह जनता को जागृत बनाये रखते हैं।

'अंधकार-संहार' के दर्शकों की भीड़ दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी।

उर्सस ने साज़िशों और शिकायतों के बारे में जो कुछ मास्टर निकलस से सुना था, उसे अपने पास ही रखा, ग्वाइनप्लेन को नहीं बताया; इस डर से कि वह कहीं चिन्तित न हो जाय और खेल बिगड़ जाय। यदि कोई विपत्ति आयेगी तो उसका पता लग ही जायगा।

३. देपनटेक

तो भी एक बार सोचा कि अब तो बुद्धिमानी इसीमें है कि ग्वाइनप्लेन को सचेत कर दिया जाय। इसमें सन्देह नहीं कि एक ऐसी घटना उपस्थित हो गई जो कि उर्सस की राय में तमाशेवालों या पादरियों की शिकायत से अधिक गम्भीर थी।

एक बार आमदनी गिनते हुए उर्सस ने एक फार्दिग (पैसा) उठाया और सराय के मालिक की उपस्थिति में एक आपत्तिजनक भाषण दे डाला, जिसमें उसने दिखाया कि यह फार्दिग गरीबों की कष्टावस्था प्रकट करता है और फार्दिग में रानी के चित्र के नीचे जो सिंहासन की तस्वीर है वह यह प्रकट करती है कि राजाओं की शान गरीबों का खून चूसकर ही चमका करती है। इन दोनों की उसने विरोधात्मक तुलना कर दिखाई। यह बात मास्टर निकल्स ने दूसरों को कह सुनाई और उसकी चर्चा चारों ओर फैल गई। वह फ़ीबी और वीनस के भी कान में पहुची और उन्होंने उर्सस को सुनाई। इससे उर्सस को बुखार आ गया। रानी के विरुद्ध राजद्रोह की बातें! उसने ग्वाइनप्लेन को खूब फटकारा।

"अबे सुना! अपने इन बेहूदा जबड़ों पर निगरानी रखनी चाहिए। बड़ों के लिए एक नियम है—कुछ न करना, और छोटों के लिए एक नियम है—कुछ न कहना। गरीब का एक ही मित्र है, वह है मौन। उसे केवल एक ही अक्षर बोलना चाहिए, 'हां'। उसे एक ही अधिकार है, मंजूर करना और क़बूल करना। न्यायाधीश को भी 'हां', राजा को भी 'हां'। बड़े आदमियों की मरज़ी होती है तो वे हमें मारते हैं। मैंने उनकी मार खाई है। यह तो उनका अधिकार है और हमारी हड्डियां तोड़ देने से उनके बड़प्पन में कुछ कमी नहीं आ जाती। हमें राजदण्ड का आदर करना चाहिए। आदर बुद्धिमानी है और छोटे बने रहने में उनकी सुरक्षा है। राजा का अपमान करना वैसा ही खतरनाक है, जैसा कि शेर के नाखून काटने को जाना। उनका कहना है कि मैंने फार्दिग के बारे में कुछ बका है, और उसके आदरणीय चित्र को दोष लगाया है, जिसके प्रताप से हम बाज़ार में एक बैंगन खरीद सकते हैं! सावधान हो जाओ; गम्भीर बनो! सज़ाओं और जुर्मानों का ख़याल रखो!"

यह उपदेश हो जाने के बाद भी उर्सस कुछ समय तक चिन्तित रहा। ग्वाइनप्लेन को ज़रा भी चिन्ता नहीं हुई। युवावस्था की लापरवाही का कारण अनुभव की कमी है। तो भी, यह मालूम होता था कि ग्वाइनप्लेन को चिन्तित होने का कोई कारण नहीं दीखता था; क्योंकि कई हफ्ते शांति

के साथ बीत गये, और रानी के बारे में जो बातें कही गई थीं, उनका कोई बुरा असर नहीं मालूम हुआ।

हम जानते हैं कि उर्सस में लापरवाही थी ही नहीं। वह व्याकुल हरिन के समान चारों तरफ निगाह दौड़ाता रहता था। एक दिन ग्वाइनप्लेन को उपदेश देने के बाद जब वह खिड़की से मैदान की तरफ देख रहा था, उस समय उसका चेहरा एकाएक पीला पड़ गया।

"ग्वाइनप्लेन, उस आदमी को देखता है, जो जा रहा है और जिसके हाथ में एक डंडा-सा है?"

"हां।"

"ग्वाइनप्लेन, वह वेपनटेक है।"

"वेपनटेक कौन होता है?"

"वह वेलिफ आव दि हंड्रेड है।"

"यह वेलिफ आव दि हंड्रेड क्या चीज़ है?"

"वह प्रिपाटज़िस हंड्रेडी है।"

"यह प्रिपाज़िटस हंड्रेडी क्या होता है?"

"वह भयंकर अफ़सर होता है।"

"उसके हाथ मे क्या है?"

"लोहे का हथियार।"

"वह उससे क्या करता है?"

"सबसे पहले वह उसपर क़सम लेता है। इसीलिए वह वेपनटेक' कहलाता है।"

"फिर?"

"फिर वह तुम्हें उससे छूता है।"

"इसका क्या मतलब?"

"इसका मतलब यह कि मेरे पीछे-पीछे चलो।"

"और तुम्हें पीछे-पीछे जाना चाहिए?"

"हां।"

"पर कहां?"

"मैं कैसे जानूं?"

"पर वह कहता तो होगा न कि तुम्हें वह कहां ले जायेगा?"

"नहीं।"

"यह कैसे?"

' वेपन याने हथियार और टेक याने लेना।

"वह तो सिर्फ लोहे के हथियार से तुम्हें छूता है। बस, सबकुछ हो गया। तुम्हें जाना ही चाहिए।"

"पर कहां ?"

"उसके पीछे।"

"पीछे कहां ?"

"जहां वह चाहे, ग्वाइनप्लेन !"

"और यदि तुम न जाओ ?"

"तो तुम फांसी पर चढ़ा दिये जाओ।"

उर्सस ने फिर खिड़की के बाहर देखा और गहरी सांस लेकर कहा, "परमात्मा को धन्यवाद ! वह चला गया। वह यहां नहीं आ रहा था।"

४. सोने का सिक्का

'अन्धकार-संहार' के लिए परदा उठते ही उर्सस, होमो और ग्वाइन-प्लेन मंच पर सामने आये। अपनी आदत के मुताबिक उर्सस ने दर्शकों की ओर दृष्टि डाली और उसपर सनसनी छा गई।

रईसों का दर्जा खाली नहीं था। उसके बीच में मखमल की आराम-कुरसी पर एक स्त्री बैठी थी। वह अकेली थी, परन्तु उससे पूरा दर्जा भरा हुआ मालूम होता था। कुछ व्यक्तियों के आसपास प्रकाश छिटका हुआ मालूम होता है। उस स्त्री के अन्दर डीया के समान प्रकाश था, किन्तु वह प्रकाश भिन्न प्रकार का था।

डीया का रंग पीला था, उस स्त्री का गुलाबी। डीया सान्ध्य प्रकाश के समान सुन्दर थी और वह अर्धरात्रि के प्रकाश आरोरा[1] के समान। डीया सुन्दर थी, यह स्त्री सुन्दरोपरि थी। उस मैली-कुचैली भीड़ में वह शान के साथ दमक रही थी, मानो उसमें लाल की-सी चमक हो। सब जगह उसका प्रकाश इतना जगमगा रहा था कि उसके सामने सब फीके पड़ गए थे और सबके चेहरों पर ग्रहण-सा लग गया था। उसकी चमक ने सबको फीका कर दिया था।

प्रत्येक आंख उसीकी तरफ लगी हुई थी।

भीड़ में टॉम जिम जैक भी था। दूसरों के समान वह भी उस स्त्री की

---

[1] उत्तरी ध्रुव के प्रदेशों में पांच-पांच, छः-छः महीने के रात और दिन होते हैं। महीनों तक सूर्य चमकता ही रहता है। ऐसी रातों में बादल-मण्डल सूर्य के प्रकाश से एक अत्यन्त मनोहर रंगीन पर्दे जैसा चमकने लगता है। इसी को आरोरा कहते हैं।

तेजस्विता में छिप गया था।

उस स्त्री ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच रखा था, इसलिए 'अन्धकार-संहार' का शुरू-शुरू में कुछ ज्यादा असर नहीं पड़ने पाया।

उसके आस-पास स्वप्नलोक का चाहे जैसा वातावरण रहा हो, किन्तु जो लोग उसके पास बैठे थे उनको तो वह स्त्री ही दीखती थी।

वह ऊंची और सुडौल थी और उसके भव्य शरीर का अधिक-से-अधिक भाग खुला था। उसके कानों में मोती की बालियां थीं। उसका कमर से ऊपर का कपड़ा हिन्दुस्तान की जरीदार मलमल का था। उन दिनों वह ऊंचे शौक की चीज समझी जाती थी। उस समय ऐसी पोशाक की कीमत ६०० क्राउन तक थी। हीरे की जड़ाऊ ब्रोच (पिन) से उसकी कमीज सामने की ओर टंकी थी। कमीज की काट ऐसी थी कि उसके कंधे और सीना, उस समय की निर्लज्ज फैशन के अनुसार खुले हुए थे। उसका कपड़ा इतना महीन था कि इसके थान-के-थान अंगूठी के बीच से निकल जाते थे। उसकी सारी पोशाक पर चमकदार जवाहरात टंके हुए थे। उसकी भौंहें हिन्दुस्तान के काले रंग से रंगी हुई थीं। और उसकी बांहें, कुहनियां, कंधे, ठोड़ी, नाक, पलकों के ऊपर का हिस्सा, कान का नीचे का हिस्सा, हथेलियां और उंगलियों के सिरे, हलके मोहक रंग से रंगे हुए थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसके शरीर से, सुन्दर बनने का अदम्य निश्चय प्रकट होता था, उसकी एक आंख नीली और दूसरी काली थी।

ग्वाइनप्लेन और उर्सस का भी ध्यान उसी पर जमा हुआ था। उर्सस, ग्वाइनप्लेन, वीनस, फीबी और दर्शक इत्यादि सब कोई उसकी सुन्दरता की चकाचौंध से चकित हो गए थे। सिर्फ डीया उसके प्रभाव से वंचित थी, क्योंकि वह देख नहीं सकती थी।

उस स्त्री के पीछे अंधेरे में उसका पार्षद दिखाई देता था। वह था तो पूरा आदमी, लेकिन बच्चेनुमा था। उसका रंग गोरा और सुन्दर था और चेहरा गम्भीर था। उस समय बहुत ही छोटे और बहुत ही गम्भीर नौकर रखने की फैशन थी। यह पार्षद चोटी से एड़ी तक मखमल की पोशाक पहने था। और उसके सिर पर जरी की कामदार टोपी थी, जिस पर घुंघराले बालों का गुच्छा था। यह ऊंचे दर्जे की नौकरी का चिह्न था और उससे यह जाहिर होता था कि वह आदमी किसी बहुत बड़ी महिला का नौकर था।

उस स्त्री की उपस्थिति से लोगों का ध्यान चाहे जितना बंट गया हो, तो भी उस रात को 'अंधकार-संहार' का असर और भी गहरा पड़ा। संभवतः उस तेजस्विनी दर्शिका के कारण (क्योंकि कभी-कभी दर्शक भी दृश्य

"वह तो सिर्फ लोहे के हथियार से तुम्हें छूता है। बस, सबकुछ हो गया। तुम्हें जाना ही चाहिए।"

"पर कहां ?"

"उसके पीछे।"

"पीछे कहां ?"

"जहां वह चाहे, ग्वाइनप्लेन !"

"और यदि तुम न जाओ ?"

"तो तुम फांसी पर चढ़ा दिये जाओ।"

उर्सस ने फिर खिड़की के बाहर देखा और गहरी सांस लेकर कहा, "परमात्मा को धन्यवाद ! वह चला गया। वह यहां नहीं आ रहा था।"

४. सोने का सिक्का

'अन्धकार-संहार' के लिए परदा उठते ही उर्सस, होमो और ग्वाइनप्लेन मंच पर सामने आये। अपनी आदत के मुताबिक उर्सस ने दर्शकों की ओर दृष्टि डाली और उसपर सनसनी छा गई।

रईसों का दर्जा खाली नहीं था। उसके बीच में मखमल की आराम-कुरसी पर एक स्त्री बैठी थी। वह अकेली थी, परन्तु उससे पूरा दर्जा भरा हुआ मालूम होता था। कुछ व्यक्तियों के आसपास प्रकाश छिटका हुआ मालूम होता है। उस स्त्री के अन्दर डीया के समान प्रकाश था, किन्तु यह प्रकाश भिन्न प्रकार का था।

डीया का रंग पीला था, उस स्त्री का गुलाबी। डीया सांध्य प्रकाश के समान सुन्दर थी और वह अर्धरात्रि के प्रकाश आरोरा[1] के समान। डीया सुन्दर थी, यह स्त्री सुन्दरोपरि थी। उस मैली-कुचैली भीड में वह शान के साथ दमक रही थी, मानो उसमें लाल की-सी चमक हो। सब जगह उसका प्रकाश इतना जगमगा रहा था कि उसके सामने सब फीके पड़ गए थे और सबके चेहरों पर ग्रहण-सा लग गया था। उसकी चमक ने सबको फीका कर दिया था।

प्रत्येक आंख उसीकी तरफ लगी हुई थी।

भीड़ में टॉम जिम जैक भी था। दूसरों के समान वह भी उस स्त्री की

---

[1] उत्तरी ध्रुव के प्रदेशों में पांच-पांच, छः-छः महीने के रात और दिन होते हैं। महीनों तक सूर्य चमकता ही रहता है। ऐसी रातों में वायु-मण्डल सूर्य के प्रकाश से एक अत्यन्त मनोहर रंगीन परदे-जैसा चमकने लगता है। इसी को आरोरा कहते हैं।

तेजस्विता में छिप गया था।

उस स्त्री ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच रखा था, इसलिए 'अन्धकार-संहार' का शुरू-शुरू में कुछ ज्यादा असर नहीं पड़ने पाया।

उसके आस-पास स्वप्नलोक का चाहे जैसा वातावरण रहा हो, किन्तु जो लोग उसके पास बैठे थे उनको तो वह स्त्री ही दीखती थी।

वह ऊंची और सुडौल थी और उसके भव्य शरीर का अधिक-से-अधिक भाग खुला था। उसके कानों में मोती की वालियां थीं। उसका कमर से ऊपर का कपड़ा हिन्दुस्तान की जरीदार मलमल का था। उन दिनों वह ऊंचे शौक की चीज समझी जाती थी। उस समय ऐसी पोशाक की कीमत ६०० क्राउन तक थी। हीरे की जड़ाऊ ब्रोच (पिन) से उसकी कमीज सामने की ओर टंकी थी। कमीज की काट ऐसी थी कि उसके कंधे और सीना, उस समय की निर्लज्ज फैशन के अनुसार खुले हुए थे। उसका कपड़ा इतना महीन था कि इसके थान-के-थान अंगूठी के बीच से निकल जाते थे। उसकी सारी पोशाक पर चमकदार जवाहरात टंके हुए थे। उसकी भौंहें हिन्दुस्तान के काले रंग से रंगी हुई थीं। और उसकी बांहें, कुहनियां, कंधे, ठोड़ी, नाक, पलकों के ऊपर का हिस्सा, कान का नीचे का हिस्सा, हथेलियां और उंगलियों के सिरे, हलके मोहक रंग से रंगे हुए थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसके शरीर ने, सुन्दर बनने का अदम्य निश्चय प्रकट होता था, उसकी एक आंख नीली और दूसरी काली थी।

ग्वाइनप्लेन और उर्सस का भी ध्यान उसी पर जमा हुआ था। उर्सस, ग्वाइनप्लेन, वीनस, फीवी और दर्शक इत्यादि सब कोई उसकी सुन्दरता की चकाचौंध से चकित हो गए थे। सिर्फ डीया उसके प्रभाव से वंचित थी, क्योंकि वह देख नहीं सकती थी।

उस स्त्री के पीछे अंधेरे में उसका पार्षद दिखाई देता था। वह था तो पूरा आदमी, लेकिन बच्चेनुमा था। उसका रंग गोरा और सुन्दर था और चेहरा गम्भीर था। उस समय बहुत ही छोटे और बहुत ही गम्भीर नौकर रखने की फैशन थी। यह पार्षद चोटी से एड़ी तक मखमल की पोशाक पहने था। और उसके सिर पर जरी की कामदार टोपी थी, जिस पर घुंघराले बालों का गुच्छा था। यह ऊंचे दर्जे की नौकरी का चिह्न था और उससे यह जाहिर होता था कि वह आदमी किसी बहुत बड़ी महिला का नौकर था।

उस स्त्री की उपस्थिति से लोगों का ध्यान चाहे जितना बंट गया हो, तो भी उस रात को 'अंधकार-संहार' का असर और भी गहरा पड़ा। संभवतः उस तेजस्विनी दर्शिका के कारण (क्योंकि कभी-कभी दर्शक भी दृश्य

का एक अंग बन जाया करता है) उस हाल में बिजली बढ़ गई थी। ग्वाइनप्लेन की हँसी अधिक सफलता के साथ सब ओर व्याप्त हो रही थी। सारा नाटकघर आनन्दातिरेक की मस्ती से झूम रहा था और बीच-बीच में टॉम जैक का अधिकारपूर्ण अट्टहास साफ सुनाई देता था। वह अजनबी स्त्री खेल की ओर पत्थर की मूर्ति के समान अविचल भाव से देख रही थी, उसकी आंखें उसीकी ओर लगी थीं और उसके चेहरे पर ज़रा भी हँसी नहीं थी।

नाटक समाप्त हो जाने के बाद प्लेटफार्म उठा लिया गया और ग्रीन-बाक्स का परिवार भोजन के टेबल के आसपास इकट्ठा हुआ। उर्सस ने टेबल पर आमदनी का डिब्बा उलट दिया। पैसों के ढेर में से सहसा एक सोने की मुहर लुढ़क पड़ी।

उर्सस चिल्ला पड़ा, "उसकी!"

मैले-कुचैले पैसों में वह मुहर, भीड़ के अन्दर उसी स्त्री के समान ही मालूम हो रही थी।

उर्सस ने उत्साह से कहा कि "उसने अपनी जगह के लिए एक मुहर दी है।

उसी समय सराय का मालिक ग्रीनबाक्स के अन्दर आया और उसने पीछे की खिड़की से दीवार का झरोखा खोलकर इशारे से उर्सस को बुलाया और बाहर का दृश्य देखने को कहा। एक गाड़ी कलगीदार पैदल नौकरों से घिरी हुई तेजी के साथ जा रही थी। उन नौकरों के हाथों में मशालें थीं।

उर्सस ने आदर के साथ उस सोने की मुहर को अंगूठे और तर्जनी के बीच पकड़ा और उसे मास्टर निकलस को दिखाया।

उसी समय वह गाड़ी मैदान के कोने पर मुड़ी, और उर्सस ने मशालों के उजाले में देखा कि वह स्त्री सोने का मुकट पहने है और उसमें स्ट्राबेरी की आठ पंक्तियां लटक रही हैं।

यह देखते ही उसने कहा, "वह देवी से भी अधिक है। वह डचेज़ है।"

वह गाड़ी दृष्टि की ओट हो गई और उसके पहियों की आवाज भी कम होते-होते दूरी के कारण बन्द हो गई।

सरायवाला बोला, "वह डचेज़ थी।" हां, वे उसकी पदवी जानते थे। पर उसका नाम? वह उन्हें नहीं मालूम था। मास्टर निकलस गाड़ी के पास तक पहुंच गया था और उसने उसका खानदानी निशान भी देखा था और यह भी देखा था कि सब नौकर ज़री की पोशाक पहने थे। गाड़ीवान की बालों की टोपी ऐसी थी जैसी कि लार्ड-चांसलर की हुआ करती है।

पार्षद इतना बौना था कि वह दरवाजे के बाहर गाड़ी की सीढ़ी पर बैठ सकता था। इन छोटे से प्राणियों का काम अपनी मालकिनों के पीछे के कपड़े थामकर चलना था। वे उनके संदेश लाने-ले जाने का भी काम करते थे। उर्सस ने कहा, वह एक तरह से रानी है। ग्वाइनप्लेन कुछ नहीं बोला।

डीया चुपचाप सुनती रही।

सरायवाले ने कहा, "सबसे अधिक आश्चर्य की बात तुम्हें मालूम है?"

उर्सस ने पूछा "क्या?"

"मैंने उसको अपनी गाड़ी के अन्दर बैठते देखा।"

"फिर क्या?"

"वह अकेली नहीं बैठी।"

"बको मत!"

"उसके साथ एक और बैठा।"

"कौन?"

"सोचो!"

उर्सस बोला, "राजा।"

मास्टर निकल्स ने कहा, "पहली बात तो यह है कि आजकल कोई राजा है ही नहीं। इंग्लैंड में रानी का राज्य है। सोचो, गाड़ी में डचेज़ के साथ कौन बैठा होगा?"

उर्सस बोला, "कोई देवता।"

सरायवाला बोला, "टाम जिम जैक!"

ग्वाइनप्लेन जो अभीतक चुप था, अब बोला, "टॉम जिम जैक!"

सब लोग आश्चर्य से चुप थे और इस बीच सब ने डीया को मन्द आवाज में कहते हुए सुना, "क्या इस स्त्री को यहां आने से रोका नहीं जा सकता?"

५. विषपान के लक्षण

वह स्त्री फिर नहीं लौटी। उसका आगमन नाटक में नहीं हुआ, किन्तु उसका आगमन ग्वाइनप्लेन के हृदय में हुआ। ग्वाइनप्लेन कुछ व्याकुल हो उठा। उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसने अपने जीवन में पहले-ही-पहले किसी स्त्री को देखा हो।

उसने पहली ठोकर खाई। हमें उस चिंतन से सावधान हो जाना चाहिए, जोकि हम पर सवारी कर लेता है। चिन्तन में सुगंधि का सा रहस्य

और सूक्ष्मता रहती है। उसका विचार के साथ वही सम्बन्ध है, जोकि सुगंधि का गुलाब से है।

बुरा विचार ही आत्मा की हत्या है। उसीके अन्दर ज़हर है। चिन्तन आकर्षित करता है, बहलाता है, फुसलाता है, मिलाता है और तुम्हें अपने पाप का साथी बना लेता है। वह अन्तरात्मा के साथ जो छल करता है उसमें तुम्हें भी सम्मिलित कर लेता है। वह मोहित करता है और फिर तुम्हें बिगाड़ता है। चिन्तन खेल के समान है, आदमी धोखे में आकर खेलना शुरू करता है और अन्त में खुद धोखेबाज़ बन जाता है।

ग्वाइनप्लेन स्वप्न देखने लगा।

उसने पहले स्त्री कभी नहीं देखी थी। उसने पहले छाया को भीड़ की स्त्रियों में देखा और आत्मा को डीया में।

उसने वास्तविक स्त्री अब देखी।

उष्ण और सजीव चमड़ा, जिसके अन्दर ऐसा मालूम होता है कि वासनापूर्ण रक्त बह रहा है; आकृति, जिसमें संगमरमर-जैसी दृढ़ता और लहर का-सा उतार-चढ़ाव है; ऊंचा और अगम्य भाव, जिसमें आकर्षण के साथ अस्वीकृति मिली हुई है और उसका सारांशरूप आत्म-गौरव चमक रहा है; बाल, जो ज्वाला की प्रभा के रंग के हैं; वेषभूषा का छैलापन, जो कि उसके और दूसरों के दिल की विलासिता से हिलोरें लेता है; अर्धाविष्कृत नग्नता, जिससे यह अवहेलनायुक्त इच्छा प्रकट होती है कि लोग दूर से ही उसको लोलुप दृष्टि से देखें; अमिट नखरा और अगम्य मोहकता; क्षमा की झलक में सनी हुई पाप-प्रवृत्ति; विषयेन्द्रियों का आवाहन और मन की धमकी; दुहरी चिन्ता, एक तो आकांक्षा की और दूसरी भय की; उसने अभी-अभी ये सब बातें देखी हैं! उसने अभी-अभी स्त्री को देखा है!

स्त्रीत्व का रहस्य अभी-अभी उस पर प्रकट हुआ है!

और कहां? अगम ऊंचाई पर—अनन्त दूरी पर!

अरे छलिया भाग्य! दैवी तत्त्व आत्मा उसके पास थी; वह उसके हाथ में थी। वह डीया थी। किन्तु दैवी मूर्त्ति स्त्री ऊंचे स्वर्ग पर बैठी हुई उसे दीख रही थी—वह वही स्त्री थी।

डचेज़!

उर्सस ने कहा था, "देवी से भी अधिक!"

कैसा प्रभात! ऐसी सीधी ऊंचाई पर चढ़ते समय स्वप्न भी टूट जाते हैं।

क्या वह उस अज्ञात सुन्दरी के सम्बन्ध में स्वप्न देखने की मूर्खता करने-वाला था!

वह अपने मन में बहस करने लगा।

उर्संस ने उन श्रेणियों के बारे में, जो कि प्रायः राजा की बराबरी की हैं, जो कुछ कहा था वह सब उसे याद आने लगा। उस तत्त्वज्ञानी की चर्चा, जो अभी तक उसे व्यर्थ मालूम होती थी, अब उसके विचारों के लिए पथ-प्रदर्शक बन गई। हमारी स्मृति के ऊपर विस्मृति का एक हलका-सा परदा पड़ा रहता है, जिसमें से कभी-कभी अन्दर के सारे दृश्यों की झलक हमें दीख जाती है। उसकी कल्पना रईसों के भव्य संसार में दौड़ लगाने लगी, जहां पर कि उस स्त्री का निवास था और जो कि ग्वाइनप्लेन के समान मामूली लोगों की दुनिया से बहुत ऊंचा था।

पर क्या वह मामूली लोगों के समान भी था! क्या वह भांड़ नहीं था—नीच से भी नीच! वह अनुभव करने लगा कि वह समस्त अंधकार के तल में पड़ा है, उसके आस-पास दीवार खड़ी है और वहां से पड़े-पड़े उसको ऊपर—बहुत ऊपर—उस खंदक के मुंह से अत्यन्त दूरी पर, नीलाकाश और आकृतियों तथा किरणों की चकाचौंध का दृश्य, जोकि स्वर्ग है, दिखाई देता है। उस तेजस्विता के बीच डचेज़ चमक रही है।

वह उस स्त्री के बारे में एक विचित्र और अवर्णनीय उत्कंठा का अनुभव करने लगा, साथ ही उसको यह भी विश्वास था कि उसे प्राप्त करना असम्भव है। यह परस्पर विरोध का चुभनेवाला भाव उसके मन में बारबार उठता था और किसी तरह रुकता नहीं था। उसने अपने पास पहुंच के भीतर और साफ तौर से वास्तविक रूप में आत्मा को देखा, और अप्राप्य रूप में आदर्श की गहराई में—शरीर को देखा। इनमें से कोई भी विचार निश्चित स्वरूप धारण नहीं कर सका। वे विचार उसके अन्दर भाप के रूप थे, वे प्रतिक्षण अपना आकार बदलते थे और उड़ जाया करते थे। किन्तु उस भाप ने जो अन्धकार हो रहा था, वह घना था। स्वप्न में भी उसने इस बात की उम्मेद नहीं बांधी कि वह उस शिखर पर चढ़ सकेगा जहां पर कि डचेज रहती थी। यह उसका सौभाग्य था।

ऐसी कल्पनाओं की सीढ़ियों में ऐसी बिजली रहती है कि यदि हम उनपर पैर रखें तो हमारा मस्तक चक्कर खाने लगता है। स्वर्ग की ओर बढ़ने के बजाय हम पाताल में पहुंच जाते हैं। उस इच्छा के प्रकट होने से ही भय मालूम होता है।

इसके अतिरिक्त क्या उस स्त्री का पुनः दर्शन होने की भी सम्भावना थी? नहीं। क्षितिज पर तेजी से लुप्त होते हुए किसी प्रकाश पर आसक्त हो जाना पागलपन की भी सीमा के बाहर है। तारे की ओर प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखने में भी कुछ अर्थ हो सकता है। वह दुबारा दिखाई देता है, वह

वारम्वार प्रकट होता है, वह आकाश में स्थिर है। किन्तु क्या कोई बिजली की किसी एक चमक पर मुग्ध हो सकता है!

उसके अन्दर स्वप्नों का तूफान कभी उमड़ता था, कभी शांत होता था। नाटकघर की वह राजसी और तेजस्वी मूर्ति उसके व्याकुल विचारों पर प्रकाश डालकर अन्तर्धान हो गई। वह उसके बारे में सोचता था और नहीं भी सोचता था। वह दूसरी बातों की ओर मुड़ जाता था और फिर उसीकी ओर वापस आ जाता था। उसीका ध्यान उसके मस्तक में झूला करता था। उससे उसको कई रात तक नींद नहीं आई। अनिद्रा भी निद्रा के ही समान स्वप्नों से परिपूर्ण रहती है।

मस्तिष्क के भावमय विकासों का सीमावद्ध वर्णन करना प्राय: असम्भव है। शब्दों में एक असुविधा यह रहती है कि विचारों की अपेक्षा उनके अर्थ की सीमा अधिक निश्चित रहती है। सभी विचारों की सीमान्त रेखाएं अनिश्चित रहती हैं, शब्दों में यह बात नहीं रहती। आत्मा का कुछ अस्पष्ट-सा पहलू सदा शब्दों से परे रहता है। भाषण की परिधि रहती है, विचारों की नहीं रहती।

हमारी रहस्यमयी आत्मा की गहराई इतनी विस्तृत है कि ग्वाइनप्लेन के स्वप्न डीया तक नहीं पहुंच पाते थे। उसकी आत्मा के बीचों-बीच डीया का पवित्र राज्य था; उसके पास कोई भी नहीं पहुंच सकता था।

तो भी (क्योंकि मनुष्य की आत्मा ऐसे विरोधों की बनी है कि) ग्वाइनप्लेन के अन्दर युद्ध हो रहा था। क्या उसे इस युद्ध का पता था! शायद हो!

अपने हृदय के अन्तरतम में वह आकांक्षाओं के घात-प्रतिघात का अनुभव कर रहा था। हम सबमें निर्बलताएं रहती हैं। उनका पता उर्सस को पूरी तरह लग जाता, किन्तु ग्वाइनप्लेन को नहीं लगा।

उसके अन्दर दो अन्त:प्रेरणाएं—एक तो आदर्श की ओर दूसरी विषय-वासना की—आपस में लड़ रही थीं। इस तरह की लड़ाई अतल की सतह पर अन्धकार और प्रकाश के देवताओं में हुआ करती है।

बहुत समय बाद अन्धकार का देवता हार गया। एक दिन एकाएक ग्वाइनप्लेन के मन से उस अज्ञात स्त्री का ध्यान बिल्कुल जाता रहा। अकेली डीया रह गई।

यदि ग्वाइनप्लेन से कोई कहता कि कभी डीया, चाहे एक क्षण के लिए क्यों न हो, खतरे में थी, तो यह सुनकर उसको आश्चर्य होता। जिस भूत ने उन दोनों की आत्माओं के हृदयों को खतरे में डाल रखा था, वह ग़ायब हो गया।

ग्वाइनप्लेन के अन्दर सिवा हृदय के, जो कि अंगीठी के समान था और सिवा प्रेम के जो कि आग के समान था, कुछ न रहा।

इसके अलावा हम कह ही चुके हैं कि वह डचेज़ फिर लौटकर नहीं आई।

उर्सस ने सोचा कि यह सब स्वाभाविक है। सोने के सिक्केवाली स्त्री तो कभी-कभी दिखाई देती है। वह आती है, दाम चुकाती है और गायब हो जाती है। यदि वह बार-बार आये तो आनन्द असह्य हो जाय।

डीया ने उस स्त्री के बारे में कभी-कभी जिक्र नहीं किया। इससे गहरी अन्त:प्रेरणा प्रकट होती है। कभी-कभी आत्मा अदृष्ट सावधानी रखती है, जिसका कि रहस्य वह अपने सामने भी प्रकट नहीं करती। किसीके बारे में चुप रहने का मतलब है उसको बहुत दूर रखना। डर यह रहता है कि उसके बारे में बात करते ही वह कहीं पास न आ जाय। हमारी चुप बीच का दरवाज़ा बन्द कर लेने के समान है।

इसलिए यह घटना भूल में पड़ गई।

६. समस्याएं

एक दूसरा चेहरा भी गायब हो गया—टॉम जिम जैक का। सहसा टैडकास्टर सराय में भी उसका आना बन्द हो गया।

जो लोग लन्दन के ऊंचे दर्जे के फैशनेबल लोगों के हाल-चाल की जानकारी रखते थे उन्होंने उन्हीं दिनों 'साप्ताहिक समाचार' में पढ़ा कि रानी की आज्ञा से लार्ड-डेविड डिरी मोयर अपने जहाजी बेड़े के साथ हॉलैंड की ओर चले गए हैं।

उर्सस यह देखकर कि टॉम जिम जैक का आना भी बन्द हो गया, बहुत चिंतित हुआ। जिस दिन से वह उस सोने के सिक्केवाली स्त्री के साथ गाड़ी पर बैठकर गया था, उस दिन से फिर दिखाई नहीं दिया। वास्तव में समस्या यह थी कि यह टॉम जिम जैक कौन था, जो अपनी बगल में डचेज़ों को लिये फिरता था!

उर्सस को विचार-शून्य जिज्ञासा के दंड का अनुभव हो चुका था। जिज्ञासा भी जिज्ञासु के समान अनुपात में होनी चाहिए। सुनने से कान जोखिम में पड़ते हैं, देखने से आंखें खतरे में पड़ती हैं, चतुर मनुष्य न तो सुनते हैं, न देखते हैं। टॉम जिम जैक राजसी गाड़ी के अन्दर बैठा था। सरायवाले ने उसको बैठते देखा था। एक मल्लाह का किसी राजकुमारी के साथ बैठना इतना विचित्र था कि उर्सस भी सोच में पड़ गया। ऊंचे दर्जे के प्राणियों की सनकें नीचे दर्जेवालों के लिए पवित्र होनी

जाहिए। यदि कोई बात असाधारण मालूम हो तो नीचे दर्जेवालों को सांप के समान अपने बिलों में चुपचाप जा बैठना चाहिए। निश्चेष्टता शक्ति है। यदि तुम्हें अन्धे होने का सौभाग्य नहीं है तो अपनी आंखें बन्द कर लो। यदि सौभाग्य से तुम बहरे नहीं हो तो कान मूंद लो। यदि गूंगे होने का गौरव तुम्हें नहीं है तो अपनी जीभ पर ताला लगा लो। बड़े जो चाहते हैं, वह करते हैं। छोटे जो कुछ बनता है, वह करते हैं। जो अज्ञेय हैं उनको अपने मार्ग से जाने दो, उनकी ओर ध्यान मत दो। पुराणों के बारे में तर्क-वितर्क मत करो। बाहरी दिखावट के विषय में प्रश्न मत करो। मूर्तियों के प्रति गम्भीर आदरभाव धारण करो। ऊपर के क्षेत्रों में जो कुछ घटा-बढ़ी हो रही हो और उसका मतलब तुम्हारी समझ में न आता हो तो उनके बारे में बात भी मत करो। उनके सम्बन्ध में तुम्हें जोकुछ दिखाई देता है वह तुम्हारी आंखों का मिथ्याभास है। महापुरुषों के बारे में तटस्थ रहना ही बुद्धिमत्ता है। हिलो मत और तुम सुरक्षित हो। मरने का बहाना करो और वे तुम्हें नहीं मारेंगे। कीड़े की चतुराई इसीमें है। उर्सस उसीका अनुसरण कर रहा था।

तो भी उर्सस में जो कला-रसिकता का भाव था, वह टॉम जिम जैक की अनुपस्थिति में उसे व्यग्र किये बिना नहीं रहता था। उसे कुछ निराशा मालूम हुई। उसने अपने भाव होमो को कह सुनाए। होमो की निर्णय-बुद्धि पर उसका पूरा विश्वास था। उसने उसके कान में चुपके से कहा, 'चूंकि अब टॉम जिम जैक नहीं आता है, इसलिए मुझे मनुष्य की हैसियत से शून्यता मालूम होती है, और कवि की हैसियत से नीरसता।" अपने हृदय की बात मित्र के सामने खोलकर कह देने से उर्सस का जी हलका हो गया।

किन्तु वह ग्वाइनप्लेन के सामने चुप था और ग्वाइनप्लेन ने भी टॉम जिम जैक के बारे में कोई बात नहीं की। कारण यह था कि टॉम जिम जैक की उपस्थिति या अनुपस्थिति का ग्वाइनप्लेन पर कोई असर नहीं पड़ता था, क्योंकि वह डीया के ध्यान में मग्न था।

ग्वाइनप्लेन पर विस्मृति का और भी गहरा परदा पड़ता चला गया। डीया की बात तो यह थी कि उसको किसी भी विपत्ति की जरा-सी भी आशंका नहीं थी। साथ ही अब अनोखा के विरुद्ध बुराइयां और शिकायतें नहीं सुनाई देती थीं। खेल तमाशेवाले, भांड-पादरी सब चुप थे। बाहर कोई शोर-गुल नहीं था। उनकी विजय पूर्ण रूप से अबाधित थी। परमात्मा ऐसी नितान्त शांति का भी अवसर लाता है। ग्वाइनप्लेन और डीया का समुज्ज्वल सुख इस समय बिल्कुल छाया-रहित था। बढ़ते-बढ़ते वह सुख उस अवस्था तक पहुंच गया था जहां अब आगे बढ़ने की गुंजाइश नहीं थी। इस

अवस्था का प्रदर्शक एक शब्द है—निर्वाण। सुख में भी समुद्र के समान ज्वार-भाटा आता रहता है। नितान्त सुखी के लिए सबसे बुरी बात तो यह है कि वे ऊंची लहरें पीछे हटने लगती हैं।

अगम होने के दो उपाय हैं। या तो बहुत ऊंचे होना या बहुत नीचे होना। जितना अच्छा पहला है, उतना ही अच्छा दूसरा भी है। गरुड़ ऊंचाई पर होने के कारण तीर से बच जाता है। निस्संशय उसी प्रकार चींटी छोटी होने के कारण दबने से बच जाती है। तुच्छता की सुरक्षितता, यदि पृथ्वी पर कहीं थी, तो ग्वाइनप्लेन और डीया को प्राप्त थी और वह इतनी पूर्णता को कभी नहीं पहुंची थी। वे दिन-पर-दिन एक दूसरे की भावुक भावनाओं में अधिकाधिक संलग्न होते जा रहे थे। दो हृदय एक-दूसरे के प्रेम में भीगे रहते हैं, जिसके कारण उनमें ताज़गी बनी रहती है और जो दो प्राणी जीवन के प्रातःकाल से एक-दूसरे को प्यार करते हैं उनमें संध्या-काल तक वही ताज़गी और अमिट मेल कायम रहता है। हृदय का भी एक अमर लेप रहता है। ऐसे हृदय के लिए प्रातःकाल और संध्याकाल समान रहता है। ऐसे जीवन का सौभाग्य ग्वाइनप्लेन और डीया को प्राप्त था और उन दोनों पर जवानी छा रही थी।

'अंधकार-संहार' के खेल में भीड़ पहले के ही समान आया करती थी। अनोखा की सफलता का अन्त नहीं था। हरेक उसको देखने के लिए दौड़ा जाता था। साउथवर्क ही नहीं, लंदन के दूसरे हिस्सों से भी लोग आने लगे। मामूली दर्शकों के साथ आम जनता भी शामिल होने लगी, अब वहां केवल मल्लाह और गाड़ीवान ही नहीं पहुंचते थे, अपितु मास्टर निकल्स की, जोकि सब तरह के लोगों से वाकिफ था, राय थी कि अब दर्शकों में भद्रपुरुष और लार्ड भी वेश बदलकर आया करते हैं। उच्च श्रेणी के मनुष्यों को वेश बदलने में मज़ा आता है, और उस समय इसका फैशन था। रईसों के इस प्रकार मामूली लोगों में आकर मिलने से यह स्पष्ट था कि ग्वाइनप्लेन की लोकप्रियता लंदन में बढ़ रही थी। वास्तव में ग्वाइनप्लेन का नाम बड़ी दुनिया में पहुंच रहा था। सच तो यह था कि जहां देखो, वहां अनोखे की ही चर्चा थी। रईसों के मोहाक-क्लब में भी उसकी चर्चा होने लगी।

ग्रीन-बाक्सवालों को इसका ज़रा भी पता नहीं था। वे अपने सुख में मग्न थे। प्रतिदिन संध्या को नाटक करते समय ग्वाइनप्लेन के सिर पर हाथ रखते ही डीया मस्त हो जाती थी। प्रेम में आदत के समान कोई दूसरी चीज़ नहीं होती। सारा जीवन आदत के अंदर समाया रहता है। प्रतिदिन संध्या को तारों का चमकना विश्व की आदत है। सृष्टि प्रेयसी

है और सूर्य प्रेमी है। आकाश संसार का तेजोमय आधार-स्तम्भ है। प्रतिदिन रात से ढकी हुई पृथ्वी एक क्षण के लिए उदित होते हुए सूर्य के सहारे टिक जाती है। जब अंधी डीया ग्वाइनप्लेन के सिर पर हाथ रखती थी तब उसके अन्दर वैसी ही गर्मी और आशा का संचार होने लगता था। अंधेरे में एक-दूसरे की पूजा करना, नितान्त नीरवता के साथ प्यार करना, इस प्रकार की अन्तर्हित अवस्था को कौन नहीं पसंद करेगा !

एक दिन रात को ग्वाइनप्लेन अपने अन्दर उस सुख-प्रवाह का अनुभव करते हुए, जो कि सुगन्धि के मद के समान एक प्रकार की मस्त सुस्ती ला देता है, अपनी रोज़ की आदत के अनुसार नाटक समाप्त हो जाने के बाद ग्रीन-बाक्स से सौ कदम की दूरी पर टहल रहा था। हम अपनी आत्माओं में उठती हुई भावनाओं के ऊंचे ज्वार-भाटे के समय, कभी-कभी यह अनुभव करने लगते हैं कि हम अपने छलकते हुए हृदय के भावों का आवेग प्रकट कर दें। रात अंधेरी थी, पर साफ थी। तारे चमक रहे थे। मेले की सारी जमीन सूनी पड़ी थी। वहां के सभी डेरों पर नींद और विस्मृति छाई हुई थी।

केवल एक प्रकाश जल रहा था। वह टैडकास्टर सराय का था, जिसका दरवाज़ा ग्वाइनप्लेन के लौटने के लिए खुला रखा गया था।

साउथवर्क के पांचों गिरजाघरों से आधी रात के घंटे बज रहे थे। ग्वाइनप्लेन डीया का स्वप्न देख रहा था। उसके अलावा वह किसका स्वप्न देखे ! किन्तु उस रात को विचित्र व्याकुलता और मुग्धता का, जोकि साथ ही पीड़ा भी थी, अनुभव करते हुए वह डीया का ध्यान कर रहा था, जैसे पुरुष स्त्री का ध्यान किया करता है। अनोखा ने इसके लिए अपनेको दोष दिया। यह तो उसके प्रति अनादर था। पति का आक्रमणकारी भाव उसके अन्दर धीरे-धीरे अस्पष्ट रूप से उदित हो रहा था। मधुर और ढीठ अधीरता ! वह उस अदृष्ट सीमा को पार कर रहा था, जिसके एक ओर कुमारी है और दूसरी ओर पत्नी है। वह सचित-भाव ने अपने मन से पूछ रहा था। एक प्रकार की सलज्जता उसके मन पर छा रही थी। पुराने जमाने का ग्वाइनप्लेन धीरे-धीरे बदलते-बदलते अनजाने कुछ विचित्र स्वरूप में पहुंच गया था। उसकी पहले की सलज्जता धुंधली और अस्थिर हो चली था। हमारा एक कान प्रकाश का होता है जिसमें आत्मा बोलती है; और एक कान अंधकार का होता है जिसमें अन्तःप्रवृत्ति बोलती है। इस पिछले कान में विचित्र प्रकार की आवाजें अपने-अपने प्रस्ताव कर रही थीं। प्रेम का स्वप्न देखने वाला युवक चाहे जितना पवित्र अन्तःकरणवाला क्यों न हो, अन्त में शरीर की एक जड़ता उसके और स्वप्न के बीच में आ ही जाती है।

उसकी सद्भावनाओं की पारदर्शकता धुंधली हो जाती है। प्रकृति द्वारा रोपी हुई अस्फुट आकांक्षा उसकी अन्तरात्मा में प्रवेश करने लगती है। ग्वाइनप्लेन शरीर का वह अवर्णनीय आकर्षण अनुभव करने लगा। प्रत्येक मोह में प्रचुरता हो जाती है और डीया में शरीर का अंश बहुत कम था। इस ज्वर में, जो कि उसे मालूम था कि अस्वस्थता का चिह्न है, उसने डीया को अधिक पार्थिव स्वरूप दे दिया और उसकी दैवी आकृति में स्त्री का सौंदर्य देखने लगा। ऐ स्त्री, जिसे हम चाहते हैं वह तू है!

प्रेम दिव्यता की अत्यधिकता पसंद नहीं करता। उसे तो उद्वेगपूर्ण त्वचा, व्याकुल जीवन, खुले हुए बाल, अमिट और विद्युन्मय चुंबन और वासनापूर्ण आलिंगन चाहिए। प्रेम में अत्यधिक दिव्यता, आग पर अत्यधिक ईंधन के समान है। उससे ज्वाला बुझने लगती है। ग्वाइनप्लेन मधुर स्वप्न देखने लगा। डीया उसके बाहुपाश में बंधी है—डीया बाहुपाश में! उसने अपने हृदय के भीतर—प्रकृति को स्त्री के लिए चिल्लाते हुए सुना। अपनी आत्मा की गहराई में वह डीया की पवित्र मूर्त्ति का निर्माण करने लगा—वह मूर्त्ति जिसमें दिव्यता अधिक थी और पार्थिवता बहुत कम। पंख स्त्री के स्तनों की बराबरी नहीं कर सकते। कौमार्य केवल मातृत्व की आशा है। तो भी ग्वाइनप्लेन के स्वप्नों में डीया अभी तक शरीर से परे ऊंचे सिंहासन पर विराज रही थी। अब वह विचारों में कामुकता की डोरी से, जिससे कि प्रत्येक बालिका इस पृथ्वी के साथ बंधी रहती है, नीचे खींचने का विकट प्रयत्न करने लगा। एक भी पक्षी बंधन-मुक्त नहीं है। दूसरों के समान डीया भी इस नियम में बंधी थी। उसने डीया का स्त्री के रूप में चित्र खींचना प्रारंभ किया। उसने तो यहांतक सोच डाला था कि उसका स्वरूप अपूर्व है; उसमें केवल आनन्दातिरेक ही नहीं है, किन्तु कामुकता भी है। उसने मानसिक पट में देखा, डीया तकिये पर सिर रखे लेटी है। इस काल्पनिक अधर्माचार से वह लज्जित हो गया। यह तो भ्रष्टता के प्रयत्न के समान था। उसने इस आक्रमण का अवरोध किया। वह उससे दूर हो गया, परंतु वह आक्रमण फिर प्रारंभ हुआ। वह अनुभव करने लगा कि मानो वह पाप कर रहा हो। उसके लिए तो डीया मेघों से घिरी हुई थी। उन मेघों को हटाते हुए वह कांप उठा, मानो डीया का आवरण हटा रहा हो। वसंत ऋतु का समय था। वह एकांत के कारण लड़खड़ाते हुए इधर-उधर अनिश्चित रूप से भटकने लगा। कोई साथ न रहने से घूमने की उत्तेजना हुआ करती है। उसके विचार कहां थे, यह अपने लिए भी स्वीकार करने की हिम्मत उसमें नहीं थी। स्वर्ग में? नहीं, शय्या में। नक्षत्र उसीकी ओर देख रहे थे।

प्रेमासक्त, या यों कहें कि जिस पर प्रेम का भूत सवार हो, उसका जिक्र क्यों ? शैतान की सवारी तो कहीं-कहीं सुनी जाती है, वह अपवाद-स्वरूप है; परंतु स्त्री की सवारी तो सब जगह है, वह तो नियम है। प्रत्येक मनुष्य को अपनेपन का यह निर्वासन सहना पड़ता है। सुंदरी स्त्री कैसी जादूगरनी रहती है ! प्रेम का सच्चा नाम कैद है।

पुरुष स्त्री की आत्मा का कैदी हो जाता है, उसकी देह का भी, और कभी-कभी तो आत्मा का कम, किन्तु देह का अधिक। आत्मा सच्ची प्रीति है और देह स्वामिनी है।

हम शैतान को दोष देते हैं। उसने ईव को मोह में नहीं डाला। ईव ने ही उसको मोहित किया। स्त्री ने प्रारंभ किया। धर्म चुपचाप जा रहा था। उसने स्त्री को देखा और वह शैतान बन गया।

वह तो सतह का भयंकर प्रेम था, जो कि ग्वाइनप्लेन को व्याकुल कर रहा था और उसपर अधिकार जमाए था। जिस क्षण पुरुष स्त्री की नग्नता का लोभी हो जाता है वह क्षण भयंकर रहता है। प्रेम के सौंदर्य के नीचे कितनी काली चीजें छिपी हुई हैं !

उसके अंदर कोई वस्तु डीया को जोर से पुकार रही थी, कुमारी डीया को--मनुष्य की अर्धांगिनी डीया को--अनावृत-शरीरा डीया को। वह पुकार उसके अंदर के देवता को प्रायः भगाये दे रही थी। यह वह गूढ़ संकट है, जिसमें होकर सभी प्रेमियों को जाना पड़ता है और जिसमें आदर्श विपत्ति में पड़ जाता है। इसीमें सृष्टि का भविष्य छिपा है। स्वर्गीय भ्रष्टता का क्षण ! डीया पर ग्वाइनप्लेन का प्रेम विवाह में परिणत हो रहा था। कुंवारी प्रीति तो परिवर्तनशील है। वह क्षण आ गया था। ग्वाइनप्लेन स्त्री का लोभी हो रहा था।

वह एक स्त्री चाहता था !

स्त्री--कैसा अतल !

सौभाग्य से डीया के अलावा कोई दूसरी स्त्री नहीं थी। वही एक थी जिसको वह चाहता था, वही एक थी जो उसे चाह सकती थी।

ग्वाइनप्लेन उस विचित्र और प्रबल विकंप का अनुभव करने लगा जो कि अनन्त का सजीव अधिकार है। इसके अलावा वसंत की भी उत्तेजना थी। तारापूर्ण अंधकार की अज्ञात सुगंधियों ने उसे मस्त कर रखा था। वह आह्लाद के कारण, उन्मत्त के समान घूम रहा था। उठते हुए नवीन रसों की सुगंधित लहरें, अंधकार में छिटकनेवाला प्रकाश, छिपे हुए छोटे-छोटे घोंसलों की चुहल, सरिताओं और पत्तियों का मधुर कलरव, समस्त सृष्टि में निकलनेवाले मृदुल उच्छ्वास, वसंत की ताजगी, गर्मी और गूढ़

जागृति है। ये सब धीमे-धीमे स्वर में कामदेव के उद्दीपक प्रस्तावों का विस्तार है, अन्त में इस उन्मत्त उत्तेजना के उत्तर में आत्मा तुतलाने लगती है। आदर्श को यह पता नहीं रहता कि वह क्या कहता है।

कोई ग्वाइनप्लेन को इस तरह घूमते हुए देखता तो कह देता कि "देखो, नशे में मस्त है।"

वह अपने हृदय के, वसंत के और रात के भार से प्रायः लड़खड़ा रहा था।

उस मैदान का एकान्त इतना शांतिपूर्ण था कि कभी-कभी वह ज़ोर से बोलने लगता था। इस ख़याल से कि कोई सुननेवाला नहीं है, जोर से बोलने को जी चाहता है।

वह धीरे-धीरे चल रहा था, उसका सिर झुका हुआ था, हाथ पीछे थे, बायां हाथ दाहिने में था और उंगलियां खुली थीं।

सहसा उसे अनुभव हुआ कि उंगलियों में कोई चीज़ आ गई है।

वह उसी समय घूमा। उसके हाथ में कागज था और सामने एक मनुष्य खड़ा था।

उसी मनुष्य ने पीछे से बिल्ली के समान चुपचाप आकर उसकी उंगलियों वह कागज़ रख दिया था।

यह पत्र था।

तारों के प्रकाश में वह मनुष्य बहुत-कुछ साफ-साफ दीखता था। वह छोटा, हृष्ट-पुष्ट, जवान, पढ़ा-लिखा और लाल वर्दी पहने था। उसके सिर पर एक सिंदूरी रंग की टोपी थी, जिसपर नौकर की निशानी के तौर पर ज़री का गोटा लगा था। गोटे पर कलगी थी। स्वप्न में दीखनेवाली काली आकृति के समान वह ग्वाइनप्लेन के सामने स्थिर खड़ा था।

ग्वाइनप्लेन ने पहचान लिया यह डचेज़ का अनुचर है।

ग्वाइनप्लेन के मुँह से आश्चर्य का उद्गार निकल भी नहीं पाया था कि एकदम बच्चे और स्त्री की सी पतली आवाज़ सुनी—"कल इसी समय लंदन ब्रिज (पुल) के कोने पर आना। तुम्हें ले जाने के लिए वहां पर मैं मिलूंगा...।"

ग्वाइनप्लेन ने पूछा, "कहां जाना होगा?"

"जहां ज़रूरत है।"

ग्वाइनप्लेन ने अपने हाथ की चिट्ठी पर दृष्टि डाली।

जब उसने निगाह उठाई तो वह मनुष्य चला गया था।

उसने एक धुंधली-सी आकृति को तेज़ी के साथ दूरी पर गायब होते

हुए देखा। वह बौना नौकर था। वह सड़क के कोने पर मुड़ा और फिर शांति छा गई।

ग्वाइनप्लेन ने पत्र को आंखों के पास उठाया, मानो पढ़ने के लिए, परन्तु उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह नहीं पढ़ सकता, दो कारणों से, एक तो यह कि उसपर मुहर लगी थी और दूसरे यह कि अँधेरा गहरा था।

कुछ मिनट बाद उसे याद आई कि सराय में लैम्प जल रहा है। वह कुछ कदम आगे बढ़ा, परन्तु दूसरी ही ओर, मानो उसे पता नहीं कि वह कहां जा रहा है। अन्त में उसने निश्चय कर लिया। वह चला नहीं, दौड़ा और पहुंचकर उजाले में खड़ा हुआ, जोकि अधखुले दरवाजे में से आ रहा था। उसने फिर बंद पत्र को गौर से देखा। मुहर पर कोई चिह्न नहीं था, लिफाफे पर लिखा था, "ग्वाइनप्लेन को"। उसने मुहर तोड़ी लिफाफा फाड़ा, और उजाले में पढ़ा—

"तुम वीभत्स हो, मैं सुन्दर हूं! तुम नट हो, मैं डचेज़ हूं! मैं श्रेष्ठतम हूं, तुम नीचातिनीच हो! मैं तुम्हें चाहती हूं! मैं तुम्हें प्यार करती हूं! आओ!"

: ४ :

यातनागार

१. सन्त ग्वाइनप्लेन का मोह

अग्नि की एक चिनगारी कठिनाई से अंधकार का भेदन कर पाती है दूसरी ज्वालामुखी को प्रज्वलित कर देती है।

कुछ चिनगारियां विशाल होती हैं।

ग्वाइनप्लेन ने वह पत्र पढ़ा और फिर दुबारा पढ़ा। हां, साफ तो लिखा था, "मैं तुम्हें प्यार करती हूं!"

उसके अंतःकरण में भयों का उत्पात हो रहा था।

पहला भय तो यह था कि उसको विश्वास होने लगा कि वह पागल है।

वह पागल था, इसमें सन्देह नहीं। उसने अभी ऐसी वस्तु देखी थी, जो कि थी ही नहीं। रात को एक भूत आया और ग्वाइनप्लेन की ठठोली करके उसे पागल बना भाग गया।

ये अंधेरे की शैतानियां हैं।

दूसरा भय यह था कि वह जानता था कि उसके होश-हवास दुरुस्त हैं।

भूत! कभी नहीं। यह कैसे हो सकता है! क्या उसके हाथ में चिट्ठी नहीं थी? क्या उसने लिफाफा, मुहर, कागज और मजमून नहीं देखा? क्या उसे मालूम नहीं था कि उसे किसने भेजा था? यह सब स्पष्ट था। किसीने कलम-दवात लेकर लिखा। किसीने बत्ती जलाकर मुहर लगाई। क्या उसका नाम पत्र पर नहीं लिखा था—"ग्वाइनप्लेन को?" कागज सुगन्धित था। साफ तो है।

ग्वाइनप्लेन उस छोटे-से आदमी को जानता था। वह पार्षद था। उसकी वर्दी चमक रही थी। उसने कल उसी समय लन्दन-ब्रिज के कोने पर मिलने का स्थान भी बताया था।

क्या लन्दन-ब्रिज भी भ्रम था ?

नहीं-नहीं, सब साफ है। कोई भ्रम नहीं था। सब वास्तविकता थी। ग्वाइनप्लेन की बुद्धि ठीक-ठिकाने पर थी। वह न भूत था, न कल्पना थी, न भ्रम था, जोकि उसके सिर पर चक्कर लगाकर गायब हो गया। वे सब घटनाएं वास्तव में हुई। नहीं, ग्वाइनप्लेन पागल नहीं था, न स्वप्न देख रहा था। उसने फिर उस पत्र को पढ़ा।

अच्छा हां ! किन्तु फिर ? यह 'फिर' भयंकर थी।

एक स्त्री उसे चाहती है ! एक स्त्री जिसने उसका चेहरा देखा है ! एक स्त्री जो अन्धी नहीं है ! और यह स्त्री कैसी है ? कुरूप ? नहीं, सुन्दरी। भिखारिन ? नहीं डचेज़।

क्या ! वह स्त्री ! वह राजरानी, वह आलोक, वह उज्ज्वल बाक्स-वाली महिला, वह अन्धकार का प्रकाश ! वही ! हां वही !

उसके शरीर के प्रत्येक अंग में चिनगारियां फूटने लगीं। वही विचित्र और अज्ञात स्त्री, जिसने पहले उसके मन को इतना व्याकुल किया था ! पहले उस स्त्री के बारे में उसके जो तुमुल भाव थे वे लौट आये। इस समय वे बुरी आग से तपे हुए थे। विस्मृति केवल मिटे हुए अक्षर हैं। सहसा एक घटना होती है, और जो कुछ मिट गया था, वह सूनी स्मृति में इस तरह चमकने लगता है कि हमें देखकर आश्चर्य होता है।

ग्वाइनप्लेन ने सोचा था कि उसने वह चित्र अपनी स्मृति में से निकाल दिया है और अब उसे मालूम हुआ कि वह अभी तक वहीं पर है।

ग्वाइनप्लेन के बिना जाने उस आकृति की रेखाएं चिन्तन के कारण खूब गहरी हो गई थीं। और अब तो एक और बुराई हो गई। वह विचार-शृंखला, जो कि अब अटूट हो चुकी थी, फिर से जारी हो गई। क्या वह मुझे चाहती है ? क्या राजरानी अपने सिंहासन से उतरेगी, मूर्ति अपने मन्दिर से, स्टेच्यु अपनी कुर्सी से, देवता आकाश से ? क्या असम्भव की तली से इस कल्पनातीत का उदय होगा ! यह आकाश की देवता ! यह उद्योत ! यह रत्नालंकृता जलदेवी ! यह गर्वीली और अप्राप्य सुन्दरी, अपने समुज्ज्वल सिंहासन पर से उतरकर ग्वाइनप्लेन के सामने झुक रही थी। क्या वह अपने ऊषा के रथ को ग्वाइनप्लेन के सामने रोककर कह रही है, "आओ !" क्या सुमेरु के शिखरवाले को अपने सामने झुकते देखने का भयकर गौरव ग्वाइनप्लेन को प्राप्त है ! यह अप्रतिम स्त्री स्वयं प्रेम का प्रस्ताव करती है, आत्मदान करती है, आत्म समर्पण करती है। आश्चर्य ! महान् आश्चर्य ! ग्वाइनप्लेन पर केवल प्यार ही नहीं है, उसकी चाह भी है। उसका स्वीकार ही नहीं हुआ है, वरण भी हुआ है।

क्या! इस स्त्री के मुक्त ऐश्वर्य से परिपूर्ण राज-प्रासाद हैं, वह राज-कुमारों से विवाह कर सकती है, सरदार उसका पद-चुम्बन करते हैं, वह सुन्दर, आकर्षक और शानदार मनुष्यों से विवाह कर सकती है, देवों से विवाह कर सकती है, पर उसने किसे पसन्द किया! दैत्य को! एक ओर राज कुमार, सरदार, गौरव, सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य था और दूसरी ओर एक नट था। नट की विजय हुई। इस स्त्री के हृदय में न जाने किस तरह की तराजू थी! वह अपना प्रेम किस बांट से तौलती थी! संसार उलट-पुलट हो गया। आकाश में कीड़े रेंगने लगे, तारे जमीन पर बिखरे पड़े हैं।

प्रकाश का टूटा हुआ खंडहर पड़े हुए ग्वाइनप्लेन के लिए गौरव-मंदिर बन गया। "तुम वीभत्स हो! मैं तुम्हें प्यार करती हूं!" इन शब्दों से ग्वाइन-प्लेन का गर्व पुलकित हो उठा। गर्व समस्त वीरों का कमज़ोर स्थान है। वीभत्स की हैसियत से ग्वाइनप्लेन ने इसमें अपनी सराहना समझी। कुरू-पता के कारण उसपर प्यार हो रहा था तो कामदेव के समान वह भी एक अलौकिक वस्तु था। वह अपनेको मानवोपरि समझने लगा। ऐसा दैत्य कि जो देवों की श्रेणी का हो। कैसा भयंकर विभ्रम!

अब, यह स्त्री कौन है? वह उसके बारे में क्या जानता है? सब कुछ और कुछ भी नहीं। वह जानता है कि वह डचेज़ है। वह यह भी जानता है कि वह सुन्दर और धनवान है, और उसके पास वर्दियां, पार्षद, नौकर-चाकर और सिपाही हैं, जो जलती मशालें लेकर उसके मुकुटयुक्त रथ के साथ-साथ दौड़ते चलते हैं। वह यह भी जानता था कि वह स्त्री उसे प्यार करती है। कम-से-कम वह कहती तो यही है। इसके अलावा उसे और कुछ मालूम नहीं था। उसे उसकी पदवी मालूम थी, पर नाम नहीं मालूम था। वह विवाहिता थी अथवा विधवा या कुमारी? क्या वह स्वतन्त्र थी? उसका कुल-शील कैसा है? उसके आसपास जाल, गड्ढे और खतरे तो नहीं छिपे हैं? उसे कुछ भी मालूम नहीं था; पर सन्देह जरूर हो गया था कि इस चमक के आसपास अन्धकार की खाई अवश्य होगी। पर क्या उसे निश्चय था? नहीं। क्या वह कल्पना भी कर सकता था? बिल्कुल नहीं। इस पत्र के पीछे लिखा क्या था? उसके सामने एक दरवाज़ा खुलता था तो एक बन्द होता था। अजीब परेशानी थी!

विश्वासघाती अवसर ने अपना जाल इतने अच्छे ढंग से कभी नहीं फैलाया था और लुभाने का इतना अच्छा अवसर उसे कभी नहीं मिला था। वसन्त ने उत्तेजित होकर और जबकि सभी सृष्टि में जोश उमड़ रहा था, ग्वाइनप्लेन विषयोपभोग का स्वप्न देखने के लिए चंचल हो रहा था।

ठीक उसी समय उसके पास प्रस्ताव पहुंचा और उसकी चकित आंखों

के सामने उस अप्सरा की खुली हुई छाती दीखने लगी।

यदि चैत्र का महीना न हो तो आदमी अधिक सच्चरित्र बन जाय! पुष्पों से लदे हुए वृक्ष उसके पाप के सहायक बन जाते हैं। प्रेम चोर है और वसन्त उसका साथी!

ग्वाइनप्लेन डांवाडोल हो गया।

पाप के पहले बुराई का धुआं उठने लगता है, जिसमें अन्तरात्मा सांस नहीं ले सकती। नरक की बीभत्सता लोभ के रूप में सदाचार पर सवार हो जाती है। खुले हुए नरक में से एक ऐसी वायु आती है, जिसमें बलवान तो सावधान हो जाता है और निर्बल को चक्कर आ जाता है। ग्वाइनप्लेन भी उसके गूढ़ आक्रमण का कष्ट भोग रहा था।

उसके सामने चंचल और साथ ही दृढ़ संकल्प-विकल्प चक्कर लगा रहे थे। पाप बार-बार और हठपूर्वक उसके सामने आकर अपना स्वरूप दिखा रहा था। कल आधी रात को! लंदन-ब्रिज! पार्षद! क्या वह जायेगा? शरीर ने कहा, 'हां'। आत्मा ने कहा, 'नहीं'।

तो भी, हम यहां बतला देना चाहते हैं, और प्रारम्भ में यह बात विचित्र मालूम होगी कि उसने अपने लिए यह प्रश्न साफ-साफ नहीं रखा कि 'मैं जाऊं?' घृणित कार्य तेज़ शराब के समान होते हैं, तुम उन्हें एकदम से नहीं निगल सकते। तुम पहले प्याला भरकर सामने रखोगे फिर थोड़ी देर बाद उसकी ओर देखोगे। उसकी पहली बूंद में भी एक तरह का विचित्र मज़ा रहता है। एक बात निश्चित थी, यह कि वह अनुभव कर रहा था कि कोई पीछे से उसको अदृष्ट की ओर धकेल रहा था। और वह कांप उठा। उसने आंखें मूंद लीं। उसने अपनेको यह समझाने का बहुत प्रयत्न किया कि वह घटना हुई ही नहीं थी; उसने विश्वास करने की भी कोशिश की कि उसका मस्तिष्क ठिकाने पर नहीं है। उसके लिए यह सबसे अच्छा तरीका था। वह सबसे अधिक बुद्धिमानी का जो काम कर सकता था वह यही था कि वह विश्वास करे कि वह पागल है।

नाशकारी ज्वर! प्रत्येक मनुष्य अदृष्ट के सामने घबराकर दुःखदायी धड़कन का अनुभव किया करता है। जो सावधान है, वह अन्तरात्मा पर होनेवाले भाग्य के आघातों के शोक-पूर्ण धमाकों की प्रतिध्वनियां सचिन्त भाव से सुनता रहता है।

शोक! ग्वाइनप्लेन ने अपने से प्रश्न पूछने शुरू किये। जहां कर्तव्य स्पष्ट है, वहां प्रश्न पूछना तो हार खाना है।

एक-दूसरे के प्रतिकूल हजारों विचार, ग्वाइनप्लेन के मस्तिष्क में उमड़ पड़े। कभी वे एक-एक करके आते थे, और कभी-कभी एक साथ बहुत-से।

फिर एकाएक शान्ति हो जाती थी, और वह सिर पर हाथ रख लेता था और उदासी-भरी तन्मयता से देखता था, मानो रात को प्रकृति का दृश्य देख रहा हो।

एकाएक उसे मालूम हुआ कि उसकी विचार-क्रिया बन्द हो गई है। उसकी चिन्तना नितान्त अन्धकार की सीमा तक पहुंच गई थी, जहां पर कि सब वस्तुओं का लोप हो जाता है।

उसे याद आई कि वह सराय के बाहर ही है। उस समय रात के दो बजे होंगे।

उसने उस पत्र को अपनी बगल की जेब में रखा; किन्तु यह सोचकर कि वह हृदय से लगा हुआ है, उसने उसे बाहर निकाल लिया और तोड़-मोड़कर अपने मोजे की जेब में रख लिया। अब वह सराय की ओर बढ़ा और चुपचाप अन्दर घुस गया। गोविकम उसका रास्ता देखता वहीं मेज पर सो गया था। वह वैसा ही सोता रहा। ग्वाइनप्लेन ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। लैम्प से एक मोमबत्ती जलाई, सिटकनी लगा दी, ताले में चाबी घुमाई और बहुत देरी से घर लौटनेवाला आदमी जितनी सावधानी रखता है वह सब करके ग्रीनबाक्स की सीढ़ियां चढ़कर वह चुपचाप अपने सोने की जगह पर पहुंच गया। उसने उर्सस की ओर देखा। वह सो रहा था। उसने मोमबत्ती बुझा दी, किन्तु सोया नहीं।

इस तरह एक घंटा बीत गया। वह तकिये पर सिर रखकर लेट गया, आंखें मूद लीं। पर नींद कहां! विकारों का जो तूफान उसपर उमड़ रहा था, वह एक क्षण भी मन्द नहीं हुआ। रात जब मनुष्य के प्रति क्रूरता दिखाती है तो उसे नींद नहीं आने देती। ग्वाइनप्लेन को बहुत कष्ट हो रहा था। जीवन में यह पहला समय था कि वह अपने-आपसे असन्तुष्ट हो रहा था। हृदय की पीड़ा सन्तुष्ट गर्व के साथ मिली हुई थी। वह क्या करे! अन्त में इसी उधेड़-बुन में दिन भी निकल आया। उसने उर्सस को उठते हुए सुना, किन्तु अपनी आंखें नहीं खोलीं। तो भी उसके लिए शांति नहीं थी। वह पत्र उसके मन की आंखों के सामने खुला पड़ा था। उसका एक-एक शब्द उसके सामने ताण्डव नृत्य कर रहा था।

यातना की पराकाष्ठा हो रही थी। आंखें बन्द किये हुए उसने एक मधुर आवाज सुनी, "तुम सो रहे हो, ग्वाइनप्लेन?" उसने चौंककर अपनी आंखें खोलीं और वह उठ बैठा। आधे खुले हुए दरवाज़े के बीच में डीया खड़ी थी। उसकी आंखों में और होठों पर अमिट मुस्कराहट थी। वह अपने सौंदर्य की अज्ञात गम्भीरता के कारण अत्यन्त मोहक दीखती थी। तब मानो, एक पवित्र क्षण आया। ग्वाइनप्लेन ने उसकी ओर देखा, वह चौंका,

चकित हुआ और जाग उठा। जागा किससे ?—नींद से ? नहीं, अनिद्रता से। वह वही थी, वह डीया थी, और एकाएक वह अपनी आत्मा के अन्तरतम में अनुभव करने लगा कि विचित्र प्रकार से तूफान कम हो रहा है और बुराई के ऊपर अच्छाई का भव्य प्रभुत्व आ रहा है। स्वर्गीय दृष्टि ने अपनी करामात कर दिखाई। उस अंधी लड़की के, उस मधुर प्रकाशवाहक के आ जाने से ही उसके अन्दर का अंधकार दूर हो गया। बादलों का परदा आत्मा के ऊपर से हट गया, मानो किसी अदृश्य हाथ ने उसे खींच लिया हो, और पवित्र नीलाकाश मानो किसी दैवी मंत्र के प्रभाव से फिर से ग्वाइनप्लेन की अन्तरात्मा के ऊपर चमकने लगा। एक क्षण में, उस देवता के प्रभाव से वह महान और अच्छा ग्वाइनप्लेन निर्दोष बन गया। प्रकृति के समान आत्मा के सामने भी इस तरह की रहस्यपूर्ण विपरीत अवस्थाएं उपस्थित हो जाया करती हैं। दोनों चुप थे—डीया प्रकाश थी, ग्वाइनप्लेन संदक था। डीया देवी थी, ग्वाइनप्लेन शांत था। ग्वाइनप्लेन के तूफानी हृदय पर समुद्र पर चमकनेवाले सितारे के समान डीया अनिर्वचनीय प्रकाश के साथ चमक रही थी।

२. आनंदी से गंभीर

ग्रीन-बाक्स में वह नाश्ता करने का समय था। अबतक ग्वाइनप्लेन सबके साथ क्यों नहीं आया, यही देखने के लिए डीया वहां आई थी। डीया पर नज़र पड़ते ही ग्वाइनप्लेन के मुंह से निकल पड़ा, "तुम हो !" और इतने में ही वह सबकुछ कह गया।

डीया का उसके सामने पहुंच जाना काफ़ी था। जितना कुछ प्रकाश ग्वाइनप्लेन में था वह सब उससे अलग होकर डीया में चला गया और चकित ग्वाइनप्लेन के पीछे केवल भूत माया रह गई। आराधना भी कैसी शांति देती है !

वे दोनों मेज़ के आस-पास एक-दूसरे के सामने बैठे, बीच में उर्सस था और होमो उनके पैरों के पास था। मेज पर एक छोटे-से लैम्प के ऊपर चाय का बरतन टंगा था। फीबी और वीनस उन्हें परोस रही थीं।

वे बीच के कमरे में नाश्ता किया करते थे। वह संकरी मेज जिस ढंग से रखी थी उसके कारण डीया की पीठ ग्रीन-बाक्स के दरवाजे के ठीक सामने दीवार में जो सन्धि थी, उस ओर थी। उनके घुटने एक-दूसरे को छू रहे थे। ग्वाइनप्लेन डीया के लिए प्याले में चाय डाल रहा था। डीया सुन्दरता के साथ अपने प्याले पर फूंक मार रही थी। एकाएक उसे छींक आई। उसी क्षण लैम्प की ज्वाला पर से हलका-सा धुआं उठा और कागज के टुकड़े के

समान कोई वस्तु राख होकर नीचे गिरी। इसी धुएं के कारण डीया को छींक आ गई थी।

उसने पूछा, "क्या था ?"

ग्वाइनप्लेन ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं।" तब वह मुस्कराया। उसने डचेज़ का पत्र जलाया था।

प्रेमी की अन्तरात्मा प्रेयसी की संरक्षक देवता है।

चिट्ठी का भार दूर हो जाने से उसको आश्चर्यजनक हलकापन मालूम होने लगा, और वह अपनी ईमानदारी का वैसा ही अनुभव करने लगा जैसा कि गरुड़ अपने पंखों का किया करता है।

उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसका मोह धुंए के साथ उड़ गया, और वह डचेज़ के कागज के साथ-साथ राख हो गया।

एक ही प्याले से दोनों, एक के बाद दूसरा, चाय पीते हुए बातचीत कर रहे थे। प्रेमियों की बातें, जैसे चिड़ियों की चहचहाहट और बच्चों की बातें! दो प्रेमी हृदयों के बाद कविता की तलाश मत करो। बातचीत के साथ-साथ दो चुम्बनों के बाद, फिर संगीत की तलाश मत करो।

"तुम्हें कुछ मालूम है ?"

"नहीं।"

"ग्वाइनप्लेन, मैंने स्वप्न देखा कि हम दोनों जानवर हैं और हमारे पंख हैं।"

उर्सस गुर्राकर बोला, "मूर्ख ! उसका मतलब है, देवता।"

उनकी बातचीत जारी रही।

"ग्वाइनप्लेन, यदि तुम न रहोगे ?"

"तो क्या ?"

"यह तो तभी हो सकता है जब कि कोई ईश्वर न हो।"

"चाय बहुत गरम है। डीया, जल जाओगी।"

"मेरे प्याले पर फूंक मारो।"

"आज प्रभात के प्रकाश में तुम कितनी सुन्दर दीखती हो !"

"जानते हो, मैं तुमसे बहुत-सी बातें करनेवाली हूं ?"

"कहो !"

"मैं तुम्हें प्यार करती हूं !"

"मैं तुम्हारी पूजा करता हूं !"

और उर्सस ने चुपके से एक ओर जाकर कहा, "खुदा खैर करे, दोनों में शराफत है !"

प्रेमी जितने समय चुप रहते हैं, उसमें भी उन्हें मज़ा ही मिलता है।

मानो प्रेम को बटोर-बटोरकर इकट्ठा करते हैं और फिर बाद में मधुरता-पूर्वक उसका विस्फोट होता है।

"तुम जानते हो ! संध्या को, जब हम अपना खेल करते हैं, उस समय जब कि मेरा हाथ तुम्हारे सिर से छूता है—ओह ग्वाइनप्लेन, तुम्हारा सिर कितना सुन्दर है ! —उस क्षण जबकि मेरी उंगलियों में तुम्हारे बाल लगते हैं, मैं कांप उठती हूं। स्वर्गीय आनन्द मुझपर छा जाता है और मैं अपने मन में कहने लगती हूं, मेरे आस-पास के अंधकार के संसार में, इस निर्जनता के विश्व में, इस सर्वनाश की महान एकान्तता में, जिसमें कि मैं हूं, अपने और सबके कांपते हुए भय में, मेरे लिए एक ही सहारा है और वह मेरे हाथ के नीचे है। ग्वाइनप्लेन, वह तुम हो !"

ग्वाइनप्लेन ने कहा, "अहा ! तुम मुझे प्यार करती हो। मेरे लिए भी संसार में तुम्हीं हो ! सबकुछ तुम्हीं हो ! डीया, तुम मुझसे क्या काम चाहती हो ? तुम्हारी इच्छा क्या है ? तुम्हें क्या चाहिए ?"

डीया ने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानती। मैं सुखी हूं !"

ग्वाइनप्लेन बोला, "अहा ! हम सुखी हैं !"

उर्सस ने कड़ककर कहा, "अरे तुम सुखी हो, सुखी ! यह तो अपराध है। मैं तुम्हें पहले ही चेतावनी दे चुका हूं, सावधान रहो कि तुम्हें कोई देख न ले। जितना हो सके छोटे हो जाओ। सुख को तो बिल के अंदर बन्द हो जाना चाहिए। ईश्वर सुखी की लघुता से सुख की महानता का नाप करता है। सुखी को तो कुकर्मियों के समान छिपे रहना चाहिए। बेचारे जुगनू के समान तुम चमके कि कुचले गए। और यह ठीक भी तो है।

इस समय उर्सस ने अनुभव किया कि उसका कठिन स्वर दयार्द्र हो चला है, इसलिए उसने जोर से गुर्राकर अपना भाव दबा लिया।

डीया ने कहा, "पिताजी, आप बुरी तरह डांटते हैं !"

"इसलिए कि मैं लोगों को आवश्यकता से अधिक सुखी नहीं देखना चाहता।"

यहां होमो ने भी उर्सस का समर्थन किया। प्रेमियों के पैरों के पास से उसकी गुर्राहट सुनाई दी।

उर्सस नीचे झुका और उसने होमो के सिर पर हाथ रखा।

"ठीक है, तुम्हें भी गुस्सा आ गया है। तुम यह प्रेमलीला पसन्द नहीं करते, क्योंकि तुम समझदार हो। फिर भी अपनी ज़बान अब बन्द रखो; तुम्हें जो कुछ कहना था सो कह चुके, तुमने अपनी राय दे दी। वह ठीक भी है, अब चुप हो जाओ !"

भेड़िया फिर गुर्राया। उर्सस ने मेज़ के नीचे उसकी ओर देखा।

"होमो ! चुप हो जाओ ! सुनो तो, ज्ञानी की तरह एक ही बात का ध्यान मत करते रहो।"

किन्तु भेड़िया उठ बैठा और अपने दांत दिखाकर दरवाज़े की ओर देखने लगा।

उर्सस ने कहा, "मामला क्या है ?" और उसने होमो की गर्दन का चमड़ा पकड़ लिया।

डीया का ध्यान भेड़िये की गुर्राहट की तरफ नहीं था। वह अपने ही विचारों में मस्त थी। वह चुप थी और उस आनन्दातिरेक में तल्लीन थी, जिसका अनुभव अंधों को ही हुआ करता है। ऐसे समय अंधों को मालूम होता है मानो उनकी आत्मा कोई मधुर संगीत सुन रही हो और वे जिस प्रकाश से वंचित हैं, उसकी पूर्ति वह आदर्श संगीत कर रहा हो। अंधापन एक ऐसी गुफ़ा के समान है, जिसमें अनन्त की गम्भीर रागिनी सुनाई देती है।

जब कि उर्सस होमो से बात करता हुआ नीचे झुका था, ग्वाइनप्लेन ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं। वह चाय का प्याला उठाकर पीनेवाला था, किन्तु उसने नहीं पिया। उसने धीरे-धीरे उसे मेज पर रख दिया; उसकी उंगलियां खुली रह गईं और आंखें एक ही जगह जमी थीं। सांस भी शायद ही चल रही थी।

डीया के पीछे दरवाज़े में एक आदमी खड़ा था। वह काले कपड़े पहने था। उसकी विग टोपी भौंहों तक जमी हुई थी और उसके हाथ में एक लोहे का डंडा था, जिसके दोनों सिरों पर मुकुट बना था। डंडा छोटा और मोटा था। उर्सस ने किसीके भीतर आने की आहट सुनी थी। होमो को पकड़े हुए उसने अपना सिर उठाया। उसने उस भयंकर पुरुष को पहचान लिया। वह सिर से पैर तक कांप उठा और ग्वाइनप्लेन के कान में बोला—

"यह तो वेपनटेक है !"

ग्वाइनप्लेन को याद आ गई। सहसा भय का उद्गार उसके मुंह से निकलने ही वाला था कि उसने रोक लिया। हम पहले ही बता चुके हैं कि वह लोहे का डंडा, जिसके दोनों सिरों पर मुकुट थे, वेपन (हथियार) कहलाता था। शहर के न्यायाधीश पद ग्रहण करते समय इसी लोहे के वेपन पर राजभक्ति की शपथ लिया करते थे। इसीलिए पुराने ज़माने में इंगलैंड की पुलिस के इस अफ़सर का नाम वेपनटेक पड़ गया था।

उस विग टोपीवाले आदमी के पीछे भयभीत सरायवाला अंधेरे में छिपकर खड़ा था।

वेपनटेक ने बिना कुछ कहे प्रसन्न डीया के पीछे से अपना हाथ बढ़ाया

और लोहे के डंडे से ग्वाइनप्लेन के कंधे को छुआ, साथ ही वाएं हाथ के अंगूठे से ग्रीन-बाक्स के दरवाज़े की ओर इशारा किया। चुप्पी के कारण ये इशारे और भी ज़्यादा शानदार मालूम होते थे और उनका मतलब था, "हमारे पीछे-पीछे चलो!"

उस मूक आज्ञा का कोई उत्तर नहीं था। जो नियम का पालन नहीं करता था, उसे अंग्रेजी कानून कठिन दंड देता था। ग्वाइनप्लेन को कानून के उस दृढ़ स्पर्श से धक्का-सा लगा और वह ऐसा बैठ रहा, मानो पत्थर का बना हो।

यदि कन्धे पर केवल छूने की अपेक्षा वह लोहे का डंडा उसके सिर पर जोर से मारा जाता तो इससे उसको ज़्यादा गहरा शग़ नहीं आता। वह समझ गया कि वह पुलिस अफसर पीछे चलने की आज्ञा देता है; किन्तु क्यों? यह उसकी समझ में नहीं आया।

उर्सस भी बुरी तरह घबरा गया, किन्तु वह सब मामला बहुत साफ़-साफ़ समझ गया। उसके विचार दौड़ने लगे—दूसरे तमाशा करनेवालों की ओर, धर्म-प्रचारकों की ओर, अपने प्रतिस्पर्धियों की ओर, ग्रीनबाक्स के विरुद्ध शिकायत करनेवालों की ओर, कानून के मुजरिम भेड़िये की ओर, और उसके उस निजी मामले की ओर जो बिशप्स गेट के तीन कमिश्नरों के सामने पहुंचा था।

वह जोर से कांपने लगा।

डीया मुस्करा रही थी।

न तो ग्वाइनप्लेन ने, न उर्सस ने एक भी शब्द कहा। उन दोनों के मन में एक ही विचार था—कहीं डीया घबरा न जाय। यही ख़याल होमो को भी हुआ होगा, क्योंकि उसकी गुर्राहट भी बन्द हो गई। यह भी सच है कि उर्सस ने उसे छोड़ा नहीं था।

तो भी अवसर के अनुसार होमो में समझ आ जाती थी।

ग्वाइनप्लेन उठा।

ग्वाइनप्लेन को मालूम था कि विरोध असम्भव था। उसको उर्सस के शब्दों की याद आ गई कि पूछताछ नहीं हो सकती। वह वेपनटेक के सामने खड़ा रहा। वेपनटेक ने ग्वाइनप्लेन के कंधे से डंडा पीछे खींचकर सीधा खड़ा किया, मानो आदेश दे रहा हो। उसके उस भाव का मतलब उन दिनों सब आदमी अच्छी तरह जानते थे। वह यह कि "केवल यह मनुष्य मेरे पीछे आये और कोई नहीं। बाकी सब जहां हैं वहीं रहें। सब चुप रहें!"

किसी जिज्ञासु को पीछे-पीछे जाने की अनुमति नहीं थी।

पुलिस को इस तरह की गिरफ्तारी में हमेशा मजा आता है।

वेपनटेक चक्कर लगाकर घूम गया, जैसे मशीन का पुर्ज़ा कील पर चक्कर लगाकर घूम जाता है। फिर वह न्यायाधीश के समान गम्भीरता-पूर्वक कदम बढ़ाता हुआ ग्रीन-बाक्स के दरवाज़े की ओर गया।

ग्वाइनप्लेन ने उर्सस की ओर देखा। उर्सस ने इस तरह उसके सामने देखा जिसका भाव था, "हमें अदृष्ट के सामने झुकना ही होगा।"

ग्वाइनप्लेन ने डीया की ओर देखा। वह स्वप्न में मस्त थी। वह अभी भी मुस्करा रही थी। उसने अपने होठों को उंगलियों से छूकर चुपचाप दूर से ही उसका चुम्बन किया।

वेपनटेक की पीठ फिरी हुई थी। इसलिए कुछ भय कम हो जाने के कारण उर्सस ने ग्वाइनप्लेन के कान में कहा, "अपनी जान की चिन्ता हो तो, जबतक तुमसे पूछा न जाये तबतक कुछ मत बोलना।"

ग्वाइनप्लेन ने चुपचाप अपना लबादा और टोप उठाया। आंखों तक सारा नीचे का शरीर लबादे से ढककर सिर पर माथे तक टोप दबा लिया। वह रात-भर सोया नहीं था, इसलिए काम के ही सारे कपड़े पहने था। उसने एक बार फिर डीया की तरफ देखा। दरवाज़े पर पहुंचकर वेपनटेक सीढ़ी से उतरने लगा। ग्वाइनप्लेन भी उसके पीछे-पीछे चला, मानो वेपनटेक उसको अदृश्य शृंखला से खींच रहा हो।

उर्सस ने ग्वाइनप्लेन को ग्रीन-बाक्स से बाहर जाते हुए देखा। उसी समय होमो जरा गुर्राया, किन्तु उर्सस ने उसे चुप कर दिया और उसके कान में कहा, "वह अभी आता है।"

अहाते के अन्दर, वीनस और फीबी, ग्वाइनप्लेन-को ले जाते हुए देखकर और वेपनटेक के शोकसूचक काले कपड़ों और लोहे के हथियार को देखकर डर के मारे चिल्लानेवाली थीं कि उनको मास्टर निकल्स ने दबे हुए किन्तु डांट के इशारे से चुप कर दिया।

वे दोनों लड़कियां मानो पथरा गई थीं। गोविकम सुन्न होकर मुंह-बाए खिड़की में से झांक रहा था।

मृत्यु की शांति के साथ उन दोनों ने अहाता पार किया और शराब के अंधेरे कमरे को पार करके सड़क पर आये। कुछ राहगीर सराय के दरवाज़े के पास जमा हो गए थे और कोरम का जस्टिस (न्यायाधीश) पुलिस की टुकड़ी के साथ वहां मौजूद था। जो आवारा लोग वहां जमा थे, वे मूढ़ के समान और बिना कुछ बोले, कान्स्टेबल के डंडे को देखकर, अंग्रेज़ों की प्रथा के समान, रास्ता छोड़कर हट गए। वेपनटेक टेम्स नदी के बाजू की सड़क पर चलने लगा। ग्वाइनप्लेन के दोनों ओर जस्टिस के आदमी थे और वह खुद सिर से पैर तक कफन के समान लबादे से ढका हुआ,

बिना किसी प्रकार की हल-चल किये बेपनटेक के पीछे चल रहा था मानो किसी भूत के पीछे कोई पत्थर की मूर्ति जा रही हो।

३. उर्सस की निगरानी

जैसा कि हम कह चुके हैं, उस समय की पुलिस के अत्यन्त कड़े नियमों के अनुसार बेपनटेक के पीछे जाने की जो आज्ञा किसी एक व्यक्ति को दी जाती थी, उसका मतलब सभी उपस्थित मनुष्यों के लिए यही था कि वे अपनी जगह से न हटें।

तो भी कुछ लोग हठी थे और वे दूर से पुलिसवालों का पीछा करते हुए जा रहे थे।

उनमें से एक उर्सस भी था। वह तो बिल्कुल पथरा गया था। परन्तु उसके आवारा जीवन में इतनी आश्चर्यजनक घटनाएं हुई थीं कि वह जंगी जहाज के समान हो गया था अर्थात् हर तरह के मौक़े के लिए तैयार रहता था।

वह उदासी दूर करके सोचने लगा। वह मनोविकार के सामने झुका नहीं, किन्तु परिस्थिति का सामना करने का प्रयत्न करने लगा। दैवागत का सामना करना प्रत्येक मनुष्य का, जो कि मूर्ख नहीं है, कर्तव्य है। प्रयत्न समझने का नहीं, किन्तु कार्य करने का होना चाहिए।

इस समय तो उसने अपने-आपसे पूछा, मैं क्या कर सकता हूं ?

लबादा और टोप से ग्वाइनप्लेन का सारा चेहरा ढका हुआ था। इसलिए रास्ते में कोई उसको पहचान नहीं सकता था।

ग्वाइनप्लेन के पीछे-पीछे रवाना होने से पहले उर्सस ने एक सावधानी कर ली थी। उसने मास्टर निकल्स, गोविकम, फ़ीबी और वीनस से कह दिया था कि वे डीया के सामने इस विषय में कोई बात न करें। डीया को कुछ पता नहीं था। वे एक शब्द भी ऐसा न कहें, जिससे इस मामले के बारे में उसे ज़रा भी शक हो। वे उसको समझा दें कि ग्रीनबाक्स के प्रबन्ध के लिए एक ज़रूरी काम से ग्वाइनप्लेन और उर्सस बाहर गये हैं। इसके अलावा अभी फिर उसका सोने का समय होगा। उसके सोकर उठने से पहले हम आ जायेंगे। उसने उन्हें यह भी समझा दिया कि यह जो कुछ हो रहा है, उसमें पुलिस की ग़लती मालूम होती है; हम दोनों मजिस्ट्रेट और पुलिस के सामने अपनी सफ़ाई आसानी से दे देंगे। महज़ इशारा काफ़ी है कि सारा मामला साफ हो जायगा और हम दोनों लौट आयेंगे। सबसे पहली बात तो यह है कि इस विषय में डीया के सामने कोई एक शब्द भी न कहे। ये हिदायतें देने के बाद वह रवाना हुआ था।

पुलिसवालों का दल टेढ़े-मेढ़े मार्गों से बढ़ता हुआ जा रहा था। जान-बूझकर वे ऐसे मार्गों से जाते थे, जिनके आसपास बस्ती नहीं थी और जिधर बहुत कम आदमी थे।

अन्त में वे रुके।

वहां छोटी-सी गली थी। आस-पास कोई मकान नहीं थे, केवल दो तीन झोंपड़ियां थीं। गली के दोनों ओर दीवारें थीं; बाईं तरफ़वाली दीवार छोटी थी, और दाहिनी तरफ़ वाली ऊंची थी। ऊंची दीवार काली थी और ऊपर की ओर उसमें छोटे-छोटे छेद थे। उसमें खिड़कियां नहीं थीं, परन्तु कहीं-कहीं पुराने झरोखे थे। इस ऊंची दीवार में भूमि से लगा हुआ छोटा-सा फाटक था, जिसका ऊपरी हिस्सा बिल्कुल गोल था। चूहा पकड़ने के पिंजरे में छेद पर जैसा ढक्कन लगा रहता है, यह फाटक वैसा ही दीखता था।

उस फाटक का किवाड़ भारी पत्थर के चौखटे के अंदर धंसा हुआ था। कीलों, लोहे की मोटी चद्दरों आदि के जिरहबख्तर से वह दरवाजा इस कदर मढ़ा हुआ था कि लकड़ी के बजाय वह लोहे का ही दीखता था।

पुलिस कान्स्टेबल उस फ़ाटक के सामने घेरा बांधकर खड़े हो गये। ग्वाइनप्लेन बीच में था और बेपनटेक पीछे।

न्यायाधीश ने खटखटा उठाया और दरवाज़े को तीन बार ठोका।

न्यायाधीश ने कहा—

"सम्राज्ञी की आज्ञा से!"

वह लकड़ी और लोहे का भारी दरवाज़ा खुला और गुफा के मुंह के समान रास्ता हो गया, मानो अन्धकार में भयंकर गड्ढा मुंह-बाए खड़ा हो।

उर्सस ने ग्वाइनप्लेन को उसके अन्दर ग़ायब होते हुए देखा।

४. भयंकर स्थान

दरवाजे के अंदर ग्वाइनप्लेन के पीछे बेपनटेक घुसा। उसके बाद न्यायाधीश। बाद में कान्स्टेबल।

फिर फाटक बंद हो गया।

भारी किवाड़ अपने-आप घूमकर पत्थर के चौखटे से भिड़ गया। यह दिखाई नहीं दिया कि उसको किसने खोला और किसने बंद किया। ऐसा मालूम होता था कि चटखनियां अपने-आप छेदों में घुस गईं। पुराने जमाने में लोगों पर धाक जमाने के लिए इस तरह के यंत्रों की रचना की

जाती थीं। ऐसे दरवाज़े पुराने क़ैदखानों में अब भी मिलेंगे; उनका द्वार-पाल आपको दिखाई नहीं दे सकता।

यह फाटक साउथवर्क जेल का निचला दरवाज़ा था।

इस जेल के क्रूर और भद्दे दृश्य की क्रूरता में नरमी लानेवाली कोई वस्तु नहीं थी।

इंग्लैंड के प्रायः सभी जेलों का दृश्य ऐसा ही है—बाहर से ऊंची दीवार और भीतर कोठरियों का छत्ता। उन जेलों के समान मातम का दृश्य और कहीं नहीं हो सकता; वहां पर मकड़ी और न्याय अपने-आप जाला तानते हैं। ये जेल वास्तव में आंसुओं के घर हैं।

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं वह गली बहुत संकरी थी, उसमें कंकड़ जमे हुए थे और वह आसपास दो दीवारों से घिरी हुई थी। उनमें से एक दीवार ऊंची थी और एक नीची थी। ऊंची दीवार जेल की थी और नीची जेल के कब्रिस्तान की। वह कोई छः फुट ऊंची होगी। उसमें जेल के फाटक के सामने एक छोटा-सा फाटक था। मुर्दे को जेल से कब्रिस्तान में ले जाने के लिए बीच में सिर्फ बीस कदम गली पार करनी पड़ती थी। ऊंची दीवार पर फांसी टंगी हुई थी, नीची पर मौत का सिर बना हुआ था। इन दोनों पड़ोसिनों में कोई बात ऐसी नहीं थी, जो एक-दूसरे को प्रसन्न बना सकें।

५. आर्तनाद

वे आगे बढ़ने लगे।

ग्वाइनप्लेन का नाम इत्यादि नहीं लिखा गया, न लिखने की कोई जगह ही थी। उस ज़माने की जेलों में कागजात-वगैरा रखने का झगड़ा नहीं था। वे तो तुम्हें बिना कारण बताए बन्द करके ही संतुष्ट हो जाते थे। जेल होना और कैदी होना काफी था।

वे लोग अब एक-एक करके कतार में चलने लगे। सबके आगे वेपनटेक था, फिर ग्वाइनप्लेन, फिर न्यायाधीश और उसके पीछे कान्स्टेबल। पीछे रास्ता बिल्कुल बन्द था और आगे संकरा होता जाता था। अब आसपास की दीवारें ग्वाइनप्लेन की कुहनियों से छूने लगीं। छत सीमेंट से जुड़े हुए पत्थरों से बनी थी, बीच-बीच में उसके सहारे के लिए मेहराबें लगी थीं। ये मेहराबें आगे निकली हुई थीं, जिससे उनके पास रास्ता और भी संकरा हो गया था। उनके नीचे से जाने के लिए ग्वाइनप्लेन को झुकना पड़ता था। वहां से कोई निकलकर भागना चाहे तो उसे धीरे-धीरे ही चलना पड़ेगा। उस गली में तेज़ी से चलना असम्भव था। वह रास्ता चक्करदार था। जहां-तहां, कभी दाहिनी और कभी बाईं ओर दीवार में

सींकचों से वन्द चौरस जगहों में से कुछ ऊपर जाती हुई और कुछ नीचे उतरती हुई सीढ़ियां दीख जाती थीं।

वे एक वन्द दरवाजे के पास पहुंचे, वह खुला। वे उसके पार गये और वह फिर वन्द हो गया। इसी तरह दूसरा दरवाज़ा खुला और वन्द हो गया; फिर तीसरा मिला। वह भी अपनी चूलों पर घूम गया। कोई आदमी नहीं दीखता था। जैसे-जैसे वह गली संकरी होती जाती थी वैसे-वैसे छत नीची होती जाती थी, यहांतक कि अन्त में सीधे खड़े रहना असम्भव हो गया। दीवारों में गीलापन मालूम होता था। छत से बूंदें टपकती थीं। गली के फर्श के पत्थर भी अंतड़ियों के समान चिकटे मालूम होते थे। वहां पर जो पीला धुंधला प्रकाश था वह और भी पीला मालूम होने लगा। हवा कम थी और एक विशेष चिन्ताजनक वात थी कि वह रास्ता नीचे की ओर जा रहा था।

किन्तु वहुत ध्यान से देखने पर ही रास्ते का ढाल मालूम हो पाता था। अंधेरे में तो ज़रा-सा ढाल भी विपदा से भरा मालूम होता है।

अज्ञात गहराई में उतरना भयंकर है। वे कवतक इस तरह चलते रहे, कम-से-कम ग्वाइनप्लेन तो नहीं वता सकता था।

ऐसी दुर्दान्त यातना के समय एक क्षण भी अनन्त काल के समान मालूम होता है।

एकाएक वे रुके।

अन्धकार घना था।

गली कुछ चौड़ी हुई। ग्वाइनप्लेन ने पास ही एक ऐसी आवाज़ सुनी, जिसका कुछ अंदाज चीनियों के घंटे से हो सकता है। ऐसा मालूम होता था कि अतल के कान की झिल्ली पर किसीने हथौड़ा चलाया हो। वेपनटेक लोहे की चादर पर अपना डंडा मार रहा था, यह उसीकी आवाज़ थी।

वह चादर दरवाजा थी।

ऐसा दरवाज़ा नहीं जो कि कब्जों पर घूमकर खुलता हो, किन्तु ऐसा दरवाज़ा, जो कि खोलने के समय ऊपर खींच लिया जाता था और वन्द करते समय नीचे उतार दिया जाता था।

कुछ चूं-चां सुनाई दी और एकाएक ग्वाइनप्लेन को सामने चौरस प्रकाश दिखाई दिया। चूहे के पिंजरे के ढक्कन के समान लोहे की चादर ऊपर खांचे में खींच ली गई थी। रास्ता खुल गया।

वह प्रकाश सूर्य का नहीं था। कुछ धुंधली-सी चमक थी। परन्तु ग्वाइनप्लेन की फैली हुई पुतलियों पर वह हलका-सा प्रकाश ही सहसा सामने आ जाने से ऐसा असर हुआ, मानो विजली चमकी हो।

कुछ देर तक उसको कुछ भी दिखाई नहीं दिया। चौंधियाई आंखों से देखना अंधेरे में देखने के समान ही कठिन है।

कुछ समय बाद धीरे-धीरे उसकी आंखों की पुतलियां उजाले की भी वैसी ही आदी हो गईं जैसी कि अंधेरे की हो गई थी, और वह वस्तुओं को पहचानने लगा। जो प्रकाश पहले बहुत तेज़ मालूम होता था, वह अपने ठीक स्वरूप में दीखने लगा और पीला मालूम होने लगा। उसने अपने सामने गड्ढे में दृष्टि डाली। वहां जो कुछ देखा, वह भयंकर था।

उसके पैरों के पास प्रायः बीस सीढ़ियां थीं, जो कि ढालू, संकरी, जीर्ण, प्रायः सीधी, बिना कठरे की, और ऐसी थीं कि जैसे दीवार में लगा हुआ पत्थर काटकर बनाई गई हों। वे एक बहुत गहरे गड्ढे की तली तक चली गई थीं।

वह जगह गोल थी, उसके ऊपर की छत भी गोल थी और एक नीची मेहराब पर टिकी हुई थी। बीच का पत्थर ठीक ढंग से जमा हुआ न होने के कारण छत कुछ धंसक गई थी, जैसा कि भारी इमारतों की नीचे की कोठरियों में हुआ करता है।

दरवाज़े के लिए जो छेद बना था और जो अभी लोहे की चादर के हटने से खुला था और जिससे सीढ़ियां अन्दर की ओर गई थीं, वह छत में था। इसलिए दरवाज़े में से देखने पर वह कोठरी कुंए के समान मालूम होती थी।

उस कोठरी का फर्श न तो पत्थरों का था, न चूने का। वह ठंडी गीली मिट्टी का था, जैसी कि ज़मीन की गहरी सतहों में ही मिलती है।

उस कोठरी के बीच में ऐसे चार खम्भे थे जिनपर छत टिकी थी। इन चारों के बीच में एक छोटी-सी चौरस कोठरी-सी बन गई थी, जिसमें दीवार के बजाय ये खम्भे ही थे।

मेहराब के बीच में पीतल का गोल लैम्प टंगा था, जिसमें जेल की खिड़कियों के समान सींखचे लगे थे। इस लैम्प में से खम्भों, छत, गोल दीवार इत्यादि सब पर सींकचों की छाया से कटा हुआ धुंधला प्रकाश पड़ रहा था।

यही प्रकाश था जिससे ग्वाइनप्लेन पहले चौंधिया गया था। अब वह बिल्कुल मन्द और लाल मालूम होता था।

उस कोठरी में कोई दूसरा प्रकाश नहीं था, न खिड़की थी, न दरवाज़ा था, न झरोखा था।

उन चारों खम्भों के बीच लैम्प के ठीक नीचे ज़मीन पर एक पीली और भयंकर आकृति पड़ी हुई थी। उसपर सबसे अधिक प्रकाश पड़ रहा था।

वह पीठ के बल लेटी थी। एक सिर दीखता था। उसकी आंखें बन्द थीं। एक शरीर मालूम होता था, जिसकी छाती इधर-उधर बुरी तरह फूली हुई और आकारहीन दीखती थी। उस शरीर के चार अंग गुणा के चिह्न X के समान, जंजीरों से कसे, चारों खंभों की ओर खिंचे हुए थे। ये जंजीरें खंभों के नीचे लोहे के कड़ों में फंसी हुई थीं। वह शरीर इस भयंकरता के साथ जकड़ा गया था कि वह हिल नहीं सकता था और उसकी सूरत मुर्दे की-सी ठंडी मालूम होती थी।

वह नंगा था। वह मनुष्य था!

ग्वाइनप्लेन मानो पथरा गया, वह सीढ़ियों के ऊपर से देखता खड़ा रहा। एकाएक उसने गले की गड़गड़ाहट सुनी।

वह मुर्दा जिन्दा था।

उसके पास एक बड़ी भारी कुर्सी थी, जो कि एक बड़े चपटे पत्थर पर रखी हुई थी। उसके दोनों ओर दो मनुष्य लम्बे-लम्बे काले कपड़े पहने खड़े थे और उस कुर्सी पर एक बूढ़ा बैठा था। उसकी पोशाक लाल थी, उसका चेहरा पीला था, वह बिल्कुल स्थिर था और अशुभ-सा दीखता था। उसके हाथ में गुलाब के फूलों का गुच्छा था।

गुलाब का गुच्छा शाही मजिस्ट्रेट का चिह्न था। वह बूढ़ा सरे काउंटी का शेरिफ़ था।

वह बड़ी शान और प्रखरता के साथ बैठा था।

उस कोठरी में बैठने के लिए सिर्फ एक ही बेंच थी।

उसके पास एक मेज थी जो काग़ज़ और किताबों से भरी हुई थी और उसपर शेरिफ़ का लम्बा सफेद डंडा रखा था। शेरिफ़ के आसपास जो आदमी खड़े थे वे डाक्टर थे—एक दवाओं का डाक्टर और दूसरा क़ानून का डाक्टर। वे दोनों काले कपड़े पहने थे।

काले कपड़े शोक की निशानी हैं। उस तरह के आदमी, जिसकी जान लेते हैं, उसके लिए शोक के कपड़े पहनते हैं।

शेरिफ़ के पीछे, उस चपटे पत्थर के कोने पर, कुर्सी के नीचे एक मनुष्य छिपा हुआ बैठा था—उसके पास लिखने की पेटी थी, घुटने पर कागज़ों का बंडल था, और उस बंडल पर पार्चमेंट का एक टुकड़ा था। वह सैक्रेटरी था। वह गोल विग टोपी पहने था, उसके हाथ में कलम थी और वह ऐसा मालूम होता था मानो लिखने के लिए तैयार बैठा हो।

एक मनुष्य हाथ जोड़े खंभे के सहारे खड़ा था। यह बिल्कुल चमड़े की पोशाक पहने था। यह फांसी देनेवाले जल्लाद का सहायक था।

ये सब उस सांकल ने बंधे हुए मनुष्य के आसपास इस तरह खड़े थे

मानो वे मंत्रों के बल से कीलित कर दिये गए हों। सबके चेहरों पर शोक के गम्भीर चिह्न थे। भयानक नीरवता का साम्राज्य था।

ग्वाइनप्लेन के सामने जो कुछ दिखाई दे रहा था, वह काल-कोठरी थी। इंग्लैंड में इस तरह के अनेक स्थान थे।

राजा जॉन के ज़माने में सभी क़ैदखानों में काल-कोठरियां थीं।

ग्वाइनप्लेन भयभीत और हक्का-बक्का होकर सीढ़ियों के ऊपर से देखता हुआ खड़ा था। वह सिर से पैर तक कांप रहा था। उसने यह याद करने का प्रयत्न किया कि मैंने कौन-सा अपराध किया। वेपनटेक की चुप्पी के स्थान पर आगे आनेवाली यातना का दृश्य सम्मुख आ गया। परिवर्तन हुआ, किन्तु वह दुःखान्त था। उसने क़ानून की अन्धकारपूर्ण पहेली देखी और उसके प्रभाव के अन्दर अपनेको अधिकाधिक लुप्त होते पाया।

ज़मीन पर लेटे हुए उस मानवी आकार के गले में फिर खरखराहट हुई।

ग्वाइनप्लेन को मालूम हुआ कि किसीने उसके कन्धे को धीरे से छुआ।

वह वेपनटेक था।

ग्वाइनप्लेन समझ गया कि इसका मतलब है कि अब नीचे उतरना चाहिए।

उसने वैसा ही किया।

वह एक-एक सीढ़ी करके नीचे उतरने लगा। सीढ़ियां बहुत सकरी थीं और हरेक आठ या नौ इंच ऊंची थी। सहारे के लिए कठरा भी नहीं था। उतरने में सावधानी की आवश्यकता थी। ग्वाइनप्लेन के दो कदम पीछे वेपनटेक था, जो अपना लोहे का हथियार ऊपर उठाये था, वेपनटेक के पीछे उतनी ही दूरी पर कोरम का जस्टिस था।

सीढ़ियों से उतरते समय ग्वाइनप्लेन को आशा क्रमशः बुझती हुई मालूम होने लगी। हर क़दम पर मृत्यु थी। एक-एक सीढ़ी पर उसके भीतर के प्रकाश की किरणें मिटती जाती थीं।

उस सांकल से कसी हुई चीज का गला अभी भी खर्रा रहा था!

अंधेरे में से आवाज आई, "आगे बढ़ो!"

यह शेरिफ की आवाज थी।

ग्वाइनप्लेन एक क़दम आगे बढ़ा।

शेरीफ ने कहा, "और भी निकट।"

कोरम के जस्टिस ने ग्वाइनप्लेन के कान में, धीरे से किन्तु गंभीर भाव से कहा, "तुम सरे काउंटी के शेरिफ के सामने हो!"

ग्वाइनप्लेन कोठरी के बीच में जकड़े हुए उस अभागे की ओर बढ़ा। वेपनटेक और कोरम का जस्टिस जहां थे वहीं खड़े रहे और ग्वाइनप्लेन उस अभागी वस्तु के पास पहुंचा। उसने अभी तक उसे दूर से ही देखा था। किन्तु अब पास पहुंचने पर मालूम हुआ कि वह जीवित मनुष्य है। तब तो उसका भय और भी बढ़ गया। सांकल से बंधा हुआ वह मनुष्य बिल्कुल नंगा था, सिवाय इसके कि उसकी कमर के सामने एक छोटा-सा चीथड़ा लगा हुआ था।

उस भयाकुल और पीड़ित की उम्र पचास या साठ साल की मालूम होती थी। उसके सिर पर बाल नहीं थे। उसकी दाढ़ी के सफेद और काले बाल ठोढ़ी पर निकले हुए थे। उसकी आंखें बन्द थीं, मुंह खुला था, उसमें से एक-एक दांत दिखाई देता था। उसका दुबला और कंकाल चेहरा मृत्यु के सिर के समान दीखता था। उसके हाथ और पैर आसपास के चार पत्थर के खंभों से बंधे हुए थे। उसकी छाती और पेट पर एक लोहे का तख्ता रखा हुआ था और उसके ऊपर बड़े बड़े पांच पत्थर रखे थे। उसके गले की खर्राहट कभी तो उसांस मालूम होती थी और कभी आह।

शेरिफ ने, जो कि अभी तक अपने हाथ में गुलाब का गुच्छा लिये था, दूसरे हाथ से अपना सफेद डंडा उठाया और खड़े होकर कहा, "महारानी की आज्ञा का पालन होना चाहिए।"

इसके बाद उसने डंडा मेज पर रख दिया।

बाद में उसने, लम्बे और गहरे स्वर में, स्थिर भाव से, बिना ज़रा भी हिले-डुले आवाज़ बढ़ाकर कहा—

"ए आदमी, तू यहां सांकलों से बंधा पड़ा है, अन्तिम समय न्याय की आवाज़ को सुन! तू अपनी काल-कोठरी से निकालकर इस जेल में लाया गया है। कानून के अनुसार बाज़ाब्ता पूछे जाने पर, समझाने-बुझाने की परवा न करते हुए उद्धतता के बुरे और उलटे भाव से प्रेरित होकर तूने अपनी ज़बान बन्द कर ली है और न्यायाधीश को उत्तर देने से इन्कार किया है। यह स्वच्छन्दता घृणित है और कानून की निगाह में जुर्म है।"

शेरिफ की दाहिनी ओर जो कानून का डाक्टर खड़ा था, वह बड़-बड़ाता हुआ जल्दी जल्दी बोला, "आलफ्रेड और गॉडरन के कानून, परिच्छेद छठा।"

शेरिफ फिर बोला:

"कानून का आदर सब लोग करते हैं सिवा बदमाशों के, जो कि जंगल में रहते हैं, जहां पर कि हिरनियां बच्चे जनती हैं।"

जैसे कि एक घड़ी के बाद दूसरी बजती हो, कानून के डाक्टर ने शेरिफ

की बातों के समर्थन में मूल कानून सुना दिया।

फिर शेरिफ ने कहा, "जो कोई न्यायाधीश को उत्तर नहीं देता उस पर सब प्रकार से अपराधों का संदेह होता है। वह सब प्रकार की बुराई के योग्य माना जाता है।"

कानून के डॉक्टर ने झट से इसके समर्थन में मूल कानून कह सुनाया। शेरिफ ने शुरू किया, "सब प्रकार की बुराई का अर्थ है सब प्रकार का अपराध। जो एक भी बात नहीं बोलता वह सब कुछ स्वीकार करता है। जो न्यायाधीश के प्रश्नों को सुनकर चुप रहता है वह वास्तव में झूठा और पितृहन्ता है।"

कानून के डॉक्टर ने समर्थन किया, "पितृहन्ता!"

शेरिफ ने फिर शुरू किया, "ऐ मनुष्य, उद्धतता धारण करना तो कानून को घायल करना है। पर न्यायाधीश के सामने चुप रहना तो एक प्रकार का बलवा है। न्याय का द्रोह है—महान द्रोह। इससे अधिक घृणित तथा निन्दित और कुछ नहीं हो सकता। जो प्रश्नों का जवाब नहीं देता वह सत्य का चोर है। कानून में इसका भी प्रबन्ध है। ऐसे मामलों में अंग्रेज सदा से काल-कोठरी, कांटों और जंजीरों का दण्ड देते आये हैं।"

कानून का डॉक्टर बोला—

"आधार—एंगिल का चार्टा (अंग्रेजों का अधिकारपत्र) सन् १०८८।" और फिर उसी यंत्र के समान शून्य गंभीर भाव से उसने कानून का प्रवचन किया।

शेरिफ फिर बोला—

"ऐ मनुष्य, तू पागल नहीं है और जिस विषय के सम्बन्ध में न्याय तुझसे उत्तर मांगता है उसकी तुझे पूरी जानकारी भी है तो भी तूने अपना मुंह बन्द कर रखा है। तू निःसंशय कानून की अवज्ञा करता है, इसीलिए तुझको पीड़ा पहुंचानी पड़ी है और कानून के अनुसार तुझे यह दंड भी दिया गया है। इसी अपराध के कारण तू कानून की आज्ञा से इस काल-कोठरी में लाया गया है। तेरे सब कपड़े उतार लिये गए हैं। भूमि पर पीठ के बल तुझे नंगा लिटा दिया गया है, तेरे हाथ-पैर खींचकर इन चार खंभों से बांध दिये गए हैं, तेरी छाती पर यह लोहे की चादर रखी गई है, और तू जितने पत्थरों का बोझा सह सकता है, उतने यहां तेरे पेट पर रखे गये हैं।

"मैं सरे काउन्टी का शेरिफ हूं। मैंने तुझे और अधिक यातना देने के पहले भी तुझे दुबारा आज्ञा दी कि अपनी जबान खोलकर सच-सच बातें बता दे!

"पर फिर भी तू चुप ही रहा। तेरी इन्कारी और तिरस्कार के बाद

यही उचित था कि अपराधी की ज़िद का मुकाबला कानून की ज़िद से किया जाय कि कानून की धाराओं के अनुसार तेरे साथ सख्तियां भी की गई।"

पत्थरों के ढेर के नीचे से मनुष्य के सांस लेने की भयंकर फुत्कार सुनाई दी।

शेरिफ ने फिर कहना शुरू किया :

"पहले दिन तुझे खाने या पीने को कुछ नहीं दिया गया। दूसरे दिन तुझे केवल भोजन दिया गया, किन्तु पीने को कुछ नहीं। उस दिन तेरे दांतों के बीच जौ की रोटी के तीन कौर ठूंसे गए थे। तीसरे दिन भिन्न-भिन्न समय पर तीन बार और तीन भिन्न-भिन्न गिलासों से कैदखाने की मोरी से पानी लेकर तेरे मुंह में डाला था। चौथा दिन आ गया है। वह आज है। अब यदि तू उत्तर नहीं देगा तो तुझे मरने के लिए यहीं छोड़ दिया जायेगा। न्याय यही चाहता है।"

कानून का डाक्टर समर्थन के लिए तैयार था। उसने नियम का उल्लेख करके समर्थन कर दिया।

शेरिफ ने फिर शुरू किया, "और जब तू इस प्रकार कष्ट के साथ मर रहा होगा और जब तेरे गले से, तेरी ठोड़ी से, तेरी बगलों से और तेरे मुंह से लगाकर कमर तक के प्रत्येक छेद से खून बहता होगा तब भी तेरे पास कोई न होगा।"

कानून के डाक्टर ने उसका भी समर्थन कर दिया।

शेरिफ ने फिर शुरू किया:

"मनुष्य, सुन, अपने किये का परिणाम तुझे भोगना ही होगा। यदि तू इस घृणित मौन को छोड़ दे और यदि तू सच बात बता दे तो तुझे केवल फांसी हो जायगी।"

कानून का डाक्टर बोल उठा, "हां, केवल फांसी! तेरे जैसे गुनहगारों के लिए फांसी एक वरदान है।"

शेरिफ़ ने आग्रह के साथ कहा, "सच्ची बात स्वीकार करने के फायदे तूने सुन लिये। अब भी अदालत को उत्तर देने की मर्जी है या नहीं?"

शेरिफ़ चुप होकर प्रतीक्षा करने लगा।

कैदी निश्चल पड़ा था।

शेरिफ ने फिर शुरू किया—

"आदमी, तू समझता है, चुप रहना सुरक्षित है; परन्तु उसमें रक्षा की अपेक्षा विपत्ति अधिक है। जिद्दी मनुष्य दोषी और दुष्ट होता है। जो अदालत में चुप रहता है वह राज-द्रोही है। जिद मत कर! रानी का ख़याल कर। हमारी दयालु रानी का विरोध मत कर। जब मैं तुझसे पूछूं

तो रानी को उत्तर दे। राज-भक्त प्रजा बन !"

मरीज का गला खर्राया।

शेरिफ ने फिर शुरू किया :

"हां, तो वहत्तर घंटे की यातना के बाद अब यह चौथा दिन आया। आज फैसला हो जायगा। चौथा दिन कानून ने रूबरू स्वीकृति के लिए रखा है।"

कानून का डाक्टर गुर्राया और उसने नियम सुना दिया।

शेरिफ बोला, "कानून ने बुद्धिमानी के साथ यह अन्तिम समय, उस न्याय के लिए रखा है जिसे हमारे पूर्वज 'मृत्यु के सामने का न्याय' कहते हैं; क्योंकि अन्तिम काल में आदमियों की हां या नहीं का विश्वास किया जाता है।"

कानून के डाक्टर ने इन शब्दों का समर्थन किया और हवाला दिया :

"राजा एडल्स्टन का कानून, प्रथम ग्रन्थ, पृष्ठ एक सौ तिरेसठ।"

एक क्षण के लिए निस्तब्धता छा गई। उसके बाद शेरिफ़ ने अपना उग्र चेहरा कैदी की ओर झुकाया।

"ए भूमि पर पड़े हुए मनुष्य—"

वह रुका।

उसने जोर से पुकारकर पूछा, "मनुष्य, तुझे मेरी बात सुनाई देती है ?"

वह मनुष्य नहीं हिला।

शेरिफ़ ने फिर कहा, "कानून के नाम पर आंखें खोल।"

उसकी पलकें बन्द रहीं।

शेरिफ दवाओं के डाक्टर की ओर मुड़ा जो कि बाईं ओर खड़ा था।

"डाक्टर, इसकी बाबत अपनी राय दो।"

कानून के डाक्टर ने नियम सुनाया, "डाक्टर की राय लेनी चाहिए।"

डाक्टर न्यायाधीश की-सी दृढ़ता के साथ नीचे उतरा, उस आदमी के पास गया और उसपर झुका और उसके मुंह के पास उसने अपना कान लगाया। कलाई, बगल और जांघ में नाड़ी देखी, और फिर वह उठा।

शेरिफ़ ने कहा, "क्या बात है ? वह सुन सकता है ?"

डाक्टर बोला, "हां, उसको अभी सुनाई देता है।"

शेरिफ़ ने फिर पूछा, "क्या वह देख भी सकता है ?"

डाक्टर ने उत्तर दिया, "देख सकता है।"

इसके बाद शेरिफ़ ने इशारा किया और कोरम का जस्टिस और

बेपनटेक आगे बढ़े। बेपनटेक आगे उस मनुष्य के सिर के पास जाकर खड़ा हो गया। कोरम का जस्टिस ग्वाइनप्लेन के पीछे खड़ा हुआ।

डाक्टर एक कदम हटकर खंभे के पीछे हो गया।

तब शेरिफ ने गुलाबों का गुच्छा उठाकर, जैसा कि पवित्र जल छिड़कने के समय पादरी दिया करते हैं, ज़ोर से कैदी को पुकारा और भयंकर भाव धारण कर लिया।

"अरे अभागे, बोल! कानून तुझे नष्ट करने के समय तेरे सामने विनय करता है। तू मूक होने का ढोंग करता है, पर याद कर, कब्र कितनी मूक है। तू बहरा मालूम होता है पर तू जानता है कि कलंक कितना बहरा है। उस मृत्यु का विचार कर जो कि तेरी इस वर्तमान अवस्था से अधिक बुरी है। पश्चाताप कर! तू इस कालकोठरी में अकेला छोड़ दिया जायगा। तू जो कि मेरे समान है, क्योंकि मैं भी मनुष्य हूं, ध्यान से सुन! मेरे भाई, क्योंकि मैं ईसाई हूं, ध्यान से सुन! मेरे बेटे, क्योंकि मैं बूढ़ा हूं, ध्यान से सुन! मेरी तरफ देख; क्योंकि मैं तेरे कष्टों का नियंता हूं और मैं अब भयंकर रूप धारण करनेवाला हूं। कानून की भयंकरता न्यायाधीश की शान को बढ़ाती है। विश्वास कर, मैं स्वयं अपने सामने कांप जाता हूं। मुझे अपनी शक्ति का भय लगता है। मुझे कड़ी कार्रवाही करने के लिए विवश मत कर! न्यायदण्ड का पवित्र द्वेष मेरे अन्दर भरा हुआ है। इसलिए अरे ओ अभागे, न्याय का लाभदायक और सच्चा भय मान, और मेरी आज्ञा का पालन कर! स्वीकृति का अन्तिम काल आ गया है, और तुझे उत्तर देना ही पड़ेगा। विरोध को छोड़ ऐसा काम न कर जो अमिट हो जाय। यह सोच कि तेरा जीवन मेरे हाथ में है। आधे जिन्दे और आधे मुर्दे, सुन। कम-से-कम तू यहां मरने का निश्चय मत कर! यहां घंटों, दिनों और हफ़्तों भूख और गंदगी की दारुण यातनाओं से धीरे-धीरे शिथिल होता रहेगा। ये पत्थर तेरी छाती पर रखे होंगे। तू अकेला इस कालकोठरी में पड़ा रहेगा, कोई तेरी सुधि न लेगा और तू यों ही मर जायेगा; जब सारी दुनिया लेन-देन में लगी होगी और तेरे ऊपर की सड़कों पर गाड़ियां दौड़ रही होंगी, उस समय दीमक और चूहे तुझे खायंगे और अन्धकार के जन्तु तुझे नोचेंगे। इस गहरे कष्ट में—दांत पीसते, रोते-कोसते हुए, तुझे बिना सेहत के जीवन की पीड़ामय सांसें लेनी होंगी। तेरे घावों की पीड़ा कम करने के लिए कोई डाक्टर न होगा, और तेरी आत्मा पर पवित्र जल का सिंचन करने के लिए कोई पादरी नहीं होगा। अरे! यदि तू मृत्यु का भयंकर फेन धीरे-धीरे अपने मुंह से बहने का अनुभव नहीं करना चाहता हो तो मैं तुझसे अनुनय-विनय करता हूं कि मेरी बात मान

: ५ :

भाग्य का परिवर्तन

१. दुर्बल वस्तुओं का स्थायित्व

भाग्य कभी-कभी हमें उन्मत्तता का प्याला पीने को देता है। अन्धकार में से एक हाथ आगे बढ़ता है और सहसा हमें प्याला थमा देता है, जिसमें गुप्त मादकता भरी रहती है।

ग्वाइनप्लेन नहीं समझा।

उसने यह जानने के लिए पीछे देखा कि वह बात किसको कही गई थी।

कभी-कभी आवाज़ इतनी तेज़ हो सकती है कि वह कान को सुनाई न दे। उसी तरह कभी-कभी बहुत तेज़ विकार का मन पर कुछ असर नहीं पड़ता। वह अनुभव करने लगा कि शेरिफ़ की खाली की हुई कुर्सी पर किसीने उसे बैठा दिया है। उसने बिना पूछताछ किये यह कार्रवाही हो जाने दी।

ग्वाइनप्लेन के बैठ जाने पर कोरम का जस्टिस और वेपनटेक कुछ कदम हटकर कुर्सी के पीछे बिल्कुल सीधे और निश्चल खड़े हो गये।

इसके बाद शेरिफ़ ने फूलों का गुच्छा पत्थर मेज पर रख दिया, चश्मा पहना जो कि सैक्रेटरी ने उसे उठाकर दिया था, फिर जो कागज मेज पर फैले हुए थे, उनमें से एक परचा निकाला। वह पीला, फटा हुआ और जगह-जगह मसला हुआ था और कई छोटी तहों में मोड़ा हुआ मालूम होता था। वह एक तरफ से पूरा लिखा हुआ था। लैम्प के उजाले में खड़े होकर उस कागज़ को अपनी आंखों के पास शेरिफ़ ने पकड़ा और अत्यन्त गम्भीर स्वर में नीचे लिखे अनुसार पढ़ना शुरू किया—

"पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर!"[1]

---

[1] ईसाइयों के त्रिदेव पिता (ईश्वर), पुत्र (ईसामसीह) और पवित्र आत्मा।

"आज हमारे प्रभु (ईसा) के वाद एक हज़ार छै सौ और नव्वे वर्ष के जनवरी की उन्नीसवीं तारीख को।

"पोर्टलैंड के किनारे पर एक दस वर्ष का वालक दुष्ट भाव से अकेला छोड़ दिया गया है, इस इरादे से कि वह भूखा, प्यासा और अकेला होने के कारण मर जाय।

"वह वालक दो वर्ष की उम्र में अत्यन्त दयालु सम्राट् राजा द्वितीय जेम्स की आज्ञा से वेचा गया था।

"वह वालक लार्ड क्लैनचार्ली है, जो कि लार्ड लीनस क्लैनचार्ली, वैरन क्लैनचार्ली और हंकर वील, सिसली के मार्क्विस तथा इंग्लैंड के पीयर और उनकी पत्नी एन० ब्रेडशा का एकमात्र जायज़ पुत्र है। उसके पिता-माता दोनों मर चुके हैं। वह वालक अपने पिता की ज़ायदाद और पदवी का अधिकारी है। इसलिए अत्यन्त दयालु सम्राट् की इच्छा से वह वेचा गया, उसका अंग-भंग किया गया, उसकी सूरत विगाड़ी गई और वह पहुंच के वाहर कर दिया गया।

"उस वालक को एक भांड़ ने पाल-पोसकर अपना पेशा सिखाया उससे वाज़ारों और मेलों में तमाशा करवाया।

"वह वालक उसके पिता की मृत्यु के वाद दो वर्ष की उम्र में वेचा गया था और उसकी कीमत तथा अन्य तरह-तरह की रिआयतों, माफ़ियों और सुरक्षाओं के वदले में राजा को दस पौंड दिए गये थे।

"लार्ड क्लैनचार्ली को मुझ दस्तखत करनेवाले और लिखनेवाले ने, दो वर्ष की उम्र में पाला था और फ्लैंडर्स के फ्लेमिंग द्वारा, जिसका नाम हार्ड-क्वानन है, उसका अंग-भंग किया गया और उसकी सूरत विगाड़ी। सिर्फ हार्डक्वानन ही डाक्टर कांस्ववेट की चिकित्सा-प्रणाली और उसके रहस्यों से परिचित है।

"हमारा इरादा उसके चेहरे पर हँसी का नकाव चढ़ा देने का था।

"इस इरादे से हार्डक्वानन ने उसके चेहरे पर इस ढंग से नश्तर लगाये कि जिससे उसपर अमिट हँसी की छाप लग जाय।

"पहले उस वच्चे को किसी तरीके से, जो कि हार्डक्वानन ही जानता है, सुलाकर वेहोश कर दिया और फिर आपरेशन किया गया, ताकि उसे नश्तर का कष्ट मालूम न होने पावे।

"उसे पता नहीं कि वह लार्ड क्लैनचार्ली है।

"वह ग्वाइनप्लेन के नाम से वोलता है।

"इसका कारण यह है कि वह उस समय वच्चा था, जव वह वेचा

और खरीदा गया तब केवल दो वर्ष का था। उस समय वह निरा अबोध बालक था।

"हार्डक्वानन ही एक ऐसा मनुष्य है, जो उस तरह का आपरेशन करना जानता है, और वह बालक ही ऐसा जीवित मनुष्य है, जिस पर वह आपरेशन किया गया है।

"वह आपरेशन इतना अद्‌भुत और अपने ढंग का एक है कि वह बच्चा बहुत वर्ष बाद, जब बूढ़ा हो जायगा और उसके काले बाल सफेद हो जायेंगे तब भी हार्डक्वानन उसे देखते ही फौरन पहचान लेगा।

"हार्डक्वानन को इन सब बातों का पूरा ज्ञान है, और उसने उस कार्रवाही में प्रधान भाग लिया है। वह महाराज प्रिंस आव आरेंज, जो कि आमतौर से राजा तीसरे विलियम कहलाते हैं, के कैदखाने में बन्द है। हार्डक्वानन काम्प्रेचिको के दल का आदमी समझकर गिरफ्तार किया गया है। इस समय जब कि मैं यह लिख रहा हूं वह चैथम की काल-कोठरी में कैद है।

"यह बात स्विट्ज़रलैंड की है। जेनेवा झील के निकट, लूसेन और बीवी के बीच, उसी घर में जिसमें कि उस बालक के माता-पिता मरे थे, लार्ड लीनस के आखिरी नौकर ने राजा की आज्ञा के अनुसार उस बालक को बेचा और खरीदारों के हवाले किया था। वह नौकर भी अपने मालिक के बाद शीघ्र मर गया, इसलिए यह गुप्त और नाजुक मामला पृथ्वी पर किसीको नहीं मालूम है, सिवा हमारे और हार्डक्वानन के। पर हार्डक्वानन तो चैथम के कैदखाने में कैद है और हम अब मरनेवाले हैं।

"हम नीचे दस्तखत करनेवालों ने राजा से खरीदे हुए उस बालक लार्ड को आठ साल तक अपने धन्धे की गरज़ से पाला-पोसा और अपने पास रखा।

"हार्डक्वानन जिस विपत्ति में है उसी विपत्ति से बचने के लिए हम इंग्लैंड से भागे जा रहे हैं। पार्लमिंट की सजाओं, रुकावटों और कैद के डर से हमने आज सन्ध्या के समय उस बालक, ग्वाइनप्लेन, को जो कि लार्ड फरमेन क्लैनचार्ली है, पोर्टलेंड के किनारे पर अकेला छोड़ दिया है।

"हमने यह बात गुप्त रखने की कसम राजा के सामने खाई है, न कि ईश्वर के सामने।

"आज रात को हम समुद्र में, परमात्मा की इच्छा से भयंकर तूफान से घिरे हैं। हमारा जीवन निराशापूर्ण और कष्टमय है। हम उस ईश्वर के सामने घुटने टेके हुए हैं। वह हमारे जीवन की रक्षा कर सकता है और सम्भव है हमारी आत्माओं की भी रक्षा करने को राजी हो जाये। हमें

मनुष्यों से और कोई आशा नहीं रह गई है, किन्तु ईश्वर का हर तरह का डर है, इस समय हमें अपने कुकर्मों के पश्चात्ताप का ही सहारा है, हम मरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और यदि ईश्वरीय न्याय संतुष्ट हो जाय तो हमें संतोष होगा, विनम्रता और पश्चात्ताप के साथ हम यह सब स्वीकार करते हैं और इस पर्चे को क्रुद्ध समुद्र के हवाले करते हैं। वह ईश्वर की इच्छा के अनुसार जिस तरह चाहे उसका उपयोग करे और पवित्र प्रभु ईसा मसीह की माता हमारी सहायता करें, आमीन! अब हम अपने दस्तखत करते हैं।"

शेरिफ ने पढ़ना रोककर कहा, "आगे दस्तखत हैं। सबकी लिखावटें भिन्न हैं।"

इसके बाद उसने फिर पढ़ना शुरू किया।

"(१) डाक्टर जैर्नार्डस जीस्टमंड, एसंशियन, एक क्रास का चिह्न, और उसके बगल में; (२) बारबेरा फरमॉय, हेब्रीडीज़ के टीरीफ द्वीप की रहनेवाली; (३) गैजडोरा, कप्तान; (४) जिआंग्रिण्ट; (५) जैक्स क्वार्टोज़, उर्फ ला नारबोने; (६) लकपीयर कैप, गेरोप मैहन के कालेपानी से लौटा हुआ।"

शेरिफ ने ज़रा रुककर फिर कहा, "मूल लेख और पहले दस्तखत की-सी लिखावट में लिखा हुआ एक नोट है," और उसने पढ़ना शुरू किया।

"जहाज़ के तीन कर्मचारियों में से एक, जो कप्तान था, समुद्र की लहर में बह गया। बाकी के दो भी अपने दस्तखत करते हैं, गैल्डेज़ून, एव मारिया, चोर।"

शेरिफ पढ़ने के साथ-साथ बीच में अपने भी विचार कहता जाता था। वह बोला 'कागज़ के नीचे लिखा है—"

'समुद्र में, बिस्कैयन हुकर नाव—मैट्टुटिना पर, पैसेजे की खाड़ी में।'

शेरिफ ने कहा—

"यह कागज़ कानूनी कागज़ है, इस पर राजा दूसरे जेम्स की मुहर लगी है। उस लेख के हाशिए में और लिखावट में यह लिखा है कि 'बालक को बेचने के समय राजा ने रसीद के तौर से हमें जो आज्ञा-पत्र दिया था उसकी पीठ पर यह लेख लिखा गया है। दूसरी तरफ राजा की आज्ञा लिखी हुई मिलेगी।'"

शेरिफ ने कागज़ पलटा और उसे दाहिने हाथ से ऊपर उठाया, जिससे उनपर अधिक प्रकाश पड़े।

इतने मैले-कुचैले कागज़ को भी यदि कोरा कहा जाय तो जहां पर वह

कोरा था, वहां दिखाई दिया कि बीच में तीन शब्द लिखे थे, दो लैटिन भाषा में, जूसूरे गीस और एक दस्तखत, जेफीज ।

गम्भीर स्वर बदलकर स्पष्ट स्वर में शेरिफ ने पढ़ा, "जूसूरे गीस जेफीज़ ।"

ग्वाइनप्लेन की दशा विचित्र थी। मानो वह स्वप्न-लोक में विहार करने लग गया। वह बेहोश के समान बकने लगा—

"जैनर्डिस, हां, वह डाक्टर। बूढ़ा, उसका चेहरा शोकपूर्ण दीखता था। मैं उससे डरता था। गेज़डोरा कप्तान मुखिया। औरतें भी थीं, एसन्शन वगैरा। और फिर वह रसोइया, उसका नाम कैपगेरोप था। वह एक चपटी बोतल में से शराब पिया करता था, जिस पर लाल रंग में एक नाम लिखा था।

शेरिफ ने कहा, "यह देखिये!"

उसने मेज पर कोई वस्तु रखी जो कि सैक्रेटरी ने अभी झोले से निकालकर उसके हाथ में दी थी। वह एक बोतल थी, जिसमें कान के समान हत्थे थे। समुद्री लताएं उससे चिपटी हुई थीं। देखने से ही मालूम होता था कि वह बोतल बहुत दिन तक काम में लाई गई थी और पानी में रही थी। सीपियां और समुद्री वनस्पतियां उससे लिपटी हुई थीं। समुद्र के खार का उसपर थर चढ़ा हुआ था। उसकी गरदन में डामर लगा हुआ था, जिससे मालूम होता था कि उसके मुंह का छेद बिल्कुल बन्द कर दिया गया था, ताकि पानी भीतर न जा सके। अब उसकी मुहर तोड़कर मुंह खोल दिया गया था। बोतल के मुंह में उन्होंने डामर से लिपटा हुआ मज़बूत काग लगा दिया था।

शेरिफ ने कहा, "जो लेख मैंने अभी पढ़ा है, उसे उन मरणासन्न मनुष्यों ने इसी बोतल में बन्द किया था। न्याय के नाम पर भेजा हुआ यह संदेश समुद्र ने सच्चाई के साथ पहुंचा दिया।"

फिर वह बोला:

"जैसा कि आप कहते हैं, इस बोतल पर लाल रंग से एक नाम लिखा है।"

फिर वह अपना स्वर चढ़ाकर निश्चल पड़े हुए कैदी की ओर मुड़कर बोला—

"अपराधी, तेरा नाम यहां है। यह है ईश्वरी लीला, जिसके द्वारा समुद्र में डूबी हुई सच्चाई तैरकर सतह पर आ जाती है।"

शेरिफ ने बोतल उठाई और उसकी एक बाज़ू प्रकाश के सामने की जो साफ कर दी गई थी। उसपर लाल अक्षर लिखे हुए थे, जो पानी और नमक

के कारण काले पड़ गये थे। तो भी हार्डक्वानन का नाम तो पढ़ा जा सकता था।

उसके बाद शेरिफ ने वही गंभीर स्वर धारण कर लिया और क़ैदी से कहा :

"हार्डक्वानन ! जब हमने यह बोतल, जिस पर तेरा नाम है, पहले-पहल तुझे दिखाई तो तूने स्वयं ही इसे एकदम पहचान लिया कि वह तेरे पास थी। तब वह कागज़ पढ़ा गया, जो कि उसके अंदर मुड़ा हुआ और बंद था, तब तूने बोलना छोड़ दिया। तुझे यह आशा थी कि वह नष्ट बालक कभी पहचाना नहीं जायेगा और तू दंड से बच जायेगा; पर तू यातनाओं से न बच सका। वह परचा तेरे सामने दुबारा पढ़ा गया, जिस पर कि तेरे साथियों की घोषणा और स्वयं की स्वीकृति लिखी है, परन्तु तेरे मुंह से एक अक्षर भी न निकला।

"आज चौथा और अंतिम दिन है। वह बालक, जो १६९० सन् की उनतीस जनवरी की शाम को अकेला छोड़ दिया गया था, जब तेरे सामने लाया गया, तो तेरी राक्षसी आशा बिल्कुल विलुप्त हो गई, तूने मौन छोड़ा और अपने बलि को पहचान लिया।"

क़ैदी ने आंखें खोलीं और सिर उठाया। फिर उसने कष्टपूर्ण स्वर से, जिसमें भर्राहट के साथ-साथ अवर्णनीय शांति मिली हुई थी, मर्मान्तिक भाव के साथ बोलना प्रारम्भ किया। उसकी छाती पर पत्थर रखे हुए थे और प्रत्येक शब्द का उच्चारण करते समय कब्र के ढक्कन के समान उन पत्थरों को उठाना पड़ता था। वह बोला—

"मैंने इस भेद को गुप्त रखने की कसम खाई थी। जबतक मुझसे हो सका, मैंने उसे गुप्त रखा। जीवन भर कुकर्म करनेवाले भी ईमानदार होते हैं, और नरक में भी सम्माननीयता होती है। पर अब छिपाना व्यर्थ है। जो होनेवाला है, वह होकर रहेगा। इसलिए मैं बोलता हूं। अच्छा—हां, यह वही है। हम दोनों ने मिलकर यह किया—राजा ने और मैंने। राजा ने अपनी इच्छा से और मैंने अपनी कारीगरी से !"

और ग्वाइनप्लेन की तरफ देखकर वह बोला :

"दोस्त, अब हमेशा के लिए हंसते रहो ! और वह स्वयं हँस पड़ा। यह दूसरी हँसी पहली हँसी से अधिक उन्मत्त थी।

हँसी बन्द हुई और उसने पीछे की ओर जमीन पर अपना सिर टेक लिया। उसकी पलकें बन्द हो गई।

शेरिफ़ क़ैदी को बोलने का मौका देने की इच्छा से रुक गया था। अब वह बोला :

"यह सब लिख लिया गया है।"

उसने सैक्रेटरी को लिखने के लिए समय दिया, और फिर कहा !

"हार्डक्वानन, कानून के नियम के अनुसार रूबरू स्वीकृति और पहचान के बाद, तुम्हारे साथियों की घोषणा तीसरी बार पढ़ी जाने के बाद, जो कि तुम्हारे पहचानने और कबूल करने के कारण पक्की हो चुकी है, और फिर से तुम्हारे स्वीकार कर लेने के बाद अब तुम इन सांकलों से छोड़े जाओगे और महारानी की मर्ज़ी के मुताबिक केजियरी की हैसियत से फांसी पर चढ़ाये जाओगे।"

क़ानून के डाक्टर ने कहा, "केजियरी का अर्थ है, बच्चों को बेचने और खरीदनेवाला।" साथ ही उसने बहुत से कानूनों के हवाले दिये।

शेरिफ़ ने उस परचे को मेज पर रखा, अपना चश्मा उतार दिया, फिर गुलदस्ता उठाया और कहा, "अदालत की कार्रवाही समाप्त हुई। हार्डक्वानन, रानी को धन्यवाद दो।"

कोरम के जस्टिस ने चमड़े की वर्दीवाले मनुष्य को इशारा किया।

वह मनुष्य जल्लाद का सहायक था और पुराने कानूनों के मुताबिक 'फांसी का अफ़सर' कहलाता था। वह क़ैदी के पास गया और उसने एक-एक करके उसकी छाती पर से पत्थर उतारे, और लोहे की चादर हटाई जिससे उस बेचारे की टूटी हुई पसलियां दीखने लगीं। इसके बाद उसने उसकी कलाइयां और पैर जंज़ीरों से मुक्त कर दिये जिनमें कि वे खम्भों से बंधे हुए थे।

शेरिफ़ ने कहा, "हार्डक्वानन, उठो!" क़ैदी नहीं हिला।

डॉक्टर उठा, उसने क़ैदी की जांच की और बोला—

"यह तो मर गया!"

इसके बाद शेरीफ़ ने वेपनटेक को हुक्म दिया,

"यह मुर्दा आज रात को यहां से ले जाया जायगा।"

वेपनटेक ने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

फिर शेरिफ़ ने कहा :

"जेल का क़ब्रिस्तान सामने है।"

वेपनटेक ने फिर सिर हिलाया।

शेरिफ़ ने ग्वाइनप्लेन के सामने खड़े होकर उसे झुककर प्रणाम किया; और फिर वही गंभीर भाव धारण करके ग्वाइनप्लेन की ओर देखते हुए, वह बोला—

"महारानी की आज्ञा के अनुसार कानूनी कार्रवाही करने पर जो साबित हुआ है, उसके आधार पर हम आपके सामने प्रकट और घोषित

करते हैं कि आप लार्ड क्लैनचार्ली, बैरन क्लैनचार्ली और हंकरवील, सिसली के कॉलियॉन के मार्क्विस और इंग्लैंड के पीयर (लार्ड) हैं। परमात्मा आपकी लार्डशिप कायम रखे!"

और उसने झुककर प्रणाम किया।

कानून के डाक्टर, दवाओं के डाक्टर, कोरम के जस्टिस, सेरजन्ट्स, सैक्रेटरी, सारांश यह कि जल्लाद को छोड़ सभी कर्मचारियों ने और भी अधिक आदर के साथ उस प्रणाम का अनुकरण किया और वे ग्वाइनप्लेन के सामने जमीन तक झुके।

ग्वाइनप्लेन ने कहा, "ओह! मुझे जगाओ!"

और वह उठा। वह मौत के समान पीला पड़ गया था।

एक आवाज आई, "मैं सचमुच आपको जगाने के लिए आता हूं।"
यह आवाज अभी तक वहां नहीं सुनी गई थी।

एक मनुष्य खम्भों के पीछे से सामने आया। पुलिस को मार्ग देने के लिए जब लोहे की चादर का फाटक खुला था तब कोई भी दूसरा आदमी अन्दर नहीं आया था, इसलिए यह स्पष्ट था कि यह मनुष्य ग्वाइनप्लेन के प्रवेश करने के पहले से ही वहां अंधेरे में था, उसे वहां उपस्थित होने का बराबर अधिकार था और वह नियुक्त करके वहां भेजा गया था। वह मनुष्य मोटा था, उसकी सांस जल्दी-जल्दी चलती थी और वह अदालती विग टोपी तथा प्रवाली झगा पहने था।

वह जवान की अपेक्षा बूढ़ा दीखता था और नपी-तुली बात करता था।

उसने ग्वाइनप्लेन को आदर के साथ प्रणाम किया और कहा—

"जी हां, मैं आपको जगाने के लिए आया हूं। पच्चीस वर्ष तक आप सोते रहे। आप स्वप्न देखते रहे। अब जागने का समय आ गया है। आप अपनेको ग्वाइनप्लेन मानते हैं, पर आप क्लैनचार्ली हैं। आप अपनेको सबसे नीची श्रेणी का समझते हैं, पर आप सबसे ऊंची श्रेणी के हैं। आप अपनेको नाटकवाला समझते हैं, पर आप पार्लामेंट के सदस्य हैं। आप अपनेको गरीब समझते हैं; पर आप धनवान हैं। आप अपनेको तुच्छ समझते हैं; पर आप महान हैं। महाराज, जागिये!"

ग्वाइनप्लेन ने मन्द स्वर से, जिसमें कि डर की कंपकंपी मालूम होती थी, कहा:

"इस सबका अर्थ क्या है?"

उस मोटे मनुष्य ने कहा, "महाराज, इसका अर्थ यह है कि मैं बारकिल फीड्रो कहलाता हूं। मैं समुद्री विभाग का अफसर हूं; वह हार्डक्वानन की बोतल समुद्र के किनारे पर मिली थी, और मेरे पास लाई गई थी। मैंने

जेट्सम आफिस के दो प्रतिज्ञाबद्ध पंचों की उपस्थिति में उनको खोला। वे दोनों पार्लमेंट के मेम्बर हैं। उन दोनों पंचों ने बोतल के अन्दर के कागज को पढ़ा और पढ़ने के बाद दस्तखत किये और मेरे साथ जरूरी हलफनामे पर भी दस्तखत किये। मैंने रानी को अपनी रिपोर्ट भेजी और रानी की आज्ञा से ऐसे नाजुक मामले के लायक सावधानी के साथ सभी आवश्यक और कानूनी कार्रवाहियां की गईं। रूबरू मुकाबले की अन्तिम कार्रवाही अभी पूरी की गई। आपकी आमदनी ४०,००० पौंड सालाना है। आप ग्रेट ब्रिटेन के यूनाइटेड किंगडम के पीयर, कानून बनानेवाले और न्यायाधीश हैं। सबसे ऊंचे न्यायाधीश, और सबसे बड़े कानून बनानेवाले हैं। आपकी पोशाक राजा-महाराजाओं के समान लाल और बेंगनी होगी। आपके सिर पर पीयर का कॉरोनेट (मुकुट) होगा, और आपका विवाह राजपुत्री डचेज़ से होनेवाला है।"

दुःख के अनुसार सुख भी चित्त पर आघात करता है। ग्वाइनप्लेन के जीवन में यह परिवर्तन महान था। वज्र के समान उसके चित्त पर इसने आघात किया। इतना सुख! यह कल्पना भी ग्वाइनप्लेन के लिए असह्य हो गई। वह बेहोश हो गया!

२. बोतल अपना मार्ग जानती थी

यह सब हुआ कैसे! घटना यों घटी:

एक दिन कैलशर किले के चार गोलंदाजों में से एक गोलंदाज को समुद्र के किनारे रेती पर लहरों से बहकर आई हुई और लताओं से लिपटी हुई एक बोतल मिली। उसमें एक मोटा काग लगा था। वह सिपाही उसे लेकर किले के कर्नल के पास गया और कर्नल ने वह इंग्लैंड के हाई ऐडमिरल के पास भेज दी। ऐडमिरल (नौ-सेनापति) का मतलब है ऐडमिरेल्टी (नौ-सेना विभाग), और बहकर आई हुई वस्तुओं के सम्बन्ध में ऐडमिरेल्टी का मतलब है बारकिल फ़ीड्रो।

बारकिल फ़ीड्रो ने बोतल का काग खोलकर और उसे खाली करके उसमें की सब वस्तुएं रानी के पास पहुंचा दीं। रानी ने तत्काल इस मामले को अपने हाथ में ले लिया।

दो वजनदार मन्त्रियों से सलाह ली गई और इसके सम्बन्ध में उन्हें हिदायतें दी गईं। वे थे लार्ड-चांसलर जो कि कानून के मुताबिक राजा की अन्तरात्मा के अभिभावक हैं और दूसरे लार्ड-मार्शल जिन्हें सरदारों की खानदानी पदवियों के मामलों में अन्तिम निर्णय करने का अधिकार है। अर्ल मार्शल ने संदेश भेज दिया था कि लार्ड-चांसलर की जो राय होगी

उससे मैं पूरी तरह सहमत रहूंगा। उस समय लार्ड-चांसलर विलियम काउपर था। लार्ड विलियम काउपर ने एक मामले में यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया था कि इंग्लैंड के शासन-विधान में लार्ड की पुनःस्थापना राजा की पुनःस्थापना से भी अधिक महत्व रखती है। कैलशर में मिली हुई बोतल ने उसकी दिलचस्पी बहुत अधिक बढ़ा दी। यदि किसी सिद्धान्त के प्रतिपादक को उस सिद्धान्त के प्रयोग का अवसर मिल जाये तो उसे स्वभावतः अत्यन्त आनन्द होता है। यहां पर एक लार्ड की पुनःस्थापना का मामला था। तलाश की गई। सराय के दरवाजे पर की नाटक की तख्ती से ग्वाइनप्लेन का पता शीघ्र लग गया। हार्डक्वानन भी मरा नहीं था। कैदखाना आदमी को सड़ाया करता है, परन्तु उसे कायम रखता है—यदि उसे कायम रखना है तो कब्र और कालकोठरी में फर्क इतना ही है कि कब्र की अपेक्षा काल-कोठरी में थोड़ा अधिक परिवर्तन होता है। हार्डक्वानन अभी भी चैथम की जेल में था। वह वहां से लंदन की जेल में भेज दिया गया। इस बीच स्विट्जरलैंड में इस मामले से सम्बन्ध रखनेवाली बातों का पता लगाया गया। मालूम हुआ कि वे सब सच थीं। लूसान में वेवी के दफ्तर के कागजात से लार्ड लीनस की विदेश में शादी का सार्टीफिकेट, बच्चे के जन्म का सार्टीफिकेट और माता-पिता दोनों की मृत्यु के सार्टीफिकेट मिल गये और उनकी बाजाब्ता नकलें करवा ली गईं ताकि सब कार्रवाही कानून के मुताबिक की जा सके।

जूनस रेगिस और जेफ्रीज़ के दस्तखतों का भी असली दस्तखतों से मिलान कर लिया गया।

अनेक प्रमाण एवं दृष्टान्त देकर विद्वान चांसलर ने भी यही सलाह दी कि ग्वाइनप्लेन को लार्ड फरमेन क्लैनचार्ली की पदवी और उसकी सारी जायदाद वगैरा वापस दी जाय।

रानी ऐन को ग्वाइनप्लेन की विरूपता का समाचार मिल चुका था और वह अपनी बहन को, जिसे कि क्लैनचार्ली की जायदाद दे दी गई थी, नुकसान नहीं पहुंचाना चाहती थी। इसलिए उसने कृपा कर यह तय कर दिया कि इस नये लार्ड से अर्थात् ग्वाइनप्लेन से ही डचेज जोशियाना का विवाह होना चाहिए।

लार्ड फरमैन क्लैनचार्ली की पुनःस्थापना का मामला बिल्कुल आसान था, क्योंकि वही जायज हकदार था।

इसलिए इस मामले को मंजूरी के लिए हाउस आव लार्ड्स में पेश करने की ज़रूरत नहीं थी। रानी लार्ड-चांसलर की सलाह से नये लार्ड को उसके पद पर कायम कर सकती थी।

बारकिल फ़ीड्रो ने सब बातों का प्रबन्ध कर रखा था।

तारीफ तो यह है कि उसने इस मामले को इतना पोशीदा रखा, इस रहस्य को इस तरह चारों तरफ से बन्द करके रखा कि न तो जोशियाना को और न लार्ड डेविड को ही उस भयंकर खंदक का पता चला, जो कि उनके पैरों के नीचे खोदा जा रहा था। जोशियाना को धोखा देना आसान था, क्योंकि उसने अपने आसपास गर्व की दीवार खींच रखी थी। वह खुद ही सबसे अलहदा रहती थी। रहा लार्ड डेविड, सो उसको उन्होंने समुद्र के पार फ्लैंडर्स के किनारे भेज दिया। वह अपनी पदवी से वंचित होनेवाला था, पर उसको इस बात का संदेह तक नहीं था। इस सम्बन्ध में एक घटना ध्यान में रखने के योग्य है।

हुआ यह कि जिस जगह लार्ड डेविड का बेड़ा था, वहां से छः मील की दूरी पर हेलीबर्टन नाम के कप्तान ने फ्रांसीसी जंगी बेड़े पर आक्रमण करके उसकी पंक्ति तोड़ दी। इसपर कौंसिल के प्रेसिडेंट अर्ल आव पेमब्रोक ने प्रस्ताव किया कि कप्तान हेलीबर्टन को वाइस ऐडमिरल बना दिया जाय। रानी ऐन ने हेलीबर्टन का नाम काटकर उसकी जगह लार्ड डेविड डिरी-मोयर का नाम लिख दिया ताकि लार्ड न रहने पर उसे कम-से-कम वाइस-ऐडमिरल बनने का तो सन्तोष मिले।

एन अत्यन्त प्रसन्न थी। उसकी बहन के लिए बीभत्स पति और लार्ड डेविड के लिए अच्छी तरक्की। शरारत और दयालुता दोनों एक साथ! उसने सोचा, अच्छा मजा रहेगा। जो न्याय-कार्य हमारे अमित्रों को बुरा लगता हो उसके करने में हमें बड़ा मजा आता है।

रानी के लिए केवल इतना जान लेना काफी था कि उसकी बहन का भावी पति कुरूप है। बारकिल फ़ीड्रो ने रानी को यह नहीं बताया था कि ग्वाइनप्लेन किस तरह से कुरूप बनाया गया और उसकी कुरूपता किस प्रकार की थी और न रानी ने ही ये बातें पूछने का कष्ट उठाया। रानी का काम है कि वह लार्डों के स्वत्वों की रक्षा करे। नये लार्ड का चेहरा चाहे जैसा हो, चेहरा भला कभी अधिकार का बाधक हो सकता है!

रानी उस समय विंडसर में थी। इससे एक फायदा यह था कि वहां रहने से महलों के षड्यंत्र और जनता के बीच में अन्तर रहता था। इस मामले में जिन लोगों का शामिल होना अत्यन्त आवश्यक था, केवल उन्हीं को इसके हालचाल का पता था। बारकिल फ़ीड्रो बहुत प्रसन्न था, इतना प्रसन्न था, इतना प्रसन्न कि उसके चेहरे पर बीभत्सता झलक रही थी। कभी-कभी प्रसन्नता में भी बीभत्सता रहती है।

वह यह सोचकर बहुत प्रसन्न होता था कि हार्डक्वानन की बोतल के

अंदर की वस्तु का मजा सबसे पहले उसीको चखने को मिला। और क्या यह सब उसीकी बदौलत नहीं हुआ ? वह मौके के द्वार पर इतनी देर तक इंतज़ार करता खड़ा रहा ! वह इन्तजार करना जानता था और उसे उसका इनाम भी करीब-करीब मिल गया।

यह निर्विकारता उसके चेहरे का ऊपरी भाव था। हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि हृदय में तो उसे बहुत अधिक आश्चर्य हुआ था। यदि कोई उसके अन्तरतम आवरण को, जिसको कि वह ईश्वर के सामने भी डाले रहता था, हटाकर देखता तो उसको इस बात का पता चल जाता कि ठीक इसी समय बारकिल फ़ीड्रो को, अर्थात् जोशियाना के घनिष्ठ और तुच्छतम शत्रु को भी, यह विश्वास होने लग गया था कि जोशियाना के उत्तुंग जीवन में भेदनीय स्थान मिलना असम्भव है। इसलिए उसके मन में क्रूर शत्रुता छिपे-छिपे उमड़ रही थी। वह उस अवस्था में पहुंच गया था जिसे हताश अवस्था कहते है। वह हताश होने पर और भी अधिक भयंकर हो चला था।

पर ठीक इसी समय एकाएक हार्डक्वानन की बोतल एक लहर से दूसरी लहर पर बहती हुई बारकिल फ़ीड्रो के हाथ में पहुंच गई। अज्ञान में एक प्रकार की अवर्णनीय ईमानदारी रहती है, जोकि दुष्टता की आज्ञा का पालन करने के लिए सदा तैयार रहती है। बारकिल फ़ीड्रो ने ऐडमिरेल्टी के दो पंचों की सहायता से बोतल खोली, उसमें से कागज़ निकाला, उसे खोला और पढ़ा। उसके दानवी आनन्द का वर्णन करने के लिए शब्द कहां !

यह कैसी विचित्र बात है कि समुद्र, हवा, आकाश, ज्वार, भाटा, तूफान, बवंडर इत्यादि ने एक दुष्ट को सुख पहुंचाने के लिए इतना कष्ट उठाया ! यह सहयोग पन्द्रह वर्ष तक जारी रहा ! गूढ़ प्रयत्न ! पन्द्रह वर्ष तक समुद्र ने इस प्रयत्न में एक क्षण भी विश्राम नहीं किया। लहरें उस बोतल को आपस में एक-दूसरी के हवाले करती रहीं। कड़ी चट्टानें नाजुक कांच की टक्कर से दूर रहीं; शीशी में दरार नहीं हुई; किसी भी रगड़ से काग नहीं निकला; पानी ने किसी चीज़ को नहीं सड़ाया; 'हार्डक्वानन' के अक्षर नहीं मिटे; पानी बोतल के अंदर नहीं घुसा; सील से भीतर का कागज़ नहीं गला; गीलेपन से कागज़ का लेख नहीं मिटा ! अतल को कितनी सावधानी नहीं करनी पड़ी होगी ! इस प्रकार जेर्नार्डस ने जो कुछ अन्धकार में फेंक दिया था उसको अंधकार ने बारकिल फ़ीड्रो के हाथ में पहुंचा दिया। ईश्वर को भेजा हुआ सन्देश शैतान के पास जा पहुंचा। आकाश ने विश्वासघात किया और एक गूढ़ शक्ति ने घटना-चक्र को इस प्रकार चलाया कि एक नष्ट बालक को लार्ड क्लैनचार्ली बनाने की उचित विजय के साथ एक दूसरी जहरीली विजय को मिला दिया। अच्छा कार्य

करते हुए उसने शरारत से न्याय और अन्याय की सेवा में लगा दिया। द्वितीय जेम्स के बलि को बचाना वारकिल फ़ीड्रो को बलि भेंट देना था। ग्वाइनप्लेन की स्थापना करना जोशियाना को नष्ट करना था। वारकिल फ़ीड्रो सफल हुआ, उसीके लिए हवाओं, तूफानों और लहरों आदि महत्तत्वों के विस्तृत आन्दोलनों के बीच एक दुष्ट को प्रसन्नता पहुंचाने के लिए सहयोग हो रहा था। अनन्त एक कीड़े के साथ सहयोग कर रहा था! भाग्य में ऐसी कठोर सनक रहा करती है!

वारकिल फ़ीड्रो गर्व से फूल गया। उसने मन में कहा, यह सब मेरी अभिलाषा की पूर्ति के लिए ही हो रहा है। वह अनुभव करने लगा कि असली उद्देश्य और साधन मैं ही हूं।

किन्तु वह गलती पर था। सच्ची बात हम समझाए देते हैं—

जिस घटना से वारकिल फ़ीड्रो की घृणा ने फायदा उठाया, उसका असली मतलब यह नहीं था। समुद्र एक अनाथ का संरक्षक बन गया था। उसने उस बालक पर अत्याचार करनेवालों को नष्ट करने के लिए तूफान भेजा था। उसने उस नाव को डुबा दिया, जिसने कि बालक को दूर हटा दिया था। उसने उन मनुष्यों को निगल लिया और उनकी प्रार्थनाओं को अस्वीकार करके, उनका पश्चात्ताप स्वीकार कर लिया। उसने मृत्यु की धरोहर अपने पास रख ली। पाप से भरी हुई दृढ़ नाव के स्थान पर उद्धार से भरी हुई छोटी-सी बोतल तैरने लगी। समुद्र ने अपना स्वरूप बदल दिया और वह बाघ से दाई बनकर, बालक का नहीं, किन्तु उसके भाग्य का पालना हिलाने लगा। उधर बालक बड़ा हो रहा था और उसे पता नहीं था कि समुद्र की गहराई के अंदर उसके लिए क्या-क्या किया जा रहा है।

बोतल से टकराती हुई लहरें उस भूतकाल की निगरानी कर रहीं थीं, जिसमें कि भविष्य समाया था। बवंडर उसपर प्रेम की फूंक मार रहा था। प्रवाह उस निर्बल को अतल समुद्र में रहबरी करते हुए पार पहुंचा रहे थे। समुद्री लताएं, चट्टानें और उतार-चढ़ाव उसकी फ़िक्र कर रहे थे। पवन का विस्तृत फेन निरपराध बालक की रक्षा कर रहा था। लहर अन्तरात्मा के समान दृढ़ थी। प्रलय शांति स्थापित कर रहा था। संसारव्यापी छायाएं प्रकाश चमका रही थीं। अंधकार सत्य के सितारे को उत्पन्न कर रहा था; अनाथ को उसकी संपत्ति मिल रही थी। राजा का अत्याचार दूर हो रहा था। परमात्मा की इच्छा पूरी हो रही थी। स्वयं अनन्त अनन्त, निर्बल और अनाथ का नाथ बन गया था—यह सब वारकिल फ़ीड्रो उस घटना के अंदर देख सकता था। किन्तु उसने यह नहीं देखा। उसको यह विश्वास नहीं हुआ कि यह सब ग्वाइनप्लेन के लिए हुआ। उसने सोचा, यह सब मेरे लिए हुआ

है, और मैं भी कुछ हूं। शैतान सदा इसी तरह सोचा करता है।

हमें इस बात से कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि इतनी निर्बल बोतल पंद्रह वर्ष तक बिना टूटे कैसे तैरती रही! हमें मालूम होना चाहिए कि समुद्र कितना दयालु और सावधान है! पंद्रह वर्ष तो कुछ भी नहीं है। ४ अक्तूबर सन् १८६७ को मॉर विहन के किनारे, गेवर्स प्रायःद्वीप के छोर पर क्रोइक्स द्वीप और रावल-डी-एरेन्ट्स के बीच पोर्ट लुई के मछुओं को चौथी शताब्दी की रोम की बनी हुई एक मिट्टी की शीशी मिली थी, जिसपर समुद्र का कीट जमा हुआ था। यह एम्फ़ोरा पानी में पन्द्रह सौ वर्षों से तैर रही थी।

बारकिल फ़ीड्रो ऊपर से चाहे जितनी निर्विकारता दिखाये, उसका आश्चर्य उसकी प्रसन्नता से कम नहीं था। वह जो कुछ चाहता था, वह उसके पंजे में था। सारा मामला बना-बनाया रखा था। उसकी घृणा को सन्तुष्ट करनेवाली घटना के सारे हिस्से उसकी पहुंच के अन्दर फैले हुए थे। उसे कुछ करना नहीं था, बस उन्हें उठा-उठाकर जमा देना था।

"ग्वाइनप्लेन!" इस नाम को तो वह जानता था। उसने टैडकास्टर इन के सामने लगे हुए तख्ते को पढ़ा था और उसको ध्यान में रखा था। "यहां ग्वाइनप्लेन है जो कि दस वर्ष की उम्र में २६ जनवरी, सन् १६६० को, पोर्टलैंड के किनारे पर अकेला छोड़ दिया गया था।" यहां था जोशियाना के अस्तित्व का विध्वंस! सहसा भूकम्प! खोया हुआ बालक मिल गया। लार्ड क्लैनचार्ली मौजूद है; डेविड डिरीमोयर कुछ भी नहीं है। पीयरेज, सम्पत्ति, अधिकार, पदवी—सभी लार्ड गेविड को छोड़कर ग्वाइनप्लेन में प्रवेश कर गये। सब किले, पार्क, जंगल, शहर के मकान, महल रियासतें और स्वयं जोशियाना भी, अब ग्वाइनप्लेन की थी। अब जोशियाना के सामने क्या था! तेजस्विनी और गर्वीली को नट मिलेगा! सुन्दरी को दैत्य! इसकी किसे आशा हो सकती थी? सच तो यह है कि बारकिल फ़ीड्रो का आनन्द उमड़ रहा था।

जो परिवर्तन बारकिल फ़ीड्रो करनेवाला था, यदि वह उसके लिए हानिकारक भी होता तो भी वह उसे करता। ऐसे भी कीड़े हैं, जो इतने क्रूरतापूर्वक निःस्वार्थ होते हैं कि वे यह जानते हुए भी कि डंक मारने से वे खुद मर जायंगे, दूसरों को डंक मारने से नहीं चूकते। बारकिल फ़ीड्रो उन्हीं कीड़ों के समान था।

परन्तु इस समय उसका भाव पूर्ण रूप से स्वार्थरहित नहीं था। लार्ड डेविड डिरीमोयर पर तो उसका कोई उपकार नहीं था; किन्तु लार्ड फरमेन क्लैनचार्ली को तो सब कुछ उसीकी बदौलत मिलनेवाला था। संरक्षित से

वह संरक्षक बननेवाला था। संरक्षक किसका ? इंग्लैंड के लार्ड का। उसको एक अपना लार्ड मिलनेवाला था, जो उसका ही बनाया हुआ था। बारकिल फ़ीड्रो उसके ऊपर अपनी पहली छाप बैठाने का विचार कर रहा था। उसका लार्ड रानी का बहनोई था। उसकी कुरूपता से जोशियाना जितनी दुःखित होगी, उतना ही रानी प्रसन्न होगी। इस प्रकार की कृपा-छाया में आगे बढ़ते-बढ़ते और गम्भीर तथा विनम्र भाव धारण करते-करते बार-किल फ़ीड्रो भी कोई चीज़ बन जायगा। वह सदा सोचता था कि वह चर्च के लिए पैदा हुआ है। उसपर तो बिशप बनने की धुन सवार थी।

इस समय वह सुखी था। अहा, कितनी बड़ी विजय !

वह चट्टान था, और जोशियाना बोतल थी। वह इस बात से अत्यन्त प्रसन्न था कि जोशियाना उससे टकराकर नष्ट होनेवाली है।

वह किसीको कोई बात सुझाने की कला में बड़ा निपुण था। इस कला का अर्थ है दूसरों के मन में छोटा-सा खांचा करना, जिसमें तुम्हारा अपना विचार रखा जा सके। अपनेको अलहदा रखते हुए और बीच में न पड़ते हुए उसीने यह प्रबन्ध कर दिया था कि जोशियाना ग्रीन-बाक्स में जाय और ग्वाइनप्लेन को देखे। उसने सोचा, इसमें कोई हानि नहीं। उस नीची अवस्था में ग्वाइनप्लेन को एक बार देख लेने से आगे अच्छा रंग जमेगा।

उसने सब तैयारी चुपचाप कर रखी थी। उसको सबसे अधिक चिन्ता इस बात की थी कि सारा मामला जब खुले तो एकदम खुले।

सभी प्रारम्भिक तैयारियां पूरी हो जाने पर वह कानूनी जाब्ते पूरे होने तक रुका रहा। उसका भेद खुलने नहीं पाया क्योंकि कानून का आदेश था कि वह गुप्त रखा जाय।

हार्डक्वानन का ग्वाइनप्लेन से रूबरू मुकाबला कराया जा चुका था। वहां बारकिल फ़ीड्रो भी उपस्थित था। उसका नतीजा हम देख चुके हैं।

उसी दिन रानी ने एकाएक अपनी एक गाड़ी जोशियाना को लन्दन से विंडसर लाने के लिए भेजी। उस समय रानी विंडसर में थी।

जोशियाना अपने ही कारणों से रानी की आज्ञा को भंग करने या कम-से-कम उसके पालन करने में देरी करने से खुश होती, और उसी दिन के बजाय दूसरे दिन जाती; परन्तु राजदरबार के जीवन में ऐनराज उचित नहीं माने जाते। उसे फौरन रवाना होना पड़ा और लन्दन के हकर्वीन-हाउस को छोड़कर विंडसर के अपने कार्लियान-लॉज में जाकर रहना पड़ा।

डचेज़ जोशियाना ने लन्दन उस समय छोड़ा जब कि बेगनटेक गार्डन-

प्लेन को गिरफ्तार करने के लिए टैडकास्टर सराय में पहुंचा था।

जब वह विंडसर पहुंची तो ब्लैकराड के अफ़सर ने, जो कि भेंट के कमरे पर पहरा देता है, उसे सूचना दी कि रानी इस समय लार्ड-चांसलर से बातचीत कर रही हैं और उनसे कल सुबह तक भेंट नहीं हो सकती। इसलिए रानी की आज्ञा है कि वह कालियान-लॉज में रहे और जब दूसरे दिन रानी जगे तब सीधे उनसे हुक्म ले। जोशियाना ने द्वेष के साथ अपने निवासस्थान में प्रवेश किया, चिढ़ते हुए भोजन किया, गुस्से में आकर अपने पार्षद के अलावा सब नौकरों को अलहदा कर दिया और दिन-रहते सोने को चली गई।

जब वह विंडसर पहुंची तो उसे मालूम हुआ कि लार्ड डेविड डिरी-मोयर दूसरे दिन वहां आनेवाला है, क्योंकि उसको समुद्र पर ही आज्ञा मिली है कि वह फौरन वापस लौटकर रानी से आज्ञा ले।

३. जागृति या सम्मोह

सबसे दृढ़ और बलवान मनुष्य भी सौभाग्य के सहसा आघात से बेहोश हो जाया करता है। मानसिक स्थिरता के नाश से बढ़कर और कोई आघात नहीं हो सकता। जब ग्वाइनप्लेन को होश आया और उसने आंखें खोलीं, उस समय रात थी। वह आरामकुर्सी में लेटा हुआ था और वह कुर्सी भव्य महल के कमरे के बीच में थी, जिसके फर्श में दीवारों और छत में सब जगह बैंजनी मखमल लगा हुआ था। नीचे का क़ालीन भी मखमल का था। उसके पास नंगे सिरवाला एक मोटा आदमी खड़ा था, यह वही था जो कि प्रवास का लबादा पहने हुए साउथवर्क जेल में खंभे के पीछे से निकला था। ग्वाइनप्लेन कमरे में अकेला था। कुर्सी के नजदीक दोनों तरफ दो मेजें रखी थीं और उनमें से प्रत्येक पर छः मोमबत्तियोंवाला शमादान जल रहा था। इनमें से एक पर कागज़ात और एक छोटी-सी पेटी रखी थी, और दूसरी पर शराब वग़ैरा तथा नाश्ते का सामान चांदी के थाल में सजा था।

इस राजसी महल में कौन रहता होगा! यह भव्यता किस विशाल भाग्यवाले की है! यह गुफा किस सिंह की है! ग्वाइनप्लेन अभी आधा ही जागा था, उसका हृदय भारी था।

उसने कहा, "मैं कहां हूं?"

उसके सामने खड़ा हुआ मनुष्य बोला, "महाराज, आप अपने ही भवन में हैं।"

सतह के ऊपर आने में समय लगा करता है। ग्वाइनप्लेन अचेतनता के अतल में फेंक दिया गया था।

हमारा पैर अज्ञात गहराइयों में एकाएक जमने नहीं पाता। सेनाओं की भगदड़ के समान विचारों की भगदड़ होती है। उनको फौरन इकट्ठा नहीं कर सकते।

जैसे चपटा पत्थर पानी पर उछलता हुआ फेंकने से उछलता जाता है, उसी प्रकार ग्वाइनप्लेन एक आश्चर्य पर लुढ़कता जा रहा था। डेजिया की प्रेम-पत्रिका के बाद साउथवर्क की कालकोठरी का रहस्य उसके सामने आया।

जब भाग्य के आश्चर्यों का प्रारंभ होता है तब आघात-पर-आघात आते हैं। अंधकार के फाटक एक बार खुले कि विशाल आकृतियों का तांता लग जाता है। दीवार एक जगह से टूटी कि घटनाएं दौड़ पड़ती हैं। आश्चर्य कभी अकेला नहीं आता।

ग्वाइनप्लेन को जो कुछ हो रहा था वह उसीकी समझ में नहीं आता था। गिरते हुए खंडहर से उड़ी हुई धूल के समान गहरी व्याकुलता मन में एक प्रकार की धुंध उत्पन्न कर देती है। उस धुंध के कारण ग्वाइनप्लेन को प्रत्येक वस्तु अस्पष्ट दीखती थी। उसको कुछ भी साफ नहीं दिखाई देता था। तो भी प्रकाश धीरे-धीरे वापस आने लगता है। धूल जम जाती है। क्षण-क्षण पर आश्चर्य की सघनता घटती जाती है। ग्वाइनप्लेन की आंखें खुली हुई और स्वप्न में टकटकी बांधे थीं; मानो वह यह देखने का यत्न कर रही हों कि भीतर क्या है।

साउथवर्क की भयंकर काल-कोठरी में पहुंचकर ग्वाइनप्लेन को भय हुआ था कि उसके गले में कैदी का तौक डाला जायगा; पर उन्होंने उसको लार्ड का मुकुट दिया। यह कैसे हुआ! ग्वाइनप्लेन जिससे डरता था, और जो कुछ हो गया उन दोनों के बीच समय का जरा भी अन्तर नहीं था। एक के स्थान पर दूसरा बहुत जल्दी आ गया—उसका भय दूसरे भावों में इतनी शीघ्रता से परिवर्तित हुआ कि वह कुछ भी समझ न सका। ये विपरीत लीलाएं एक-दूसरे से बिल्कुल चिपटी हुई थीं।

'देखें, क्या होता है,' ये शब्द मनुष्य की व्याकुलता की एक विचित्र अवस्था के द्योतक हैं। ग्वाइनप्लेन की अवस्था ऐसी ही थी। तुम अनुभव करते हो कि अभी संभल नहीं पाए हो, इतने ही में पैरों के नीचे से एक विचित्र परिस्थिति उमड़ पड़ती है। तुम ध्यान से देखते हो कि अब किसका क्या परिणाम होता है। तुम्हारा ध्यान अस्पष्ट रहता है। देखेंगे, क्या होता है। क्या? तुम्हें नहीं मालूम। किसके लिए? पता नहीं। तुम देखते हो।

वह बड़े पेटवाला आदमी बोला, "महाराज, आप अपने ही भवन में हैं।"

ग्वाइनप्लेन ने अपने-आपको टटोला। आश्चर्य के समय हम पहले तो इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि आसपास की चीजें वास्तव में हैं, फिर हम अपने-आपको टटोलते हैं, यह निश्चय करने के लिए कि वास्तव में हैं या नहीं। यह तो उसे निश्चय हो गया कि ये शब्द उसीको कहे गए थे; परन्तु वह स्वयं कोई दूसरा था। वह जो जाकेट वगैरा कपड़े पहनकर आया था अब उसके शरीर पर नहीं थे। उनके बजाय चांदी की जरी का वेस्ट कोट था और मखमल का कोट था, जिस पर छूने से मालूम हुआ कि उसपर जरी का काम था। वेस्ट कोट की जेब में उसे भारी थैली मालूम हुई। पैरों में नट के कड़े, मोजों की बजाय मखमल के मोजे और ऊंची लाल एड़ी के जूते थे। उन्होंने उसकी पोशाक भी बदल दी थी।

उस मनुष्य ने फिर बोलना शुरू किया :

"महाराज यह याद रखने की कृपा करेंगे, मेरा नाम बारकिल फ़ीड्रो है। मैं ऐडमिरेल्टी में क्लर्क हूं। मैंने ही हार्डक्वानन की बोतल खोली थी और उसमें से आपके सौभाग्य को खींचकर बाहर निकाला था, जैसे कि सहस्र रजनी-चरित (अरेबियन नाइट्स) के किस्से में मछुए ने बोतल में से दैत्य को निकला था।"

ग्वाइनप्लेन ने बोलनेवाले के मुस्कराते हुए चेहरे पर अपनी दृष्टि जमाई।

बारकिल फ़ीड्रो का बोलना जारी रहा :

"माई लार्ड, इस महल के अलावा हंकरवील हाउस भी, जो कि इससे बड़ा है, आपका है। क्लैनचार्ली कैसल के भी स्वामी आप ही हैं। उसीसे आपकी उपाधि चलती है। वह कैसल राजा एडवर्ड दी ऐल्डर (बड़े) के जमाने में किला था। आपके अधिकार में गावों और आबादियों के सहित उन्नीस ज़िले हैं। इस तरह ज़मींदार और सरदार की हैसियत से आपके झंडे के नीचे अस्सी हजार सेवक और काश्तकार आ जाते हैं। क्लैनचार्ली में आपकी पदवी न्यायाधीश की है—सबके न्यायाधीश, पशुओं और मनुष्यों, दोनों के—और आप अदालत करते हैं। राजा को कोई ऐसा अधिकार प्राप्त नहीं है जो आपको न हो, सिवा सिक्का ढालने के। नार्मन कानून में राजा को प्रधान हस्ताक्षर करनेवाला कहा गया है। राजा को न्याय, अदालत और सिक्के का अधिकार है। सिक्का धन है। अतः आप इस आखिरी बात को छोड़कर अपनी रियासत के अन्दर उसी प्रकार राजा हैं, जिस प्रकार राजा अपने राज्य में राजा है। बैरन की हैसियत से इंग्लैंड

सतह के ऊपर आने में समय लगा करता है। ग्वाइनप्लेन अचेतनता के अतल में फेंक दिया गया था।

हमारा पैर अज्ञात गहराइयों में एकाएक जमने नहीं पाता। सेनाओं की भगदड़ के समान विचारों की भगदड़ होती है। उनको फौरन इकट्ठा नहीं कर सकते।

जैसे चपटा पत्थर पानी पर उछलता हुआ फेंकने से उछलता जाता है, उसी प्रकार ग्वाइनप्लेन एक आश्चर्य पर लुढ़कता जा रहा था। डचेज़ की प्रेम-पत्रिका के बाद साउथवर्क की कालकोठरी का रहस्य उसके सामने आया।

जब भाग्य के आश्चर्यों का प्रारंभ होता है तब आघात-पर-आघात आते हैं। अंधकार के फाटक एक बार खुले कि विशाल आकृतियों का तांता लग जाता है। दीवार एक जगह से टूटी कि घटनाएं दौड़ पड़ती हैं। आश्चर्य कभी अकेला नहीं आता।

ग्वाइनप्लेन को जो कुछ हो रहा था वह उसीकी समझ में नहीं आता था। गिरते हुए खंडहर से उड़ी हुई धूल के समान गहरी व्याकुलता मन में एक प्रकार की धुंध उत्पन्न कर देती है। उस धुंध के कारण ग्वाइनप्लेन को प्रत्येक वस्तु अस्पष्ट दीखती थी। उसको कुछ भी साफ नहीं दिखाई देता था। तो भी प्रकाश धीरे-धीरे वापस आने लगता है। धूल जम जाती है। क्षण-क्षण पर आश्चर्य की सघनता घटती जाती है। ग्वाइनप्लेन की आंखें खुली हुई और स्वप्न में टकटकी बांधे थीं; मानो वह यह देखने का यत्न कर रही हों कि भीतर क्या है।

साउथवर्क की भयंकर काल-कोठरी में पहुंचकर ग्वाइनप्लेन को भय हुआ था कि उसके गले में कैदी का तौक डाला जायगा; पर उन्होंने उसको लार्ड का मुकुट दिया। यह कैसे हुआ! ग्वाइनप्लेन जिससे डरता था, और जो कुछ हो गया उन दोनों के बीच समय का ज़रा भी अन्तर नहीं था। एक के स्थान पर दूसरा बहुत जल्दी आ गया—उसका भय दूसरे भावों में इतनी शीघ्रता से परिवर्तित हुआ कि वह कुछ भी समझ न सका। ये विपरीत लीलाएं एक-दूसरे से बिल्कुल चिपटी हुई थीं।

'देखें, क्या होता है,' ये शब्द मनुष्य की व्याकुलता की एक विचित्र अवस्था के द्योतक हैं। ग्वाइनप्लेन की अवस्था ऐसी ही थी। तुम अनुभव करते हो कि अभी संभल नहीं पाए हो, इतने ही में पैरों के नीचे से एक विचित्र परिस्थिति उमड़ पड़ती है। तुम ध्यान से देखते हो कि अब किसका क्या परिणाम होता है। तुम्हारा ध्यान अस्पष्ट रहता है। देखेंगे, क्या होता है। क्या? तुम्हें नहीं मालूम। किसके लिए? पता नहीं। तुम देखते हो।

वह बड़े पेटवाला आदमी बोला, "महाराज, आप अपने ही भवन में हैं।"

ग्वाइनप्लेन ने अपने-आपको टटोला। आश्चर्य के समय हम पहले तो इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि आसपास की चीजें वास्तव में हैं, फिर हम अपने-आपको टटोलते हैं, यह निश्चय करने के लिए कि वास्तव में है या नहीं। यह तो उसे निश्चय हो गया कि ये शब्द उसीको कहे गए थे; परन्तु वह स्वयं कोई दूसरा था। वह जो जाकेट वगैरा कपड़े पहनकर आया था अब उसके शरीर पर नहीं थे। उनके बजाय चांदी की ज़री का वेस्ट कोट था और मखमल का कोट था, जिस पर छूने से मालूम हुआ कि उसपर ज़री का काम था। वेस्ट कोट की जेब में उसे भारी थैली मालूम हुई। पैरों में नट के कड़े, मोज़ों की बजाय मखमल के मोजे और ऊंची लाल एड़ी के जूते थे। उन्होंने उसकी पोशाक भी बदल दी थी।

उस मनुष्य ने फिर बोलना शुरू किया :

"महाराज यह याद रखने की कृपा करेंगे, मेरा नाम बारकिल फ़ीडो है। मैं ऐडमिरेल्टी में क्लर्क हूं। मैंने ही हार्डक्वानन की बोतल खोली थी और उसमें से आपके सौभाग्य को खींचकर बाहर निकाला था, जैसे कि सहस्र रजनी-चरित (अरेबियन नाइट्स) के किस्से में मछुए ने बोतल में से दैत्य को निकला था।"

ग्वाइनप्लेन ने बोलनेवाले के मुस्कराते हुए चेहरे पर अपनी दृष्टि जमाई।

बारकिल फ़ीडो का बोलना जारी रहा :

"माई लार्ड, इस महल के अलावा हंकरवील हाउस भी, जो कि इससे बड़ा है, आपका है। क्लैनचार्ली कैसल के भी स्वामी आप ही हैं। उसीसे आपकी उपाधि चलती है। वह कैसल राजा एडवर्ड दी ऐल्डर (बड़े) के जमाने में मिला था। आपके अधिकार में गावों और आबादियों के सहित उन्नीस जिले हैं। इस तरह जमींदार और सरदार की हैसियत से आपके झंडे के नीचे अस्सी हजार सेवक और काश्तकार आ जाते हैं। क्लैनचार्ली में आपकी पदवी न्यायाधीश की है—सबके न्यायाधीश, पशुओं और मनुष्यों, दोनों के—और आप अदालत करते हैं। राजा को कोई ऐसा अधिकार प्राप्त नहीं है जो आपको न हो, सिवा सिक्का ढालने के। नार्मन कानून में राजा को प्रधान हस्ताक्षर करनेवाला कहा गया है। राजा को न्याय, अदालत और सिक्के का अधिकार है। सिक्का धन है। अतः आप इस आखिरी बात को छोड़कर अपनी रियासत के अन्दर उसी प्रकार राजा हैं, जिस प्रकार राजा अपने राज्य में राजा है। बैरन की हैसियत से इंग्लैंड

में चार से कम खंभेवाली गिवेट (फांसी) पर आपको नहीं चढ़ाया जा सकता और मार्क्विस की हैसियत से सिसली में आपको सात खंभेवाली फांसी का अधिकार है। जो केवल लार्ड हैं उन्हें दो, मैनर के लार्ड को तीन, और ड्यूक को आठ खंभों वाली फांसी का अधिकार रहता है। नार्दम्बरलैंड के पुराने अधिकार-पत्रों में आपकी पदवी राजकुमार की मानी गई। आयरलैंड के वाइकाउंट्स वेलशिया, जिनका नाम पावर है, और स्काटलैंड के अर्ल्स आफ अम्फ्रेविल, जिनका नाम एंगस है, आपके रिश्तेदार हैं। कैम्पबेल आर्डमेनेक और मैकेलममोर के समान आप भी एक जाति के मुखिया हैं। वैरन की हैसियत से आपकी आठ अदालतें हैं—पिलिमोर की मिट्टी की खानों और ट्रेन्ट की अलावास्टर, (एक प्रकार के काले पत्थर) की खानों पर भी आपका अधिकार है। इसके अलावा पेनेथचेज़ का समस्त प्रान्त आपका है और आप एक पर्वत के मालिक हैं, जिस पर एक पुराना शहर बसा है। वह शहर वाइनकाउंटन कहलाता है और उस पर्वत का नाम मोइनेनली है। इन सबसे आपकी आमदनी चालीस हज़ार पौंड सालाना है। इसका मतलब है एक फरांसीसी जिन पच्चीस हज़ार फ्रैंक से संतुष्ट हो जाता है उनसे चालीस गुनी है।"

जब बारकिल फ़ीड्रो बोल रहा था, उस समय ग्वाइनप्लेन अचेननता के निनाद में भूतकाल की याद कर रहा था। स्मृति ऐसी खाड़ी है, जिसको एक शब्द भी तली तक हिला सकता है। बारकिल फ़ीड्रो ने जितने शब्द कहे थे, ग्वाइनप्लेन उन सबको जानता था। जिस गाड़ी में उसका बचपन बीता था, उसके तख़्तों पर वे शब्द लिखे हुए थे और बारबार उनको देखते रहने से वे आप-ही-आप उसे मुखाग्र हो गए थे। परित्यक्त अनाथ की अवस्था में जब वह वेमथ में उस गाड़ी में पहुंचा तो उसकी भावी सम्पत्ति का सूचीपत्र वहां प्रस्तुत मिला और प्रातःकाल जब वह गरीब बालक जागा तो पहले-पहल उसकी आलस्यपूर्ण आंखों ने जिन अक्षरों को पढ़ा वे उसकी पदवी और सम्पत्ति के थे। उसके अन्य संभ्रमों के साथ-साथ यह तफसील भी विचित्र रूप से सम्मिलित थी कि इस सड़क पर फिरते हुए, दिन-प्रति-दिन अपनी रोटी कमाते हुए, पैसे उठाते हुए और फेंके हुए टुकड़ों पर जीवन-निर्वाह करते हुए यह चलते-फिरते नाटक का विदूषक अपनी दैन्यावस्था पर अपनी सम्पत्ति का सूचीपत्र लटकाए पन्द्रह वर्ष तक भटकता रहा।

बारकिल फ़ीड्रो ने मेज पर रखी हुई पेटी को उंगली से छूकर कहा, "माई लार्ड, इस पेटी में दो हज़ार गिन्नियां हैं, जो दयालु सम्राज्ञी ने आपकी अभी की आवश्यकताओं के लिए भेजी हैं।"

ग्वाइनप्लेन हिला। वह बोला, "ये मेरे पिता उर्संस के लिए हैं।"

वारकिल फ़ीड्रो ने कहा, "माई लार्ड, यही होगा। उर्संस टेडकास्टर सराय में है। कोइफ का सारजंट, जो कि हमारे साथ यहां आया था और अभी वापस जानेवाला है, इन्हें उसके पास ले जायेगा। शायद मैं स्वयं लंदन जाऊं। तब मैं स्वयं ले जाऊंगा!"

ग्वाइनप्लेन ने कहा, "मैं स्वयं उन्हें वहां लेकर जाऊंगा।"

वारकिल फ़ीड्रो की मुस्कराहट गायब हो गई, और वह बोला, "असंभव!"

उच्चारण में कभी-कभी एक ऐसी ज़ोरदार लचक रहती है, जिससे ऐसा मालूम होता है कि मानो शब्दों के नीचे लाइन खींच दी हो। वारकिल फ़ीड्रो का स्वर इस समय इसी तरह का था। वह रुका, मानो अभी उसने जो शब्द कहा था, उसके आगे पूर्ण विराम लगा दिया हो। फिर वह उस विचित्र और आदरपूर्ण स्वर से बोलने लगा, जिसमें कि अपनेको मालिक अनुभव करनेवाले नौकर बोला करते हैं:

"माई लार्ड, आप लंदन से बीस मील की दूरी पर हैं। यह आपका दरबारी महल कारलियन-लॉज है, जो कि विंडसर के शाही महल से लगा हुआ है। किसीको नहीं मालूम कि आप यहां हैं। आप साउथवर्क जेल के फाटक से यहां बन्द गाड़ी में लाये गए हैं, जिन नौकरों ने इस महल में आपका प्रवेश कराया, उन्हें नहीं मालूम कि आप कौन हैं। वे मुझे जानते हैं और यह काफी है। सम्भवतः आप इन कमरों में खानगी चाबी के ज़रिये लाये गए हों, जो कि इस समय मेरे पास है। इस मकान में और भी मनुष्य हैं जो सोये हुए हैं, किन्तु उनको जगाने का समय अभी नहीं हुआ है। इसलिए आपको कुछ बातें समझा देने का मुझे थोड़ा-सा समय मिल गया है। मैं संक्षेप में ही कहे देता हूं। मुझे सम्राज्ञी ने आज्ञा देकर भेजा है—"

यह कहते हुए वह पेटी के पास पड़े हुए कागज़ात इधर-उधर उलटने लगा।

"माई लार्ड, यह आपकी लार्ड की पदवी की सनद है। यह सिसली की मार्क्विसेट की सनद है। ये आपकी आठ बैरनियों (रियासतों) के पट्टे और परचे हैं, जिनमें केन्ट के राजा वाल्ड्रेट से लगाकर स्काटलैंड के राजा छठवें जेम्स और संयुक्त इंग्लैंड तथा स्काटलैंड के राजा पहले जेम्स तक के ग्यारह राजाओं की मुहरें लगी हैं। ये आपके अधिकार-पत्र हैं। ये आपके महसूल के चिट्ठे, और आपकी जागीरों, जमींदारियों, रियासतों, ज़मीनों, और सीरों के नक्शे और पट्टे हैं। ऊपर छत में जो आप देखते हैं वे आपके

दो मुकुट हैं। मोतीवाला वैरन की हैसियत से और स्ट्रावेरी की पंक्तियों-वाला मार्क्विस की हैसियत से।

"यहां कपड़ों की आलमारी में आपकी पोशाक है जो लाल मखमल की है, और जिसमें एरमिन की मखमल की झालर लगी है। कल, और कल ही, आप हाउस आव लार्ड्स में अपना आसन ग्रहण करेंगे, जहां पर रानी के द्वारा पेश किये हुए एक बिल पर कई हफ्तों मे बहस चल रही है। इस बिल का तात्पर्य यह है कि रानी के पति ड्यूक आंव कम्बरलैंड के वार्षिक पुरस्कार में एक लाख पौंड का इजाफ़ा किया जाय। आप इस बहस में भाग ले सकेंगे।"

बारकिल फ़ीड्रो रुका, धीरे से सांस ली और फिर बोला—

"तो भी, अभी कुछ निश्चित नहीं हुआ है। कोई उसकी स्वीकृति के बिना इंग्लैंड का लार्ड नहीं बनाया जा सकता।

"जबतक आप स्वीकार न करें, तबतक सबकुछ मंसूख और रद्द किया जा सकता है। माई लार्ड, अभी तक, जो कुछ हो चुका है वह सब गुप्त रखा गया है। राजनैतिक कारणों से ही यह सारा मामला गुप्त रखा गया है, और वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि जिन प्रभावशाली पुरुषों को इस समय आपके अस्तित्व और अधिकारों का पता है, यदि राजकारण उन्हें भूल जाने की आज्ञा दें, तो वे फौरन भूल जायंगे। जो अभी अन्धकार में है वह अन्धकार में ही रह जायेगा। आपको मिटा देना आसान है। विशेष-कर इसलिए कि आपका एक भाई है। वह आपके पिता का और एक स्त्री का पुत्र है। वह स्त्री आपके पिता के देश-निर्वासन के बाद राजा द्वितीय चार्ल्स की रखैल बन गई, जिसकी वजह से आपके भाई को राज-दरबार में ऊंचा पद मिला है, और उसी भाई को—वह जारज है तो भी—यह पीयरेज वापस मिलेगा। क्या आप यह चाहते हैं? मैं तो ऐसा नहीं सोच सकता। लेकिन सबकुछ आप पर निर्भर है। रानी की आज्ञा का पालन होना ही चाहिए। आप कल तक इस मकान के बाहर नहीं जायंगे, कल शाही गाड़ी में बैठकर हाउस आव लार्ड्स में जायंगे। माई लार्ड, आप इंग्लैंड के पीयर बनेंगे। रानी ने आपके बारे में सोच रखा है। वे आपका विवाह राज-परिवार में करना चाहती हैं। लार्ड फरमेन क्लेनचार्ली, यही समय निर्णय का है। भाग्य एक द्वार बन्द किये बिना दूसरा द्वार कभी नहीं खोलता। एक कदम आगे बढ़ाने के बाद पीछे कदम हटाना असम्भव है। जो परिवर्तन में प्रवेश करता है वह अपने पीछे विलोप ही छोड़ता है। माई लार्ड, ग्वाइनप्लेन मर गया। समझे!"

ग्वाइनप्लेन सिर से पैर तक कांप उठा।

वह बोला, "हां।"

फिर उसने अपनेको संभाला।

वारकिल फीड्रो ने मुस्कराते हुए अभिवादन किया और उस पेटी को अपने लबादे के अंदर दबाकर कमरे के बाहर चला गया।

४. स्मृति नहीं, विस्मृति

वे विचित्र और दृश्यमान परिवर्तन, जोकि मनुष्य की आत्मा में हुआ करते हैं, कहां से उत्पन्न होते हैं ?

ग्वाइनप्लेन एक साथ शिखर पर चढ़ाया गया और खंदक में फेंका गया।

उसका सिर दो चक्करों से घूम गया—चढ़ाव और उतार के चक्कर। नाशकारक संयोग।

वह अनुभव करने लगा कि वह ऊपर चढ़ रहा है। पर उसने अपने पतन का अनुभव नहीं किया।

नये क्षितिज का दर्शन भयोत्पादक है।

दूर के दृश्य में कई ऐसी नई बातें सूझती हैं, जो सदा ही अच्छी नहीं रहतीं।

उसके सामने परिस्तान की उपत्यका थी, संभवतः जाल हो, जो कि बादलों के बीच से चमक रही थी और उसमें आकाश की गहरी नीलिमा दीख रही थी। वह इतनी गहरी थी कि अदृश्य हो रही थी।

वह पर्वत के ऊपर था, जहां से पृथ्वी के सारे राज्य दिखाई दे रहे थे। वह पर्वत कल्पनामय है, इसलिए और भी भयंकर है। जो उसके शिखर पर रहते हैं वे स्वप्न देखते हैं।

महल, क़िले, शक्ति, ऐश्वर्य, जहांतक दृष्टि पहुंच सकती है वहांतक फैला हुआ सब प्रकार का मानवीय सुख, क्षितिज तक विस्तृत विलास का नक्शा, एक प्रकार का प्रभापूर्ण भूगोल, जिसका कि वह स्वयं केन्द्र था। भयंकर मृगजल !

ज़रा सोचिये, ऐसे आलोक की चकाचौंध कैसी होगी ! फिर आप उस तक नसैनी की एक-एक सीढ़ी चढ़ कर नहीं पहुंचे हों, परन्तु बिना पहले से आगाह किये, बिना किसी परिवर्तन के एकाएक उस तक पहुंचाये गये हों।

गाड़ी की लीक में सोया हुआ मनुष्य जागने पर अपनेको भव्य राजसिंहासन पर पाये—ऐसी हालत ग्वाइनप्लेन की थी। उसको बहुत अधिक दीखता था, और फिर भी काफ़ी नहीं। उसने सबकुछ देखा और कुछ भी नहीं।

ग्वाइनप्लेन अकेला रह जाने पर लम्बे कदमों से टहलने लगा। विस्फोट होने के पहले बुलबुले उठा करते हैं।

वह व्याकुल था, शान्त रहना उसके लिए असम्भव था, तो भी वह सोचने लगा। उसका मन उबलते-उबलते पानी होने लगा। वह सब बातें फिर से याद करने लगा। एक आश्चर्य की बात यह है कि जिसकी ओर हमने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया था, हमें खयाल हो जाता है कि उसे हमने साफ-साफ सुना था। साउथवर्क जेल में शेरिफ़ ने जहाज के डूबते हुए मनुष्यों का जो वक्तव्य पढ़ा था वह उसकी स्मृति और समझ में साफ-साफ आ गया। उसे एक एक शब्द याद आने लगा और उसके अन्दर उसे अपना समस्त बालपन दीखने लगा।

एकाएक वह रुका उसके हाथ पीछे एक-दूसरे को पकड़े हुए थे और वह छत—आकाश—पता नहीं क्या—जो-कुछ ऊपर था, उसकी ओर देखने लगा।

उसे ऐसा मालूम होने लगा कि उसने सहसा प्रकाश की चमक में सब-कुछ—भूत, भविष्य और वर्तमान—देख लिया।

"ओह! यह बात थी, सच! मैं लार्ड था। सब पता लग गया। उन्होंने मुझे चुराया, धोखा दिया, बिगाड़ा, त्यागा, अनाथ बनाया, मार डाला! मेरे भाग्य का मुर्दा पन्द्रह वर्ष तक समुद्र पर तैरता रहा। एकाएक वह पृथ्वी के किनारे जा लगा और जीता-जागता खड़ा होकर चलने लगा। मेरा पुनर्जन्म हुआ है। मेरा नया जन्म हुआ है। मैं अपने चीथड़ों में सदा यह अनुभव किया करता था कि वहां धड़कनेवाला हृदय कंगाल का नहीं है और जब मैं मनुष्यों की भीड़ को देखता था, तो मैं अनुभव करता था, कि वे भेड़ हैं, और मैं कुत्ता नहीं हूं; मैं उनका संरक्षक, गड़रिया हूं! मेरे पूर्वज जनता के संरक्षक, मनुष्यों के नेता, अभिभावक और स्वामी थे; और वे जो कुछ थे वह मैं हूं! मैं सरदार हूं, और मेरे पास तलवार है; मैं बैरन हूं और मेरे पास जिरह-बख्तर है। मैं मार्क्विस हूं और मेरे पास कलगी है। मैं पीयर हूं और मेरे पास मुकुट है। देखो! उन्होंने मुझे इस सबसे वंचित कर दिया। मैं प्रकाश में रहता था, उन्होंने मुझे अंधकार में फेंक दिया। जिन्होंने पिता को देश-बाहर निकाला, उन्होंने पुत्र को बेच डाला। जब मेरे पिता की मृत्यु हो गई तब उन्होंने उसके सिर के नीचे से देश-निकाले का पत्थर हटा लिया, जिसको कि उसने तकिये के बजाय लगा रक्खा था, और उसे मेरे गले से बांध दिया। ओह! उन बदमाशों ने मेरे बचपन को कितना कष्टमय बनाया! हां, वे मेरी स्मृति के अन्तरतम में चक्कर लगाया करते हैं। देखो! उन्होंने मुझे जल्दी-जल्दी वहां पहुंचा

दिया, आने जाने वालों के पैरों के नीचे, मनुष्यों की ठोकरों के नीचे, नीच-तम के भी नीचे, नौकर के नीचे, गुलाम के नीचे। वहां पर, उसी स्थान से मैं आया हूं, वहीं से मैं उठा हूं, वहीं से मैं उठाया गया हूं। और मैं अब यहां आ पहुंचा हूं। चलो!"

वह बैठ गया, फिर उठा, उसने हाथों से अपना सिर पकड़ लिया, वह फिर कमरे में इधर-उधर घूमने लगा। उसके विचारों का तूफ़ान उसके अन्दर जारी रहा।

"मैं कहां हूं?—शिखर पर! यह कौनसा स्थान है जहां मैं अभी आ पहुंचा हूं?—सबसे ऊंचे शिखर पर? यह कलश, यह उत्तुंगता, संसार की छत, यह महान शक्ति, मेरा घर है। यह मन्दिर आकाश में है। मैं देवता हूं। मैं अगम ऊंचाई पर रहता हूं। यह वर्चस्व, जिसकी ओर मैं नीचे से देख रहा हूं, और जहां से ऐसी गौरव की किरणें निकल रही हैं कि मेरी आंखें मुंदी जाती हैं। यह अमिट पीयरेज, यह सौभाग्यवानों का दुर्गम दुर्ग, इसमें मैं प्रवेश कर रहा हूं। मैं इसके अन्दर हूं। मैं इसका हूं। अहा, चक्र कैसा घूमा! मैं नीचे था, मैं ऊपर हूं—ऊपर, सदा के लिए! देखो, मैं लार्ड हूं! मेरी पोशाक बैंजनी होगी। मेरे सिर पर अर्ल का मुकुट होगा। मैं राज्याभिषेक में राजाओं की सहायता करूंगा। उन्हें राजभक्ति की शपथ मेरे सामने लेनी होगी। राजकुमारों और मन्त्रियों के मुकदमे मैं करूंगा। जिस खंदक में मैं फेंक दिया गया था, उसकी गहराई में से मैं आकाश के शिखर पर पहुंच गया हूं। शहर और देहात में मेरे महल हैं। मकान, बाग, पार्क, जंगल, गाड़ियां और लाखों हैं। मैं भोज दूंगा। मैं कानून बनाऊंगा। मैं जिस तरह चाहूंगा, खुशियां मनाऊंगा और वह आवारा ग्वाइनप्लेन, जिसे घास का एक फूल भी तोड़ने का अधिकार नहीं था, अब चाहे तो आकाश के सितारे तोड़ सकता है।"

आत्मा की चमक को दबा देनेवाला निराशापूर्ण आवरण! ग्वाइन-प्लेन एक महान आत्मा था और अभी तक वह वैसा ही था, परन्तु उसकी नैतिक महानता पार्थिव ऐश्वर्य के सामने झुक गई। शोचनीय परिवर्तन! धर्म दैत्यों की सेना के सामने हार गया। मनुष्य के किले की कमज़ोर बाजू पर हमला किया गया। सारी नीची परिस्थितियों ने, जिनको कि आदमी ऊंची कहता है, महत्वाकांक्षा, सहज-स्वभाव की अंधी इच्छाएं, मनोविकार, लोभ इत्यादि ने, जिन्हें विपत्ति के लाभदायी संयम ने ग्वाइनप्लेन के अंदर से बाहर निकाल दिया था, अब उसके उदार हृदय पर एकाएक अधिकार जमा लिया। और यह कैसे हुआ? समुद्र में बहकर आई हुई बोतल में एक

परचा मिलने से। किसी मौके पर आक्रमण होने से अन्तरात्मा पराजित हो जाती है।

ग्वाइनप्लेन ने खूब गर्व की शराब पी और उससे उसकी आत्मा मन्द हो गई। उस नाशकारी शराब का ज़हर ऐसा ही होता है।

उसपर वेहोशी छाने लगी। वह उसके आगमन से प्रसन्न था। उसने उसका स्वागत किया। यह पहली और वहुत देर की प्यास का परिणाम था। क्या हम प्याले की साजिश में शामिल हैं, जिससे हमारी बुद्धि का अपहरण हो जाता है? सदा से उसको इसकी अस्पष्ट अभिलाषा रही है। उसकी आंखें सदा महान की ओर टकटकी लगाये थीं। टकटकी लगाना चाह करना है। गरुड़ पर्वत-शिखर पर जन्म लेता है तो किसी मतलब से ही।

अब तो कभी-कभी उसको यह बात सबसे अधिक स्वाभाविक मालूम होने लगी कि वह लार्ड बनेगा। अभी कुछ ही घंटे बीते थे, तो भी कल का भूतकाल इतना दूर मालूम होता था!

दुःखी तो वह है, जिसके बारे में हम कहते हैं कि "यह कितना भाग्यवान है! संपत्ति की अपेक्षा विपत्ति का सामना करना सरल है। हम सौभाग्य की अपेक्षा दुर्भाग्य के बीच से अधिक पूर्ण होकर निकलते हैं। जो वज्र के सामने दृढ़ खड़े रहते हैं, वे बिजली के ज़रा से धक्के से गिर जाते हैं। ऐ ऊंचे शिखर पर निडर खड़े रहनेवाले, डर! कहीं तुझे छायाओं और स्वप्नों के अगणित पंख ले न उड़ें। जो ऊंचाई तुझे ऊपर चढ़ाए है वह बौना बना देगी। देवता की पदवी पर स्थापित करने के कार्य में पतित करने की कुत्सित शक्ति छिपी रहती है।

यह समझना आसान नहीं है कि वास्तव में सौभाग्य क्या है। सुअवसर तो केवल कपटरूप है। भाग्योदय के चेहरे से जितना धोखा होता है, उतना और किसीसे नहीं। क्या सौभाग्य हितकारी है! क्या वह नाशकारी है!

सत्य उज्ज्वल है तो भी उज्ज्वलता वास्तव में उज्ज्वलता न हो। ज्वाला में कपट हो सकता है। तुम विश्वास करते हो कि वह तुम्हें प्रकाश देती है; किन्तु नहीं, वह तुम्हें आग लगा देती है।

रात को मामूली मोमबत्ती अन्धकार के कोने में सितारा बन जाती है। पतंग उड़कर उसपर गिरता है।

इसमें पतंग कहां तक जिम्मेदार है!

बत्ती की ज्वाला पतंग को मुग्ध करती है जैसे कि सांप की आंखें पक्षी को लुभा लेती हैं।

क्या पक्षी और पतंग उस आकर्षण का विरोध कर सकते हैं! क्या यह

सम्भव है कि पत्ता हवा का विरोध करे ! हां, क्या यह सम्भव है कि पत्ता हवा का विरोध करे और पत्थर गुरुत्वाकर्षण के नियम का पालन करने से इन्कार कर दे ?

ये भौतिक प्रश्न हैं और हैं नैतिक प्रश्न भी ।

डचेज़ का पत्र पाने के बाद ग्वाइनप्लेन ने अपनेको संभाल लिया था। उसके स्वभाव के गहरे प्रेम ने उसका विरोध किया था। किन्तु तूफान क्षितिज के एक हिस्से में थककर शांत हो जाने पर दूसरे हिस्से में जाकर प्रकट हुआ; क्योंकि प्रकृति के समान भाग्य में भी बारी-बारी से उत्थान और पतन हुआ करता है। पहला धक्का ढीला कर देता है, दूसरा जड़ से उखाड़ देता है।

शोक ! बड़े-से-बड़े वृक्ष कैसे गिरते हैं !

इस प्रकार वह, जो कि दस बरस की बाल्यावस्था में, पोर्टलैंड के किनारे पर अकेला खड़ा हुआ चाहे जिसका मुकाबला करने को तैयार था, जो सामने आनेवाले प्रत्येक विरोधी की ओर दृढ़ता से देखता था। जिस नाव में वह जाने की आशा करता था, उसको वहा ले जानेवाली हवा की ओर; पहिये को निगल जानेवाली खाड़ी की ओर; विस्तृत अतल की ओर जो कि पीछे हटने पर खतरनाक हो जाता है; पृथ्वी की ओर जिसने उसे आश्रय देने से इन्कार कर दिया; आकाश की ओर जिसने उसे प्रकाश के लिए एक सितारा भी दिखाने से इन्कार कर दिया; दयाहीन एकान्त की ओर; सूचना-हीन अज्ञात की ओर; अनन्त की समस्त क्रूरता-स्वरूप समुद्र और रहस्य तथा पहेली-स्वरूप आकाश की ओर; वह जो कि अज्ञात की प्रबल शत्रुता के सामने भी न तो कांपा न बेहोश हुआ; वह जो कि निरा बालक होने पर भी रात्रि के मुकाबले में डटा रहा, जैसा कि पुराने ज़माने में हरक्यूलिस मृत्यु के सामने डटा था; वह जिसने कि इस असमान शक्ति को युद्ध में यह चुनौती दी थी कि स्वयं बालक होने पर भी वह दूसरे बालक का संरक्षक बन सकता है, स्वयं थक जाने और निर्बल हो जाने पर भी वह अपने ऊपर एक नया बोझा लाद रहा था और इस प्रकार अपने आक्रमणकारियों को आसानी से वार करने का अवसर दे रहा था; वह मानो आसपास छिपे हुए अन्धकाररूपी दैत्यों के बंधन अपने हाथ से खोल रहा था; वह जो कि उम्र से पहले ही वीर था, पालने के बाहर कदम रखते ही पद-पद पर भाग्य से लड़ता रहा था; वह जो कि असमान विरोधी से लड़ने में कभी हतोत्साह नहीं हुआ; वह जोकि आसपास की प्रत्येक वस्तु में मानव-जाति के विलोप को देखते हुए भी अभिमान के साथ अपने मार्ग पर आगे बढ़ता गया; वह जोकि ठंड, प्यास, और भूख को साहसपूर्वक सहना जानता था; वह जोकि

: ६ :

उर्सस के विभिन्न स्वरूप

१. परीक्षा

ग्वाइनप्लेन के पीछे साउथवर्क जेल का फाटक बन्द होते देखकर उर्सस के होश उड़ गए।

वह जहां खड़ा था, उसी कोने में बड़ी देर तक प्रतीक्षा करता खड़ा रहा।

अन्त में उसने वह कोना छोड़ा। उसे वहां खड़े-खड़े बहुत देर हो गई थी, दिन ढल चला था। वह बार-बार पीछे सिर घुमाकर उस भयंकर फाटक की ओर देख लेता था, जिसके अन्दर ग्वाइनप्लेन गायब हो गया था। उसकी आंखें कांच के समान जड़ हो गई थीं। वह गली के सिरे पर पहुंच गया. फिर दूसरी में गया, फिर तीसरी में; इस तरह घूमते-घामते बिना जाने वह उसी रास्ते से वापस आ गया, जिससे कि कुछ घंटे पहले जेल तक गया था। वह सराय को लौटा और मन-ही-मन गुर्राने लगा—

"क्यों रे मूर्ख, क्या तू लार्ड है जो आलोचना करता है! आलोचना करने की मनाई है। वह वास्तव में अब जेल में है। ईश्वर ने कृपा की। धन्यवाद! ग्वाइनप्लेन, जा! डीया भी चल देगी। एक पत्थर से दो पक्षी गिरेंगे; क्योंकि डीया अब उसे नहीं देखेगी और मर जायगी। उसके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं रह जायगा। वह कहेगी, 'अब मैं इस संसार में क्या करूं?' जाओ, नमस्कार! मैं दोनों से घृणा करता था। डीया, तू भी मर जा! मैं सुख से रहूंगा!"

जिस समय वह टैडकास्टर सराय में वापस आया, उस समय साढ़े छह का घंटा बजा। सन्ध्या हो चली थी।

मास्टर निकलस दरवाजे की सीढ़ी पर खड़ा था।

उसने दूर से उर्सस को देख लिया।

उसने पूछा, "कहो!"

उर्सस बोला, "क्या कहूं?"

मास्टर निकल्स बोला, "क्या ग्वाइनप्लेन आ रहा है? समय तो हो गया। थोड़ी देर में दर्शकों की भीड़ लग जायगी। शाम को हंसमुखा का खेल होनेवाला है न?"

उर्सस ने कहा, "हां, मैं ही हँसमुखा हूं।"

उसने मास्टर निकल्स की ओर देखा और ज़ोर से हँस दिया।

फिर उसने अन्दर जाकर खिड़की खोली और आगे झुककर ग्वाइनप्लेन के बारे में लिखा हुआ तख्ता उखाड़ लिया, 'अन्धकार-संहार' का कागज फाड़ डाला; और दोनों को लेकर नीचे उतर आया।

मास्टर निकल्स यह सब कार्रवाही आंखों से देखता रहा।

"यह क्यों निकालते हो?"

उर्सस और भी ज़ोर से हँसा।

"इस तरह क्यों हँसते हो?"

उर्सस बोला, "बस, आज से खेल खत्म! यह धन्धा बन्द!"

मास्टर निकल्स समझ गया और उसने अपने लेफ्टिनेंट, बालक गोविकम को आज्ञा दी कि जो कोई यहां आये, उसे कह दिया जाय कि आज रात को खेल नहीं होगा। उसने टिकट के पैसों की पेटी भी हटाकर कोने में पटक दी।

एक क्षण के बाद उर्सस ग्रीनबाक्स के अन्दर गया।

उसने उन दोनों तख्तों को कोने में रख दिया और स्त्रियोंवाले हिस्से में प्रवेश किया।

डीया सो रही थी।

वीनस और फ़ीबी उसके पास बैठी थीं।

उर्सस ने डीया की तरफ़ देखा और बड़बड़ाया, "यह लम्बी नींद की तैयारी कर रही है।"

फिर वीनस और फ़ीबी से कहा, "तुम्हें सब-कुछ मालूम है। गायन बन्द हो गया। तुम अपने बाजे बन्द कर दो। आज रात को खेल नहीं होगा, कल भी नहीं, परसों भी नहीं, उसके बाद भी नहीं। ग्वाइनप्लेन नहीं है। ग्वाइनप्लेन बिल्कुल चला गया।"

फिर डीया की ओर देखकर बोला, "इसको कितना आघात लगेगा! दीये की बत्ती के समान बुझ जायगी यह।"

उसने कमरे के छोर की खिड़की में बाहर देखा और कहा—

"दिन कितने बढ़ जाते हैं! सात बज गये और अन्धेरा नहीं। तो भी रोशनी करनी चाहिए।"

उसने चकमक से आग जलाकर ग्रीनबाक्स की छत से लटका हुआ

लैम्प जलाया। फिर वह टहलने लगा। आज उसकी मनोदशा विचित्र थी। वह बड़बड़ाने लगा—

"मेरे सारे होशो-हवास दुरुस्त हैं। मेरी राय है कि जो कुछ हुआ सो ठीक है। मैं उसे पसन्द करता हूं। जब डीया जगेगी तब मैं सारी बातें उसको समझा दूंगा। अन्त दूर नहीं है। ग्वाइनप्लेन नहीं रहा। विदा, डीया! सारा मामला कितनी अच्छी तरह जमाया गया है! ग्वाइनप्लेन जेल में, डीया कब्रिस्तान में, दोनों के लिए यही ठीक था। डीया अन्धी थी, ग्वाइनप्लेन कुरूप था। ऊपर सर्वशक्तिमान परमात्मा डीया को आंखें देगा और ग्वाइनप्लेन को सुन्दरता। मृत्यु सब मामला सुधार देती है। सब ठीक होगा। वीनस, फ़ीबी! अपने तंबूरे खूंटी पर टांग दो। अब नाटक नहीं होगा बाजे नहीं बजेंगे, 'अन्धकार-संहार' का संहार हो गया। हंस-मुख गुजर गया। डीया सो रही है, यह अच्छा है। यदि मैं डीया होता तो कभी न जागता। राजनीति में दखल देने का यह नतीजा है। कैसी नसीहत मिली! सरकार ने ठीक किया। आशा है, सरायवाले ने दरवाजा बन्द कर दिया होगा। हम लोग आपस में घर के अन्दर शान्तिपूर्वक आज रात को मरनेवाले हैं—मैं नहीं, होमो नहीं; किन्तु डीया। मैं, मैं तो इसी गाड़ी से सफर करता रहूंगा। इन दो औरतों को बरखास्त कर दूंगा। इनमें से एक को भी नहीं रखूंगा। मैं होमो के साथ अपने ढंग से रहूंगा। होमो कितना चकित होगा! ग्वाइनप्लेन कहां है? डीया कहां है? पुराने मित्र, अब हम तुम दोनों फिर से अकेले रहेंगे। मुझे तो प्रसन्नता होती है। उनके प्रेम-प्रलाप मुझे भार-से लगते थे। ग्वाइनप्लेन अब लौटकर नहीं आना। मैं कहता हूं, 'बहुत अच्छा।' और अब डीया की बारी है। उसमें देर नहीं। मैं चाहता हूं, सब खतम हो जायं। उसे मरने से बचाने के लिए मैं उंगली भी नहीं हिलाऊंगा। मैं कहता जो हूं! देखो, वह जगी!"

डीया ने पलकें खोलीं। सोते समय बहुत से अन्धों की पलकें बंद हो जाती हैं। उसके सरल और मधुर मुखमंडल पर उसकी स्वाभाविक प्रफुल्लता चमक रही थी।

डीया ने पुकारा, "फीबी, वीनो, अब तो अभिनय का समय हुआ होगा। मैं सोचती हूं, मैं बहुत देर तक सोई। आओ, मुझे कपड़े पहनाओ!"

फीबी और वीनस अपनी जगह से नहीं हिलीं।

इसी बीच डीया की आंखों की अमिट अंधी दृष्टि उर्सस की दृष्टि से मिली। वह चौंक पड़ा।

वह चिल्ला उठा, "अरे, क्या कर रही हो? वीनस! फीबी! सुनती नहीं, मालकिन क्या कहती हैं? जल्दी! नाटक शुरू होनेवाला है!"

वे दोनों स्त्रियां मूढ़ के समान उर्संस की ओर देखने लगीं।

उर्संस ने चिल्लाकर कहा, "सुनती नहीं हो! दर्शकों के भीतर आने की आवाज़ आ रही है।—फीबी, डीया को पोशाक पहनाओ! वीनस, अपना तंबूरा उठाओ!"

फीबी आज्ञाकारिणी थी। वीनस विनम्र थी। दोनों मिलकर सेवा की साक्षात् मूर्ति थीं। वह अपने मालिक उर्संस को कभी भी पूरी तरह नहीं समझ पाती थीं। इसीसे वे आज्ञापालन में तत्पर रहती थीं। उन्होंने केवल सोच लिया कि यह पागल हो गया है और उनसे जो कुछ कहा जाता था, वे करती जाती थीं। फीबी ने पोशाक बाहर निकाली और वीनस ने तंबूरा।

खेल की तैयारी होने लगी। आज उर्संस ने न जाने क्या सोचा था! वह अपने कौशल में कमाल कर रहा था। और सचमुच उसने कमाल कर दिखाया। सब काम वह इस तरह करता और कराता था मानो ग्वाइनप्लेन वही हो। मानो दर्शक आ गये हों, मानो खेल हो रहा हो। ग्वाइनप्लेन का नाट्य वही कर रहा था। आवाज़ों की नकल करने में वह उस्ताद था। ग्वाइनप्लेन की आवाज़ की उसने इतनी अच्छी नकल की कि वीनस, फीबी, मास्टर निकलस और गोविकम देखते ही रह गये। पर उर्संस का कौशल अप्रतिम था। वह भीड़ की आवाज़ों की नकल करना भी बड़ी अच्छी तरह जानता था। प्रेक्षकों की आवाज़, उनकी खांसी, हँसी और चिल्लाहट, सब ज्यों-की-त्यों। और यह सब नाटक के अभिनय के साथ-साथ। वीनस, फीबी, निकलस और उर्संस का विश्वस्त साथी होमो भी दंग रह गया।

'अंधकार-संहार' बाकायदा शुरू हुआ। भेड़िया और रीछ गुर्राये। दोनों झपटे। इनके नीचे से आदमी के चिल्लाने की आवाज़ आई। प्रार्थना की पुकार उठी। आर्त की पुकार सुनकर वन-देवता के रूप में डीया आई। सब ज्यों-का-त्यों रोज। आदमी की भूमिका ग्वाइनप्लेन करता था। डीया सिर पर हाथ रखकर उसे अपनी अमृतमयी वाणी से अभय देती थी। ग्वाइनप्लेन की भूमिका इस बार उर्संस ने इतनी अच्छी की थी कि उसके तीनों प्रेक्षक स्तब्ध होकर देखते रह गये। हमेशा की तरह मनुष्य के मुक्ति पर प्रकाश हुआ। प्रेक्षकों में से तालियों की गड़गड़ाहट भी आई। और यह सब बिल्कुल पहले की तरह।

उर्संस के व्याख्यान के बाद नाटक समाप्त हो गया। प्रेक्षकों के जाने का भी यथोचित हूबहू नाट्य किया गया। ग्रीनबाक्स के ऐक्टर्स भोजन के लिए इकट्ठे हुए। उर्संस की कलाएं देखकर वीनस और फीबी की ज़बान बन्द हो गई थी। उर्संस को आज बड़ी मेहनत पड़ी। वह पसीने से तर हो गया।

उसने चुपके-से होमो के कान में कहा, "समझा, कुछ समय तक मौका संभालने के लिए यह आवश्यक था। मैं सोचता हूं, हम सफल भी हुए हैं। मैंने अपना काम कुछ बुरी तरह नहीं किया—मैंने, जो कि उतना ही चिंतित हूं, जितना कि कोई और हो सकता है। ग्वाइनप्लेन शायद कल तक आ जाय। डीका को प्रत्यक्ष मार डालना व्यर्थ है। मैं तुझे सब बातें समझा सकता हूं।"

उसने सिर पर से टोपी निकाली और माथे का पसीना पोंछा।

वह मन में बोला, 'मैं गज़ब का बहुरूपिया हूं। आज मैंने कमाल कर दिया! डीया को विश्वास है कि ग्वाइनप्लेन यहीं है।'

डीया ने उर्सस को पुकारकर कहा, "उर्सस, ग्वाइनप्लेन कहां है?"

उर्सस ने चौंक कर पीछे देखा। डीया अभी भी मंच के पीछे लैम्प के नीचे अकेली खड़ी थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, मानो कब्र से निकलकर आई हो।

उसने अनन्त निराशा के स्वर में कहा, "मैं जानती हूं। वह हमें छोड़ गया। वह चला गया। मैं पहले से जानती थी कि उसके पंख हैं।"

और उसने अपनी दृष्टिहीन आंखें आकाश की ओर उठाकर कहा, "मैं कब जाऊंगी?"

२. उलझनें

उर्सस सुन्न हो गया।

वह भ्रम को कायम न रख सका।

क्या इसमें उसकी कला का दोष था? अवश्य ही नहीं। वह फीबी, वीनस को सफलतापूर्वक धोखा दे सका था, जो आंखों से देखती थीं; परंतु डीया हृदय से देखती थी। वह एक शब्द भी न बोल सका। घबराये हुए आदमी की ज़बान पर पहाड़ गिर पड़ता है।

उसने भावों के मिश्रण में अपमान का ही सबसे पहले उदय हुआ देखा। उर्सस इस अन्तिम उपाय में विफल होकर सोचने लगा।

वह बोला, "तब तो मेरी समस्त कला व्यर्थ हुई।" और स्वप्न में खोये हुए व्यक्ति के समान, वह अपनेको दोष देने लगा। "कैसी भयंकर असफलता! मैंने खोये हुए व्यक्ति के नकल का मेल मिलाने में अपनेको बिल्कुल थका डाला। अब क्या किया जाय!"

उसने डीया की ओर देखा। वह चुप थी और पूर्ण रूप से निश्चल खड़ी थी। उसके चेहरे का पीलापन क्षण-क्षण बढ़ता जा रहा था। उसकी दृष्टिहीन आंखें गम्भीर विचार में निमग्न थीं।

सौभाग्य से इसी समय परमात्मा उसकी सहायता के लिए दौड़ आये। उर्संस ने देखा कि दालान में मास्टर निकल्स हाथ में कंदील लिये, उसे बुला रहा है।

मास्टर निकल्स ने उर्संस की नकल के अन्तिम भाग में कोई हिस्सा नहीं लिया था। उस समय किसीने सराय का दरवाज़ा खटखटाया था। मास्टर निकल्स उसे खोलने को गया था। दुबारा खटखटाहट हुई और दुबारा मास्टर निकल्स को जाना पड़ा। उर्संस अपने हजार स्वरवाले भाषणों में निमग्न था। इसलिए उसे मास्टर निकल्स के जाने का पता नहीं चला।

मास्टर निकल्स की नीरव पुकार पर उर्संस नीचे आया।

वह सरायवाले के पास पहुंचा। उर्संस ने होठों पर उंगली लगाई। मास्टर निकल्स ने भी होठों पर उंगली लगाई।

दोनों एक-दूसरे को यह कहते हुए मालूम होते थे कि "हम बातचीत करेंगे, पर हम जबान बंद रखेंगे।"

मास्टर निकल्स ने चुपचाप सराय के नीचे के कमरे का दरवाज़ा खोला। मास्टर निकल्स भीतर गया। उर्संस भीतर गया। वहां इन दोनों के अलावा कोई नहीं था। सड़क की तरफ के सब दरवाज़े और खिड़कियां बंद थीं।

मास्टर निकल्स ने भीतर जाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया, ताकि गोविकम, जो कि ताकझांक में लगा था, भीतर न आने पाये।

मास्टर निकल्स ने कंदील मेज़ पर रख दिया।

कानाफूसी के द्वारा बातचीत शुरू हुई।

"मास्टर उर्संस!"

"मास्टर निकल्स!"

"तुम चाहते थे कि वह बेचारी अंधी समझती रहे कि सब मामला पहले के समान ठीक-ठीक है।"

"मेरे बहुरूपिया होने के खिलाफ तो कोई कानून नहीं है।"

"तुम बहुत चतुर हो!"

"नहीं!"

"तुम गजब करते हो।"

'बिल्कुल नहीं।"

"अब मुझे तुमसे कुछ कहना है। सुनो तो! जब तुम खुद ही पात्रों और दर्शकों का नाट्य कर रहे थे, उस समय किसीने सराय का दरवाज़ा खटखटाया।"

"हां, दो बार।"

"मैं इसे पसंद नहीं करता।"

"मैं भी नहीं।"

"खैर, मैंने जाकर दरवाज़ा खोला।"

"वह कौन था, जिसने खटखटाया था ?"

"सरकस का मालिक। उसने मुझे तुम्हारे पास यह संदेश लेकर भेजा है कि उसने आज सवेरे पुलिसवालों को यहां से जाते देखा है। और वह सरकस का मालिक तुम्हारे साथ अपनी मित्रता साबित करने के लिए पचास पौंड नकद देकर तुमसे, तुम्हारी गाड़ी ग्रीनवाक्स, तुम्हारे दोनों घोड़े, तुम्हारे बाजे और उनको बजानेवाली दोनों औरतें, तुम्हारे नाटक और उसमें गानेवाली अंधी लड़की तथा तुम्हारे भेड़िये और खुद तुमको खरीदना चाहता है।"

उर्संस ने अवज्ञा की हंसी हँसकर कहा, "निकल्स, उस सरकस के मालिक से कहना कि ग्वाइनप्लेन कल वापस आ जायगा।"

सरायवाले ने अंधेरे में कुर्सी पर से कोई चीज़ उठाई और उर्संस की तरफ घूमकर दोनों हाथ बढ़ाकर, एक हाथ में एक लबादा और दूसरे में चमड़े का पट्टा, फेल्ट हैट और जाकट हिलाया और कहा—

"जिसने दूसरी बार आकर दरवाजा खटखटाया वह पुलिस का आदमी था। वह बिना कुछ कहे आया और चला गया, और ये चीज़ें छोड़ गया।"

उर्संस ने ग्वाइनप्लेन का पट्टा, जाकट, हैट और लबादा पहचान लिया।

उर्संस ने हैट के फैल्ट पर हाथ फेरा, लबादे के कपड़े को छुआ। कोट की सरज को देखा और उसे जरा भी संदेह नहीं रह गया कि ये कपड़े किसके हैं। उसने बिना कुछ बोले जल्दी से दरवाज़े की ओर इशारा किया।

मास्टर निकल्स ने तुरन्त दरवाज़ा खोल दिया।

उर्संस सराय के बाहर भागा।

मास्टर निकल्स देखता रहा। उर्संस की बूढ़ी टांगें यथाशक्ति उस ओर दौड़ी जा रही थीं, जिस ओर सवेरे वेपनटेक ग्वाइनप्लेन को ले गया था।

पन्द्रह मिनट बाद उर्संस बेदम होकर उस गली में पहुंचा, जहां पर साउथवर्क जेल का पिछला फाटक था और जिसको वह सवेरे घंटों देखता रहा था।

क्या वह जेल का फाटक खटखटाना चाहता था ? नहीं। ऐसा करना व्यर्थ और विपत्तिजनक था। यह बात तो उसके ध्यान में भी नहीं आई। जो लोग भीतर जाना चाहते हैं उनके लिए जेल नहीं खुलते; वे तो उनके लिए ही खुलते हैं जो कि भीतर से बाहर आना चाहते हैं। उनके दरवाजे

कानून को छोड़ और किसीकी इच्छा से नहीं खुलते। उर्सस इस बात को जानता था। तो फिर वह यहां क्यों आया? देखने के लिए। क्या देखने के लिए? कुछ नहीं। किसे पता। जिस फाटक में से ग्वाइनप्लेन गया था, उसके सामने जाना भी कुछ था।

इसी कारण उर्सस गली में गया, जहां जेल का छोटा फाटक था।

वहां पहुंचते ही घड़ी के घंटे का एक ठोका सुनाई दिया, फिर दूसरा बजा।

"दस!" उसने सोचा, "क्या आधी रात हो गई?"

ठोके बन्द नहीं हुए, और वह यों ही गिनने लगा।

"तीन, चार, पांच।"

फिर वह मन में कहने लगा।

"ये ठोके कितनी देर से बजते हैं और कितने धीरे-धीरे!"

"छः...सात!"

फिर बोला, "आवाज़ कितनी शोकपूर्ण है! आठ...नौ!"

"अरे, यह बिल्कुल स्वाभाविक है। जेल में रहने से घड़ी को भी कष्ट होता है। 'दस!' इसके अलावा, कब्रिस्तान भी है। यह घड़ी जीवितों के लिए घंटा बजाती है और मरे हुओं के लिए अनंतता। 'ग्यारह!' जो स्वतन्त्र नहीं है, उसके लिए घंटा बजाना भी अनन्त का हिसाब बताना है। बारह!"

वह रुका।

"ठीक, आधी रात हो गई।"

घड़ी ने तेरहवां ठोका बजाया।

उर्सस कांप उठा।

"तेरह!"

उसके बाद चौदहवां बजा, फिर पन्द्रहवां।

"इसका क्या मतलब?"

घंटे बजते रहे। उर्सस ध्यान से सुन रहा था।

"यह घड़ी की आवाज़ नहीं है। यह मौत का घण्टा है। तभी तो मैं कहता था कि बारह बजने में कितनी देर लगी। यह घड़ी समय का घंटा नहीं बजाती, मौत का घंटा बजा रही है। अब कौन-सी भयंकर बात होने-वाली है!"

पुराने ज़माने में सब कैदखानों और मठों में एक मौत का घंटा रहता था, जो म्यूटा कहलाता था और शोक के अवसरों पर ही बजता था। यह म्यूटा बहुत धीरे बजता था, मानो वह इस कोशिश में हो कि किसीको सुनाई न दे।

उर्सस उस कोने तक पहुंच गया जहां से छिपकर उसने दिन का जेल के फाटक पर निगाह रखी थी।

घंटा रुक-रुककर बज रहा था।

उसने अंधेरे में जेल के फाटक की ओर देखा। सहसा उस अंधेरी जगह में, जहां पर वह सोचता था कि फाटक है, कुछ लालिमा दिखाई दी। वह लालिमा बढ़ने लगी और बढ़कर प्रकाश बन गई।

उसके बारे में कोई संदेह नहीं रहा। प्रकाश में आकार और कोने दिखाई देने लगे। जेल का फाटक खुला। फाटक से एक आदमी बाहर निकला, उसके हाथ में मशाल थी।

घंटा बजता रहा। उर्सस का ध्यान दो बातों की ओर था। कान घंटों को सुन रहे थे और आंखें मशाल को देख रही थीं। पहला मनुष्य बाहर आते ही फाटक एकाएक चौड़ा खुल गया और उनमें से दो मनुष्य निकले, फिर चौथा निकला। यह वेपनटेक था, वह मशाल के प्रकाश में अच्छी तरह दीख रहा था। उसके हाथ में लोहे का डंडा था।

वेपनटेक के पीछे दो-दो की पंक्ति में बहुत से मनुष्य निकले। वे सब चुप थे और ऐसे तनकर चल रहे थे, मानो चलते-फिरते खंभे हों।

यह अंधकारपूर्ण जलूस पंक्ति बांधकर फाटक से निकल रहा था, मानो वे सब प्रायश्चित्त करने जा रहे हों। सब चुप थे और मातम की-सी गंभीर तथा विनम्र शांति धारण किये थे। सांप इसी सावधानी के साथ अपने बिल में से निकला करता है।

मशाल के प्रकाश में उनकी आकृतियां और भाव भयंकर दीखते थे।

उर्सस ने पहचान लिया कि ये पुलिसवाले वही हैं, जो ग्वाइनप्लेन को सुबह ले गये थे।

इसमें कोई सन्देह नहीं था। ये वही थे। ये अब जेल के बाहर आ रहे थे।

ग्वाइनप्लेन भी बाहर आयेगा। ये उसे भीतर ले गये थे। ये ही उसे बाहर भी लायंगे।

सब बात समझ में आ गई।

उर्सस ने यथाशक्ति दृष्टि जमाकर देखा।

पुलिस की कतार फाटक में से धीरे-धीरे निकल रही थी। घंटा लगातार बज रहा था, मानो पुलिसवालों के कदमों से ताल मिला रहा हो।

जेल के बाहर निकल आने पर यह जुलूस उर्सस की ओर पीठ फेरकर दाहिनी ओर मुड़ा।

फाटक में दूसरी मशाल दिखाई दी। जलूस का अंत हो गया।

यह फाटक, जिस पर मुर्दे की खोपड़ी रखी हुई थी, कब्रिस्तान [illegible]।

वेपनटेक उसमें से अन्दर गया, फिर पीछे के मनुष्य गये और [illegible] से दूसरी मशाल गई। वह जलूस उसके अन्दर जाने से छोटा होता हुआ मालूम होने लगा, जैसे कि बिल के अंदर घुसता हुआ सांप मालूम होता है।

पुलिसवाले फाटक के उस पास के अंधकार में गये। उनके पीछे अरथी गई, फिर फावडेवाला आदमी गया और अन्त में मशाल और पुस्तक लिये पादरी आ गया। इसके बाद फाटक बन्द हो गया।

अब वहां कुछ न रह गया, सिवा इसके कि दीवार पर कुछ धीमा-सा प्रकाश चमक रहा था।

कुछ सरसराहट और बाद में अस्पष्ट आवाजें सुनाई दीं। ये पादरी और कब्र खोदनेवाले की आवाजें थीं—एक कब्र पर बाइबिल के वाक्य पढ़ रहा था और दूसरा मिट्टी के ढेले।

सरसर बन्द हुई, भारी आवाजें बंद हुईं। कुछ हलचल सुनाई दी। मशालें दीखने लगीं। कब्रिस्तान का फाटक खुला और उसमें वेपनटेक आता हुआ झंडा उठाये दिखाई दिया। फिर पुस्तक लिये पादरी आया और फावड़ा लिये कब्र खोदनेवाला। अरथी उठानेवाले भी आये, परन्तु इस समय अरथी नहीं थी।

इसी ढंग से चुपचाप उन सबने सड़क पार की। कब्रिस्तान का फाटक

उर्सस उस कोने तक पहुंच गया जहां से छिपकर उसने दिन का जेल के फाटक पर निगाह रखी थी।

घंटा रुक-रुककर बज रहा था।

उसने अंधेरे में जेल के फाटक की ओर देखा। सहसा उस अंधेरी जगह में, जहां पर वह सोचता था कि फाटक है, कुछ लालिमा दिखाई दी। वह लालिमा बढ़ने लगी और बढ़कर प्रकाश बन गई।

उसके बारे में कोई संदेह नहीं रहा। प्रकाश में आकार और कोने दिखाई देने लगे। जेल का फाटक खुला। फाटक से एक आदमी बाहर निकला, उसके हाथ में मशाल थी।

घंटा बजता रहा। उर्सस का ध्यान दो बातों की ओर था। कान घंटों को सुन रहे थे और आंखें मशाल को देख रही थीं। पहला मनुष्य बाहर आते ही फाटक एकाएक चौड़ा खुल गया और उनमें से दो मनुष्य निकले, फिर चौथा निकला। यह बेपनटेक था, वह मशाल के प्रकाश में अच्छी तरह दीख रहा था। उसके हाथ में लोहे का डंडा था।

बेपनटेक के पीछे दो-दो की पंक्ति में बहुत से मनुष्य निकले। वे सब चुप थे और ऐसे तनकर चल रहे थे, मानो चलते-फिरते खंभे हों।

यह अंधकारपूर्ण जलूस पंक्ति बांधकर फाटक से निकल रहा था, मानो वे सब प्रायश्चित्त करने जा रहे हों। सब चुप थे और मातम की-सी गंभीर तथा विनम्र शांति धारण किये थे। सांप इसी सावधानी के साथ अपने बिल में से निकला करता है।

मशाल के प्रकाश में उनकी आकृतियां और भाव भयंकर दीखते थे।

उर्सस ने पहचान लिया कि ये पुलिसवाले वही हैं, जो ग्वाइनप्लेन को सुबह ले गये थे।

इसमें कोई सन्देह नहीं था। ये वही थे। ये अब जेल के बाहर आ रहे थे।

ग्वाइनप्लेन भी बाहर आयेगा। ये उसे भीतर ले गये थे। ये ही उसे बाहर भी लायंगे।

सब बात समझ में आ गई।

उर्सस ने यथाशक्ति दृष्टि जमाकर देखा।

पुलिस की कतार फाटक में से धीरे-धीरे निकल रही थी। घंटा लगातार बज रहा था, मानो पुलिसवालों के कदमों से ताल मिला रहा हो।

जेल के बाहर निकल आने पर यह जुलूस उर्सस की ओर पीठ फेरकर दाहिनी ओर मुड़ा।

फाटक में दूसरी मशाल दिखाई दी। जलूस का अंत हो गया।

अब वे जिसको अपने साथ ला रहे थे, वह उर्सस को दीखनेवाला था, कैदी—मनुष्य।

उर्सस ने सोचा, अब जल्दी ही ग्वाइनप्लेन के दर्शन होंगे।

वे जिसे ला रहे थे, वह दिखाई दिया।

वह अरथी थी।

चार आदमी काले कपड़े से ढकी हुई अरथी ला रहे थे।

उनके पीछे एक मनुष्य था, जो कंधे पर फावड़ा लिये था।

उनके बाद तीसरी मशाल निकली। उसको पकड़नेवाला हाथ में एक पुस्तक पढ़ता हुआ आ रहा था। शायद वह पादरी था। उसके बाद जलूस समाप्त हुआ।

अरथी भी पुलिस के पीछे-पीछे दाहिनी ओर मुड़ी।

उसी समय जलूस के आगे का मनुष्य रुका।

उर्सस को ताले में चाबी लगने की आवाज़ सुनाई दी।

जेल के दूसरी ओर सड़क से लगी हुई जो दीवार थी, उसमें एक दूसरा दरवाजा मशाल के प्रकाश से चमका और मशाल उसके नीचे से अंदर गई।

यह फाटक, जिस पर मुर्दे की खोपड़ी रखी हुई थी, कब्रिस्तान का था।

वेपनटेक उसमें से अन्दर गया, फिर पीछे के मनुष्य गये और बाद में दूसरी मशाल गई। वह जलूस उसके अन्दर जाने से छोटा होता हुआ मालूम होने लगा, जैसे कि बिल के अदर घुसता हुआ सांप मालूम होता है।

पुलिसवाले फाटक के उस पास के अंधकार में गये। उनके पीछे अरथी गई, फिर फावडेवाला आदमी गया और अन्त में मशाल और पुस्तक लिये पादरी आ गया। इसके बाद फाटक बन्द हो गया।

अब वहां कुछ न रह गया, सिवा इसके कि दीवार पर कुछ धीमा-सा प्रकाश चमक रहा था।

कुछ मरमराहट और बाद में अस्पष्ट आवाज़ें सुनाई दीं। ये पादरी और कब्र खोदनेवाले की आवाज़ें थीं—एक कब्र पर बाइबिल के वाक्य पढ़ रहा था और दूसरा मिट्टी के ढेले।

मरमर बन्द हुई, भारी आवाज़ें बंद हुई। कुछ हलचल सुनाई दी। मशालें दीखने लगीं। कब्रिस्तान का फाटक खुला और उसमें वेपनटेक अपना डंडा ऊंचा उठाये दिखाई दिया। फिर पुस्तक लिये पादरी आया और फावड़ा लिये कब्र खोदनेवाला। अरथी उठानेवाले भी आये, परन्तु इस समय अरथी नहीं थी।

उसी ढंग से चुपचाप उन सबने सड़क पार की। कब्रिस्तान का फाटक

बंद हुआ। जेल का फाटक खुला। उसकी बनावट प्रकाश में चमकने लगी, अन्दर जाने का रास्ता दीखने लगा। जेल की सघन और गहरी रात प्रकट हुई और फिर सारा दृश्य घने अन्धकार में विलीन हो गया।

घंटे की आवाज बंद हो गई। नीरवता छा गई। अन्धकार पर भी मानो जेल का ताला लग गया।

दृश्य विलुप्त, और कुछ नहीं !

भूतों का जलूस दीखकर गायब हो गया।

अनुमान के आधार पर तर्क ऐसी बातें तैयार करता है, जो कि प्रमाण के समान दीखने लगती हैं। ग्वाइनप्लेन गिरफ्तार हुआ था, उसकी गिरफ़्तारी गुप्त रीति से की गई, पुलिस अफसर ने उसके कपड़े वापस कर दिये थे। मौत का घंटा बजाया, एक बात और हो गई, कब्रिस्तान में एक मुर्दा पहुंचाया गया।

उर्सस चिल्ला उठा, "वह मर गया !"

वह एक पत्थर पर बैठ गया।

"मर गया ! उन्होंने मार डाला ! ग्वाइनप्लेन ! मेरा बच्चा ! मेरा बेटा !" और वह फूट-फूटकर रोने लगा।

३. न्याय समदर्शी

जो मुर्दा अभी कब्रिस्तान में पहुंचाया गया था वह हार्डक्वानन का था; परन्तु उर्सस को उसका क्या पता ! वह तो समझा कि वह शव ग्वाइनप्लेन का था। वह फफक-फफककर रोने लगा। रोता रहा, घंटे बीते जा रहे थे।

पौ फटने लगी। ऊपर की पीली साड़ी अपनी धुंधली काली झालर के साथ मैदान पर छा गई। प्रभात के प्रकाश में टैडकास्टर सराय का सामने का हिस्सा दीखने लगा। मास्टर निकल्स सोया नहीं था; क्योंकि कभी-कभी एक ही कारण अनेकों की नींद उड़ा देता है।

विपत्तियां चारों तरफ फैलती हैं। पानी में पत्थर फेंको और देखो, कितनी लहरें उठती हैं !

मास्टर निकल्स को ऐसा मालूम होने लगा मानो उस पर अभियोग लगाया गया हो। यह बहुत दुःखजनक बात है कि ऐसी घटनाएं अपने मकान में हों। मास्टर निकल्स व्याकुल था और भावी विपत्तियों के विचारों से चिन्तित था। उसे अफसोस हुआ कि उसने ऐसे आदमियों को अपने घर में ठहराया। पहले से मालूम होता कि इनके कारण ऐसी विपत्ति आयेगी तो न ठहराता ! पर अब तो प्रश्न यह है कि इनसे कैसे पिंड छूटे ! उर्सस के

साथ तो इक़रारनामा हो चुका है। क्या ही अच्छा हो कि वह स्वयं ही उसे छोड़ने को राजी हो जाय ! इन्हें निकालने के लिए क्या किया जाय !

सहसा सराय का दरवाज़ा खटखटाहट से गूंज उठा।

सरायवाले ने कांपते-कांपते आधी खिड़की खोलकर देखा। देखा और चौंका ! वास्तव में मजिस्ट्रेट आया था। मास्टर निकल्स ने देखा दरवाजे पर पुलिस का दल है। उसके सामने से दो मनुष्य आगे-आगे बढ़े। उनमें से एक कोरम का जस्टिस (न्यायाधीश) था।

मास्टर निकल्स ने उस दिन प्रातःकाल ही कोरम के जस्टिस को देखा था और अब पहचान लिया। उसके साथ का दूसरा मनुष्य वारकिल फ़ीड्रो था। सरायवाले से इन आगन्तुकों की बातचीत हो ही रही थी कि इतने में उर्संस भी वहां आ पहुंचा। उर्संस की सूरत पागलों-जैसी हो रही थी। दूर से ही सराय के द्वार पर पुलिस के सिपाही और न्यायाधीश की मूर्तियों को देखकर उसके पैर ढीले पड़ गये। पर अब तो वह निराशा के क्षेत्र में उतर रहा था। रात के उस अनिष्ट दृश्य ने उसे संसार से एकदम विरक्त बना दिया था। इसलिए वह रुका नहीं। घोर-से-घोर अनिष्ट का सामना करने के लिए अपने दिल को कड़ा बनाकर वह आगे बढ़ा। पास पहुंचने पर उसे न्यायाधीश के ये वाक्य सुनाई दिये—

"साउथवर्क गिरजाघर के आदरणीय पादरियों ने शिकायत की है कि टैरिन्ज्यू फ़ील्ड में भद्दे दंगे हुआ करते हैं। शेरिफ़ ने इस पर कारंवाही कर दी है। आज रात यहां एक भी तमाशगाह नहीं रहेगी। इन सब बेहूदगियों का अन्त होना चाहिए। ये आदरणीय सज्जन, जिन्होंने यहां पधारने की कृपा की है—"

यहां जस्टिस ने रुककर वारकिल फ़ीड्रो का अभिवादन किया। वारकिल फ़ीड्रो ने शान से अभिवादन का उत्तर दिया।

"ये आदरणीय सज्जन, जिन्होंने यहां पधारने की कृपा की है, अभी विंडसर से आये हैं। वे आज्ञा लाये हैं। सम्राज्ञी का कहना है कि 'ये सब साफ कर दिये जायं।'"

उर्संस न्यायाधीश के इन शब्दों को सुन रहा था। पर आशा उसका ध्यान दूसरी तरफ खींचे ले जा रही थी। "ग्वाइनप्लेन को ले जानेवाले लोगों में यह न्यायाधीश भी तो था। यह ग्वाइनप्लेन के विषय में अवश्य जानता होगा। ग्वाइनप्लेन उस जेल में ले जाया गया था, रात को उसी जेल से वह अरथी भी निकली थी। पर वह ग्वाइनप्लेन की ही थी, यह निश्चयपूर्वक कैसे कहा जा सकता है! आशा के आखिरी तिनके को संभालते हुए उर्संस ने जस्टिस को झुककर अभिवादन किया और कहा—

"सरकार, मैं चला जाऊँगा, हम चले जायंगे, सब चले जायंगे। मैं ग्रीनबाक्स, बाजों और उन स्त्रियों को भी बेच दूंगा। किन्तु मेरा एक साथी है, जिसे मैं पीछे नहीं छोड़ सकता—वह ग्वाइनप्लेन है।"

एक आवाज़ आई, "ग्वाइनप्लेन तो मर गया।"

उर्सस को ठंडा दौरा-सा हो गया, जैसा कि बदन पर सांप के चलते समय होता है। वह आवाज़ बारकिल फीड्रो की थी।

अन्तिम किरण भी बुझ गई। सन्देह जाता रहा। ग्वाइनप्लेन मर गया। ऊंचे अफ़सर को मालूम होना ही चाहिए। इस हत्यारे को अवश्य मालूम होगा।

उर्सस ने व्याकुल होकर सिर झुका लिया।

ग्वाइनप्लेन को सजा दी जा चुकी थी—मृत्यु! खुद उसे भी सजा सुनाई जा चुकी थी—निर्वासन। अब सिवा आज्ञा-पालन के कुछ नहीं रहा। वह मानो स्वप्न देख रहा हो।

किसी ने उसकी बाँह का स्पर्श किया। वह कोरम के जस्टिस के साथ का मनुष्य था। उर्सस कांप उठा।

जिस आवाज़ ने कहा था कि "ग्वाइनप्लेन मर गया," उसीने उर्सस के कान में चुपके से कहा, "ये लो, दस गिन्नियां, तुम्हारे एक हितचिन्तक ने भेजी हैं।"

यह कहकर बारकिल फ़ीड्रो ने उर्सस के सामने मेज़ पर एक छोटी-सी थैली रख दी। हमें उस पेटी को नहीं भूल जाना चाहिए, जो कि बारकिल फ़ीड्रो ग्वाइनप्लेन के पास से अपने साथ लाया था।

दो हज़ार में से सिर्फ दस गिन्नियां! बस, इतनी ही गिन्नियां देने का निश्चय बारकिल फ़ीड्रो कर सका। उसकी अन्तरात्मा ने कहा, यह काफी है। यदि ज्यादा दे दे तो वह कहीं का न रहे। उसने एक लार्ड को ढूंढ़ निकालने की मेहनत की थी। खान खोदने पर यह उचित ही था कि पहला माल उसे ही मिले। जो इस कार्य में नीचता देखते हैं वे ठीक हैं; परन्तु यदि उन्हें आश्चर्य हो तो वे गलती पर हैं। बारकिल फ़ीड्रो को धन से प्रेम था, विशेषकर उस धन से, जो कि चुराया हुआ हो। द्वेषी आदमी लोभी होता है। बारकिल फ़ीड्रो दोषों से रहित नहीं था। पाप करने का मतलब यह नहीं है कि पापी में दुर्गुण न हों। शेर पर भी पिस्सू होते हैं।

बारकिल फ़ीड्रो कोरम के जस्टिस की ओर मुड़ा और बोला—

"महाशय, कृपा कर इस मामले को खत्म कीजिये। मैं जल्दी में हूं। सम्राज्ञी की गाड़ी और घोड़े मेरे लिए खड़े हैं।"

कोरम के जस्टिस ने अपनी आंखें उठाईं और मास्टर निकलस पर उन्हें

जमाते हुए कहा—

"मास्टर निकल्स ! इस मामले में तुम भी कम गुनहगार नहीं हो, ये लोग तो घुमक्कड़ हैं। उचक्के हैं। तुम तो इंग्लैंड के क़ानूनों को जानते हो न ! ऐसे लोगों को अपने यहां पनाह देकर तुम कानून की दृष्टि में अपराधी हो। कानून की आज्ञा है कि तुम और तुम्हारा साथी यह लड़का भी क़ैद कर लिये जांय।"

बेचारा मास्टर निकल्स और उसका नौकर गोविकम भी गिरफ़्तार हो गये। टैडकास्टर सराय पर उर्सस को अपने बोरिया-बिस्तर बांधकर चौबीस घंटे के अन्दर लंदन छोड़ने की आज्ञा मिल ही चुकी थी। टैडकास्टर सराय पर उसी दिन ताले पड़ गये। यह है कानून की अवज्ञा का पुरस्कार !

: ७ :

राक्षसी

१. जाग्रति

"और डीया !"

जिस समय टैडकास्टर सराय में (पिछले अध्याय के अन्त में वर्णित) घटनाएं हो रही थीं, उस समय कारलियान लांज में ग्वाइनप्लेन को प्रभात की ओर देखते-देखते ऐसा मालूम हो रहा था कि 'डीया' की पुकार बाहर से आई; परन्तु वास्तव में वह अन्दर से आई थी।

आत्मा का गंभीर कोलाहल किसने नहीं सुना है !

इसके अतिरिक्त प्रभात का उदय हो रहा था। ऊषा एक आवाज है।

यदि सूर्य अंधकार में सोनेवाली अन्तरात्मा को न जगायें तो उसका क्या उपयोग !

प्रकाश और धर्म एक-से हैं।

चाहे ईश्वर को यीशु कहो या प्रेम, कभी-कभी ऐसा समय भी आता है जबकि उसको सर्वश्रेष्ठ भी भूल जाते हैं। हम सबको, साधुओं तक को, उसकी याद दिलानेवाली आवाज की आवश्यकता है, और प्रभात हमें चौकीदार के समान पुकारता है, कर्तव्य करने के लिए अन्तरात्मा पुकारती है, जैसेकि दिन निकलने के पहले मुर्गा बांग देता है।

ग्वाइनप्लेन—हम उसे ग्वाइनप्लेन ही कहते रहेंगे (क्लैनचार्ली लार्ड है, ग्वाइनप्लेन मनुष्य है)—ग्वाइनप्लेन अनुभव करने लगा मानो उसको फिर से जीवन प्राप्त हुआ हो।

कुछ समय के लिए उसका धर्म पंख फैलाकर उड़ गया था।

उसने कहा, "और डीया !"

फिर उसकी नसों में उदारता का संचार होने लगा। स्वच्छ और प्रबल भावना उसके अन्दर उमड़ उठी। सद्विचारों का उद्वेगपूर्ण विस्फोट उस मनुष्य के समान होता है, जो कहीं चाबी खोकर घर आता है और ईमानदारी के साथ अपना ही ताला तोड़ने की कोशिश करता है। वह संब

है, किन्तु सेंध अच्छाई की है। वह चोरी है, किन्तु चोरी बुराई की है।

उसने बार-बार पुकारा, "डीया! डीया! डीया!"

उसने खुद को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि उसका हृदय सबल है और उसने ज़ोर से पूछा, "डीया! तुम कहां हो?"

उसको आश्चर्य हुआ कि किसी ने उत्तर नहीं दिया।

फिर उसने भटकते हुए विचारों के साथ दीवारों और छत की ओर टकटकी लगाये पूछा—

"तुम कहां हो डीया? और मैं कहां हूं?"

उस कमरे में, जोकि उसके लिए पिंजरे के समान था, वह वन्य पशु के समान इधर-उधर टहलने लगा।

"मैं कहां हूं? और तुम? साउथवर्क में। हाय! यह पहला ही समय है जबकि हमारे बीच में अन्तर है। यह अंतर किसने किया? मैं यहां, तू वहां। यह हो नहीं सकता। यह नहीं होगा। उन्होंने यह मेरे साथ क्या कर डाला!" वह रुका।

"मुझसे रानी की चर्चा किसने की? मुझे ऐसी बातों के बारे में क्या मालूम? मैं बदल गया! क्यों? क्योंकि मैं लार्ड हूं। डीया, तुम जानती हो, क्या हो गया है? तुम लेडी बन गई हो। जो कुछ हुआ, वह आश्चर्य-जनक है। इस समय मेरा काम है अपने ठीक मार्ग पर आ जाना। मुझे गलत मार्ग पर कौन ले गया था? एक मनुष्य है, जो मुझसे गूढ़ बातें कह गया है। मुझे उसके शब्द याद हैं—'माई लार्ड, जब एक दरवाज़ा खुलता है तो दूसरा बन्द हो जाता है। जिसको आप पीछे छोड़ आये, वह अब आपका नहीं रहा।' दूसरे शब्दों में यह कि तुम कायर हो। उस तुच्छ मनुष्य ने ये बातें मुझसे उस समय कहीं जबकि मैं पूरी तरह जानने नहीं पाया था। उसने मेरे आश्चर्य के पहले क्षणों से अनुचित लाभ उठाया। उसने मेरा घात किया। वह कहां है? मैं उसे लज्जित करूंगा। वह शैतान के समान मुस्कराते हुए मुझसे बोला था। किन्तु देखो, अब मैं अपने आपे में हूं। यह अच्छी बात है। यदि वे सोचते हैं कि वे इंग्लैंड के पीयर लार्ड क्लनचार्ली के साथ चाहे जो कर सकते हैं तो वे भ्रम में हैं। हां, पीयरेस भी है वह डीया है! रानी! क्या मैं उन्हें मंज़ूर करूंगा? रानी! मेरे लिए क्या चीज़ है? मैंने उसे कभी नहीं देखा। मैं ऐसा लार्ड नहीं, जो गुलाम बनूं। मैं अपने पद पर अबाधित रूप से आरूढ़ होता हूं। क्या वे सोचते हैं कि उन्होंने मुझे व्यर्थ ही बंधन मुक्त किया! उन्होंने मेरा मुंह बांध दिया? बस, डीया! [illegible]! हम साथ-साथ हैं। तुम जो कुछ थे वह मैं था। मैं जो कुछ हूं वह तुम हो। आओ, नहीं तो मैं तुम्हारे पास सीधा आऊंगा—सीधा। मैं बहुत देर

तक रुका रहा। मैं नहीं लौटा, इस पर से वे क्या सोच रहे होंगे ? वह धन। अरे, मैंने वह धन भेजा ! वे तो मुझे चाहते थे। मुझे याद है, वह मनुष्य कहता था कि मैं यह स्थान नहीं छोड़ सकता। हम देखेंगे। आओ। गाड़ी, गाड़ी ! घोड़े जोतो, मैं खुद तलाश करता हूं। नौकर कहां हैं ? मेरे नौकर यहां होने चाहिए, मैं लार्ड हूं। यह मेरा मकान है। चटखनियां खींच लूंगा, ताले तोड़ दूंगा, दरवाज़े फोड़ दूंगा, जो कोई मेरे रास्ते में रुकावट डालेगा, उसे तलवार से छेद दूंगा। देखूं, कौन रोकता है ! मेरी पत्नी है, वह डीया है। मेरा पिता है, वह उर्सस है। मेरा मकान महल है, और मैं उसे उर्सस को देता हूं, मेरा मुकुट है और मैं उसे डीया को देता हूं। अभी, शीघ्र ! डीया, मैं आ रहा हूं। हां-हां, विश्वास रखो ! मैं एक छलांग में पहुंचता हूं !"

और सामने का परदा उठाकर वह वेग के साथ कमरे के बाहर दौड़ा। वह एक सहन में जा पहुंचा।

वह सीधा आगे बढ़ता गया।

उसके सामने एक दूसरा सहन और आ गया। सब दरवाज़े खुले थे।

वह इधर-से-उधर इस कमरे से उस कमरे में, इस रास्ते से उस रास्ते में, बाहर निकलने का मार्ग ढूंढ़ते हुए भटकने लगा।

वह बाहर निकलकर डीया को देखना चाहता था। रास्तों और कोनों, गुप्त दरवाज़ों और चोर-गलियों की भूलभुलैयां उसे चक्कर में डाल रही थीं। वह भागने की चेष्टा करता और भटक जाता था। वह सोचता था—बस, एक दरवाजा और रहा है। जब उसे खोलता तो देखता कि अभी तो अनेक दरवाज़े सामने हैं। एक के बाद दूसरा, लगातार दरवाज़े-पर-दरवाज़े, फिर चौराहा और चारों ओर कमरे-ही-कमरे ! किन्तु एक भी सजीव प्राणी के दर्शन नहीं। जो रास्ता मिल जाता, उसको वह अन्त तक देखता था।

वह बाहर जाने का मार्ग ढूंढ़ रहा था और वह मिलता नहीं था। लक्ष्मी के प्रथम दर्शन के समान विभ्रमकारी वस्तु और कोई नहीं होती। इसके अतिरिक्त यह तो भूल-भुलैया थी। पग-पग पर उसके सामने कोई भव्य वस्तु आ जाती थी, जो उसका मार्ग रोक देती थी और उसे वहां से हटने देना भी नहीं चाहती थी। वह आश्चर्यों के जाल में फंस गया था।

उसने सोचा—यह कितना भयंकर महल है ! वह व्याकुल होकर भटक रहा था। सोच रहा था यह महल है या जेल ! उसने बार-बार रटना शुरू किया, "डीया ! डीया !" मानो वह शब्द भूल-भुलैया में बंधी हुई रस्सी हो, जिसे लगातार पकड़े रहना चाहिए ताकि उसके सहारे वह बाहर निकल सके। बीच-बीच में वह जोर से पुकारता था, "अरे कोई है ?" कोई

उत्तर नहीं मिलता था। कमरों का अन्त नहीं होता था। सब एकान्त, नीरव, शून्य, भव्य और भयंकर था। वह कहानियों में वर्णित जादू का महल-सा मालूम होता था। कमरों में गरम हवा के छिपे हुए नल लगे थे, जिसके कारण वहां गरमी थी, मानो किसी जादूगर ने वैसाख के महीने को पकड़कर कमरे में कैद कर दिया हो। स्थान-स्थान पर अनेक प्रकार की सुगंधियां मालूम होती थीं। कहीं-कहीं तो अदृश्य पुष्पों से मानो सुगंधि का प्रवाह बह रहा था। सब जगह गलीचे थे, वहां कपड़ उतारकर टहलने को जी चाहता था।

ग्वाइनप्लेन ने खिड़कियों में से बाहर देखा। प्रत्येक खिड़की से नया ही दृश्य दीखता था। एक में वसंत ऋतु की प्रभातकालीन ताज़गी से लह-राता हुआ उद्यान था; दूसरी में मूर्तियों से सजा हुआ चौगान था, तीसरी में पहाड़ियों और झीलों का रम्य मैदान था। कहीं नदी थी—वह टेम्स थी; कहीं बड़े-बड़े बुर्ज़ थे—वह विंडसर-महल था।

अभी सवेरा नहीं हुआ था, कहीं कोई चलता-फिरता नज़र नहीं आता था। वह खड़ा होकर सुनने लगा कि कहीं से कोई आवाज़ तो नहीं आती! थोड़ी देर ठहरकर बोला, "अरे, मैं इस स्थान से बाहर जाऊंगा। मैं डीया के पास जाऊंगा। वे मुझे यहां ज़बरदस्ती नहीं रख सकते। जो मेरा रास्ता रोकेगा, उसकी खैर नहीं। वह बड़ा भारी बुर्ज क्या है? यदि वह इस महल का द्वार रक्षक दैत्य हो या भैरव हो तो भी मैं उसे मार दूंगा। यदि सेना होगी तो उसे नष्ट कर दूंगा। डीया! डीया!"

सहसा उसने आवाज़ सुनी, बहुत ही धीमी। वह पानी गिरने की-सी थी। ग्वाइनप्लेन इस समय एक अंधेरे रास्ते में था। उससे कुछ कदम आगे एक परदा पड़ा था। पास पहुंचकर उसने परदा हटाया और भीतर गया। बिना देखे वह कूद पड़ा।

२. फिर सम्मोह

उसने क्या देखा!

एक कमरा, जो अठपहलू था। उसकी छत गुंबददार थी; उसमें खिड़-कियां नहीं थीं, परन्तु रोशनी के लिए ऊंचे रोशनदान थे। दीवारें, छतें और फर्श हलके पीले रंग के संगमरमर के थे। बीच में काले संगमरमर की छतरी बनी थी, जिसमें बल खाये हुए मनोहर खंभे थे और उसके नीचे उसी तरह के काले संगमरमर का स्नान का सुघड़ हौज़ था। हौज़ के बीच में सुहाने और सुगन्धित पानी की पतली-सी धारा ऊपर उछल रही थी, जो धीरे-धीरे और नीरवता से हौज को भर रही थी। हौज़ और ऊपर की

छतरी काले रंग के थे ताकि स्नान करनेवाले का गौरवर्ण और भी चमक उठे।

इसी पानी की आवाज़ उसने सुनी थी। हौज़ में ऊपर की ओर एक नल लगा था, जिससे पानी छलकने न पाये और उसके ज़रिये बह जाये। पानी में से भाप उठ रही थी, परन्तु वह इतनी हलकी थी कि संगमरमर पर जमने नहीं पाती थी। पानी की पतली धार इतनी नाज़ुक थी कि वह हवा के ज़रा-से झोंके से कांप जाती थी। वहां सिवा एक कुर्सीदार शैया के कोई सामान नहीं था, जिस पर मुलायम तकिये लगे थे। वह इतनी लम्बी थी कि उसपर एक स्त्री पैर फैलाकर सो सकती थी और फिर भी उसके चरणों के पास एक कुत्ते के बैठने लायक स्थान रह जाता। वह शैया स्पेनिश ढंग की थी, और उसमें लकड़ी के बजाय चांदी लगी थी। तकिये और चादरें बहुमूल्य सफेद रेशम की थीं।

हौज़ की दूसरी ओर दीवार से लगी हुई शृंगार की ऊंची मेज थी। वह चांदी की थी। उसपर शृंगार के समस्त उपकरण सजे थे। उसके बीच में खिड़कियों की नकल पर छोटे-छोटे आठ दर्पण लगे थे, जिनमें चांदी के चौखटे थे। दीवार में एक जगह एक छोटा-सा झरोखा था, जो चांदी की किवाड़ों से बन्द था। उसकी चटखनियों पर सुनहला शाही मुकुट खुदा हुआ था। उसके ऊपर दीवार में, सोने का मुलम्मा चढ़ी हुई चांदी की घंटी लगी थी।

जिस द्वार में ग्वाइनप्लेन मूर्तिवत् खड़ा था, उसके सामने दूसरी ओर संगमरमर की दीवार में फर्श से लगाकर छत तक एक खुला हुआ दरवाजा था, जिस पर चांदी के बारीक तारों का बना हुआ चौड़ा परदा पड़ा था। यह परदा पारदर्शी था। उससे देखने में रुकावट नहीं पड़ती थी। इस जाले के बीच में से, जहां पर कि मकड़ी की सम्भावना थी, ग्वाइनप्लेन को एक बड़ी वस्तु दिखाई दी—एक स्त्री। वह केवल एक लम्बी कमीज पहने थी—इतनी लम्बी कि वह उसके पैरों से नीचे लटक रही थी, जैसी कि तस्वीरों में परियों की हुआ करती है; किन्तु वह इतनी पतली थी कि पानी की बूंदों मालूम होती थी।

चांदी का परदा, जो कि कांच के समान पारदर्शक था, छत से लटका आ था और वह एक तरफ हट सकता था। उसके इधर स्नानागार था और उस ओर शयनागार। इस शयनागार में सब जगह सोने के कामदार चौखटेवाले दर्पण जड़े थे, जिनके अन्दर कमरे के बीच की शैया की परछाई अनन्त संख्याओं में हर ओर चमक रही थी। शैया, शृंगार की मेज के समान चांदी की थी। उसपर एक स्त्री लेटी थी। वह नींद में थी।

जगह-जगह सिकुड़न पड़े हुए उसके वस्त्रों से मालूम होता था कि उसको अच्छी तरह नींद नहीं आई थी। वस्त्रों की तहों की सुन्दरता बहुमूल्यता प्रकट कर रही थी।

उस ज़माने में कपड़े उतारकर सोने की प्रथा थी, जो कि इटली से आई थी।

एक विचित्र प्रकार के रेशम का ड्रेसिंग गाउन शय्या के पाये पर पड़ा था। वह चीन का बना मालूम होता था, क्योंकि उसपर कढ़ी हुई एक बड़ा भारी सुनहरी छिपकली का हिस्सा तहों में से चमक रहा था।

शय्या और दरवाज़े के बीच में ज़रा आड़ करते हुए एक बड़ा दर्पण था, जिस पर हंस और मोर चित्रित थे।

ऐसा मालूम होता था, मानो छाया ने इस कमरे में अपना स्वभाव छोड़ दिया हो। वह चमकती थी। दर्पणों और सोने के चौखटों के बीच कांच के महीन तारों की जालियां बुनी हुई थीं।

शय्या के सिरहाने एक डेस्क थी, जो कि सुविधा के अनुसार इधर-उधर हट सकती थी। उसपर मोमबत्तियां और एक खुली हुई पुस्तक थी, जिस पर बड़े-बड़े लाल अक्षरों में लिखा था, 'अलकुरआन।'

ग्वाइनप्लेन ने ये सब चीजें नहीं देखीं। उसकी आंखें उस स्त्री की ओर ही लगी थीं। वह एकदम विमूढ़ हो गया और उसके हृदय में तीव्र विकार उमड़ने लगे। ये दोनों अवस्थाएं एक-दूसरे से बिलकुल विपरीत दीखती हैं, तो भी वे कभी-कभी एक साथ भी रहती हैं। उसने उस स्त्री को पहचान लिया। उसकी आंखें बन्द थीं; परन्तु उसका चेहरा सामने की ओर खुला हुआ था। वह डचेज़ थी, वही अलौकिक शक्ति जिसमें अज्ञात की समस्त भव्यता समाई हुई थी; वही जिसने उसे इतने रहस्यपूर्ण स्वप्न दिखाये थे; वही जिसने उसे वह विचित्र पत्र लिखा था! वही संसार-भर में एकमात्र स्त्री, जिसके बारे में वह कह सकता था कि "उसने मुझे देखा है और वह मुझे चाहती है!"

उसने वे सब स्वप्न अपने मन से निकाल दिये थे। उसने वह पत्र जला दिया था। उसने जहां तक हो सका उसकी स्मृति को अपने विचारों और स्वप्नों में से निकाल बाहर कर दिया था। वह उसे भूल गया था।

अब वह फिर दिखाई दी और इस समय भयंकर प्रभाव के साथ। उसकी सांस रुक-रुककर चलने लगी। उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो वह तूफान में उड़ते हुए बादल पर हो। उसने देखा। वह स्त्री सामने थी। यह सम्भव था! थियेटर में डचेज़, यहां अप्सरा, परी! उसने भागने की चेष्टा की, किन्तु वह हिल तक न सका। उसकी आंखें जम-सी गईं, मानो

किसी ने कील दी हों। क्या वह स्त्री थी! क्या वह कुमारी थी! दोनों।

उसके समस्त सौन्दर्य के ऊपर अगम्यता की प्रभा छा रही थी। कोई भी पवित्रता उसकी शुद्ध और साभिमान आकृति की बराबरी नहीं कर सकती थी। अलज्जता सौन्दर्य में डूबी हुई थी। उसने गर्व और अगम्यता के भाव से कपड़े उतार दिये थे ताकि सब कोई उसका दर्शन करें, दृष्टियां सन्तुष्ट हों, इच्छाएं तृप्त हों, अभिलाषाएं पूर्ण हों, स्वप्न सुखमय हों।

वह रात-भर सोई थी और दिन-चढ़े तक सो रही थी। उसकी अन्धकार में आरम्भ हुई ढिठाई प्रकाश में भी उपस्थित थी।

ग्वाइनप्लेन कांप उठा! वह उसपर बुरी तरह मुग्ध था। उसकी मुग्धता भय में परिणत हो रही थी। विपत्ति अकेली नहीं आती। ग्वाइनप्लेन ने सोचा था कि उसके दुर्भाग्य का प्याला बिल्कुल खाली हो चुका है। परन्तु वह अब फिर से भर गया। वह कौन था, जो उसके भक्तिपूर्ण सिर पर निरन्तर वज्र-प्रहार कर रहा था, और अब इस सोती हुई देवी को सामने ले आया था? क्या उसके स्वप्न की भयंकर और प्यारी भावना लगातार स्वर्ग के इन निरंतर दृश्यों के पीछे-पीछे छिपी हुई थी? इस रहस्यमयी मोहिनी की कृपाएं उसको गूढ़ महत्वाकांक्षाओं और विचारों की स्फूर्ति दे रही थीं और प्रकट असंभाव्य से उत्पन्न होनेवाली वास्तविकताओं की उन्मादिनी शृंखला से उसे खींच रही थी। वह तुच्छ था, फिर भला ये समस्त रहस्य उसके विरुद्ध षड्यंत्र क्यों कर रहे थे! सौभाग्य की इन अनिष्ट मुस्कराहटों का उसपर क्या परिणाम होगा!

क्या यह मोह-जाल पहले से ही तैयार था? यह स्त्री यहां कैसे और क्यों आई? कोई उत्तर नहीं। क्या वह विशेषतः इस इचेज के लिए ही इंग्लैंड का लार्ड बनाया गया? दोनों को यहां लाकर किसने मिलाया? किसने धोखा दिया? किसने धोखा खाया? किसका बलिदान हुआ? किसकी सरलता से अनुचित लाभ उठाया गया? क्या वह ईश्वर है, जिसे धोखा दिया जा रहा है? इस प्रकार के अनिश्चित विचार अन्धकारपूर्ण छायाओं के समान उसके मस्तक में इधर उधर मंडरा रहे थे। क्या वह जादू-भरा और घातक स्थान, वह विचित्र और जेल समान महल भी उस षड्यंत्र में सम्मिलित था? ग्वाइनप्लेन आधा मूर्च्छित हो गया। दबे हुए मनोविकारों से उसका गला घुटने लगा। कोई भार उसे दबाये डाल रहा था। उसकी शक्ति नष्ट हो गई। वह कैसे रुके! वह अस्तव्यस्त और मंत्र-मुग्ध था। इस समय तो वह अनुभव करने लगा कि वह असाध्य पागल हो चला है। वह अचेतना के अंधकारपूर्ण गहरे गड्ढे में गिरा जा रहा था।

किन्तु वह स्त्री सो रही थी।

तूफान जिस बात से ज़ोर पकड़ रहा था वह यह थी कि उसने राजकुमारी नहीं देखी, डचेज नहीं देखी, महिला नहीं देखी, किन्तु स्त्री देखी।

ग्वाइनप्लेन नितान्त विवश होकर कांपने लगा। इस सम्मोहन के विरुद्ध वह क्या करे! यहां वस्त्रों की शृंगारमयी रचना नहीं थी, रेशम की सजावट नहीं थी, रसिकता की वेश-भूषा नहीं थी, कोई दुराव या आविर्भाव की मोहिनी नहीं थी, कोई बादल नहीं था। भयंकर सादगी थी—रहस्यमयी पुकार थी—धृष्टता थी। मानव-स्वभाव का समस्त अंधकारपूर्ण पहलू था। मानवीय और दैवी दोनों का समीकरण था। चकित कर देनेवाला आनन्द उमड़कर धर्म पर प्रकृति को पाशविक विजय दिला रहा था। सुन्दरता की ऐश्वर्यमयी आकृति प्रभुतापूर्ण होती है। जब वह आदर्श से उतरकर वास्तविकता धारण करती है तब उसकी सन्निकटता मनुष्य के लिए घातक हो जाती है।

बीच-बीच में डचेज विस्तर पर आहिस्ता से सरक जाती थी, जैसे आकाश में बादल विचित्र रूप से अपना वाष्पमय स्वरूप बदलते हुए सरकते हैं। यह बात मूर्खतापूर्ण मालूम होगी; परन्तु यह सच है कि यद्यपि वह सशरीर उसके सामने थी तो भी वह मायामयी दीखती थी और यद्यपि वह बिल्कुल निकट थी तो भी बहुत दूर मालूम होती थी। भय और घबराहट के साथ वह देखता रहा। उसने उसकी सांस सुनी और कल्पना की कि यह किसी प्रेत की सांस है। वह खिंचा, अपनी इच्छा के विरुद्ध। वह किस प्रकार उस स्त्री के या स्वयं अपने विरुद्ध अपनी रक्षा करे! वह इस खतरे के सिवा सबका मुकाबला करने को तैयार था। वह सोचता था कि दरवाज़े पर किसी क्रूर दैत्य से मुकाबला पड़ेगा, परन्तु उसे मिली सोई हुई स्त्री। कैसा शत्रु! उसने आंखें मींच लीं। अत्यन्त उज्ज्वल प्रभात भी आंखों को चौंधिया देता है।

'भागो!' कहना आसान है, करना मुश्किल। वह कोशिश कर चुका है और असफल हुआ। वह जमीन पर मानो जम गया था। जब हम पीछे हटना चाहते हैं तो लोभ हमारे पैर पकड़ लेता है और उन्हें ज़मीन से चिपका देता है। हम आगे बढ़ सकते हैं, किन्तु पीछे नहीं हट सकते। पाप के अदृश्य हाथ नीचे से निकलकर हमें नीचे खींचते हैं।

साधारणतया मनुष्यों का यह खयाल है कि आदत पड़ जाने से कष्ट कम होता है। इससे अधिक गलत और कुछ नहीं। यदि वह सच है तो तुम यह भी कह सकते हो कि घाव पर तेजाब डालते रहने से एक दिन वह अच्छा हो जायगा। सच बात तो यह है जितना कष्ट होगा, उतनी ही पीड़ा बढ़ती जायगी।

एक के बाद दूसरी लगातार आश्चर्यजनक घटनाओं के कारण ग्वाइन-प्लेन व्याकुल हो गया था। उसकी बुद्धि का नाश हो चुका था। वह अपने अंदर भयंकर जागृति का अनुभव करने लगा। उसमें समस्त परिस्थिति को समझने का ज्ञान नहीं रहा। उसके सामने केवल एक विचार था—वह स्त्री। एक अवर्णनीय सुख का उदय हुआ, जिससे वह घबराने लगा। वह कोई निश्चय नहीं कर सका। वहां अदम्य धारा-प्रवाह था और चट्टान थी। चट्टान कगार नहीं थी, किन्तु वह पानी के अंदर छिपा हुआ चुंबक था। वह इस चुंबक से छूटकर दूर जाना चाहता था; परन्तु कैसे छूटे! उसे कहीं कोई सहारा नहीं मिलता था। हम मनुष्य के चित्त की दोलाचल-वृत्ति की कल्पना कर सकते हैं! जहाज़ के समान मनुष्य भी टूटकर डूब सकता है। अन्तरात्मा लंगर है। वह भारी वस्तु है, परंतु लंगर के समान वह भी प्रवाह में वह सकती है।

यह भी अवकाश नहीं था कि उसकी भयंकर कुरूपता के कारण उसका तिरस्कारपूर्वक त्याग किया जाय। इसी स्त्री ने तो लिखा था कि वह उसे प्यार करती है!

प्रत्येक नाजुक प्रसंग में एक क्षण ऐसा आता है जब कि तराजू की डंडी किसी तरफ़ झुकने के पहले जरा हिचकिचाती है। जिस समय हम अपने सद्गुणों का सहारा लेने की अपेक्षा अपने दुर्गुणों की ओर झुकते हैं तो नैतिक बल, जो कि अभी तक समता कायम किये था, टूट जाता है और हम नीचे चले जाते हैं। क्या ग्वाइनप्लेन के जीवन में ऐसा नाजुक प्रसंग आ गया था!

वह कैसे बच सकता था!

हां, तो यह वही है—डचेज़, वही स्त्री! वह अकेली उस कमरे में थी—सोई हुई, सहायकों से दूर, निर्बल, अकेली, और उसके काबू में, तो भी वह स्वयं उस स्त्री के काबू में हो रहा था! डचेज! हमने दूर आकाश में कभी एक सितारा देखा है। हम उसपर मुग्ध हो गए हैं। वह इतनी दूर है! उस निश्चल तारे में ऐसा क्या हो सकता है, जिससे हम कांप उठें? फिर एक दिन, या यों कहिये एक रात, वह चलने लगता है। उसके आस पास कंपित प्रकाश चमकने लगता है। उस सितारे को हम निश्चल समझते थे, अब वह चलने लगा। अब वह सितारा नहीं रहा, पुच्छल तारा हो गया—आकाश का अग्निमय दैत्य! वह चमकता हुआ आगे बढ़ता है, बड़ा होता जाता है, आग और चिनगारियां छिटकाता है और भयंकर हो जाता है। वह हमारी ओर बढ़ता है। अरे बाप रे, वह हमारे ही मार्ग पर है! वह हमें पहचान लेता है, हमारी ओर इशारा करता है, अब तो वह

नहीं हटेगा। आकाश का अदम्य प्रहार! वह क्या है जो हमें दवा रहा है? क्या वह प्रकाश की वाहुल्यता है, जो हमें अंधा वना रही है या जीवन की वाहुल्यता है, जो हमें मारती है? आकाश हमारे सामने जो प्रस्ताव करता है, उसे हम इन्कार कर देते हैं, उस अगाध प्रेम को अस्वीकार कर देते हैं। हम आंखें मीच लेते हैं, हम छिप जाते हैं, हम भाग जाते हैं। हम सोचने लगते हैं कि विपत्ति टल गई। हम आंखें खोलते हैं, वह भीषण सितारा अभी भी हमारे सामने ही है। किन्तु, अव वह सितारा नहीं रहा, अव वह संसार वन गया—अज्ञात संसार, लावा और राख का संसार, आकाश का सर्वसंहारी दैत्य! आसमान के भीतर की चिनगारी, दूर का हीरा, जो कि हमारे निकट आने पर भट्टी वन जाता है। तुम उसकी ज्वालाओं में लिपट जाते हो। तुम्हें जलने के पहले दाह में स्वर्गीय गर्मी मालूम होती है।

३. शैतान

एकाएक वह सोनेवाली जगी। वह सहसा सौंदर्यपूर्ण संचालन के साथ उठ वैठी, उसका रेशम के समान कोमल केश-कलाप अस्त-व्यस्त रीति से विखर रहा था। फिर उसने अंग मरोड़कर जमुहाई ली, जैसी कि शेरनी प्रभात-सूर्य के सामने लिया करती है।

शायद स्वाइनप्लेन की सांस भारी चलने लगी। सांस रोकने का प्रयत्न करते समय ऐसा ही हुआ करता है।

उस स्त्री ने कहा, "कोई है?"

यह वोलते हुए उसने जमुहाई ली। उसकी जमुहाई भी सौंदर्यपूर्ण थी। स्वाइनप्लेन ने उसकी अपरिचित आवाज़ सुनी—मांत्रिक की आवाज़। उसका स्वर चारु रूप से मद-पूर्ण था, उसके स्वाभाविक मद में एक प्रकार की प्रेममयी विनम्रता थी। फिर घुटनों के वल उठकर उसने अपना ड्रेसिंग गाउन अपने पास खींचा और वह शैया पर से कूदकर सीधी खड़ी हो गई। पलक मारते वह रेशमी गाउन उसके शरीर पर छा गया। वांहों ने उसके हाथों को ढांक लिया। उसके पैरों की उंगलियां, जिनमें वच्चों के समान गुलावी नाखून थे, थोड़ी-थोड़ी चमकती हुई दीख रही थीं। उसके घने वाल ड्रेसिंग गाउन के अन्दर दव गये थे, उन्हें उसने खींचकर वाहर निकाल लिया और विस्तर के पीछे से कमरे के उस छोर पर जाकर रंगे हुए दर्पण के पास कान लगाया। यह दर्पण वास्तव में दरवाज़ा था। कांच को उंगलियों से ठोंक कर उसने पुकारा, "कोई है? लार्ड डेविड? क्या तुम आ गये? तो अव पता लगा है? क्या तुम हो वारकिल फीड्रो?" वह दर्पण के पास से

चली आई। "नहीं, वहां कोई नहीं है। क्या कोई स्नानागर में है? बोलो! नहीं, उधर से कोई नहीं आ सकता।"

उसने चांदी के जालीदार परदे के पास जाकर, उसे अपने पैर से उठाया और कंधे से एक ओर हटाकर वह संगमरगर के कमरे में गई। ग्वाइनप्लेन का समस्त शरीर ठंडा पड़ गया। छिप जाने की कोई संभावना नहीं थी। भागने का भी समय नहीं रहा। इसके अतिरिक्त उसमें शक्ति नहीं। वह चाहने लगा कि पृथ्वी फट जाय और वह उसमें समा जाय। किसी तरह वह छिप जाय।

उस स्त्री ने उसे देखा। वह चकित होकर आँख फाड़कर देखने लगी, किन्तु ज़रा भी घबराई नहीं। फिर आनन्द और तिरस्कार-मिश्रित में उसने कहा, "अरे, यह तो ग्वाइनप्लेन है!" सहसा तेज़ी से उछलकर वह उसके गले से लिपट गई।

फिर वह एकाएक उसके दोनों कंधे पकड़कर उसके सामने खड़ी हो गई और विचित्र तरह से उसकी ओर ताकने लगी।

उसकी दृष्टि स्पष्ट और भयंकर थी। ग्वाइनप्लेन नीली आंख और काली आंख को ताकता रहा। उनमें चमकती हुई स्वर्ग और नरक दोनों की किरणों को अपने ऊपर पड़ते देख वह व्याकुल हो उठा! वह स्त्री और वह पुरुष एक दूसरे पर चकित करनेवाला और दुष्ट प्रभाव डाल रहे थे। दोनों मुग्ध थे; एक तो सौंदर्य पर और दूसरी कुरूपता पर। दोनों घबराये हुए-से थे। ग्वाइनप्लेन मानो किसी भार से दबा जा रहा था। उसमें बोलने की शक्ति नहीं थी।

वह बोली, "अहा! तुम कितने चतुर हो! तुम आ गये! तुमने पता लगा लिया कि मुझे लंदन छोड़ना पड़ा है। तुम मेरे पीछे पीछे आये। यह ठीक हुआ। तुम्हारा आना सिद्ध करता है कि तुम आश्चर्यजनक हो!"

सहसा बुद्धि के ठिकाने आजाने से बिजली का-सा धक्का लगता है। ग्वाइनप्लेन को अस्पष्ट रूप से प्रखर, किन्तु सच्चे संदेह की चेतावनी मिल रही थी, इसलिए वह पीछे हटा; किन्तु कोमल गुलाबी उंगलियां उसके कंधों को पकड़कर उसे रोके हुए थीं। कोई अदृश्य शक्ति उसपर अधिकार जमाये थी। वह स्वयं हिंस्र पशु के समान था और दूसरे हिंस्र पशु की मांद में फंस गया। वह बोली, "मूर्ख ऐन!—तुम जानते हो, मैं किसके बारे में कहती हूं? रानी ने बिना कारण बताये मुझे विंडसर आने की आज्ञा दी। जब मैं यहां पहुंची, उस समय वह अपने मूर्ख चांसलर के साथ एकांत में बातचीत कर रही थी। किन्तु मेरे पास तक तुम कैसे पहुंचे? मैं इसीको पुरुष होना कहती हूं। बाधाएं! वास्तव में बाधा नाम की कोई वस्तु नहीं है। तुम

बुलाते ही आये। तुमने सब पता लगा लिया। मेरा ख़याल है मेरा नाम ड्चेज़ जोशियाना तुम्हें मालूम है। तुम्हें अन्दर कौन लाया भला ? निःसंदेह पार्षद लाया होगा। अहा, वह चतुर है ! उसे सौ गिन्नियां दूंगी। तुम किस मार्ग से अंदर आये ? बोलो ! अच्छा मत बताओ, मैं नहीं जानना चाहती। रहस्य खुल जाने से मजा जाता रहता है। मैं तो आश्चर्यजनक को पसंद करती हूं, और तुम्हारी कुरूपता आश्चर्यजनक है। तुम ऊंचे स्वर्ग से नीचे आये हो, या तुम नरक में से शैतान के चोर-दरवाजे से निकलकर आये हो ? इससे अधिक स्वाभाविक और कुछ नहीं हो सकता। छत खुली होगी, फ़र्श फटा होगा। या तो बादलों में से नीचे आये होगे, या आग और धुएं में से ऊपर उठे होगे। तुम्हें देवता के समान प्रवेश करने का अधिकार है। स्वीकार; तुम मेरे प्रेमी हो।"

ग्वाइनप्लेन भयभीत होकर यह सब सुन रहा था, प्रतिक्षण उसका मन डगमगा रहा था। अब तो कोई सन्देह नहीं रहा। वह पत्र ! इस स्त्री ने उसके अर्थ का समर्थन कर दिया।

ड्चेज़ बोली, "क्योंकि तुम यहां हो इसलिए यही होनहार था। मैं और कुछ नहीं पूछती। ऊपर या नरक में कोई-न-कोई है, जिसने हमें एक-दूसरे से मिला दिया है। उसका अबाधित विधान सब क़ानूनों से परे है ! पहले-पहल जब तुम्हें देखा, मैंने कहा, 'बस यही है ! मैं उसे पहचानती हूं। यही मेरे स्वप्नों का दैत्य है। वह मेरा बनेगा। हमें भाग्य को सहायता देनी चाहिए।' इसलिए मैंने तुम्हें लिखा। एक प्रश्न। ग्वाइनप्लेन ! तुम भाग्य में विश्वास करते हो ? मैं तो भाग्य में विश्वास करने लगी हूं। अरे ! मैंने तो ध्यान ही नहीं दिया था। लार्ड के-से कपड़े पहने हो ! तुम और अच्छे कपड़े ! क्यों नहीं ? तुम बहुरूपिया जो हो। ठीक तो है। बाजीगर वैसा ही है जैसा कि लार्ड। इसके अलावा लार्ड क्या है ? विदूषक। तुम्हारी छवि उदात्त है, तुम्हारी रचना भव्य है। तुम्हारा यहां होना आश्चर्यजनक है। तुम कब आये ? तुम यहां कितनी देर से हो ? तुमने मुझे नंगी देखा ? मैं सुंदर हूं। हूं न ? मैं नहाने जा रही थी। मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूं ! तुमने मेरा पत्र पढ़ा ? तुमने खुद पढ़ा, या किसी दूसरे ने पढ़कर सुनाया ? तुम पढ़ सकते हो ? शायद तुम पढ़ना-लिखना नहीं जानते। मैं प्रश्न पूछती हूं, किन्तु उत्तर मत देना। मुझे तुम्हारी आवाज अच्छी नहीं लगती। वह मधुर है। तुम्हारे समान असाधारण को तो बोलना नहीं, भौंकना चाहिए। तुम सुर और ताल के साथ गाते हो। मुझे इससे घृणा है। तुममें यही एक बात ऐसी है जो मुझे पसन्द नहीं है। बाकी सब बातें भयंकर हैं—भव्य हैं। क्या जन्म से ही तुम्हारे चेहरे पर वह भयंकर हँसी थी ? नहीं ! इसमें

संदेह नहीं कि यह दण्ड का चिह्न है। मैं आशा करती हूं कि तुमने कोई अपराध किया है। आओ, मेरी छाती से लग जाओ!"

वह बिस्तर पर बैठ गई और उसने ग्वाइनप्लेन को अपने पास बिठा लिया। बिना जाने वे एक-दूसरे से सट गये। ग्वाइनप्लेन उसके शाब्दिक बवंडर का कुछ भी मतलब नहीं समझा। जोशियाना की आंखें मुग्धता से पूर्ण थीं। वह शीघ्रतापूर्वक आवेश के साथ बोल रही थी, उसका स्वर स्खलित और नम्र था। उसके शब्दों में संगीत था, परन्तु वह संगीत ग्वाइन-प्लेन को झंझावात के समान मालूम होता था। फिर उसने ग्वाइनप्लेन की ओर दृष्टि जमाकर कहना शुरू किया—

"मैं अनुभव करती हूं कि तुम्हारे साथ बैठने से मैं नीचे गिर रही हूं, और अहा! इसमें कितना आनन्द है! महान् होने में कितनी नीरसता है! मैं उच्च वंश की हूं। इससे अधिक जी उबानेवाली बात और क्या हो सकती है! अपमान में सुख है। मैं आदर से इतनी तृप्त हो गई हूं कि मैं तिरस्कार के लिए उत्कंठित हो रही हूं। हम सब कुछ-न-कुछ सनकी रही हैं—वीनस और क्लिओपेट्रा से लगाकर मुझ तक। मैं कहती हूं, मैं तुम्हारा प्रदर्शन करूंगी। यह ऐसा प्रेम-प्रसंग है, जो मेरे वंश स्टूअर्ट्स को आघात पहुंचायेगा। अहा, अब मेरे जी में जी आया। मैंने आविष्कार किया है। अब मैं राजवंश से अलग हो जाऊंगी। उसके बन्धनों से छूटना ही वास्तव में मुक्ति है। तोड़ने, अवहेलना करने, इच्छानुसार बनाने और बिगाड़ देने में ही सच्चा आनन्द है। सुनो, मैं तुम्हें प्यार करती हूं!"

वह रुकी और फिर भयानक मुस्कराहट के साथ बोलने लगी, "मैं तुम्हें प्यार करती हूं; न केवल इसलिए कि तुम बीभत्स हो, किन्तु इसलिए भी कि तुम नीचतम श्रेणी के हो। मैं दैत्यों और भांड़ों को प्यार करती हूं। जिस प्रेमी का तिरस्कार होता है, जिसकी चेष्टा विकृत होती है, जो भद्दा है, कुरूप है, और नाटच मंच पर जिसका मजाक उड़ता है, वह मुझे अत्यन्त प्यारा है। वह तो नरक का स्वाद लेने के समान है। कलंकित प्रेमी, कितनी अच्छी बात है! मेरी इच्छा, स्वर्ग का नहीं, किन्तु नरक का फल चखने की है। उसीकी मुझको भूख है और उसीकी प्यास है। मैं वही ईव हूं, नरक की ईव। सम्भवतः, तुम्हें पता नहीं, तुम शैतान हो। मैं शैतान पर आसक्त हूं। तुम नारकीय आनन्द के अवतार हो। जिस स्वामी की मुझे आवश्यकता है, वह तुम हो। मैं बस तुम्हें ही चाहती हूं। मैं बहुत-सी ऐसी बातें बोल रही हूं, जिनके बारे में शायद तुम कुछ नहीं जानते। ग्वाइनप्लेन, अभी तक मैं बिल्कुल अछूती हूं। मैं उज्ज्वल अग्नि के समान शुद्ध हूं। मैं अपने-आपको तुम्हें अर्पण करती हूं। मालूम होता है, तुम मेरा विश्वास नहीं करते। किन्तु

तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं !'''

उसके शब्द ज्वालामुखी के लावा के समान निकाल रहे थे। ज्वालामुखी माउंट एटना में छेद करो, और तुम्हें जोशियाना की अग्निमयी वाग्धारा का कुछ आभास मिल जायगा।

ग्वाइनप्लेन के मुंह से हकलाते हुए निकल पड़ा, "मैडम—"

उसने ग्वाइनप्लेन के मुंह पर हाथ रख दिया, और कहा, "चुप रहो ! मैं तुम्हारा अध्ययन कर रही हूं। मैं अवाधित निष्कलंक कामना हूं। मैं कुमारी-देवी हूं, और मुझे कोई नहीं जानता। मेरा हृदय पत्थर का है, वह उन विचित्र गोटों के समान है, जिनको कि समुद्र टीज़ नदी के मुहाने पर हंटली नैब नामक चट्टान के नीचे वहाकर पटकता है, और जिनको तोड़ने पर उनके अन्दर से सांप निकलता है। वह सांप मेरा प्रेम है—प्रेम जो कि सर्वशक्तिमान् है, क्योंकि वह तुम्हें मेरे पास ले आया है। हम दोनों के बीच अगम्य अन्तर था। मैं उत्तरी ध्रुव पर थी, तुम दक्षिणी पर। तुमने वह अमित अन्तर पार कर लिया और तुम यहां आ पहुंचे। अच्छा हुआ। चुप रहो ! मुझे ग्रहण करो !"

वह रुकी। ग्वाइनप्लेन कांपा। फिर वह मुस्कराती हुई बोली, "सुनते हो ग्वाइनप्लेन ! स्वप्न देखना निर्माण करना है, इच्छा करना बुलाना है और कल्पना करना वास्तविकता को जगाना है। सर्वशक्तिमान और भयानक अदृष्ट की अवहेलना नहीं की जा सकती। उसका असर होता ही है। तुम यहां हो। क्या जातिच्युत होने का मुझमें साहस है ? हां। मैं तुम्हारी रखेल, तुम्हारी दासी, तुम्हारी सम्पत्ति होने का साहस मुझमें है। आनन्द मे। ग्वाइनप्लेन, मैं स्त्री हूं। स्त्री मिट्टी है, जो कीचड़ होना चाहती है। मैं अपना तिरस्कार करना चाहती हूं। उससे मेरे गर्व को उत्तेजना मिलती है। महानता की महत्ता नीचता के कारण है। हां, उन दोनों के संयोग में ही सम्पूर्णता है। तुम, जो कि तिरस्कृत हो, मेरा तिरस्कार करो। इससे अच्छी बात और कोई नहीं हो सकती। पतन पर पतन ! कितना आनन्द ! मैं कलंक की दूनी बहार लूट रही हूं। मुझे पैर से कुचलो ! उससे मेरा प्यार और भी बढ़ जायगा। मुझे उसका विश्वास है। पता है, मैं तुम्हारी देवता के समान पूजा क्यों करती हूं ? क्योंकि मैं तुम्हें तुच्छ समझती हूं। तुम मुझसे इतने अमित प्रमाण में नीचे हो कि मैं तुम्हें सिर पर बैठाती हूं। उच्चतम और नीचतम गहराइयों को एक साथ मिला दो और प्रलय हो जायगा; और मुझे प्रलय में आनन्द आता है—प्रलय ही प्रत्येक वस्तु का आरम्भ और अन्त है। प्रलय क्या है ? बड़ा भारी धब्बा। उस धब्बे में ... ने संसार बनाया, और उसी धब्बे में यह संसार समा जायगा। ...

मैं कितनी विपरीत हो सकती हूं। तारे को पकड़कर कीचड़ में कुचल दो और मेरी प्रतिमा बन जायगी।"

फिर वह बोली—

"मैं दूसरे सब के लिए हिंसक भेड़िया हूं और तुम्हारे लिए ईमानदार कुत्ता। वे सब कितने विस्मित होंगे! मूर्खों का विस्मय मजेदार होता है। मैं अपनेको अच्छी तरह समझती हूं।

"ग्वाइनप्लेन, हम एक-दूसरे के लिए बनाये गए हैं। तुम बाहर से दैत्य हो और मैं भीतर से। इसीलिए तुम पर मेरा प्यार है। सनक! यही सही। तूफान क्या है सिवा सनक के! हम दोनों के सितारों में आपसी प्रेम है। हम दोनों में रात समाई हुई है—तुम्हारे चेहरे में और मेरे दिल में। जैसे तुम्हारा चेहरा कुरूप है, उसी तरह मेरा मन कुरूप है।

"तुम अपनी ओर से मेरी रचना करते हो। तुम आते हो और मेरी वास्तविक आत्मा प्रकट हो जाती है। मैं इस बात को नहीं जानती थी। यह विचित्र है। मैं देवी हूं, परन्तु तुम्हारे आने से मेरे अन्दर की राक्षसी प्रकट हो गई। तुम मेरे असली स्वभाव को खोल देते हो। देखो, मेरी और तुम्हारी कितनी समानता है! मेरी ओर देखो, मानो मैं दर्पण हूं। तुम्हारा चेहरा मेरा दिल है। मुझे नहीं मालूम था कि मैं इतनी भयंकर हूं। अब तो मैं भी दैत्य हूं। अहा! ग्वाइनप्लेन, मुझे तुमसे आनन्द होता है।"

वह बालक के समान हंसी और अपना मुंह उसके कान के पास लगाकर धीरे-से बोली—

"तुम पागल औरत को देखना चाहते हो? मुझे देख लो।"

उसने ग्वाइनप्लेन पर एक तीखी दृष्टि डाली। दृष्टि में प्रेमामृत रहता है। उसके खिसके हुए ढीले कपड़े हजारों भयंकर भाव उत्पन्न कर रहे थे। ग्वाइनप्लेन के मन में अन्धी उन्मतता उमड़ रही थी—उन्मत्तता, जिसमें यातना भी सम्मिलित थी। उसके शब्द यद्यपि ग्वाइनप्लेन को जलते हुए अंगारों के समान मालूम हो रहे थे तो भी उसका खून नसों के अन्दर जमा जा रहा था। उसमें एक शब्द भी बोलने की शक्ति नहीं रही थी।

वह रुकी और उसकी ओर देखने लगी।

वह चिल्ला उठी, "अहा दैत्य!"

वह उन्मत्त हो गई।

सहसा उसने ग्वाइनप्लेन के हाथ पकड़ लिये।

"ग्वाइनप्लेन, मैं राजसिंहासन हूं और तुम पैर रखने का मोढ़ा हो। हम दोनों बराबरी पर बैठें। मैं अपने पतन से कितनी सुखी हूं! मैं चाहती हूं, सारा संसार जान जाय कि मैं कितनी नीच हो गई हूं। मैं और भी नीचे

झुकूंगी। तुम भद्दे ही नहीं, कुरूप भी हो। भद्देपन में नीचता है, कुरूपता में भव्यता है। भद्दापन सौन्दर्य के पीछे छिपा हुआ शैतान का मुंह चिढ़ाना है; कुरूपता भव्यता की विपरीतता है। वह उसका उलटा पहलू है। तुम्हें प्यार करना भव्यता को समझना है। इस गौरव से मैं प्रसन्न हूं। गौरव का नाप उससे उत्पन्न होनेवाला आश्चर्य है। मैं तुम्हें प्यार करती हूं। मैं रोज़-रोज़ रात को तुम्हारा स्वप्न देखती रही हूं। यह मेरा महल है। तुम मेरे बाग देखना। उनमें झाड़ियों के अन्दर ताज़े झरने हैं; प्रेम-निकुंज हैं और बर्निनी की बनाई हुई संगमरमर की सुन्दर मूर्तियां हैं। फूल! बहुत हैं—वसन्त में सारा स्थान गुलाब के फूलों से दमक उठता है। मैंने तुम्हें बताया है कि रानी मेरी बहन है। तुम मेरे साथ चाहे जो करो। मैं ऐसी हूं कि देवता मेरे चरण चूमें और शैतान मेरे मुंह पर थूकें। तुम्हारा कोई धर्म है? मैं पैपिस्ट हूं। मेरा पिता राजा दूसरा जेम्स फ्रांस में जेसूट्स के बीच मरा। मैंने अब से पहले कभी अनुभव नहीं किया कि मैं तुम्हारे निकट हूं। अहा! मैं कितना चाहती हूं कि सन्ध्या के समय हम-तुम दोनों एक ही तकिये से टिके हुए गल-बाहीं डाले हों, मधुर गायन हो रहा हो, सुनहली नाव हो, समुद्र में मृदुल लहरियां उठ रही हों और आकाश में हलकी-सी लालिमा छाई हो। तुम मेरा अपमान करो, मुझे मारो, ठोकर लगाओ, धक्का दो, पशु समझो! मैं तुम्हारी पूजा करती हूं।"

प्रेमालिंगन गरज सकता है। यदि संदेह हो तो सिंह का आलिंगन देखो। वह स्त्री भयंकर थी तो भी सौन्दर्यपूर्ण थी। उसका असर भी विचित्र था। पहले तो ग्वाइनप्लेन को पैने नाखून मालूम हुए। फिर मखमली पंजा। बिल्ली के समान झपट और दौड़ के साथ आक्रमण हो रहा था। इस खिलवाड़ में मौत भी थी और मजा भी। वह उसकी पूजा करती थी, परन्तु उद्धतता के साथ। परिणाम यह होता था कि ग्वाइनप्लेन को भी जोश चढ़ता था। उसके नाशकारी शब्द एक साथ अवर्णनीय प्रचण्ड और मधुर थे। अपमान के शब्द थे, परन्तु अपमान नहीं था। पूजा हो रही थी, किन्तु पूज्य के प्रति विनीतता नहीं थी।

उसके बाल सिंह के अयाल के समान कांप रहे थे। उसके वस्त्र खुलते और बन्द होते थे। नीली आंख का प्रकाश काली आंख की आग से मिल रहा था। वह अलौकिक दीखती थी।

ग्वाइनप्लेन फिसला और अनुभव करने लगा कि वह इस कूट आक्रमण के सामने हार गया।

वह चिल्ला उठी, "मैं तुम्हें प्यार करती हूं! और उसने ग्वाइनप्लेन को जोर से चूम लिया। एक ऐसी स्त्री का प्यार, जो देख सकती है और

जिसने उसे देखा है। कुरूप मुंह पर देवी होठों का स्पर्श स्वर्गीय और उन्मत्त-कारक था। इस रहस्यमयी स्त्री के सामने उसके मन की अन्य बातें उड़ गईं। डीया की स्मृति अन्धकार में सिसककर छटपटा रही थी।

क्या ग्वाइनप्लेन इस स्त्री को प्यार करता था? क्या पृथ्वी के समान मनुष्य के भी दो ध्रुव होते हैं? क्या हम निश्चित धुरी पर चलनेवाले ग्रह हैं! दूर से देखो तो सितारे और नज़दीक से देखो तो कीचड़, जिसमें बारी-बारी से दिन और रात चक्कर लगाया करते हैं। क्या हृदय के भी दो पहलू होते हैं—एक तो वह जिस पर प्रकाश में प्रेम का प्रवाह होता है। यहां प्रकाशमयी स्त्री का प्रेम और वहां अन्धकारमयी का। देवता आवश्यक हैं। क्या यह संभव है कि दानव भी आवश्यक हों? क्या आत्मा में चमगादड़ के पंख होते हैं? क्या सबके विनाश के ही लिए अंधकार होता है? क्या पाप हमारे भाग्य का आंतरिक और अनिवार्य अंग है? क्या हमें बुराई को एक हिस्सा और अंग मान लेना चाहिए? क्या कर्ज के समान पाप भी हमें उत्तराधिकार में मिलता है? विचार के लिए ये कितने गहन विषय हैं!

तो भी एक आवाज हमें कहती है कि निर्बलता पाप है। ग्वाइनप्लेन के भावों का वर्णन नहीं हो सकता। विकार, जीवन, भय, काम, मदोन्मत्तता और गर्वजन्य लज्जा। क्या वह गिरनेवाला था!

वह फिर बोली, "मैं तुम्हें प्यार करती हूं!" और उसने उन्मत्त होकर अपनी बांहें ग्वाइनप्लेन के गले में डाल दीं। ग्वाइनप्लेन की सांस फूल गई।

सहसा पास ही एक छोटी-सी घंटी बज उठी। वह दीवार के अन्दर की छोटी घंटी थी। डचेज ने अपना सिर घुमाकर कहा—

"वह मुझसे क्या चाहती है?"

खट से वह छोटा-सा दरवाज़ा खुला, जिसकी चांदी की किवाड़ पर सोने का मुकुट बना था। उसमें शाही नीले मखमल का डंका दिखाई दिया और एक सोने की तश्तरी पर एक चिट्ठी नज़र आई। घंटी बजती रही। वह दरवाज़ा ग्वाइनप्लेन और डचेज़ जहां बैठे थे, उससे लगा हुआ था।

झुककर किन्तु ग्वाइनप्लेन के गले में बांह डाले उसने तश्तरी पर से चिट्ठी उठा ली और दरवाज़े को छुआ। दरवाज़ा बन्द हो गया और घंटी का बजना भी बन्द हो गया।

डचेज़ ने मुहर तोड़ी और लिफ़ाफ़ा खोलकर उसमें से दो पत्र निकाले और उन्हें ग्वाइनप्लेन के पैरों के पास ज़मीन पर फेंक दिया। टूटी हुई मुहर की छाप अभी भी साफ दीखती थी। ग्वाइनप्लेन ने दस्तखत के 'ए'

पर शाही मुकुट की छाप पहचान ली। फटा हुआ लिफाफा सामने पड़ा था, उसपर उसने पढ़ा, "सेवा में श्रीमती डचेज जोशियाना।" लिफाफे में दो पत्र थे, एक छोटा और दूसरा बड़ा। बड़े पर हरे मोम की मुहर लगी थी। यह इंग्लैंड की रानी की मुहर थी।

डचेज़ का वक्षःस्थल विकंपित हो रहा था और उसकी आंखें उन्मत्तता से तरल हो रही थीं। उसके चेहरे पर थोड़ा-सा असंतोष का भाव छा गया।

वह बोली, "अरे! यह क्या भेजा है! बहुत से कागजात! यह क्या बेहूदगी है!"

उसने बड़े पत्र को अलग करके छोटे को खोला।

"यह उसीकी लिखावट है। यह मेरी बहन के अक्षर हैं। मुझे उससे बड़ी चिढ़ है। ग्वाइनप्लेन, मैंने तुमसे पूछा था कि तुम पढ़ना जानते हो या नहीं। जानते हो?

ग्वाइनप्लेन ने 'हां' कहने के लिए सिर हिलाया।

वह पैर फैलाकर बिस्तर पर लेट गई और उसने विचित्र लज्जा-भाव दिखाते हुए अपने हाथ और पैर कपड़ों के अंदर कर लिये और ग्वाइनप्लेन को छोटा पत्र देकर वह मदभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी।

"हां, तुम मेरे हो! प्यारे, अपना काम शुरू करो! पढ़कर सुनाओ, रानी क्या लिखती है।"

ग्वाइनप्लेन ने पत्र लिया, उसको खोला और अनेक विकारों से कांपती हुई आवाज़ से पढ़ना शुरू किया, "मैडम, हम प्रसन्नतापूर्वक आपके पास हमारे विश्वसनीय और प्रिय विलियम काउपर, लार्ड चांसलर ऑव इंग्लैंड के दस्तखत और मुहर की रिपोर्ट की एक नकल भेजते हैं, जो यह अत्यन्त महत्व की सच्ची बात प्रकट करती है कि लीनस लार्ड क्लैनचार्ली के जायज पुत्र का अभी पता लगा है और वह पहचान लिया गया है, उसका नाम ग्वाइनप्लेन है। वह भांड़ों और बहुरूपियों के बीच नीचतम श्रेणी का आवारागर्दी का जीवन बिता रहा था। वह बचपन से ही इस गलत अवस्था में पड़ गया था। इस देश के कानून और उसके वंशानुगत अधिकारों के अनुसार लार्ड लीनस का पुत्र लार्ड फरमेन क्लैनचार्ली आज हाउस ऑव लार्ड्स में दाखिल होकर अपने पद पर स्थापित किया जायगा। इसलिए तुम्हारे हित का ध्यान करते हुए, और तुम्हारे उपयोग के लिए हंकरवील के लार्ड क्लैनचार्ली की रियासत और जायदाद तुम्हें प्राप्त कराने की इच्छा से हम लार्ड डेविड डिरीमोयर के स्थान पर ग्वाइनप्लेन को स्थापित करते हैं और सिफारिश करते हैं कि आप उनपर कृपा करेंगी। हमने लार्ड फरमैन

को कारलियान लॉज में पहुंचा दिया है। हम आपकी वहन और रानी की हैसियत से चाहती हैं और आज्ञा देती हैं कि वह फरमैन लार्ड क्लैनचार्ली, जो अभीतक ग्वाइनप्लेन कहलाता था, आपका पति होगा और आपको उससे विवाह करना होगा। हमारी यही मर्जी है।" पढ़ते समय ग्वाइनप्लेन का स्वर कांप रहा था और प्रायः प्रत्येक शब्द पर वदलता जाता था। डचेज विस्तर से कुछ उठकर वड़े ध्यान से सुन रही थी।

उसने फर्श पर फेंका हुआ वड़ा पत्र भी उठाया और उसको मन में जल्दी-जल्दी पढ़ा। वह साउथवर्क के शेरिफ और लार्डचांसलर के दस्तखत की रिपोर्ट थी, जिसमें मैंटुटिना के यात्रियों का वक्तव्य था।

उसने रिपोर्ट देख लेने के वाद रानी का पत्र फिर से पढ़ा और कहा, "ऐसा ही होगा!" और जिस मार्ग से ग्वाइनप्लेन आया था, उधर चुपचाप उंगली दिखाते हुए वह वोली, "चले जाओ!"

ग्वाइनप्लेन सन्न हो गया और अचल खड़ा रहा। उस स्त्री ने कड़े स्वर में कहा, "चूंकि तुम मेरे पति हो, यहां से चले जाओ!" ग्वाइनप्लेन चुपचाप, मुजरिम के समान आंख नीची किये, स्थिर खड़ा रहा। वह फिर वोली, "तुम्हें यहां रहने का कोई अधिकार नहीं है। यह मेरे प्रेमी का स्थान है।" ग्वाइनप्लेन मानो वहां जम गया हो। वह वोली, "अच्छी वात है; मुझे ही जाना चाहिए। तो तुम मेरे पति हो। इससे अच्छा और कुछ नहीं हो सकता। मैं तुमसे घृणा करती हूं।" वह उठी और गर्वपूर्वक विदा का भाव प्रकट करती हुई कमरे के वाहर चली गई। दरवाजे का परदा उसके पीछे गिर पड़ा।

४. दोनों पति हैं!

ग्वाइनप्लेन अकेला था—अकेला स्नानागार और खाली विस्तर के सामने। उसके मन की अव्यवस्था इस समय वेहद वढ़ गई थी। उसके विचार विचारों के समान नहीं रहे थे। वे इधर-उधर पागलों के समान भागे जा रहे थे। आंतरिक कष्ट का विस्मय से युद्ध हो रहा था। वह अनुभव करने लगा, मानो किसी भयानक दुःस्वप्न से जाग रहा हो। अज्ञात प्रदेश में प्रवेश करना कोई मामूली वात नहीं है।

ग्वाइनप्लेन को जव से डचेज का पत्र मिला था तव से निरन्तर विचित्र घटनाएं उसके सामने आ रही थीं। वे सव एक-दूसरी से अधिक रहस्यपूर्ण मालूम होती थीं। अभी तक यद्यपि वह स्वप्न में था तो भी उसको सव वातें साफ-साफ दीखती थीं। अव विल्कुल अंधकार हो गया। अव उसे अपना मार्ग टटोलना पड़ा। उसके विचार वन्द हो गये, स्वप्न भी जाते रहे। वह

शक्तिहीन हो गया। वह डचेज़ के खाली बिस्तर पर गिर पड़ा।

एकाएक उसने पैरों की आहट सुनी। मनुष्य की-सी मालूम होती थी। जिस मार्ग से डचेज़ गई थी, उसके सामने के मार्ग से वह आवाज़ आ रही थी। वह मनुष्य निकट आ रहा था और उसके पैरों की आहट यद्यपि मख-मली फर्श पर चलने के कारण धीमी थी, किन्तु स्पष्ट सुनाई देती थी। ग्वाइन-प्लेन अन्यमनस्क हो रहा था, तो भी ध्यान से सुनने लगा।

सहसा चांदी के जालीदार परदे के पीछे, जो डचेज़ के जाने से कुछ खुला रह गया था, एक रंगीन शीशे का दरवाज़ा खुला और पुरुष के आनन्दी स्वर में गाने की तान सुनाई दी और एक मनुष्य भीतर आया। उसकी कमर से तलवार लटक रही थी और वह नौ-सेना के अफसर की वर्दी पहने था। ग्वाइनप्लेन कूदकर सीधा खड़ा हो गया, मानो स्प्रिंग ने उसे उछाल दिया हो। उसने उस मनुष्य को पहचान लिया और उस मनुष्य ने भी उसे पहचान लिया। उनके चकित होठों से एक साथ निकल पड़ा—

"ग्वाइनप्लेन!"

"टॉम-जिम-जैक!"

वह वर्दीवाला मनुष्य ग्वाइनप्लेन की तरफ बढ़ा।

"ग्वाइनप्लेन, तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"और तुम टॉम-जिम-जैक, तुम क्या कर रहे हो?"

"अरे! मैं समझा। जोशियाना! सनकी। बहुरूपिया और दैत्य! दुहरा आकर्षण नहीं रोका जा सकता था। तुम यहां भेष बदलकर आये हो, क्यों ग्वाइनप्लेन?

"और तुम भी, क्यों टॉम-जिम-जैक?"

"ग्वाइनप्लेन, इस लार्ड की पोशाक का क्या मतलब है?"

"टॉम-जिम-जैक, इस अफसर की वर्दी का क्या मतलब है?"

"ग्वाइनप्लेन, मैं किसीके प्रश्न का उत्तर नहीं देता।"

"मैं भी नहीं देता, टॉम-जिम-जैक!"

"ग्वाइनप्लेन, मेरा नाम टॉम-जिम-जैक नहीं है।"

"टॉम-जिम-जैक, मेरा नाम ग्वाइनप्लेन नहीं है।"

"ग्वाइनप्लेन, मैं यहां अपने निजी घर में हूं।"

"टॉम-जिम-जैक, मैं यहां अपने निजी घर में हूं।"

"मैं नहीं पसंद करता कि तुम मेरे शब्दों की प्रतिध्वनि करो। तुम मज़ाक करते हो, पर मेरे पास बेंत है। मूर्ख, सारा मजाक भुला दूंगा।"

ग्वाइनप्लेन का चेहरा पीला पड़ गया। फिर भी वह बोला, "तुम स्वयं मूर्ख हो और तुम्हें इस अपमान का मजा चखना होगा।"

"जितना चाहो, उतना तुम्हारे नाटक-घर में, घूंसों से।"

"यहीं पर और तलवारों से।"

"मेरे मित्र-ग्वाइनप्लेन, तलवार सरदारों का हथियार है। तलवार से मैं अपनी बराबरीवाले के ही साथ लड़ सकता हूं। घूंसेबाजी में हम दोनों बराबरी के हैं, तलवार में नहीं। टैडकास्टर सराय में टॉम-जिम-जैक ग्वाइन-प्लेन के साथ घूंसेबाज़ी कर सकता है; किन्तु विंडसर में अवस्था भिन्न है। याद रखो, मैं रीयर ऐडमिरल हूं।"

"और मैं इंग्लैंड का लार्ड हूं।"

जिस मनुष्य को ग्वाइनप्लेन टॉम-जिम-जैक समझे था, वह ज़ोर से हंस पड़ा, "राजा क्यों नहीं? वास्तव में तुम ठीक कहते हो। नट सबका नाट्य करता है।"

"मैं इंग्लैंड का लार्ड हूं और हम अब लड़ेंगे।"

"ग्वाइनप्लेन, मुझे अब चिढ़ आती है। ऐसे मनुष्य से मुंहजोरी न करो, जो कि तुम्हें कोड़े लगवा सकता है। मैं लार्ड डेविड डिरीमोयर हूं।"

"और मैं लार्ड क्लैनचार्ली हूं।"

इसपर लार्ड डेविड ज़ोर से हंस पड़ा।

"बहुत ठीक! ग्वाइनप्लेन लार्ड क्लैनचार्ली है। वास्तव में यह नाम उस मनुष्य का होना ही चाहिए, जिसके साथ कि जोशियाना का विवाह होगा। सुनो! मैं तुम्हें क्षमा करता हूं और तुम जानते हो, क्यों? इसलिए कि हम दोनों एक ही स्त्री को प्यार करते हैं।"

दरवाज़े का परदा उठा और एक आवाज़ ने कहा—

"माई लार्ड्स, आप दोनों पति हैं!"

वे दोनों घूमे।

लार्ड डेविड चिल्ला उठा, "बारकिल फीड्रो!"

वास्तव में वही था। उसने दोनों को झुककर मुस्कराते हुए प्रणाम किया। उससे कुछ कदम पीछे एक सज्जन थे, जिनका चेहरा प्रखर और गंभीर था और हाथ में एक काला डंडा था। यह सज्जन आगे बढ़े और ग्वाइनप्लेन को तीन बार झुककर प्रणाम करने के बाद बोले, "मैं सम्राज्ञी की आज्ञा से आपको ले चलने के लिए आया हूं।"

: ८ :

राजधानी और उसके आस-पास

१. लार्ड-सभा में

जो अदम्य भाग्य, ग्वाइनप्लेन को आगे बढ़ाये लिये जा रहा था, जिसने अभी कुछ घंटों के अन्दर कई विचित्र अवस्थाएं उत्पन्न कर दी थीं और जो उसे विंडसर ले गया था, वह अब उसे वापस लंदन ले आया। मायापूर्ण वास्तविकताएं उसके सामने निरंतर चक्कर लगा रही थीं। वह उनके प्रभाव से बच नहीं सकता था। एक से छूटने पर दूसरी से मुक़ाबला हो जाता था। उसे सांस लेने तक का समय नहीं मिलता था। जिस किसी ने बाजीगर को लगातार गेंदें उछालते और पकड़ते देखा है वह भाग्य के स्वभाव को समझ सकता है। भाग्य भी मनुष्यों के साथ इसी तरह खिलवाड़ करता है।

उसी दिन संध्या को वह हाउस ऑव लार्ड्स में अपने पद पर बाज़ाब्ता प्रतिष्ठित हो गया। छत्तीस घंटे पहले वह एक भिन्न प्रकार के जलूस के साथ साउथवर्क जेल के फाटक के अन्दर घुसा था। अब उसने शान-शौकत के साथ हाउस ऑव लार्ड्स में प्रवेश किया।

नये लार्ड के चेहरे से हाउस ऑव लार्ड्स के अन्दर सनसनी हो जायगी। उसे रोकने का उपाय लार्ड-चांसलर ने कर रखा था। गम्भीर पुरुषों का यह नियम और प्रथा रहती है कि जहां तक हो सके, कोई गड़बड़ न होने पाये। गड़बड़ के प्रति घृणा उनकी गंभीरता का अंश है। इसलिए उसने निश्चित कर दिया था कि हाउस ऑव लार्ड्स में ग्वाइनप्लेन का प्रवेश संध्या के समय कराया जाय और सारी विधियां कमरे के बाहर पूरी कर ली जायं। इसके लिए कानून में काफी इजाज़त है।

इन विधियों के लिए जो लार्ड चुने गये थे वे बूढ़े थे और उन्हें कम दीखता था, ताकि उन्हें भी ग्वाइनप्लेन की असली सूरत का पता न लगे। उसकी बेंच सबसे आगे थी, इसलिए पीछे से कोई उसे देख नहीं सकता था और वे दोनों लार्ड उसके दोनों ओर बैठे हुए थे, इसलिए उधर से भी उसका

चेहरा दीखना कठिन था।

समस्त विधियां समाप्त हुईं। वह राजा के समान अपने सिंहासन पर जा बैठा। अब उसको वहां से कोई नहीं हटा सकता। अब वह राजा नहीं तो राजा की बराबरी का बन गया। कल वह क्या था? भांड़। आज वह क्या है? राजकुमार।

कल कुछ नहीं आज सबकुछ। दैन्य और प्रभुता सहसा सम्मिलित होकर अन्तरात्मा के अंश बन रहे थे। विपत्ति और सम्पत्ति के भूत आत्मा पर अधिकार जमाकर उसे अपनी ओर खींच रहे थे।

बुद्धि, संकल्प और मस्तिष्क का ऐसे दो भाइयों के बीच, दुःखदायी बंटवारा हो रहा था, जोकि आपस में शत्रु थे।

एक ही मनुष्य के अन्दर सम्पत्ति और विपत्ति दोनों का युद्ध हो रहा था।

धीरे-धीरे दूसरे लार्ड आने लगे और हाउस भर चला। सभा में रानी के पति जार्ज ऑव डेनमार्क, ड्यूक ऑव कम्बरलेंड की सालाना आमदनी में एक लाख पौंड की वृद्धि करने के क़ानून पर वोट लिये जानेवाले थे। इसके अतिरिक्त हाउस ऑव कामन्स के भी कुछ कानून रानी की मंजूरी के बाद आखिरी मंजूरी के लिए हाउस ऑव लार्ड्स में पेश होनेवाले थे। ये सब बिल 'राज्य की आवश्यकताओं के लिए' राज्य-कर बढ़ाने के सम्बन्ध में थे। इनमें साबुन, कपड़ा, रोटी, अनाज, शराब वगैरा पर कर बढ़ाने के अलावा एक यह भी था कि पश्चिम से आनेवाले जहाज़ों के माल पर फी-टन छः फ्रैंक टैक्स लिया जाय और पूर्व से आने वालों पर फ़ी टन अठारह फ्रैंक लिये जायं। एक बिल इस आशय का भी था कि सरकार को धन की आवश्यकता है, इसलिए राज्य की प्रजा पर फी-आदमी चार शिलिंग टैक्स लगा दिया जाय और जो शख्स फिर से सरकार के प्रति राजभक्ति की शपथ न ले, उससे दूना टैक्स लिया जाय।

अन्तिम बिल इस आशय का था कि जो मरीज अपने अंतिम संस्कार के लिए एक पौंड पेशगी जमा न कर दे, उसे अस्पताल में भरती न किया जाय।

जो लार्ड सीधे विंडसर से हाउस ऑव लार्ड्स में आये थे, उन्हें नये लार्ड के बारे में सब कुछ मालूम हो चुका था और उनके ज़रिये यह खबर पूरे हाउस में फैल गई थी। ग्वाइनप्लेन के बारे में तरह-तरह की चर्चा होने लगी। कोई आश्चर्य प्रकट करता था, कोई विस्मित था, कोई सशंक था और कोई नाज़ायज़ समझता था।

सभा के बीच कई लोगों के हाथों में एक छपी हुई चिट्ठी पहुंच रही

थी, उसमें यह लिखा था—

"मैडम, यह व्यवस्था भी मुझे पसन्द होगी। अब लार्ड डेविड को मैं अपना प्रेमी बना लूंगी।"

ह० जोशियाना।

सब लोग उत्साह के साथ इस पत्र की चर्चा कर रहे थे!

ग्वाइनप्लेन अपने ध्यान में मग्न था। इसलिए अस्पष्ट कोलाहल के अलावा कोई बात उसे स्पष्टरूप से सुनाई नहीं देती थी।

लार्ड्स-कमिश्नर के आगमन पर सारा शोर शान्त हो गया। रानी ने स्वयं न आकर लार्ड्स-कमिश्नर को भेज दिया था। प्रारंभिक कार्रवाही और बिलों की सूचना उपस्थित करने के बाद रानी के पति के पुरस्कार का विषय पेश हुआ। उस पर पूरी तरह बहस हो चुकी थी, अब मत लेना बाकी था। मत देते समय हर सदस्य को 'हां' या 'नहीं' के अर्थ में 'सन्तुष्ट' या 'असन्तुष्ट' कहना पड़ता था और यदि वह चाहे तो अपने विचार भी प्रकट कर सकता था। ये सब बातें लार्ड-चांसलर ने बिल पेश करके सबको समझा दीं और क्लर्क को मत लेने की आज्ञा दी।

क्लर्क ने रजिस्टर खोलकर क्रमवार लार्डों के नाम पढ़ने शुरू किये। प्रत्येक लार्ड अपना नाम पुकारा जाने पर खड़ा होकर अपनी राय देकर बैठ जाता था।

क्लर्क ने पुकारा—

"माइ लार्ड जॉन, बैरन हर्वे।"

एक बूढ़े लार्ड ने खड़े होकर कहा, "सन्तुष्ट।"

फिर वह बैठ गया।

क्लर्क ने रजिस्टर में लिख लिया।

क्लर्क ने आगे का नाम पुकारा—

"माइ लार्ड फ्रैन्सिस सेमर, बैरन कॉनवे, ऑव किलूलटैग।"

"संतुष्ट।"

"माइ लार्ड जान लेक्सन बैरन गोवर।"

"संतुष्ट।"

"माइ लार्ड हेनिएज फिन्च, बैरन गर्नज़ी।"

"संतुष्ट।"

"माइ लार्ड जॉन, बैरन ग्रेनपील।"

"संतुष्ट।"

"माइ लार्ड चार्ल्स मांटेग, बैरन हैलिफेक्स।"

"सन्तुष्ट।" साथ ही बैरन हैलिफेक्स ने यह भी कहा, "प्रिंस जार्ज को

साम्राज्ञी के पति की हैसियत से एक पुरस्कार मिलता है, डेनमार्क के प्रिंस की हैसियत से एक पुरस्कार मिलता है; कंबरलैंड के ड्यूक की हैसियत से एक पुरस्कार मिलता है; इंग्लैंड और आयरलैंड के लार्ड हाई ऐडमिरल की हैसियत से भी एक पुरस्कार मिलता है; परन्तु कमांडर इन-चीफ की हैसियत से कोई पुरस्कार नहीं मिलता। यह अन्याय और अत्याचार है, जिसे अंग्रेज़ जाति के हित की दृष्टि से हमें दूर कर देना चाहिए।"

साथ ही लार्ड हैलिफ़ैक्स ने ईसाई धर्म की प्रशंसा की, गरीबी की निंदा की और पुरस्कार के पक्ष में मत दिया।

लार्ड हैलिफ़ैक्स बैठ गये। तब क्लर्क ने पुकारा।

"माइ लार्ड क्रिस्टाफ़र, बैरन बर्नार्ड।"

"सन्तुष्ट।"

लार्ड बर्नार्ड को बैठने में ज़रा देरी लगी, क्योंकि वे बहुत बढ़िया कामदार कमरपट्टा लगाये हुए थे, जिसे वे सबकी नज़रों में चमकाना चाहते थे। क्लर्क आगे का नाम पढ़ते हुए ज़रा रुका। उसने अपने चश्मे को संभाला और रजिस्टर पर झुककर सावधानी के साथ मन मे पढ़कर अपना सिर ऊपर उठाया और ज़ोर से कहा।

"माइ लार्ड फरमेन क्लैनचार्ली बैरन क्लैनचार्ली ऑव हंकरवील।"

ग्वाइनप्लेन उठा!

उसने कहा, "असंतुष्ट।"

सब उसकी ओर देखने लगे! ग्वाइनप्लेन खड़ा रहा। मोमबत्तियों के जगमगाते हुए प्रकाश में उसका चेहरा साफ दीख रहा था।

पाठकों को याद होगा कि ग्वाइनप्लेन पराकाष्ठा के समय प्रयत्न करके चेहरे का हँसी का भाव कुछ देर के लिए दबा सकता था। शेर को गाय बना देने में जितनी इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है, उतनी प्रबल इच्छा-शक्ति के प्रभाव से वह चेहरे की भयंकर हँसी को एक क्षण के लिए रोक सका था। एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर हँसी नहीं रही। परन्तु यह प्रयत्न अधिक समय तक नहीं टिक सकता था। अपनी प्रकृति या होनहार के विरुद्ध हमारा बलवा क्षणस्थायी ही हो सकता है। कभी-कभी समुद्र का पानी गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध बगावत करके वाटर-स्प्राउट[1] के रूप में ऊपर उठता है और पर्वत बन जाता है, किन्तु फिर नीचे गिर पड़ता है। इसी तरह

---

[1]समुद्र में तूफान आने पर कभी-कभी पानी का बवंडर उठता है, जिसमें पानी का एक बड़ा भारी स्तंभ-सा कई सौ फुट समुद्र की सतह के ऊपर उठकर इधर-उधर दौड़ने लगता है, उसको वाटर-स्प्राउट कहते हैं।

का प्रयत्न ग्वाइनप्लेन का भी था।

सब चिल्ला उठे, "यह कौन आदमी है ?"

उसके बड़े-बड़े बाल, भीतर धंसे हुए आंखों के काले-काले गड्ढे, उनके अन्दर छिपी हुई आंखों की गहरी दृष्टि और वह सिर जिसकी रेखाओं पर प्रकाश और अन्धकार भयंकर रीति से मिल रहा था, वास्तव में आश्चर्य-जनक थे। वह कल्पना से परे था। उन्होंने उसके बारे में बहुत-कुछ सुन रखा था; परन्तु जो कुछ दिखाई दिया वह आशातीत था। बूढ़े और जवान आश्चर्य से मुंह खोले ग्वाइनप्लेन की ओर देख रहे थे।

एक बूढ़ा, जिसका कि सब लोग आदर करते थे और जिसने बहुत से आदमी और बहुत-सी चीज़ें देखी थीं और जो ड्यूक था, डर के मारे खड़ा हो गया।

वह चिल्ला उठा, "यह क्या हो रहा है ? इस आदमी को यहां कौन लाया ? इसे बाहर निकाल दो !"

और ग्वाइनप्लेन से गुस्से से बोला, "तुम कौन हो ? कहां से आये ?"

ग्वाइनप्लेन ने उत्तर दिया—

"अन्धकार में से।"

यह कह करके उसने अपनी बांहें पकड़कर लार्डों की ओर देखा और कहा, "मैं कौन हूं ? मैं दारिद्रय हूं। माइ लार्ड्स, मैं आपसे कुछ शब्द कहना चाहता हूं !"

सारी सभा कांप उठी। फिर सब चुप हो गये। ग्वाइनप्लेन का बोलना जारी रहा—

"माइ लार्ड्स, आप बड़े आदमी हैं, यह बड़ी अच्छी बात है। हमें विश्वास करना चाहिए कि ईश्वर ने हमें सोच-समझकर ही बड़ा बनाया है। आपके पास शक्ति है, संपत्ति है, ऐश्वर्य है, आपके मस्तिष्क में सदा सूर्य चमकता है। आपमें असीम प्रभुता, दुःख-रहित आनन्द और दूसरों की ओर से पूर्ण निश्चिन्तता है। ठीक है। किन्तु आपके नीचे भी कुछ है, चाहे आपके ऊपर कुछ हो या न हो। माइ लार्ड्स, मैं आपको नई बात सुनाता हूं—'मनुष्यों के अस्तित्व का संदेश'।"

सभाएं बालकों के समान होती हैं। कोई विचित्र घटना उनके लिए हौवे के समान हो जाती है। वे उससे डरते हैं; पर उसमें उन्हें मजा भी आता है।

उस समय ग्वाइनप्लेन एक विचित्र स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था। सभा में व्याख्यान देते समय ऐसा मालूम होता है कि हम श्रोताओं के सिर

पर खड़े हों, मानो आत्माओं के शिखर पर हों, मानो मनुष्यों के हृदय पर हों और वे हमारे पैरों के नीचे स्फुरण कर रहे हों। ग्वाइनप्लेन अब उतना नीचा नहीं रहा जितना कि कल रात को था। सहसा ऊपर उठ जाने से उसे जो घुमनी आ रही थी वह मिट गई और उसे प्रकाश दीखने लगा और जहां अभीतक उसको अन्धकार दीख रहा था, वहां अब कर्तव्य दिखाई देने लगा। उसके चेहरे पर वह महान आभा चमकने लगी जो कर्तव्य से उत्पन्न होती है।

ग्वाइनप्लेन के आस-पास 'वाह वाह !' का शोर होने लगा।

कठोर और अमानुषिक प्रयत्न से वह अपना हँसी का भाव दबाये हुए था।

वह बोल उठा—

"मैं अंधकार में से आया हूं। माइ लार्ड्स ! आप महान् और धनवान हैं। आपका खतरा इसीमें है। आप रात्रि से लाभ उठा रहे हैं; किन्तु साव-धान हो जाइये ! प्रभात सर्वशक्तिमान् है; उससे आपका वश नहीं चलेगा। वह आ रहा है। अजी, आ पहुंचा। उसके अंदर अदम्य प्रकाश का दिव्य झरना है। और ऐसा कौन है, जो उससे उत्पन्न होनेवाले सूर्य को आकाश में चमकने से रोक सके। मैं जिस सूर्य के बारे में बोल रहा हूं, वह अधिकार का सूर्य है। आप स्वत्व हैं। कांपिए ! मकान का असली मालिक दरवाज़ा खटखटानेवाला है। स्वत्व का पिता कौन है ? अवसर। उसका पुत्र कौन है ? अन्याय। अवसर और अन्याय दोनों स्थायी नहीं हैं। दोनों का भविष्य अन्धकारमय है। मैं आपको चेतावनी देने को आया हूं। मैं आपके सुख से जवाब-तलब करने आया हूं। वह आपके पड़ोसी के कष्ट से बनाया गया है। आपके पास सब-कुछ है और वह दूसरों के न-कुछ से निकाला गया है। माइ लार्ड्स ! मुझे आशा नहीं कि जो कुछ मैं कह रहा हूं वह मंजूर होगा। यहां तो मैं हारा हुआ हूं, परन्तु ईश्वर मेरी अपील को ज़रूर मंजूर कर लेगा। मैं तो आवाज हूं। मानव-जाति मुंह है, जिसका मैं चीत्कार हूं। आपको मेरी बात सुननी पड़ेगी। इंग्लैंड के लार्डो, मैं आपके सामने अदा-लत शुरू करता हूं, उस राजा की जो कि प्रजा बना है; उस मुजरिम की जो कि जज बना है। मुझे जो कुछ कहना है, उसके भार से मैं दबा जा रहा हूं। मुझे कुछ नहीं सूझता कि मैं कहां से प्रारम्भ करूं ! मैंने अपनी विस्तृत विपत्तियों के बीच से अनन्त विचार इकट्ठे कर रखे हैं। अब उनका क्या करूं ! मैं उनके बोझ से दबा जा रहा हूं, मैं उन्हें अव्यवस्थित रूप में ही आपके सामने पेश कर रहा हूं। क्या मुझे इस सबका पहले से कुछ पता था ? आप विस्मित हैं। उसी तरह मैं भी विस्मित हूं। कल मैं बहुरूपिया

था; आज लार्ड हूं। गहरी चाल। किसकी ? अज्ञात की। हम सबको डरना चाहिए। माइ लार्ड्स, सारा नीला आकाश आपके लिए है। इस विशाल विश्व में आपको केवल प्रकाश ही दीखता है। मेरी बात मानिये, इसमें अन्धकार भी है। आपके बीच मैं लार्ड फरमैन क्लैनचार्ली कहलाता हूं, परन्तु मेरा असली नाम गरीबी का है—ग्वाइनप्लेन। मैं एक तुच्छ वस्तु हूं, जो उस वस्तु से बनी है, जिससे कि बड़े आदमी बनते हैं। एक राजा की यही मर्जी थी। यही मेरा इतिहास है। आपमें से बहुत से मेरे पिता को जानते हैं। मैं उनको नहीं जानता। आपसे उनका सम्बन्ध राजनियमों के द्वारा था और मुझसे उनका सम्बन्ध अराजकता के द्वारा था। ईश्वर ने जो कुछ किया, वह ठीक था। मैं अतल में फेंक दिया गया। किस उद्देश्य से ? उसकी गहराई का पता लगाने के लिए। मैंने गोता लगाया और मैं सत्य का मोती लेकर आया हूं। मैं बोलता हूं; क्योंकि मैं जानता हूं। माई लार्ड्स, आपको सुनाता हूं। मैंने देखा है, मैंने अनुभव किया है ! ऐ सुखी मनुष्यो, कष्ट केवल शब्द नहीं है ! मैं गरीबों में पला हूं। मुझे ठंड ने अकड़ाया है। मैंने भूख सही है। मैंने अपमान उठाया है। मैंने बीमारियां भोगी हैं। मैंने लज्जा उठाई है। मैं ये सारे कष्ट आपके सामने उगल दूंगा तो उनसे आपके पैर गंदे हो जायंगे और जलने लगेंगे। मैं इस स्थान पर लाये जाने के पहले हिचका था; क्योंकि अन्य स्थानों में दूसरों के प्रति मुझे अपने कर्तव्य का पालन करना है, और मेरा हृदय यहां पर नहीं है। मेरे दिल के अन्दर जो कुछ गुज़रा, उससे आपका कोई सम्बन्ध नहीं है। जब वह आदमी, जिसे आप अशर ऑव दी ब्लैकरॉड कहते हैं, उस औरत की, जिसे कि आप रानी कहते हैं, आज्ञा से मुझे लेने के लिए आया, उस समय एक क्षण के लिए मैंने सोचा कि मैं न जाऊं। किन्तु मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि ईश्वर का छिपा हुआ हाथ मुझे इस स्थान की ओर धकेल रहा है, और मैं चला आया। मैं अनुभव करने लगा कि मुझे आपके बीच में आना ही चाहिए। क्यों ? क्योंकि मैं कल चीथड़े पहने था। परमात्मा ने मुझे भुखमरों के साथ इसलिए मिला दिया था कि मैं अपनी आवाज़ उन लोगों के सामने उठाऊं, जिनका पेट भरा है। अरे, दया करो ! इस नष्ट संसार का आपको कुछ भी पता नहीं है। आप इतने ऊंचे पर हैं कि आप उससे बाहर होते हैं। किन्तु मैं आपको बताऊंगा कि दरअसल वह क्या है। मुझे काफी अनुभव हो चुका है। मैं आपके चरणों के नीचे से निकलकर आ रहा हूं। मैं आपका वज़न बता सकता हूं। ऐ मालिको, आपको मालूम है, आप क्या हैं ? आप जानते हैं, आप क्या कर रहे हैं ? नहीं। ओह ! वह बहुत भयंकर है ! एक रात को, जागे हुए, इस अनन्त सृष्टि में अकेले भटकनेवाले छोटे-से अनाथ बालक

के तौर से मैंने उस अंधकार में, जिसे आप समाज कहते हैं, प्रवेश किया। पहली चीज़ जो मैंने देखी, वह कानून थी गिब्रेट (फांसी) के रूप में; दूसरी चीज़ धन थी, आपका धन ठंड और भूख से मरी हुई स्त्री के रूप में; तीसरी चीज़ भविष्य थी, मरने के लिए परित्यक्त बच्चे के रूप में; चौथी, अच्छाई, सच्चाई और न्याय थी, एक आवारा के रूप में, जिनका एकमात्र साथी और मित्र भेड़िया था।"

यह कहते-कहते ग्वाइनप्लेन का हृदय भर आया और उसका गला रुंध गया, जिससे दुर्भाग्य से उसके चेहरे पर अदम्य हँसी छा गई।

तत्काल उसका संस्कार दूसरों में भी फैल गया। सभा पर घटा छाई हुई थी। उससे बिजली गिर सकती थी; किन्तु घटा के ऊपर हँसी चमकने लगी। सारी सभा हँसी से उन्मत्त हो गई। प्रहसन से अधिक कोई भी बात पसन्द नहीं आती। यह उनकी गम्भीरता का बदला है।

राजाओं का हँसना ईश्वर के हँसने के समान है। उसमें एक प्रकार की क्रूरता रहती है। लार्ड्स खिलवाड़ में लग गये। हँसी-मज़ाक शुरू हो गया। चारों तरफ से तालियां बजने लगीं और ग्वाइनप्लेन का मज़ाक उड़ने लगा। चमकदार किन्तु चोट पहुंचानेवाले ओलों के समान उसपर मज़ाक और तानों की बौछार होने लगी—

"वाह रे बहादुर, ग्वाइनप्लेन!"—"शाबास हँसमुखा!"—"शाबास ग्रीनबाक्स की नाक!"—"टैरिन्ज़ू फ़ील्ड के मुखड़े!" "क्या यहां भी नाटक शुरू होगा!"—"बहुत ठीक! बके जाओ!"—"अच्छा विदूषक आया है!"—"सलाम पतलूनसाहब!"—"माई लार्ड विदूषक, मिज़ाज़ तो ठीक हैं!"—"हां, होने दो व्याख्यान"—"यह इंग्लैंड का लार्ड है!"—"रुको मत!"—"नहीं-नहीं!"—"हां-हां!"

एक बहरे लार्ड ने अपने कान के पास हाथ लगाकर पास के ड्यूक से पूछा—

"इसने किधर वोट दिया?"

"असंतुष्ट।"

"भगवान भला करे! उसका चेहरा ही ऐसा है।"

क्या आप सोचते हैं कि एक बार भीड़ बेकाबू हो जाने पर आप उसे फिर से काबू में ला सकते हैं? सभी सभाएं भीड़ के समान होती हैं। भाषण लगाम है। यदि वह टूटी तो सभा इधर-उधर भागने लगती है और उछल-कूदकर भाषणकर्ता को गिरा देती है। श्रोता स्वभावतः वक्ता को नापसंद करते हैं, किन्तु इस बात को कोई नहीं समझता। स्वभावतः वक्ता लगाम खींचता है, किन्तु यह व्यर्थ है। खैर, सभी वक्ता ऐसा करते हैं और ग्वाइन-

प्लेन ने भी ऐसा ही किया।

उसने एक क्षण उन लोगों की ओर देखा और फिर कहना शुरू किया—

"हां, तो आप दुःखियों का अपमान करते हैं! इंग्लैंड के लार्डो, चुप रहो! न्यायाधीशो, मेरी बातें तो सुनो! मेरी विनती है, दया करो! दया किस पर? दया अपने-आप पर। खतरे में कौन है? स्वयं आप ही। क्या आप नहीं देखते कि आप एक ऐसी तराजू में बैठे हैं, जिसके एक पल्ले में आपकी प्रभुता है और दूसरे में आपकी ज़िम्मेवारी? परमात्मा आपको तोल रहा है। हंसिए नहीं, सोचिये! आपकी अन्तरात्मा की कंपकंपी तराजू का हिलना है, जिसमें कि ईश्वर आपको तौलता है। आत्मा दुष्ट नहीं है। आप दूसरों के ही समान हैं, न तो उनसे अच्छे, न बुरे। आपका विश्वास है कि आप देवता हैं; किन्तु ज़रा बीमार पड़िये और आपको मालूम हो जायेगा कि आपका देवतापन बुखार से कांप रहा है। हम सब एक-दूसरे के समान हैं। मैं ईमानदार आदमियों से निवेदन करता हूं और यहां ऐसे आदमी हैं। मैं बुद्धिमानों से निवेदन करता हूं; ऐसे आदमी यहां हैं। मैं उदार हृदय-वालों से निवेदन करता हूं, ऐसे आदमी यहां हैं। आप पिता हैं, पुत्र हैं, भाई हैं, इसलिए आपका भी हृदय द्रवित हो जाता है। आपमें से, जिसने आज सुबह छोटे बच्चे को नींद से जागते देखा होगा, वह अवश्य ही भला आदमी है। सबके हृदय एक-से होते हैं। मानव-जाति हृदय ही तो है। जो अत्याचार करते हैं और जिनपर अत्याचार होता है, उनके बीच केवल स्थान का अन्तर है। आपके पैर दूसरों के सिरों पर चलते हैं। दोष आपका नहीं, दोष तो समाज की अव्यवस्था का है। यह इमारत ही खराब है, यह टेढ़ी बनी है। एक छत दूसरी को बैठाये देती है। सुनिये, मैं आपको बताता हूं कि क्या करना चाहिए। मैंने अपनी आंखों से देखा है। नीचे कितना अन्धकार है! लोग काली कोठरियों में रहते हैं। उनमें से अनेक ऐसे हैं, जो बिल्कुल निर्दोष हैं! प्रकाश नहीं, हवा नहीं, सदाचार नहीं! वे आशारहित हैं, और तो भी—भय तो यही है—वे किसी प्रतीक्षा में रहते हैं। इन सब कष्टों का ध्यान तो कीजिये। ऐसे भी आदमी हैं, जो मृत्यु के मुख में रहते हैं। ऐसी भी लड़कियां हैं, जिन्हें बारह वर्ष की उम्र से वेश्या बनना पड़ता है और वे बीस वर्ष की उम्र तक बूढ़ी हो जाती हैं। कानून की सख्तियां भयंकर हैं। मैं असंबद्ध बातें कह रहा हूं, मेरे शब्दों को न पकड़िये। जो कुछ मेरे मन में आ रहा है मैं बोल रहा हूं। कल ही मैंने देखा कि एक आदमी बिल्कुल नंगा जंजीरों से बंधा हुआ पड़ा था, उसकी छाती पर पत्थरों का ढेर लगा हुआ था, वह इन कष्टों के मारे मर गया। आपको इन बातों का पता

है ? नहीं। यदि आपको मालूम होता कि क्या हो रहा है तो आप खुश नहीं रहते। आपमें से किसीने टाइन के किनारे बसा हुआ न्यूकैसल शहर देखा है ? वहां खदानों में मजदूर कोयला चबाकर अपने पेट की ज्वाला शान्त करते हैं और इस प्रकार भूख को धोखा देते हैं। देखिये, गरीबी के कारण रिकल चेस्टर शहर की आबादी घटते-घटते अब वहां छोटा-सा गांव रह गया है। मुझे तो नहीं मालूम होता कि डेनमार्क के प्रिंस जार्ज को और भी एक लाख पौंड सालाना की ज़रूरत है। मैं तो यह चाहूंगा कि गरीब मरीज़ों से अंत्येष्टि के खर्च का रुपया पेशगी लिये बिना ही उन्हें अस्पताल में भर्ती किया जाय। रुपया न होने के कारण स्ट्रेटफर्ड का दलदल साफ नहीं हो सकता। लंकाशायर के कारखाने बन्द हो रहे हैं। सब जगह बेकारी बढ़ रही है। आपको मालूम है, हार्लेच के कहार मछलियां न मिलने पर घास खाते हैं ! आप जानते हैं, बर्टन लैजर्स में कोढ़ी टीन की झोंपड़ियों में बन्द रहते हैं और यदि वे बाहर निकलते हैं तो गोलियों से मार दिये जाते हैं ! एलसबरी में, जहां के आपमें से एक लार्ड हैं, गरीबी बेहद बढ़ी हुई है। पेनक्रिज में, जहां के गिरजे को अभी आपने सम्पत्ति दी है और पुजारी को धनवान् बना दिया है, कुलियों के घरों में चारपाइयां नहीं हैं, और वे गड्ढे खोदकर उनमें अपने बच्चों को सुलाते हैं, जिससे झूले की बजाय कब्र में उनका जीवन प्रारम्भ होता है। मैंने यह सब देखा है माई लार्ड्स ! क्या आपको मालूम है जिन टैक्सों के लिए आप वोट देते हैं वे किनसे वसूल किये जाते हैं ? मरते हुओं से। शोक ! आप अपने-आपको धोखा देते हैं। आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं। आप धनवानों का धन बढ़ाने के लिए गरीबों की गरीबी बढ़ा रहे हैं। परन्तु आपको करना चाहिए इससे उलटा। आप मेहनती से छीनकर आलसी को देते हैं; फटे कपड़ेवालों से छीनकर सुसज्जित वस्त्रवालों को देते हैं; भिखारी से छीनकर राजपुत्र को देते हैं ! मेरी नाड़ियों में जनसत्तात्मक रक्त है। मुझे ये सब बातें बुरी लगती हैं। मुझे राजाओं से घृणा है ! स्त्रियां कितनी निर्लज्ज होती हैं ! मैंने एक दुःखदायी बात सुनी है। मैं राजा द्वितीय चार्ल्स से घृणा करता हूं। एक स्त्री से मेरे पिता प्यार करते थे। जिस समय मेरे पिता विदेश में मर रहे थे, उस समय वह स्त्री उस राजा की रखैल बन गई। वेश्या ! द्वितीय चार्ल्स, द्वितीय जेम्स ! बदमाश के बाद गुंडा। राजा के अन्दर है क्या ? कमजोरियां और आवश्यकताओं से भरा हुआ निर्बल और तुच्छ आदमी ! अरे, गरीबों पर दया करो ! तुम राजा के आराम के लिए गरीबों के सिर पर टैक्सों का भार लादते हो। ज़रा अपने बनाये हुए कानूनों को तो देखो ! उन कष्टग्रस्त प्राणियों को तो देखो, जिनको कि तुम कुचल रहे हो। नीचे की ओर देखो !

तुम्हारे पैरों तले क्या है ! अरे बड़ो, कहीं पर छोटे भी हैं। दया करो ! हां दया करो, अपने-आप पर दया करो ! जनता को बहुत कष्ट हो रहा है, जब नीचे का हिस्सा नष्ट हो जाता है तो ऊपर का क़ायम नहीं रह सकता। मृत्यु किसी अंग को नहीं छोड़ती। जब रात आती है तो कोई भी अपने सूर्यप्रकाश का हिस्सा बचाकर नहीं रख सकता। यदि आप अपना स्वार्थ चाहते हैं तो दूसरों का भला कीजिये। डूबते हुए जहाज़ पर कोई भी मुसाफिर लापरवाही नहीं दिखा सकता। ऐसा नहीं हो सकता कि जहाज़ कुछ के लिए तो डूबे और दूसरों के लिए न डूबे। विश्वास रखिये, समुद्र सबको डुबोने के लिए तैयार है !"

सभासदों की हँसी बढ़ती गई और उसका रुकना असम्भव हो गया। उसके भाषण में बहुत-सी ऐसी बकवास थी, जिससे सब सुननेवाले हँसने लगते। बाहर हँसी और अन्दर कष्ट, इससे अधिक अपमानजनक यातना और क्या हो सकती है ! इससे और गहरा दुःख क्या हो सकता है ! उसके शब्दों की दिशा दूसरी थी, और चेहरे की दूसरी। उसकी अवस्था कितनी भयंकर थी !

सहसा उसकी आवाज़ तेज़ हो गई।

"ये कितने खुश हैं ! ठीक है, यहां कष्ट और उपहास आपके सामने है; मौत के खर्राटे का मजाक है। ये सर्वशक्तिमान हैं। शायद ऐसा ही हो। हम भी देखेंगे। देखो, मैं भी इनमें से हूं। किन्तु ए गरीबो, मैं तुम्हारा ही हूं। एक राजा ने मुझे बेचा। एक गरीब ने मुझे आश्रय दिया। किसने मेरा अंग-भंग किया ? एक राजपुत्र ने। किसने मुझे मरहम लगाया और पाला-पोसा ? एक कंगाल ने। मैं लार्ड क्लेंनचार्ली हूं; किन्तु मैं अभी भी ग्वाइनप्लेन हूं ! मेरा स्थान बड़ों के बीच है; किन्तु मैं छोटों का हूं। मैं आनन्द मनानेवालों के बीच हूं; किन्तु पीड़ितों के साथ हूं। अरे, यह समाज-संगठन ही गलत है। एक दिन सत्य का आगमन होगा उसके बाद एक भी लार्ड नहीं रहेगा, सब मनुष्य स्वतंत्र जीवन व्यतीत करेंगे। स्वामी नहीं रहेंगे, पिता रहेंगे। भविष्य ऐसा होगा। प्रणिपात नहीं, दीनता नहीं, अज्ञान नहीं, पशुओं के समान मेहनत करने वाले मनुष्य नहीं, दरबारी नहीं, छैला नहीं, राजा नहीं, किन्तु प्रकाश होगा ! तबतक मुझे देखो ! मेरे पास अधिकार है, और मैं उसका उपयोग करूंगा। क्या वह अधिकार है ? यदि मैं अपने लिए उसका उपयोग करूं तो वह अधिकार नहीं है; और यदि सबके लिए करूं तो अधिकार है। माई लार्ड्स, मैं आपमें से एक होने की हैसियत से आपसे बातचीत करूंगा। ऐ नीचे के भाइयो, मैं इनसे तुम्हारे नंगेपन का ज़िक्र करूंगा। मैं जनता के फटे चीथड़े हाथ में ऊपर उठाकर खड़ा होऊंगा।

मैं गुलामों के कष्ट मालिकों के सिर पर झाड़ूंगा; और ये अभिमानी और सम्पन्न व्यक्ति दुखियों की याद और गरीबों के कष्टों को नहीं भूलेंगे।" इतना कहकर ग्वाइनप्लेन क्लर्कों की ओर मुड़ा, जो कि घुटनों के बल झुके हुए लिख रहे थे।

"ये कौन लोग हैं, जो इस तरह घुटनों के बल झुके हुए हैं? तुम क्या कर रहे हो? उठो, तुम आदमी हो!"

जिन नीचे दर्जे के आदमियों की ओर लार्डों को देखना भी नहीं चाहिए, उनको सहसा संबोधित किये जाने पर हँसने का शोर और भी बढ़ गया।

अभी तक वे 'शाबाश' चिल्ला रहे थे, अब हुर्रा होने लगी। तालियाँ पीटने के साथ-साथ अब वे पैर भी पटकने लगे। ग्रीनबाक्स का दृश्य यहां पर उपस्थित हो गया; फ़र्क इतना ही था कि वहां तालियों में ग्वाइनप्लेन की तारीफ थी और यहां मौत। उपहास का असर मौत है। मनुष्य की हँसी कभी-कभी हत्या करने की शक्ति रखती है।

हँसी के बाद शरारत की कार्रवाही शुरू हुई। अब उसपर बोलियां कसी जाने लगीं। मज़ाक सभाओं की मूर्खता है। उनका मजाक सच्चाइयों को देखने की बजाय टालता है और प्रश्नों को हल करने के बजाय उड़ा देता है। कोई भी असाधारण बात हुई कि प्रश्न उठने लगते हैं; किन्तु उनकी ओर हँसना पहेली की ओर हंसना है। परन्तु न्याय का उग्र देवता तो कभी नहीं हँसता, वह सब पीछे से देखता है।

विपरीत आवाज़ें आने लगीं, "बस करो, बस करो!" "चलने दो, चलने दो!"

एक बोला, "अब तो वह ज़माना आ गया जब जानवर आदमी के समान बोलते थे।"

दूसरा बोला, "गधे का रेंकना तो सुनो!"

तीसरे ने कहा, "वलवाई लीनस को कब्र में भी सजा मिल रही है। पुत्र ही पिता की सजा है।"

चौथे ने कहा, "झूठ जिसे यातना कहता है वह तो कानूनी सजा है और बहुत अच्छी बात है। इंग्लैंड में अत्याचार नहीं होता।"

किसी ने कहा, "सभा स्थगित कर दी जाय।"

इस पर शोर उठा, "नहीं। व्याख्यान होने दो, मज़ा आ रहा है। हिप-हिप हुर्रा!"

कोलाहल बेहद बढ़ गया और इस शोरगुल में ग्वाइनप्लेन की एक ही आवाज़ सुनाई देती थी, "सावधान!"

एक जवान लार्ड अपनी जगह से उठकर आया और ग्वाइनप्लेन के

सामने मुंह बनाकर खड़ा हो गया और उसके मुंह के पास मुंह ले जाकर ज़ोर से पुकारकर बोला—

"तुम क्या बकार रहे हो ?"

ग्वाइनप्लेन ने कहा, "मैं भविष्य बता रहा हूं।"

लोग और भी ज़ोर से हंस पड़े। इस हँसी में क्रोध का स्वर भी था। नाबालिग लार्डों में से एक ने अपनी जगह पर खड़े होकर मुस्कराते हुए नहीं, किन्तु व्यवस्थापक के समान गंभीरता से, और बिना एक भी शब्द कहे, ग्वाइनप्लेन की ओर देखा और अपने कंधे हिलाये। यह देखकर सेंट आसफ के धर्माचार्य ने पास बैठे हुए सेंट डेविड के धर्माचार्य के कान में ग्वाइनप्लेन की ओर इशारा करके कहा, "यह मूर्ख है," और फिर उस लड़के की ओर दिखाकर कहा, "यह समझदार है।"

इस शोरगुल में शिकायतें भी सुनाई देने लगीं—

"शैतान का मुंह !"—"यह क्या हो रहा है !"—"हाउस का अपमान !" "इसको निकाल देना चाहिए !"—"छिः-छिः !"—"बैठक मुल्तवी की जाय !"—"नहीं, उसका भाषण पूरा हो जाने दो !"—"हां, विदूषक, बके जाओ !"

ड्यूरस के लार्ड लुई ने कमर पर टेढ़े हाथ रखे हुए कहा, "हँसने से बहुत लाभ होता है। मेरी तिल्ली सुधर गई। मैं धन्यवाद का प्रस्ताव करता हूं, वह इस प्रकार है—'हाउस ऑव लार्ड्स ग्रीनबाक्स को धन्यवाद देता है।'"

पाठकों को याद होगा कि ग्वाइनप्लेन किसी दूसरे प्रकार के स्वागत का स्वप्न देख रहा था।

जब बहुत ऊंचे कगार पर चढ़ने के बाद बालू का ढालू ढेर आजाने से चढ़नेवाले के हाथ, पैर, उंगलियां, कोहनी, घुटने वगैरा सभी फिसलने लगें, और उसको धोखे से भरे हुए रास्ते पर बढ़ने के बजाय यही मालूम हो कि अब गिरे, तब उसके दिल में तरह-तरह के खतरे का डर उठने लगता है। वह जितना ऊपर चढ़ने की कोशिश करता है, उतना ही नीचे गिरने की सम्भावना बढ़ती जाती है; वह जितना बचना चाहता है, उतना ही गिरता है। नीचे उसे भयंकर गढ़ा दीखता है। उसे विश्वास हो जाता है कि वह गिरा और उसकी हड्डियों का भीतरी हिस्सा तक कांपने लगता है। ऐसा ही आदमी ग्वाइनप्लेन की इस समय की अवस्था को समझ सकता है।

वह अनुभव करने लगा कि जिस ज़मीन पर मैं चढ़ा हूं वह नीचे से फिसली जा रही है और वह ज़मीन ये श्रोता हैं। ऐसी अवस्था में सदा

कोई-न-कोई आदमी ऐसा रहता है, जो एक शब्द में सबके भाव प्रकट कर देता है।

लार्ड स्केर्संडेल ने सारी सभा के भावों का अनुवाद एक वाक्य में कर दिया—

"यह दैत्य यहां क्या कह रहा है?"

ग्वाइनप्लेन खड़े-खड़े विस्मित और क्रुद्ध हो रहा था, मानो उसको आखिरी दौरा आया और वह बोला—

"मैं यहां क्या कर रहा हूं? मैं तुम्हें डराने आया हूं! तुम कहते हो, मैं दैत्य हूं। नहीं! मैं जनता हूं! मैं अपवाद हूं? नहीं! मैं नियम हूं। तुम अपवाद हो! तुम अवास्तविक हो; मैं वास्तविक हूं। मैं वह भयंकर मनुष्य हूं जो कि हँसता है! वह किस पर हँसता है? तुमपर, अपने पर, और सबपर! उसका हँसना क्या है? तुम्हारा अत्याचार और उसकी यातना। वह उस अत्याचार को तुम्हारे सिर पर पटकता है! उस दंड को वह तुम्हारे मुंह पर थूकता है! मैं हँसता हूं और उसका मतलब है मैं रोता हूं!"

वह रुका। शोर कम हो गया था। हँसी थी, पर मंद। उसने सोचा होगा कि उसका प्रभाव पड़ रहा है। उसने फिर सांस ली और कहना शुरू किया—

"यह हँसी, जो मेरे चेहरे पर है, राजा की बनाई हुई है। यह हंसी मनुष्य-जाति के सर्वनाश का उद्‌गार है। इस हंसी का अर्थ है घृणा, मुहबंदी, क्रोध और निराशा। यह हँसी अत्याचार का परिणाम है। यह हँसी जबरन हँसी है। यदि यह हँसी शैतान के चेहरे पर होती तो उसके लिए ईश्वर को भी दंड भोगना पड़ता। परंतु वह अनन्त उनके समान नहीं है, जिनका कि नाश होता है। वह अद्वितीय होने के कारण न्यायी है, वह राजाओं के कार्यों से घृणा करता है। अरे, तुम मुझे अपवाद मानते हो; किन्तु मैं सार्वजनिक हूं। अरे सर्वशक्तिमानो, तुम मूर्ख हो, आंखें खोलो, मैं उस सर्व का अवतार हूं। प्रभुओं ने मनुष्यता को जैसा बना रखा है, उसका मैं प्रतिनिधि हूं। मनुष्यता का अंग-भंग हो गया है। जो कुछ मेरे साथ हुआ वही उसके साथ हुआ है। जिस तरह मेरे आंखें, नाक, कान इत्यादि बिगाड़े गये हैं, उसी तरह मनुष्यता के अधिकार न्याय, सत्य, ज्ञान, बुद्धि इत्यादि का नाश किया गया है; मेरे ही समान उसके हृदय में विकारों और कष्टों का गड्ढा खोदा गया है और मेरे ही समान हंसी के बनावटी मुखड़े के अंदर उसके असली भाव छिपाये गये हैं। जहां ईश्वर ने अपनी उंगली रखी थी वहां राजा ने अपना निशान लगा दिया है। बिशपो, लार्डों और राजाओ, जनता कष्टों

का समुद्र है, केवल उसकी सतह पर मुस्कराहट है। माइ लार्ड्स, मैं आपसे कहता हूं कि जनता वैसी ही है जैसा कि मैं हूं। आज आप उनपर अत्याचार करते हैं; आज आप मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। किन्तु भविष्य में महान परिवर्तन होनेवाला है; जो पत्थर के समान जमा हुआ है, उसमें लहरें उठेंगी। सघनता द्रवित होगी। बरफ की चट्टान में दरार होगी और फिर वह टुकड़े-टुकड़े हो जायगी। एक समय ऐसा आयेगा कि आन्दोलन उठेगा और आपका अत्याचार नष्ट हो जायगा; उस समय आपकी हँसी के उत्तर में भयंकर गर्जन होगा। नहीं, वह समय आया था। मेरे पिता, तूने उस समय काम किया था! ईश्वर का वह समय आया था और उसका नाम रिपब्लिक था! वह नष्ट हो गया, किन्तु वह फिर वापस आयेगा। याद रखिये, तलवारधारी राजाओं की पंक्ति को फरसाधारी क्रामवेल ने तोड़ दिया था। डरिये! उज्ज्वल अन्त निकट है। जो दांत काट दिये थे, वे फिर से बढ़ रहे हैं। जो जीभें चीर दी गई थीं लपककर अग्निमयी बन रही हैं और अंधकार के झोंके में अनन्त के बीच से पुकार रही है। जो भूखे हैं वे अपने दांत दिखा रहे हैं। वास्तविक नरकों पर बने हुए दिखावटी स्वर्ग डगमगा रहे हैं। जनता कष्ट में है, वे कष्ट में हैं। जो ऊपर है वह कांप रहा है और जो नीचे हैं वे मुंह बाए हैं। अंधकार अपना प्रकाश चाहता है; दलित ऊंचों की आलोचना करने लगे हैं। देखिये, यह जनता का आगमन है, मानव-जाति का उदय है, अन्त का प्रारंभ है, युद्ध का रक्ताभ प्रभात है। हां, ये सब बातें मेरी इस हंसी में हैं जिसपर आज आप हँस रहे हैं। लंदन निरन्तर उत्सव का स्थान है। ठीक है। इंग्लैंड में एक छोर से दूसरे छोर तक आवाजें उठ रही हैं। अच्छा, सुनिये तो! तुम जो कुछ देखते हो वह सब मैं हूं। तुम्हारे जो अपने उत्सव हैं, वे मेरी हँसी हैं; तुम्हारे अपने विवाह हैं, धार्मिक संस्कार हैं, राज-दरबार हैं—वे सब मेरी हँसी हैं। तुम्हारे राजपुत्रों का जन्म मेरी हंसी है। किन्तु तुम्हारे ऊपर वज्र है—वह भी मेरी हँसी है।"

वे इस मूर्खता को कैसे सह सकते थे! अट्टहास फिर से प्रारम्भ हुआ और अब वह अदम्य हो गया। मनुष्य के ज्वालामुखी से जो ज्वाला निकलती है, उसमें सबसे अधिक दाहकारी हँसी ही रहती है। हंसते-हँसते घात करने की बीमारी से कोई भीड़ नहीं बच सकती। सारी फांसियां फांसी के तख्तों पर ही नहीं दी जातीं। जहां मनुष्यों का समूह रहता है, फिर चाहे वे भीड़ में हों चाहे सभा-भवन में, वहां उनके पास एक जल्लाद तैयार रहता है और वह है मज़ाक। ग्वाइनप्लेन के भाग्य में यही बदा था। मज़ाकों के पत्थर उसपर बरसाये गये और तानों की गोलियों से उसका शरीर छेद दिया गया। वह उस समय सबका निशाना बना हुआ था। वे

उछलते थे, चिल्लाते थे, हँसी से झूमते थे, पैर पटकते थे और एक-दूसरे को खींचते थे। उस स्थान की भव्यता, पोशाक की मखमल और विग टोपियों की इज्ज़त, आदि का कुछ असर नहीं होता था। लार्ड हँसते थे, विशेष हँसते थे, जज हँसते थे, बूढ़े हँसते थे, बच्चे हँसते थे, यहां तक कि लार्ड-चांसलर ने सिर झुका लिया, शायद हँसी छिपाने के लिए और आदर की मूर्ति अशर ऑव दी ब्लैकरोक भी हंस रहा था।

ग्वाइनप्लेन का चेहरा पीला पड़ गया। उसके आसपास सब बूढ़े और जवान अट्टहास कर रहे थे। तालियों की गड़गड़ाहट, पैरों की पटपटाहट और हुर्रा का तूफ़ान उमड़ रहा था और उन्मत्त उल्लास, विस्तृत उपहास और अमित स्वच्छंदता का साम्राज्य छाया हुआ था। इस सबके बीच वह अनुभव करने लगा कि सर्वनाश हो गया। उसका अपने चेहरे पर काबू नहीं रहा और न सभासदों पर ही।

वह अनन्त और निश्चित नियम, जिसके अनुसार कि अभव्य भव्य के साथ जुड़ा हुआ है, उल्लास कराहने के साथ लगा हुआ है, आनन्द निराशा के ऊपर छाया है और असलियत दिखावट से दबी हुई है—वह नियम जितने भयंकर स्वरूप में इस समय प्रकट हुआ, वैसा और कभी नहीं हुआ था।

ग्वाइनप्लेन हँसकर अपने भाग्य के विनाश में सहायता कर रहा था। अमिट होनहार उसमें प्रकट हो रही थी। गिरने के बाद हम अपने-आपको उठा सकते हैं; किन्तु एक बार चूर-चूर हो जाने के बाद हम अपने-आपको नहीं संभाल सकते। उनकी गर्वसंयुत विडंबना के अपमान ने उसको चूर-चूर कर दिया था। इसके बाद कुछ भी नहीं हो सकता। जो कुछ हो रहा था वह सब उस दृश्य के योग्य था। ग्रीनबाक्स में जो विजय थी वह हाउस ऑव लार्ड्स में हार थी। जो वहां प्रशंसा थी वह यहां निन्दा थी। सभी मामला उलट गया था। उसके चेहरे की एक ओर उसका स्वागत करने-वाली जनता के प्रति सहानुभूति थी और दूसरी ओर उसका तिरस्कार करनेवाली बड़ों के प्रति घृणा थी। एक ओर आकर्षण और दूसरी ओर तिरस्कार, दोनों उसे अंधकार की ओर ले जा रहे थे। उसे ऐसा मालूम होने लगा कि उसपर पीछे की ओर से आघात हो रहा है। भाग्य इसी प्रकार धोखे से मारता है। बाद में सब बातें प्रकट हो जाती हैं; परन्तु हाल में तो भाग्य जाल के सामान रहता है, जिसके फंदे में फंसकर मनुष्य विनाश के गड्ढे में गिरता है। उसने ऊपर उठने की आशा की थी और उसका स्वागत हुआ उपहास के साथ। सहसा उत्थान का अन्त इसी प्रकार शोक-जनक हुआ करता है। उल्लास और क्रूरता के तूफ़ान के बीच गंभीर

विचारों में मग्न होने के कारण ग्वाइनप्लेन को तन्द्रा आ गई।

हँसी के आवेग में मौके पर जो सूझ जाये, सभा उसी ओर झुक पड़ती है। फिर उसे किसी बात का ध्यान नहीं रहता कि वे किधर जा रहे थे या क्या कर रहे थे। असाधारण परिस्थिति के कारण लार्ड-चांसलर ने बैठक स्थगित कर दी। सभा भंग हो गई। सब सभासद राजसिंहासन को अभिवादन करके बाहर चले गये। बरामदों में बातचीत और हँसी की आवाज़ देर तक प्रतिध्वनित होती रही। सभा-भवनों में आम दरवाज़ों के अलावा कई तरह के खास दरवाज़े भी रहते हैं, जिनके अन्दर होकर सदस्य बाहर निकल जाया करते हैं। थोड़ी देर में सभा-भवन खाली हो गया। तन्द्रा मनुष्य को बहुत दूर पहुंचा देती है। मालूम होता है कि दूसरे ग्रह तक पहुंचने के लिए मनुष्य को बहुत देर तक स्वप्न देखना पड़ता है।

ऐसे स्वप्न से ग्वाइनप्लेन सहसा जाग उठा। वह अकेला था। सभा-भवन रिक्त था। उसको यह भी नहीं मालूम हुआ कि वह खाली हो गया। वहां इधर-उधर कुछ छोटे-मोटे कर्मचारी प्रतीक्षा में खड़े थे कि ये लार्ड लोग जायं तो वे रोशनी बुझाकर दरवाज़ा बन्द कर दें।

ग्वाइनप्लेन ने उदासीनता के साथ सिर पर हैट रखा और अपनी जगह छोड़ वह बड़े दरवाज़े की ओर चल दिया। जब वह दरवाज़ा पार करके बरामदे में जा रहा था, उस समय एक नौकर ने चुपचाप उसकी पोशाक उतार ली। उसका इस बात की ओर ध्यान भी नहीं गया।

जो कर्मचारी वहां रह गये थे, उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह सिंहासन को अभिवादन किये बिना ही चला गया।

२. भाई-भाई

गैलरी में कोई नहीं था।

आगे बढ़ने पर उसे सहसा शोरगुल सुनाई दिया। वह उसी ओर बढ़ा। वहां जाने पर उसे मालूम हुआ कि कुछ झगड़ा शुरू हो रहा है। एक ओर दस-ग्यारह लार्ड थे और दूसरी ओर हैट लगाये हुए एक मनुष्य था जो उनका मार्ग रोके हुए खड़ा था।

यह मनुष्य टाम-जिम-जैक था।

इनमें से कुछ लार्ड अभी भी अपनी पोशाक पहने थे और कुछ ने उतार-कर फेंक दी थी तथा मामूली कपड़े पहन लिये थे। टाम-जिम-जैक नौसेना के अफसर की पोशाक पहने था।

वह युवक लार्डों से बातचीत कर रहा था। ग्वाइनप्लेन ने सुना—

"तुम चाहते हो कि मैं अपने शब्द वापस ले लूं। अच्छी बात है।

तुम कायर नहीं हो, तुम मूर्ख हो; एक के विरुद्ध तुम सब इकट्ठे हो गये। यह कायरता नहीं है; ठीक तो है। यह तो मूर्खता है। वह तुमसे बोला और तुम नहीं समझे। बूढ़ों को कम सुनाई देता है और युवकों में बुद्धि नहीं होती। मैं बहुत काफी हद तक तुम्हारी श्रेणी का हूं, इसलिए मैं तुमसे सच्ची बात कह सकता हूं। यह नवागंतुक विचित्र है; मैं स्वीकार करता हूं कि उसने बहुत-सी बेहूदा बातें बकी हैं। किन्तु उसकी कुछ बातें ऐसी भी थीं, जो सच थीं। उसका भाषण बेसिलसिले था, जमा हुआ नहीं था और अच्छे ढंग से नहीं दिया गया था। वह बार-बार कहता था, "आप जानते हैं, आप जानते हैं", किन्तु जो आदमी कल मेले का भांड़ था, उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह बुद्धिमान के समान भाषण देने लगे। कीड़े, बाघ, बलर्कों को सम्बोधन—ये सब भद्दी बातें हैं। कौन कहता है कि ये भद्दी नहीं हैं? वह भाषण मूर्खतापूर्ण और ऊटपटांग था, किन्तु कहीं-कहीं उसमें ऐसी बातें भी थीं, जो सच थीं। यह काम उसके दायरे के बाहर का था, उसको देखते हुए उसका भाषण कोई मामूली चीज नहीं था। मैं कहता हूं, ज़रा आप भी तो भाषण देकर देखिये। हां, आप! उसने बर्टन लेज़र्स के कोढ़ियों के बारे में जो कुछ कहा, उसका कोई प्रतिवाद नहीं कर सकता। इसके अलावा एक वही आदमी ऐसा नहीं है, जो निरर्थक बातें बकता हो; ऐसी बकवास तो बहुत से किया करते हैं। माइ लार्ड्स, सच बात तो यह है कि एक के विरुद्ध बहुत-सों का होना मैं नहीं सह सकता। आपकी अनुमति से मैं इसमें अपना अपमान समझता हूं। आपने मुझे नाराज कर दिया है। मैं क्रुद्ध हूं। मैं तो परमात्मा का कृतज्ञ हूं कि उसने नीची अवस्था के गहरे गड्ढे से इस लार्ड को उबारा है और उसकी जायदाद उसे वापस दिलाई है। मुझे इस बात की परवा नहीं कि उसके कारण मेरे मामलों पर क्या असर पड़ेगा। मुझे तो यह देखकर खुशी होती है कि एक कीड़ा रूप-परिवर्तन करके गरुड़ बन गया—यह ग्वाइनप्लेन लार्ड क्लैन-चार्ली बन गया। माइ लार्ड्स, मैं नहीं चाहता कि आप मुझसे भिन्न कोई राय रखें। मुझे शोक है कि लार्ड लुई ड्यूरस यहां नहीं है। मैं उसको अप-मान का बदला दूंगा। माइ लार्ड्स, फरमेन क्लैनचार्ली लार्ड था और तुम भांड़ थे। उसकी हँसी की बात तो यह है कि इसमें उसका कोई दोष नहीं है। आपने उसकी हँसी का मज़ाक उड़ाया है; परन्तु मनुष्यों को दूसरों की विपत्ति पर नहीं हँसना चाहिए। यदि आप सोचते हों कि लोग आपकी ओर नहीं हंस सकते तो आप गलती करते हैं। आपकी शक्ल भद्दी है। आपके कपड़े भद्दे हैं। माइ लार्ड हैवरशल, मैंने तुम्हारी मिस्ट्रेस को उस दिन देखा था। वह बदशक्ल है—डचेज़ तो है, पर बन्दर है। जो सज्जन हंसते हैं, उनसे

मैं कहता हूं, ज़रा चार शब्द तो बोलकर देखें। बकवास सब कर लेते हैं, पर बोलना बहुत कम को आता है। आप ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज में काहिली से कुछ दिन बिता चुके हैं, इसलिए आप सोचते हैं कि आप कुछ जानते हैं। आपने नये लार्ड का अपमान किया है। अवश्य ही वह दैत्य है; परन्तु वह दैत्य पशुओं के पाले पड़ गया है। मैं तो आपकी बनिस्वत वैसा होना पसन्द करूंगा। मैं लार्ड का उत्तराधिकारी होने के उम्मीदवार की हैसियत से उस सभा में उपस्थित था। मैंने सबकुछ सुना। मुझे बोलने का अधिकार नहीं है; पर मुझे सज्जन बनने का अधिकार है। तुम्हारे खिलखिलाने पर मुझे क्रोध आता है। जी चाहता है, आसमान पर चढ़कर वहां से मैं तुम पर वज्र फेंक मारूं। इसीके लिए मैं आपके इन्तज़ार में दरवाज़े पर खड़ा था। ज़्यादा बात नहीं करना चाहता, मैं तो फ़ैसला कर देना चाहता हूं। माइ लार्ड्स, मैंने आपमें से थोड़े-बहुत को जान से मार डालने का पक्का निश्चय कर लिया है। आप यहां पर जितने हैं, उन सबको मेरी चुनौती है कि अपने-अपने साथी लेकर आ जाओ। मेरा और आपका द्वंद्व-युद्ध होगा। मैं नौसेना का अफसर डेविड डिरी-मोयर, आपको पुकारकर चुनौती और आज्ञा देता हूं कि आ जाओ! मैं आज, अभी, कल, दिन को, रात को, सूर्य के प्रकाश में, लालटेन के उजाले में, जहां, जब, और जिस तरह आप चाहें, आपसे द्वंद्व करने को तैयार हूं, बशर्ते कि मेरे और आपके बीच में दो तलवारें घूमने की जगह हो। मैं तो कह चुका, मैं आप सबसे लड़ूंगा। सुनते हैं न? मैं मूठ तक सारी तलवार आपके गले में डाल दूंगा। मैं आपकी गुस्ताखी हरगिज़ नहीं पसन्द करता। उसके लिए आपको सज़ा भोगनी पड़ेगी। आपने लार्ड फरमेन क्लैनचार्ली का जो मज़ाक उड़ाया है, उससे मुझे बहुत बुरा लगा है। वह आप सबसे बड़ा है। क्लैनचार्ली की हैसियत से उसमें कुलीनता है और ग्वाइनप्लेन की हैसियत से उसमें बुद्धि है, जो कि आपमें नहीं है। मैं उसके मामले को अपना मामला समझता हूं, उसके अपमान को अपना अपमान समझता हूं और आपकी हँसी को अपना क्रोध समझता हूं। देखें, इस लड़ाई में कौन ज़िन्दा बचता है, क्योंकि मैं तो आपको मौत की चुनौती देता हूं! समझे? किसी भी तरह से, आप तय कर लीजिये कि आप कैसी मौत मरना चाहते हैं और चूंकि आप लार्ड होने के साथ-साथ भांड़ भी हैं, इसलिए मैं लार्ड की तलवार और गुंडे के घूंसे दोनों से लड़ने को तैयार हूं।"

ऐसक्विक ने कहा, "मुझे लाठी पसन्द है।"

हॉलकर ने कहा, "मैं चाकू लूंगा।"

रॉकिंगहम बोला, "मेरी तो तलवार है।"

रैल्फ़ ने कहा, "मेरे लिए तो घूंसेबाज़ी सबसे अच्छी है।"

इतने में ग्वाइनप्लेन अंधेरे में से आगे बढ़ा और उस मनुष्य की ओर गया, जिसे वह अभी तक टॉम-जिम-जैक के नाम से जानता था, परन्तु जिसमें अब वह कुछ और ही बात का खयाल करने लगा था। वह बोला, "मैं आपको धन्यवाद देता हूं, पर यह मेरा काम है।"

सब लोग मुड़कर उसकी ओर देखने लगे।

ग्वाइनप्लेन आगे बढ़ा। उसको मानो कोई लार्ड डेविड की ओर जाने की प्रेरणा कर रहा था; वह उसके प्रति अधिक निकटता का अनुभव करने लगा।

लार्ड डेविड बोला, "अच्छा! आप हैं! मौक़े से आये। आपसे भी मुझे एक शब्द कहना है। अभी आपने एक स्त्री का ज़िक्र किया था, जिसने लार्ड लीनस क्लैनचार्ली को प्यार करने के बाद दूसरे चार्ल्स को प्यार किया था।"

"यह सच है।"

"महाशय, आपने मेरी माता का अपमान किया।"

"आपकी माता! तब तो मैं जैसा सोचता था, हम…"

लार्ड डेविड ने उसे धक्का देकर कहा—

"भाई-भाई हैं। इसलिए हम लड़ सकते हैं। लड़ाई बराबरीवाले से ही हो सकती है; और भाई के समान बराबरीवाला अन्य कोई नहीं हो सकता। कल हम लड़ेंगे और एक-दूसरे का गला काटेंगे।"

: ६ :

सर्वनाश

१. वे कहां गये ?

सेंट पॉल के गिरजाघर से आधी रात का घंटा बजा, ठीक इसी समय एक मनुष्य लंदन-ब्रिज पार करके साउथवर्क की गलियों में घुसा। सड़क पर लालटेनें नहीं जल रही थीं। उस समय पेरिस के समान लंदन में भी यह रिवाज़ था कि सड़कों के लैम्प, रात को ग्यारह बजे, अर्थात् जिस समय उनकी ज़रूरत पड़ती थी, उस समय बुझा दिये जाते थे। सड़कें अंधेरी और सूनी थीं। जब लालटेनें बुझ जाती हैं तो मनुष्य बाहर नहीं घूमते, घरों में चले जाते हैं। जिस मनुष्य के बारे में हम लिख रहे हैं वह तेज़ कदमों से बढ़ा जा रहा था। उसकी पोशाक विचित्र थी; वैसी पोशाक पहनकर कोई रात को बाहर नहीं घूमता है। वह ज़री का कामदार रेशमी कोट पहने था, उसकी कमर से तलवार लटक रही थी, उसके हैट में सफेद कलगी लगी थी और वह लबादा नहीं पहने था। पहरेवाले उसे देखकर मन में कहते थे, "यह कोई लार्ड है और कहीं होड़ पर जा रहा है," और वे आदर दिखाते हुए उसके सामने से हट जाते थे।

वह मनुष्य ग्वाइनप्लेन था। वह बचकर भागा जा रहा था। वह कहां था ? उसे पता नहीं। हम कह चुके हैं कि आत्मा में भी तूफान आया करते हैं—भयंकर तूफान, जिनमें आकाश-समुद्र, दिन-रात, जीवन-मरण सब अज्ञेय रूप से भयंकरतापूर्वक मिल जाते हैं। वह सत्य की सांस नहीं ले सकता। वह जिन बातों में विश्वास नहीं करता वे उसको कुचल डालती हैं। शून्यता तूफान का स्वरूप धारण कर लेती है। आकाश-मंडल पीला पड़ जाता है। अनन्तता सूनी हो जाती है। विपत्ति में मन भटकने लगता है। वह मृत्यु का अनुभव करने लगता है। वह पथप्रदर्शक तारे के लिए व्याकुल हो उठता है। ग्वाइन-प्लेन क्या अनुभव कर रहा था ? प्यास—डीया को देखने की प्यास !

उसकी यही एक भावना थी, फिर से ग्रीनवाक्स और टैडकास्टर सराय में पहुंचे और वहां का प्रकाश देखे, शोरगुल सुने, दर्शकों की प्रेमपूर्ण हँसी

का अनुभव करे, उर्सस और होमो से मिले, डीया को देखे और जीवन में फिर से प्रवेश करे। ग्वाइनप्लेन तेज़ी से चलने लगा। वह टैरिन्ज़ू मैदान में पहुंच गया। अब वह चलता नहीं था, दौड़ता था। उसकी आंखें सामने के अंधेरे में घुसी जा रही थीं। उसकी दृष्टि क्षितिज पर उत्सुकतापूर्वक आश्रय-स्थान की तलाश करती हुई उसके आगे-आगे जा रही थी। जिस समय टैडकास्टर सराय की प्रकाशमयी खिड़कियां देखेगा, अहा, वह समय उसके लिए कैसा होगा!

ग्वाइनप्लेन दौड़ता जा रहा था और उसके दिल में सैकड़ों तरह की कल्पनाएं उठ रहीं थीं। पिता उर्सस क्या कर रहा होगा, डीया की हालत क्या हुई होगी, आदि-आदि।

परन्तु वहां पहुंचने पर उसने देखा कि वहां एक भी पड़ाव नहीं था। सर्कस चले गये थे। डेरा नहीं, दूकान नहीं, एक भी गाड़ी नहीं। जहां हज़ारों आदमियों की भीड़ लगी रहती थी और कोलाहल हुआ करता था, वहां अन्धकार और शून्यता थी।

सब चले गये थे।

चिंता से वह पागल हो उठा। इसका क्या मतलब है! यह क्या हो गया! कोई नहीं रहा! क्या सब-के-सब खत्म हो गये! इनको क्या हो गया! हे परमात्मा! फिर वह तूफान के समान मकान पर टूट पड़ा। उसने छोटा दरवाज़ा खटखटाया, फाटक, खिड़कियां, चटखनियां और दीवारें, हाथ और पैर से विक्षिप्त की-सी उन्मत्तता के साथ खटखटाने लगा।

उसने एक-एक का नाम लेकर हज़ार-हज़ार बार पुकारा। मकान के दरवाज़ों को खटखटाते-खटखटाते ढीला कर दिया। खिड़कियों के शीशे फोड़ डाले। अंदर गया, सराय का एक-एक कोना ढूंढ़ लिया, पर वहां एक चिड़िया भी उसे दिखाई नहीं दी। निराश होकर वह मकान से बाहर निकला। मैदान में घूमा, वहां क्या था! मानो उसके आने से पहले वहां मृत्यु का दौरा हो चुका था। मैदान सुनसान था।

२. तलछट

वह अड्डा तोड़ दिया गया था। प्रकट होता था कि पुलिस की कोई कार्रवाही हुई थी। वह मैदान मरुस्थल से भी बदतर हो रहा था। उसपर हमला हुआ था और उसका कोना-कोना मानो क्रूर पंजों ने खोद डाला था। उस अभागे मैदान की जेब भीतर से बाहर उलटकर झाड़ दी गई थी।

ग्वाइनप्लेन ने वहां की एक-एक इंच जगह देख डाली और फिर उसे छोड़कर टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से होता हुआ वह टेम्स नदी की ओर चल दिया।

चलते-चलते उसे ठंडी हवा का झोंका लगा और पानी का कलरव सुनाई दिया। उसके सामने ही नदी की दीवार थी। ग्वाइनप्लेन दीवार के पास जाकर रुका और मुंडेर पर कोहनी रखकर और हाथ पर सिर टेक कर सोचने लगा। नीचे पानी बह रहा था।

क्या वह पानी की ओर देख रहा था! नहीं। तब किसकी ओर? अंधकार की ओर; बाहर का अंधकार नहीं, किन्तु भीतर के अंधकार की ओर। उस अंधकारमयी और शोकपूर्ण रात्रि के दृश्य में दूर गहराई के बीच, मस्तूलों और पालों की अस्पष्ट आकृतियां दीख रही थीं। दीवार से नीचे की ओर बन्दरगाह पर कई जहाज़ खड़े थे, जिनमें से कुछ बाहर से आये थे और कुछ बाहर जाने की तैयारी में थे। इन जहाज़ों के पास से छोटी-छोटी नावें किनारे पर आ-जा रही थीं। किन्तु सब ओर नीरवता थी। मल्लाहों की यह आदत होती है कि जब उन्हें जागने की आवश्यकता नहीं रहती तब वे सो लेते हैं, और जब आवश्यकता होती है तब जाग जाते हैं। इसलिए जहाज़ों पर कोई शोर या हलचल नहीं थी। जो जहाज़ रात को जानेवाले थे, उनके मल्लाह अभी जागे नहीं थे।

किन्तु ग्वाइनप्लेन की दृष्टि उस ओर नहीं थी। वह भाग्य के विचार में मग्न था।

वह स्वप्न—आलोक—देख रहा था। निर्दय वास्तविकता के सामने उसको चक्कर आ रहा था।

उसे लगा मानो पीछे से भूकम्प की आवाज़ आई। वह लार्डों की हंसी थी। वह अभी थोड़े ही समय पहले उस हंसी से निकलकर बाहर आया था। वह धक्का खाकर बाहर निकला था। किसका धक्का!

अपने ही भाई का धक्का!

वह हंसी से दूर भागा जा रहा था, वह धक्के का आघात अनुभव कर रहा था, वह आश्रय ढूंढ़ रहा था, वह घायल पक्षी के सामान घोंसले में आया था, घृणा से दूर भागकर प्रेम की तलाश में आया था। उसे क्या मिला? अन्धकार!

कोई नहीं।

सबकुछ चला गया।

उसने उस अन्धकार की तुलना अपने स्वप्न से की।

कैसा सर्वनाश!

ग्वाइनप्लेन उस भयानक सीमा—शून्य—तक पहुंच चुका था। ग्रीनबाक्स का चला जाना उसकी दुनिया का मिट जाना था।

उसकी आत्मा चारों ओर से बन्द हो चुकी थी।

वह विचार करने लगा।

क्या हुआ होगा ! वे कहां हैं ! मालूम होता है, उन्हें कोई पकड़ ले गया। भाग्य ने उसको—ग्वाइनप्लेन को महानता का धक्का दिया था। उसकी प्रतिक्रिया ने उसको दूसरा धक्का दिया, सर्वनाश का। साफ ज़ाहिर था कि वह अब उन्हें नहीं देख सकेगा। उसके विरुद्ध प्रचुर सावधानी की जा चुकी थी। उन्होंने उस मैदान में निकलकर और गोविकम से लगाकर सबको साफ कर दिया था, ताकि ग्वाइनप्लेन को किसी बात का पता न लग सके। क्रूर प्रहार ! जिस भयंकर प्रणाली ने उसे हाउस ऑव लार्ड्स में टुकड़े-टुकड़े किया था, उसी समय उसने मैदानवालों को उनकी झोपड़ियों में तहस-नहस कर डाला था। वे नष्ट हो गये। डीया नष्ट हो गई—सदा के लिए नष्ट हो गई। हे परमात्मा, वह कहां है ! हाय ! वह उसकी रक्षा करने के लिए वहां पर नहीं था !

जिनको हम प्यार करते हैं, उनकी अनुपस्थिति के बारे में कल्पना करने बैठना अत्यन्त पीड़ाजनक है। वह इस पीड़ा का अनुभव करने लगा। प्रत्येक विचार और प्रत्येक कल्पना पर उसके भीतर से कष्ट की आह उठती थी।

वह काला वाक्य अब फिर से उसकी आंखों के सामने चमकने लगा। उसका मतलब अब उसकी समझ में आ गया, "भाग्य एक दरवाज़े को बन्द किये बिना दूसरा दरवाज़ा नहीं खोलता।"

सब कुछ समाप्त हो चुका। अन्तिम अन्धकार उसके आसपास छा गया। प्रत्येक मनुष्य के भाग्य में एक दिन ऐसा आता है जबकि उसके लिए सारे संसार का अन्त हो जाता है। वह अवस्था निराशा कहलाती है। उस समय आत्मा टूटे हुए सितारों से भर जाती है।

इस समय ग्वाइनप्लेन की यही अवस्था थी।

ग्वाइनप्लेन ने अपने ऊपर विचार किया और अपने भाग्य पर विचार किया।

जब हम पर्वत-शिखर पर चढ़ जाते हैं तो खंदक की ओर देखते हैं; और जब खंदक में रहते हैं तो आकाश की ओर देखते हैं और कहते हैं, "मैं वहां था।"

ग्वाइनप्लेन दुर्भाग्य की तलहटी में था। उसका पतन कैसा एकाएक हुआ ! वह चीथड़े के समान फट गया था, पेड़ के समान जड़ से उखड़ गया था और पत्थर के समान लुढ़क गया था। उसने अपने पतन की समस्त परिस्थितियां याद कीं। उसने अपने से कुछ प्रश्न पूछे और उनके उत्तर दिये। शोक एक परीक्षा है। कोई भी न्यायाधीश इतना कठोर नहीं होता जितनी कि अन्तरात्मा अपना मुकदमा आप करते समय रहती है।

उसको यह जानने की इच्छा थी कि उसकी निराशा में पश्चात्ताप कितना था। उसने अन्तरात्मा पर नश्तर चलाना शुरू किया। मर्मभेदी नश्तर !

उसकी अनुपस्थिति के कारण उर्सस और डीया पर विपत्ति आई। क्या यह अनुपस्थिति उस पर अवलम्बित थी ? जो कुछ हुआ, क्या उसमें वह स्वतन्त्र था ? नहीं ! वह तो कैदी था। वह महानता के दलदल में फंस गया था। इस अवस्था का किसने अनुभव नहीं किया है कि वाहर से तो वह स्वतन्त्र दीखता हो और भीतर से उसके पंख बंधे हुए हों !

उसे जाल के समान कुछ विछा हुआ मालूम हुआ। जो पहले लोभ मालूम होता है वह अन्त में बन्धन बन जाता है।

तो भी--उसकी अन्तरात्मा उसे इस वात पर दवा रही थी—उसको जो कुछ दिया गया उसके सामने क्या वह केवल झुक गया ? नहीं, उसने उसको स्वीकार किया था।

फिर उसका मन उद्विग्न हो उठा !

अर्थहीन स्वीकृति ! उसने कैसा सौदा किया ! कितना मूर्खतापूर्ण विनिमय ! उसने परमात्मा के साथ घाटे का लेन-देन किया। अव क्या हो सकता था ! अस्सी हज़ार पौंड सालाना की आमदनी के वदले में, सात या आठ उपाधियों के वदले में, दस हज़ार महलों के वदले में, शहरों की कोठियों और देहात के किलों के वदले में। कुत्तों, गाड़ियों और खानदानी निशानों के वदले में, न्यायाधीश और व्यवस्थापक वनने के वदले में, राजा के समान मुकुट और मखमली पोशाक के वदले में, वैरन और मार्क्विस वनने के वदले में और इंग्लैंड का लार्ड वनने के वदले में उसने उर्सस की झोंपड़ी और डीया की मुस्कराहट दे दी थी। महानता के उत्तुंग विस्तार के बीच विनाश और विध्वंस के लिए उसने सुख छोड़ दिया। समुद्र के लिए उसने मोती त्याग दिया। अरे पागल ! अरे मूर्ख ! अरे भोले !

तो भी—और इसपर उसकी युक्ति अधिक प्रवल थी—ऊंचे सौभाग्य के ज्वर में सभी वातें हानिकारक नहीं थीं। शायद त्याग में स्वार्थ होता, शायद स्वीकृति ही उसका कर्त्तव्य थी। सहसा लार्ड वन जाने पर उसे क्या करना चाहिए था ! घटनाओं की उलझन मन को चक्कर में डाल देती है। उसकी भी वही दशा हुई। कर्तव्य उसको परस्पर-विरोधी आज्ञाएं दे रहा था। चारों ओर एक साथ कर्तव्य-ही-कर्त्तव्य था—अनेक और परस्पर-विरोधी कर्त्तव्य ! जिसको हम जीवन में उन्नति कहते हैं वह सुगम पथ को छोड़कर भयंकर पथ पर पैर रखना है। हमारा सवसे पहला कर्तव्य किसके प्रति है ? जो हमारे सवसे निकट हैं उनके प्रति, या आमतौर से

मनुष्य-समाज के प्रति ? क्या हम अपने छोटे से दायरे से परे होकर सब से बड़े परिवार का अंग नहीं बन जाते हैं ? अधिकार की बढ़ती कर्तव्य की बढ़ती है। हम किस मार्ग से जायं ? क्या अपनी दिशा बदलें, जहां हैं वहीं रहें, आगे बढ़ें या पीछे हटें ? क्या करें ? यह विचित्र बात है कि अन्तरात्मा में भी चौराहे हों; किन्तु ज़िम्मेदारी भी एक प्रकार की भूल-भुलैया है। और जब कोई मनुष्य एक आदर्श धारण करता है, जब वह एक सच्चाई का अवतार होता है। जब आदर्श मनुष्य के साथ-साथ रक्त और मांस का पार्थिव मनुष्य भी होता है, तब उसकी जिम्मेदारी क्या और भी भारी नहीं हो जाती है !

ग्वाइनप्लेन ने सोचा, कर्तव्य की पुकार उसे सुनाई दे रही है। क्या उसे ऐसे स्थान पर नहीं जाना चाहिए था, जहां अत्याचार पर बहस की जा सकती है और वह रोका जा सकता है ? क्या इसमें उसकी गहरी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति नहीं थी ? जब उसके बोलने की बारी आई तो छः हज़ार वर्षों से जिस स्वच्छन्दता और सनक का बलिदान होकर मानव-समाज कष्ट से कराह रहा, उनके दुष्परिणामों के सजीव नमूने को क्या इन्कार करने का अधिकार था ? जब ऊपर से उतरती हुई अग्नि-ज्वाला उसके सिर पर रुकना चाहती थी तब क्या उसे अपना सिर हटा लेने का अधिकार था ?

अंतरात्मा की इस अस्पष्ट और अंधकार-उत्पादक बहस में उसने अपने को क्या कहा था ? यह कि जनता नीरवता है। मैं उस नीरवता का वकील बनूंगा, मैं गूंगों की तरफ से बोलूंगा, मैं छोटों के बारे में बड़ों की बातचीत करूंगा, मैं कमज़ोरों के बारे में बलवानों से बातचीत करूंगा। मेरे जीवन का ध्येय यही है। ईश्वर जो चाहता है वही करता है। यह आश्चर्य की बात है कि हार्डक्वानन की बोतल, जिसमें ग्वाइनप्लेन से लार्ड क्लैनचार्ली बनने का परिवर्तन भरा हुआ था, पन्द्रह वर्ष तक समुद्र में, लहरों पर तरंगों के बीच और तूफ़ानों में तैरती रही और प्रचंड समुद्र ने उसको कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। कारण मुझे मालूम है। मेरा भाग्य पहले से निश्चित हो चुका है। संसार में मेरा कोई उद्देश्य है। मैं गरीब का लार्ड बनूंगा; मैं निराश और मूकों के लिए बोलूंगा; मैं अव्यक्त शिकायतें प्रकाशित करूंगा; मैं आहों, कराहों, कुरकुराहटों, चीखों और उन समस्त अर्थहीन शब्दों तथा स्वरों का अर्थ बताऊंगा, जो अज्ञान और यातनाओं से पीड़ित मनुष्यों के मुंह से निकला करते हैं। बलात्कार के सामने हथियार रख देना ही उनकी सहायता की पुकार है। मैं उनकी सहायता बनूंगा; मैं जनता की वाणी बनूंगा। मेरे द्वारा उनकी बातें सबको मालूम हो

जायेंगी। मैं सबकुछ करूंगा। वास्तव में यह बहुत बड़ी बात होगी।

हां, मूकों का पक्ष लेकर बोलना अच्छी बात है, परन्तु बहरों के सामने बोलना ही शोकजनक है और इस नाटक में यह उसका दूसरा पार्ट था।

वह अपनेको बलवान् समझता था—वह विपत्ति के विस्तृत समुद्र पर सजग होकर इतने वर्षों तक तैरता रहा और उस समय अन्धकार में से वह हृदयग्राही चीत्कार लेकर आया था। वह सोचता था कि वह वज्र चला रहा है; किन्तु वह केवल गुदगुदी कर रहा था। गम्भीरता के स्थान पर उसे उपहास मिला। वह सिसक रहा था, वे हँस पड़े और उस हँसी में वह सदा के लिए डूब गया।

और वे किसकी ओर हँसे? उसकी हँसी की ओर। वह हँसी कलंक थी; अत्याचारियों के दबाव में पीड़ित राष्ट्रों के झूठे सन्तोष की प्रतिमूर्ति थी; यातना से उत्पन्न होनेवाले आनन्द का मुखड़ा थी। और जिन आदमियों ने ग्वाइनप्लेन को मजाक के गड्ढे में डाला, क्या वे क्रूर थे? नहीं, वे भी होनहार में बंधे थे—वे सुखी थे, वे जल्लाद थे; किन्तु इस बात का उन्हें पता नहीं था। वे आनन्दी थे; उन्हें ग्वाइनप्लेन का कोई उपयोग नहीं दीखता था। उसने अपने-आपको खोलकर उनके सामने रख दिया। उसने अपना हृदय चीरकर उन्हें दिखा दिया, और वे बोले, "हां, अपना खेल होने दो!" परन्तु सबसे अधिक चुभनेवाली बात तो यह है कि वह खुद भी हंसता था। जिस भयंकर जंजीर ने उसकी आत्मा को बांध रखा था, वह उसके विचारों को चेहरे पर प्रकट होने से रोक रही थी। उसकी कुरूपता उसकी इन्द्रियों तक में पहुंच चुकी थी; और जब उसकी अन्तरात्मा क्रुद्ध होती थी, उस समय उसका चेहरा उसे झूठा बनाकर, हंसता था और सब पर पानी फिर जाता था। वह हँसमुखा था, वह रोती हुई दुनिया का उपहास था।

उसने पुकारकर कहा था, "दुखियों पर दया करो।" व्यर्थ! उसने दया को जगाने की चेष्टा की, किन्तु क्रूरता जाग उठी। मशाल लिये हुए उसका प्रवेश अनिष्टकारक था। अनिष्टकारक किसके लिए? अनिष्टकारकों के लिए। भयंकर किसके लिए? भयंकरों के लिए। इसलिए उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। उनकी पंक्ति में प्रवेश? उनको स्वीकार? कभी नहीं। जो बाधा वह अपने चेहरे पर धारण किये था, वह भयंकर थी; किन्तु जो बाधा वह अपने विचारों में धारण किये था वह अभेद्य थी। उनके लिए उसके चेहरे की अपेक्षा उसका भाषण अधिक कुरूप था।

दोनों भेद एक दूसरे को दूर हटाते हैं। वे मिल नहीं सकते; क्योंकि उनमें एक-दूसरे के निकट आने का भाव नहीं है। इसलिए जब वे दोनों

समस्त कष्ट की मूर्ति-स्वरूप एक मनुष्य और समस्त अहंकार की मूर्ति-स्वरूप एक श्रेणी एक-दूसरे के निकट आमने-सामने लाये गए तो परिणाम हुआ क्रोध का गर्जन।

ग्वाइनप्लेन ने सिद्ध कर दिया कि उसका प्रयत्न नितान्त असफल होगा। उसने ऊंचे स्थानों का बहरापन साबित कर दिया। जिनके अधिकार छीन लिये गए हैं, उनके सम्बन्ध में अधिकारवाले बहरे हो जाते हैं। क्या इसमें उनका दोष है? अफसोस! नहीं। उनका नियम ही ऐसा है। उन्हें क्षमा करो। द्रवित होना पद-त्याग करना है। लार्डों और राजाओं से कोई आशा न करो। जो सन्तुष्ट है वह झुक नहीं सकता। जिनका पेट भरा है, उनके लिए भूखे हैं ही नहीं। सुखी अपनेको सबसे अलग समझते हैं।

वे उनकी क्यों सुनने चले! वह बहिष्कृत था—अतल से आया था। समाज में प्रवेश करने जा रहा था। समाज! कैसा! जिसके तीन स्वरूप उसने अपने जीवन के आरम्भ में ही देख लिये। विवाह, परिवार और जाति। विवाह! उसने विवाह की तो ड्योढ़ी पर ही व्यभिचार देखा। परिवार! उसके भाई ने ही उसे धक्का मारा और वह दूसरे दिन हाथ में तलवार लिये उससे लड़ने को तैयार था। जाति! वह उसे तुच्छ समझकर उसके सामने खिलखिलाकर हँस पड़ी थी। भीतर आने देने से पहले ही उसने उसको बाहर निकाल दिया था। परिणाम यह हुआ कि समाज के गहरे अन्धकार में उसके पहले तीन कदमों के नीचे तीन गड्ढे निकले।

सम्पत्ति के द्वारा विपत्ति उसके पास पहुंची थी।

वह स्वर्गीय प्रेम से भरा था, इस समय का प्रेम सर्प के समान और विषय-वासना से पूर्ण होकर उसके सामने आया। वह आदर्श पर जी रहा था, पर अस्थि-मांस ने उसे प्रलोभन दिया। उसने क्रोध के चीत्कार के समान कामोन्मत्तता के शब्द सुने; सांप की लिपटन के समान उसने स्त्री के बाहु-पाश का अनुभव किया; और सत्य के प्रकाश के बाद झूठ के मोह का आगमन हुआ। सहसा उसने देखा कि उसके आसपास प्रशंसा करनेवाली जनता के बजाय गालियां देनेवाले लार्ड हैं। शोकपूर्ण परिवर्तन! अकीर्तिकारक उत्थान! उसके सम्पूर्ण सुख का क्रूर विनाश! उपहासमयी हत्या!

उसने अपने भगाये जाने में कुछ हद तक स्वीकृति दे दी थी—उसने अवास्तविक के लिए वास्तविक को छोड़ दिया, झूठ के लिए सत्य को छोड़ दिया, अभिमान के लिए प्रेम को छोड़ दिया, जोशियाना के लिए डीया का छोड़ दिया, प्रभुता के लिए स्वतन्त्रता को छोड़ दिया, अज्ञात जिम्मेदारीवाली अमीरी के लिए मेहनत मजदूरीवाली गरीबी को छोड़ दिया, शैतान से बसी हुई उज्ज्वल ज्वालाओं के लिए ईश्वर से बसी हुई छाया को

छोड़ दिया। आकाश के लिए स्वर्ग को छोड़ दिया।

शोचनीय परिणाम ! और अब उसके लिए भविष्य में क्या रह गया था ? यदि वह दूसरे दिन की ओर दृष्टि-निक्षेप करता था तो वह क्या देखता था ? नंगी तलवार, जिसकी नोक उसकी छाती से लगी थी और मूठ उसके भाई के हाथ में थी। उस तलवार के भयंकर वार के अलावा उसे और कुछ नहीं दिखाई देता था। सारे दृश्य के पीछे जोशियाना और हाउस ऑव लार्ड्स दैत्य के समान अपनी कुत्सित छायाएं डाले हुए थे।

परीक्षा हो चुकी थी। अब वह पुनः प्रारम्भ नहीं की जा सकती थी।

ग्वाइनप्लेन उस खिलाड़ी के समान था, जिसने अपने सारे हुक्म एक के बाद एक करके खेल डाले थे। उसने अपनेको उस भयंकर जुए के अड्डे में खिंच जाने दिया और ज़रा भी यह नहीं सोचा कि क्या हो रहा है।

वज्राहत चुपचाप गिर पड़ते हैं। ग्वाइनप्लेन निश्चल था। उसे अन्धकार में इस तरह निश्चल और दृढ़ खड़े हुए कोई दूर से देखता तो सोचता कि वहा कोई सीधा पत्थर खड़ा है।

नरक, सर्प और चिंतना कुटिल होते हैं। ग्वाइनप्लेन गम्भीर चिंतन की चक्करदार सीढ़ियों से मानो कब्र में नीचे उतर रहा था।

जिस संसार की उसे अभी ज़रा-सी झलक मिली थी, उसपर उसने ठंडे विचार की अंतिम दृष्टि डाली। विवाह है, किन्तु प्रेम नहीं; परिवार है, किन्तु भाग्य नहीं; संपत्ति है, किन्तु अंतरात्मा नहीं; सौंदर्य है, किन्तु शील नहीं; न्याय है, किन्तु दया नहीं; व्यवस्था है, किन्तु समता नहीं; सत्ता है, किन्तु अधिकार नहीं; शक्ति है, किन्तु बुद्धि नहीं; तेजस्विता है, किन्तु प्रकाश नहीं। उसने उस भव्य दृश्य का प्रारम्भ से अन्त तक पुनरवलोकन किया, जिसमें उसका मन डूब गया था। वह चिल्ला उठा। समाज सौतेली मा है, प्रकृति सगी मां है। समाज शरीर का संसार है, प्रकृति आत्मा का संसार है। एक कफन, अरथी, कब्र और कीड़ों को ले जाती है और वहीं खत्म हो जाती है। दूसरी पंख फैलाती है, प्रभातकालीन प्रकाश बनती है, आकाश में ऊपर चढ़ती है और वहां नवजीवन प्राप्त करती है।

अन्त में बड़ी भारी लहर के समान उसको दुःख का दौरा आया। घटनाओं के अन्त में सर्वदा एक चमक उठती है, जिसके प्रकाश में सबकुछ एकबारगी दीखने लगता है।

समाज ने और प्रकृति ने उसके लिए जो कुछ किया था, उस सब पर ग्वाइनप्लेन ने विचार किया। प्रकृति उसके प्रति कितनी दयालु थी ! प्रकृति आत्मा है, उसने किस प्रकार उसकी सहायता की थी ! उसका सब-कुछ छीन लिया गया, यहां तक कि उसका स्वरूप भी। आत्मा ने यह सब उसे

वापस कर दिया—सब यहां तक कि उसका स्वरूप भी; क्योंकि पृथ्वी पर एक ऐसी स्वर्गीय अंधी बालिका थी जो विशेषकर उसी के लिए बनी थी। वह उसकी कुरूपता को नहीं देखती थी, वह उसकी सुंदरता ही देखती थी और इससे उसने अपनेको अलहदा हो जाने दिया—

उसने अपने और अपने सितारे के बीच अंतर आ जाने दिया।

वह सितारा कहां है? डीया! डीया! डीया! हाय, उसने उस सितारे का प्रकाश खो दिया। तारे को आकाश से निकाल लो तो आकाश में क्या बच जायगा? अंधकार। किन्तु यह सब उस पर क्यों गुजरा! अरे, वह कितना सुखी था! हाय! ग्रीनबाक्स कहां था! गरीबी, आनन्दमय यात्रा जीवित पक्षियों के समान साथ-साथ स्थान-परिवर्तन कहां था! उस समय वे एक-दूसरे को कभी नहीं छोड़ते थे; वह डीया की ओर प्रतिक्षण देखता रहता था; सुबह, शाम, सदा। भोजन करते समय मेज़ पर उनके घुटने, उनकी कोहनियां आपस में छू जाती थीं; वे एक ही प्याले से पीते थे; खिड़की के शीशे में से सूरज चमकता था, किन्तु वह केवल सूरज था, डीया प्रेम थी। रात को वे एक-दूसरे से दूर नहीं सोते थे, और डीया का स्वप्न आकर ग्वाइनप्लेन के सिर पर चक्कर लगाता था और ग्वाइनप्लेन का स्वप्न डीया के सिर पर मंडराता था। जब वे जगकर उठते थे तो उन्हें इस बात का पूरा विश्वास नहीं होता था कि उन्होंने स्वप्न के नीले धुंए में आपस में चुम्बन नहीं किया है। डीया पूर्ण अबोध थी, उर्सस पूर्ण ज्ञानी था। वे एक शहर से दूसरे शहर को चक्कर लगाते फिरते थे। जनता की स्पष्ट तथा प्रेमपूर्ण आनन्दप्रियता ही उनका जीवनाधार और स्फूर्ति थी। परिस्तान के अवारा थे, पर अब सब लोप हो गया। वह सब कहां गया! क्या यह संभव है कि वह सब मिट गया! कब्र की कौन-सी हवा उन्हें उड़ा ले गई! सब अंधकार में गया! सब नष्ट हो गया! हाय!

हाय, वे कहां चले गये! क्या वह उनको नहीं बचा सकता! नहीं। यही तो विधि-विडम्बना है; उसीके कारण तो उन लोगों पर यह आपत्ति आई। स्वयं उसीने तो उनको नष्ट किया, उनसे अपनी—लार्ड क्लैनचार्ली की—रक्षा करने के लिए, उनके संपर्क से उसकी प्रतिष्ठा को अलग करने के लिए ही तो समाज की कलंकमयी सर्वशक्तिमत्ता ने उन लोगों को नष्ट किया। अब उनकी रक्षा का सबसे अच्छा उपाय यह है कि वह स्वयं लुप्त हो जाये, और तब उनकी यातनाओं का कारण भी नष्ट हो जायेगा। वह प्रिय परिवार अमिट विलोप में सदा के लिए समा गया। सब बीत चुका। इसके अतिरिक्त निन्दित और कलंकित होकर अब जीने से क्या लाभ! अब मनुष्यों से या ईश्वर से कोई आशा नहीं रही। डीया! डीया कहां है!

नष्ट हो गई? क्या! नष्ट? जिसकी आशा नष्ट हो गई हो वह उसे केवल एक मार्ग से प्राप्त कर सकता है—मृत्यु के मार्ग से।

व्याकुल होकर ग्वाइनप्लेन ने दीवार पर अपना हाथ मजबूती से रखा, मानो कोई उपाय हाथ लग गया हो और वह नदी की ओर देखने लगा।

उसे बिना सोये यह तीसरी रात थी। उसे बुखार चढ़ आया था। वह समझ रहा था कि उसके विचार स्पष्ट थे, किन्तु वे अस्पष्ट हो रहे थे। उसे जबरदस्त नींद मालूम होने लगी। वह कुछ क्षण तक नदी पर झुका रहा। अन्धकार ने उसको अनन्त छाया के बीच निःसीम शांति की शैया का प्रलोभन दिया। कुटिल प्रलोभन!

उसने अपना कोट उतारा और तह करके उसे दीवार पर रख दिया, फिर उसने अपने जाकट के बटन खोले। उसे उतारते समय उसका हाथ जेब की किसी चीज़ से टकरा गया। वह हाउस ऑव लार्ड्स के लाइब्रेरियन की दी हुई लाल किताब थी। उसने उसे जेब से बाहर निकाला, रात के अस्पष्ट प्रकाश में उसे जांच कर देखा, उसमें एक पेंसिल मिली और उसने उस पेंसिल से जो कोरा पृष्ठ पहले खुला, उसी पर ये दो पंक्तियां लिख दीं—

"मैं विदा होता हूं। मेरा भाई डेविड मेरी जगह ले, और वह सुखी रहे!"

फिर उसने हस्ताक्षर किये, "फ़रमेन क्लैनचार्ली, इंग्लैंड का लार्ड।"

उसने जाकट उतारकर कोट पर रख दी और फिर अपना हैट जाकट पर रख दिया। हैट में उसने किताब का वह पन्ना, जिसपर अभी लिखा था, खोलकर रख दिया। पास एक पत्थर पड़ा देखा। उसने उसे उठाया और हैट पर रख दिया। यह सब करने के बाद उसने ऊपर गहरे अन्धकार में देखा। फिर उसका सिर धीरे-धीरे झुका मानो कोई अदृष्ट शृंखला उसे अतल की ओर खींच रही हो।

दीवार की नींव के पास एक छेद था। उसने उसमें अपना पैर रखा, जिससे उसका घुटना दीवार से ऊंचा हो गया, और अब कूदने के लिए उछलने की भी जरूरत नहीं रह गई। उसने अपने हाथ पीछे बांधे और कहा, "यही हो!"

उसने गहरे पानी पर आंखें जमाईं। उसी क्षण उसे ऐसा मालूम हुआ कि कोई जीभ से उसका हाथ चाट रहा है।

वह कांप उठा और पीछे घूमा।

होमो उसके पीछे खड़ा था।

: १० :

रात्रि और समुद्र

१. पहरेदार कुत्ता या संरक्षक देवता

ग्वाइनप्लेन चिल्ला उठा।

"तू है, भेड़िये!"

होमो ने अपनी पूंछ हिलाई। उसकी आंखें अंधेरे में चमक रही थीं। वह ग्वाइनप्लेन की ओर उत्सुकता से देख रहा था।

वह फिर उसके हाथ चाटने लगा। एक क्षण के लिए ग्वाइनप्लेन उन्मत्त मनुष्य के समान हो गया। आशा के महान पुनरागमन का ऐसा ही भारी आघात होता है।

अड़तालीस घंटों में वह सब प्रकार के वज्रों को विफल कर चुका था। परन्तु उसे मारने के लिए एक और बच रहा था। वह था आनन्द का वज्र, जो अभी उसपर गिरा। भाग्य की गूढ़ दया का उदय हुआ। भेड़िये के आसपास, उसे प्रकाश-मंडल चमकता हुआ दीखने लगा।

पर इस बीच होमो लौट चला था। वह कुछ कदम आगे गया और फिर रुका, यह देखने के लिए कि ग्वाइनप्लेन उसके पीछे-पीछे आ रहा है या नहीं।

ग्वाइनप्लेन उसके पीछे जा रहा था। होमो ने अपनी दुम हिलाई और वह आगे बढ़ा।

होमो ढालू रास्ते से चलकर नदी के पानी की ओर जा रहा था और ग्वाइनप्लेन उसके पीछे था।

कभी-कभी अत्यन्त महत्व की अवस्थाओं में ईमानदार जानवर की सहज-बुद्धि सर्वव्यापी ज्ञान के समान मालूम होती है।

ऐसी भी परिस्थिति होती है जब कि कुत्ता अनुभव करता है कि उसे अपने मालिक के पीछे-पीछे चलना चाहिए; पर कभी ऐसी भी अवस्था आती है, जब वह सोचता है कि उसे मालिक के आगे चलना चाहिए। उस समय वह अपनी सहज-बुद्धि की दिशा ग्रहण करता है। उसकी बुद्धि उसके

लिए अस्पष्ट आलोक के समान रहती है। वह विचित्र रूप से अनुभव करने लगता है कि उसे मार्ग-प्रदर्शक बनना ही पड़ेगा। क्या उसे मालूम रहता है कि मार्ग भयंकर है, और वह मदद करके मालिक को उसपर चढ़ा सकता है? शायद नहीं। पर सम्भव है वह जानता भी हो। कम-से-कम उसकी ओर से कोई दूसरा जानता है। जैसा कि हम कह चुके हैं, बहुधा जीवन में ऐसा हुआ करता है कि जब हम किसी महान सहायता के बारे में सोचते हैं कि वह नीचे से आई, तब वास्तव में वह ऊपर से आई हुई होती है। दैव के गूढ़ स्वरूपों को कौन जानता है!

यह जानवर क्या था? दैव!

नदी के पास पहुंचकर भेड़िया नदी के किनारे-किनारे संकरी ज़मीन पर चलने लगा।

वह बिना शोर किये या चिल्लाये चुपचाप बढ़ा जा रहा था। होमो सदा अपनी सहज-बुद्धि के अनुसार चलता था और अपना कर्तव्य करता था, परन्तु उसमें बागी का विचारपूर्ण संयम भी था।

कोई पचास कदम और, फिर वह रुका। दाहिनी ओर एक लकड़ी का मंच दिखाई दिया। यह मंच जहाज का घाट था। उससे लगी हुई कोई बड़ी-सी काली चीज़ दीख रही थी, जो कि बड़ी नाव थी। इस नाव के अगले सिरे पर प्रकाश टिमटिमा रहा था।

इस बात का सन्तोष करके कि ग्वाइनप्लेन आ रहा था, भेड़िया मंच पर कूद पड़ा।

नाव मंच से सटी हुई थी ताकि यात्री कदम रखते ही मंच पर से उसमें पहुंच जाते थे। होमो छलांग मारकर और ग्वाइनप्लेन एक कदम बढ़ाकर उसमें पहुंच गया।

नाव की छत बिल्कुल साफ थी और वहां कोई हलचल नहीं दीखती थी। यदि वहां कोई यात्री थे तो वे नाव में दाखिल हो चुके थे, क्योंकि नाव रवाना होने के लिए तैयार दीखती थी। नाव रात को रवाना होनेवाली थी, इसलिए मालूम होता है कि सब लोग नीचे की कोठरियों में सो रहे थे। ऐसी हालत में यात्री सुबह जागने पर ही ऊपर की छत पर आया करते हैं। मल्लाह शायद कोठरी में भोजन कर रहे थे और रवाना होने के समय की प्रतीक्षा में थे। वह समय निकट आ रहा था। इसलिए नाव में बिल्कुल शान्ति थी।

भेड़िया मंच पर तो दौड़ा था, परन्तु नाव पर पहुंचते ही वह चाल धीमी करके सावधानी से चलने लगा। वह अभी भी अपनी पूंछ हिला रहा था—आनन्द से नहीं; किन्तु व्यथित चित्त की उदासी से, धीरे-धीरे। ग्वाइन-

प्लेन के आगे-आगे वह पीछे की छत को पार करके बीच के चाखटे से अगली छत पर पहुंच गया।

चौखटे पर पहुंचकर ग्वाइनप्लेन ने अपने सामने वह प्रकाश देखा, जो किनारे पर से दिखाई दिया था। सामने के मस्तूल के पास छत पर एक लालटेन रखी थी, उसके धुंधले प्रकाश में ग्वाइनप्लेन ने पहचान लिया कि उर्सस की वही पुरानी चार पहियेवाली गाड़ी रखी है।

यह मकान, गाड़ी और झोपड़ी, जिसमें उसका बचपन बीता था, मोटे-मोटे रस्सों से मस्तूल के साथ बंधी थी। वह इतने समय तक बेकार पड़ी थी, इसलिए उसका सब सामान सड़ रहा था। लोहे को जंग लग गया था, चमड़ा फट गया था, लकड़ी में घुन लगा था। वह पूर्णरूप से अस्त-व्यस्त हो रही थी। उसके नीचे होमो की सांकल लटक रही थी।

क्या ऐसा नहीं मालूम होता कि प्रकृति का नियम और इच्छा यही थी कि ग्वाइनप्लेन एकदम दौड़कर जीवन, सुख और पुनःप्राप्त प्रेम पर टूट पड़े! पर ऐसी गंभीर भय की अवस्थाओं को छोड़कर अन्य अवस्था में ऐसा ही होता। जो बार-बार विपत्ति में धोखा खाते-खाते बिल्कुल नष्टप्राय होकर निकला हो, वह सुख के पास पहुंचते हुए भी झिझकता है। झिझकता है इस डर से कि जिस दुर्भाग्य का वह बलि बना है, कहीं वह दुर्भाग्य उसके संसर्ग से उन लोगों के पास न पहुंच जाय, जिनको कि वह प्यार करता है।

ग्वाइनप्लेन अपने मनोविकारों के भार से लड़खड़ाते हुए चारों तरफ देखने लगा और भेड़िया चुपचाप अपनी सांकल के पास जाकर बैठ गया।

२. निर्वाणोन्मुखी डीया !

गाड़ी के पीछे मस्तूल के पास कुछ बिछा था, वहां लालटेन की रोशनी पड़ रही थी। वह चटाई थी, जिसका एक ही कोना उसको दीखता था। उस चटाई पर शायद कोई लेटा था, क्योंकि उसकी छाया हिलती हुई दिखाई देती थी।

कोई बोल रहा था। गाड़ी की ओट से ग्वाइनप्लेन सुनने लगा। वह आवाज़, जोकि तेज़ होने पर कठोर और धीमी होने पर नम्र हो जाती थी; वह आवाज़ जिसने कि उसे कई बार डांटा था और इतनी अच्छी तरह शिक्षा दी थी, उस आवाज़ के स्वर में जीवन और स्पष्टता नहीं रही थी। वह अस्पष्ट और मंद थी और प्रत्येक वाक्य के अन्त में बोलनेवाले को लम्बी सांस लेनी पड़ती थी। उसमें पहले की-सी स्वाभाविकता और दृढ़ता नहीं रही थी। वह ऐसे मनुष्य की आवाज़ मालूम होती थी, जिसका सुख नष्ट हो

चुका था। आवाज़ भी भूत बन सकती है।

वह बातचीत नहीं कर रहा था, वह अपने-आप कुछ बोल रहा था। इस प्रकार के आत्म-निवेदन की उसको आदत थी। इसीलिए लोग उसे पागल कहा करते थे।

ग्वाइनप्लेन सांस रोककर सुनने लगा, ताकि एक भी शब्द न छूटने पाये। उसने सुना —

"यह नाव बड़ी भयंकर है, इसके आसपास कठरा नहीं है। यदि हम फिसल जायं तो पानी में गिरने से हमें बचाने के लिए कोई रोक नहीं है। यदि तूफान उठे तो हमें इसको नीचे ले जाना पड़ेगा, यह तो बुरा होगा। ज़रा पैर इधर-उधर पड़ा, या भय लगा, कि सर्वनाश हुआ। हे ईश्वर! हमारा क्या होनेवाला है? क्या यह सोई है? हां, यह सोई है। क्या यह बेहोश है? नहीं, उसकी नाड़ी काफी तेज़ है। वह नींद में है। नींद मृत्यु का स्थगित हो जाना है। वह सुखमयी अंधता है। लोगों को इधर आने से रोकने के लिए मैं क्या कर सकता हूं! सज्जनो, यदि आपमें से कोई यहां नाव पर हों तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि शोर न कीजिये। यदि आपको कष्ट न हो तो हमारे पास न आइये। आप जानते हैं कि अस्वस्थता की दशा में मनुष्य को सावधानी की आवश्यकता रहती है। देखो, इसे बुखार है। यह अभी युवती है। छोटी-सी जान और इसे बुखार चढ़ा है! मैंने यह चटाई यहां इसलिए बिछाई कि इसे कुछ हवा मिल सके। मैं ये सारी बातें समझाकर इसलिए कह रहा हूं कि आप सावधान हो जायं। यह थककर चटाई पर गिर पड़ी मानो बेहोश हो गई हो। किन्तु यह कोई है। आशा है, कोई इसे नहीं जगायेगा। यदि यहां कोई स्त्रियां हों तो उनसे भी मेरा यही निवेदन है। जवान लड़की! करुणाजनक अवस्था! हम गरीब भांड़ हैं, किन्तु मैं आपसे थोड़ी दया की प्रार्थना करता हूं, और यदि शोर न करने के लिए मुझे कुछ कीमत देनी पड़े तो मैं देने को तैयार हूं। इसका माथा पसीने से तर है। आइये, हम फिर कैद की सांकलें पहन लें। कष्ट का समय आ गया। हम डूबे जा रहे हैं। कोई हाथ—भयंकर हाथ —जो कि दिखाई नहीं देता, किन्तु जिसका भार हम अनुभव कर रहे हैं, हमारे भाग्य को अंधकार की ओर धकेल रहा है। तथास्तु! हम यह सह लेंगे। मैं केवल यही चाहता हूं कि यह बीमार न रहे। हां, और होमो! आश्चर्य है, वह कहां है? इस गड़बड़ में मैं उसको बांधना भूल गया। पता नहीं, मैं क्या कर रहा हूं। एक घंटे से अधिक हुआ, मैंने उसे नहीं देखा। मैं सोचता हूं, वह कहीं खाना ढूंढ़ने किनारे पर गया। आशा है, उसे कहीं कुछ नहीं हुआ होगा! होमो! होमो!"

होमो ने धीरे से पटियों पर अपनी दुम फटफटाई।

"तुम वहां हो! ईश्वर को धन्यवाद! यदि होमो खो जाता तो यह सहना असंभव था। इसने अपना हाथ हिलाया। शायद यह जगनेवाली है। चुप, होमो! ज्वर हट रहा है। अब हम रवाना होंगे। मेरा ख़याल है, रात अच्छी होगी। हवा नहीं है, झंडा लटक रहा है। रास्ता ठीक होगा। पता नहीं, आज तिथि कौन-सी है। चंद्रमा नहीं दीखता, किंतु बादलों में ज़रा भी हलचल नहीं है। समुद्र नहीं उमड़ेगा। रात अच्छी रहेगी। इसके गाल पीले हैं, सिर्फ कमज़ोरी है! नहीं, ये सुर्ख हैं, सिर्फ बुखार है। ठहरो! ये गुलाबी हैं। बिल्कुल अच्छी है! मुझे साफ-साफ नहीं दीखता। हां, तो अब हमें जीवन फिर से प्रारम्भ करना पड़ेगा। अब हम तुम दो ही बचे हैं। हम दोनों इसके लिए काम करेंगे! यह हमारी बच्ची है। अरे, नाव चल रही है! हम चल दिये! प्रणाम; लंदन! प्रणाम! प्रणाम!"

वह ठीक कह रहा था। उसने नाव के मंच से हटने की मंद आवाज सुनी। सिर पर कर्णधार खड़ा हुआ दीख रहा था। वह पतवार पर काम कर रहा था। वह अपने काम में दत्तचित्त था। वह अकेला था। जबतक नाव नदी में थी तबतक दूसरे मल्लाहों की आवश्यकता नहीं थी। कुछ मिनट बाद नाव बीच धार में पड़ गई और तेज़ी से चलने लगी। टेम्स नदी शांत थी। प्रवाह के साथ नाव तेज़ी से जा रही थी। पीछे लंदन का दृश्य अंधकार में विलीन हो रहा था।

उर्सस् का बोलना जारी रहा।

"चिंता नहीं, मैं इसे काढ़ा दूंगा। डर है कि कहीं सन्निपात न हो जाय। इसकी हथेलियों में पसीना आ रहा है। ईश्वर की दृष्टि में कौन-सा पाप किया है? यह विपत्ति हम पर कितनी शीघ्र आई! मेरी प्यारी बच्ची, तुम पड़ी हो। हम लंदन आये। हमने कहा, कैसा सुंदर शहर है! कैसी सुंदर इमारतें हैं! साउथवर्क भव्य है। हम वहां बस जाते हैं। किंतु अब वे स्थान भयंकर हो गये हैं। मैं जा रहा हूं। आज अप्रैल की ३० तारीख है! मुझे सदा से अप्रैल के महीने पर अविश्वास है। अप्रैल में सिर्फ दो दिन शुभ हैं, ५वां और २७वां, और चार अशुभ हैं, १०वां, २०वां, २६वां और ३०वां। यह तो ज्योतिषियों ने निश्चित कर दिया है। यह दिन बीत जाता तो कितना अच्छा होता! यहां से विदा होना अच्छा मालूम होता है। सुबह हम ग्रेवसेंड में होंगे और कल शाम को राटरडम पहुंच जायंगे। धत्तेरे की! हम अपनी गाड़ी के साथ फिर से जीवन आरम्भ करेंगे! हम उसे खींचेंगे, क्यों होमो!" हलकी फटफटाहट से भेड़िये ने अपनी स्वीकृति घोषित की।

उर्सस बोलता रहा—

"जैसे हम शहर से बाहर जा रहे हैं वैसे विपत्ति से भी बाहर हो जायं! हमें सुखी होना चाहिए। हाय! जो चला गया उसकी कमी सदा रहती ही है। जो बचते हैं, उनपर उसकी छाया पड़ी रहती है। तुम जानते हो होमो, मेरा मतलब किससे है? हम चार थे, किंतु अब हम तीन ही हैं। जीवन हमारे प्रियजनों का चिरवियोग ही है। अपने पीछे दुःख की लंगार छोड़ जाते हैं। होमो, हवा अनुकूल चल रही है। अब सेंट पाल गिरजे का गुंबज नहीं दीखता। अब हम ग्रीनविच के पास से गुजरेंगे। वहां छः मील होंगे। मैं पुजारियों, मजिस्ट्रेटों और लोगों से भरी हुई उन घृणित राजधानियों से सदा के लिए दूर जाता हूं। मुझे मर्मर करती हुई पत्तियां देखना ज्यादा पसंद है। इसके माथे पर अभी तक पसीना है। मुझे इसके हाथ पर की ये बड़ी-बड़ी नीली नसें अच्छी नहीं लगतीं। उनमें बुखार भरा है। इससे मेरी जान निकली जाती है। मेरी बच्ची, सो जा! हां, यह सो रही है।"

एक आवाज बोली। वह आवाज अमिट थी, ऐसी मालूम होती थी कि दूर से आई हो। उसमें दिव्य भयंकरता थी, वह डीया की आवाज़ थी।

अभी तक ग्वाइनप्लेन जो कुछ अनुभव कर रहा था वह कुछ नहीं था। उसकी देवी बोली। ऐसा मालूम होने लगा कि वह स्वर्गीय निद्रा में परलोक की आवाज सुन रहा हो।

उस आवाज ने कहा—

"उन्होंने अच्छा ही किया जो चले गये। यह संसार उनके योग्य नहीं था। मुझे भी उनके साथ जाना चाहिए। पिताजी! मैं सुखी होनेवाली हूं।"

उर्सस ने कष्ट-भरी आवाज़ से कहा, "बेटी, इसका क्या मतलब?"

उत्तर मिला—

"पिताजी, दुःखी मत होओ!"

इसके बाद वह रुकी, मानो सांस लेने के लिए रुकी हो। फिर धीरे से कहे हुए ये शब्द ग्वाइनप्लेन के कान तक पहुंचे:

"ग्वाइनप्लेन यहां नहीं है। अब मैं अंधी हुई। मुझे नहीं पता था कि रात कैसी होती है? रात अनुपस्थिति है।"

वह आवाज रुकी और फिर बोलने लगी—

"मुझे मालूम है, ग्वाइनप्लेन कहां मिलेंगे? मुझे मार्ग का संदेह नहीं है। पिताजी, वह कहां हैं? बाद में आप आ मिलेंगे, और होमो भी।"

होमो ने अपना नाम सुनकर धीरे से तख्ते पर दुम पटकी।

उस आवाज ने फिर शुरू किया—

"पिताजी, आप समझते हैं कि जब ग्वाइनप्लेन यहां नहीं हैं तो यहां कुछ नहीं रह गया। यदि मैं यहां रहना भी चाहूं तो भी नहीं रह सकती; क्योंकि सांस तो लेनी ही पड़ेगी। किन्तु वह असंभव है। मैं ग्वाइनप्लेन के साथ थी। मेरा जीना स्वाभाविक था। अब ग्वाइनप्लेन नहीं रहे, मैं मरती हूं। एक बात होगी, या तो वे आयें, या मैं जाऊं। जब वे नहीं आ सकते, तो मैं ही उनके पास जाती हूं। मरना अच्छा है। इसमें ज़रा भी कठिनाई नहीं। पिताजी, जो यहां बुझता है वह दूसरी जगह जाकर सिलगने लगता है। इस संसार में रहने से हृदय दुखता है। यह तो हो नहीं सकता कि हम सदा दुःखी रहेंगे। जब हम वहां जायंगे तब हम विवाह करेंगे, और फिर अलग नहीं होंगे, और हम प्यार ही प्यार करेंगे, और यही तो ईश्वर है।"

उर्सस बोला, "देखो, अपने को उत्तेजित न करो!"

वह आवाज़ जारी रही—

"अच्छा उदाहरण के लिए, पारसाल की बात है। पारसाल बसंत में हम साथ-साथ थे और सुखी थे। अब की अवस्था कितनी भिन्न है! मुझे याद नहीं, हम कौन-से छोटे-से गांव में थे, वहां पेड़ थे और मैं बुलबुल का चहकना सुना करती थी। हम लंदन आये। सब बदल गया। यह शिकायत नहीं है। जब कोई नई जगह जाता है तो उसके बारे में उसे क्या मालम हो सकता है! पिताजी, आपको याद है, एक दिन उस बड़ी कुर्सी में एक स्त्री आकर बैठी थी। आपने कहा था, 'वह डचेज़ है।' मैं उदास हो गई थी। मैं सोचती हूं, हम छोटे-छोटे शहरों में ही रहते तो अच्छा होता। तो भी ग्वाइनप्लेन ने ठीक किया। अब मेरी बारी है। पिताजी, मैं जो कुछ कहती हूं, उसे आप सुनते हैं न! यह क्या चल रहा है? ऐसा मालूम होता है कि हम किसी ऐसी चीज़ में हैं जो चल रही है तो भी मुझे चक्रों की आवाज़ नहीं सुनाई देती।"

कुछ रुककर वह आवाज़ फिर बोली—

"मुझे कल और आज में ठीक-ठीक फर्क नहीं मालूम होता। मैं शिकायत नहीं करती। मुझे मालूम नहीं कि क्या हो गया है, किन्तु कुछ हुआ अवश्य है।"

ये शब्द अतोष्य और गम्भीर मधुरता तथा उसास के साथ कहे गये थे। अन्त में ग्वाइनप्लेन ने सुना—

"यदि वे नहीं आते तो मुझे जाना चाहिए।"

उर्सस ने शोकपूर्ण स्वर में कहा, "मैं भूतों में विश्वास नहीं करता।"

वह फिर बोला—

"तुम पूछती हो, यह मकान क्यों चलता है। इसलिए कि हम नाव पर

हैं। शांत हो जाओ, तुम्हें इतनी बातें नहीं करनी चाहिए। बेटी, यदि तुम मुझे प्यार करती हो तो अपनेको उत्तेजित मत करो; इससे तुम्हें बुखार आ जायगा। देखो, मैं कितना बूढ़ा हूं! तुम बीमार पड़ोगी तो मैं सह न सकूंगा। मुझ पर दया करो, बीमार न पड़ो!"

वह आवाज़ फिर बोली—

"जब कि वे हमें केवल स्वर्ग में मिल सकते हैं, तब इस पृथ्वी पर ढूंढ़ने से क्या लाभ!"

उर्सस ने ज़रा अधिकार दिखाते हुए उत्तर दिया—

"शांत हो जाओ! कभी-कभी तुम्हारी बुद्धि न जाने कहां चली जाती है। मैं कहता हूं, चुप रहो। तुम्हें पता नहीं कि बीमारी कैसी होती है। तुम शांत हो जाओ तो मैं भी शांत हो जाऊं। बेटी, मेरे लिए भी तो कुछ करो! यदि उसने तुम्हें उठाया था तो मैंने तुम्हें अपने घर में आश्रय दिया था। तुम मुझे बीमार कर दोगी। यह ठीक नहीं। तुम शांत हो जाओ और सो जाओ। सब ठीक हो जायगा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं, सब ठीक हो जायगा। इसके अलावा, आज हवा अच्छी है। मालूम होता है, आज की रात अपने ही लिए बनाई गई है। कल हम राटरडम पहुंच जायंगे, यह शहर हालैंड में है, म्यूज़ नदी के मुहाने पर।"

वह आवाज़ बोली, "पिताजी, सुनो! जब दो प्राणी बचपन से साथ-साथ रहे हों तो उनकी अवस्था में गड़बड़ नहीं पड़नी चाहिए; वरना मृत्यु हो जाती है, और कुछ दूसरा परिणाम नहीं हो सकता। मैं आपसे प्यार करती हूं, किन्तु मैं अनुभव करती हूं कि मैं बिलकुल आपके साथ नहीं हूं, यद्यपि अभी तक मैं बिलकुल उनके साथ भी नहीं हूं।"

उर्सस ने फिर कहा, "चलो, सोने का यत्न करो!"

आवाज़ ने उत्तर दिया—

"मुझे अभी काफी नींद लगनेवाली है।"

उर्सस ने कांपते हुए स्वर में उत्तर दिया, "मैं तुम्हें कहता हूं न कि हम हालैंड के राटरडम को चल रहे हैं। वह शहर है।"

वह आवाज़ बोली, "पिताजी, मैं बीमार नहीं हूं। यदि तुम्हें इसकी चिन्ता हो तो चिन्ता न करो। मुझे बुखार नहीं है। सिर्फ ज़रा गर्मी मालूम होती है, और कुछ नहीं।"

उर्सस ने हकलाते हुए कहा—

"म्यूज़ के मुहाने पर—"

"पिताजी, मैं बिलकुल अच्छी हूं। किन्तु सुनिये, मैं अनुभव करती हूं कि मैं मरने वाली हूं!"

उर्सस ने कहा, "ऐसी मूर्खता मत करो!" और वह बोला—"ईश्वर दया करे, उसे कोई आघात न होने पाये!"

इसके बाद नीरवता छा गई। फिर एकाएक उर्सस चिल्ला उठा—"क्या कहती हो? उठती क्यों हो? चुपचाप पड़ी रहो!"

ग्वाइनप्लेन कांप उठा और उसने अपना सिर आगे बढ़ाया।

३. मिलन

उसने डीया को देखा। वह अभी-अभी उठी थी। वह लम्बा सफेद कपड़ा पहने थी, जो सावधानी से ढका था। केवल उसकी गरदन की सुन्दर आकृति ही उसमें से चमक रही थी। उसके हाथ बांहों से ढके थे और पैर कपड़े की तहों से। गरम और फूली हुई नीली नसें लता के समान उसके हाथ पर दीख रही थीं। वह बेंत के समान कांप रही थी। लालटेन का प्रकाश उसके सुंदर चेहरे पर पड़ रहा था। उसके खुले बाल कंधों पर लहरा रहे थे। उसके गालों पर आंसू नहीं थे। उसकी आंखों में अग्नि और अन्धकार था। उसका चेहरा पीला था। वह पीलापन पार्थिव मुख पर दिव्य जीवन की पारदर्शकता के समान था। उसकी लचीली और सुन्दर आकृति मानो उसके वस्त्रों की तहों में घुल-मिल गई थी। वह दीप-शिखा के समान हिल रही थी, साथ ही वह अन्धकार में भी विलीन हो रही थी। उसकी खुली हुई चौड़ी आंखें तेजपूर्ण थीं। वह ऐसी दीखती थी मानो अभी काल से छूटकर आई हो, मानो प्रभातकाल में खड़ी हुई आत्मा हो।

उर्सस ने, जिसकी कि पीठ ही ग्वाइनप्लेन को दीखती थी, भयभीत होकर अपने हाथ ऊपर उठाये, "अरे बेटी! हे परमात्मा! इसे सन्निपात हो गया। मुझे सन्निपात का ही सबसे अधिक भय था। इसे कोई सहसा आघात नहीं पहुंचना चाहिए, अन्यथा यह मर जायगी। तो भी आघात के अलावा और कोई चीज़ इसे पागल होने से नहीं बचा सकती। मृत या पागल! कैसी विकट अवस्था है। हे ईश्वर! मैं क्या करूं! बेटी, सो जा!"

इतने में डीया बोल उठी। उसका स्वर अस्पष्ट था, मानो उसके और पृथ्वी के बीच में कोई बादल आ गया हो:

"पिताजी, आप गलत कहते हैं। मुझे ज़रा भी सन्निपात नहीं है। आप जो कुछ कहते हैं, वह सब मैं साफ-साफ कहती हूं। आप कहते हैं कि आज आदमियों की बहुत भीड़ है, वे ठहरे हैं और मुझे आज रात को खेल करना होगा। मैं बिल्कुल तैयार हूं। मालूम हुआ! मेरी बुद्धि ठिकाने पर है। किन्तु मैं जानती नहीं कि क्या करना चाहिए; क्योंकि मैं मर चुकी हूं, और ग्वाइनप्लेन मर गये हैं। तो भी मैं आती हूं। मैं खेलने को तैयार हूं।

लो, मैं आई; पर ग्वाइनप्लेन तो यहां नहीं हैं।"

उर्संस बोला, "बेटी, आ जा, मेरा कहना सुन ले। सो जा!"

"वह यहां नहीं हैं, नहीं हैं। अरे, कितना अंधेरा है!"

उर्संस गुरगुराया, "अंधेरा! यह शब्द इसने पहले-पहल कहा है।"

ग्वाइनप्लेन आहिस्ता से रेंगकर गाड़ी के पायदान से चढ़कर उसके अन्दर गया। वहां खूंटी से चोगा उतारकर उसने पहना, टोपी सिर पर रख ली और रस्सों, कोठरियों तथा मस्तूल की आड़ में होता हुआ वापस आ गया।

डीया उसी तरह बड़बड़ाती रही। उसके होंठ हिल रहे थे और धीरे-धीरे उस बड़बड़ाहट ने तान का स्वरूप धारण किया। रुक-रुककर और सन्निपात के स्वर-भंग के साथ उसकी आवाज़ वही रहस्यपूर्ण गायन गाने लगी, जो कि उसने 'अन्धकार-संहार' में कई बार ग्वाइनप्लेन के सामने गायर था। वह गा रही थी और उसकी आवाज़ मधुमक्खियों की गुन-गुनाहट के समान मन्द तथा अस्पष्ट थी :

अरे उठ भाग, भाग जा रात!
बधाई गाता, प्रमुद प्रभात।

वह रुकी। "नहीं, यह सच नहीं है। मैं मरी नहीं हूं। मैं क्या कर रही थी? हाय! मैं जीती हूं। मैं जीती हूं। वे मर चुके हैं। मैं नीचे हूं। वे ऊपर हैं। वे चले गये। मैं यहीं हूं। उनकी आवाज़ अब नहीं सुनाई देगी, और न उनके परों की आहट। ईश्वर ने हमें पृथ्वी पर छोटा-सा स्वर्ग दिया, पर उसने वह स्वर्ग छीन भी लिया। ग्वाइनप्लेन! यह खत्म हो गया। अब मैं कभी तुम्हें अपने पास अनुभव नहीं करूंगी। कभी नहीं सुनूंगी।" और वह गाने लगी—

न रो, हो रोनेवाले शान्त!
स्वर्ग में जा, होकर निर्भ्रान्त।

उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, मानो उसे किसी चीज़ पर रखने के लिए टटोल रही हो।

उर्संस मानो एकाएक पथरा गया था। ग्वाइनप्लेन सहसा उर्संस के पास पहुंचकर डीया के सामने घुटने टेककर झुक गया।

डीया कह रही थी, "कभी नहीं, मैं उनकी आवाज़ कभी नहीं सुनूंगी।" वह फिर गाने लगी—

तोड़ दे, बन्धन अपना तोड़!
निशाचर काले कपड़े छोड़।

तब उसने आवाज़ सुनी। वह प्यारी आवाज़ उत्तर में गाती हुई सुनी—

अहा ! हा ! आ जा, कर ले प्यार !

और उसी क्षण डीया ने अपने हाथ के नीचे ग्वाइनप्लेन का सिर अनुभव किया। उसने एक अवर्णनीय चीख मारी।

"ग्वाइनप्लेन !"

एक प्रकार का प्रकाश, मानो तारे का, उसके पीले चेहरे पर चमकने लगा और वह खड़खड़ाने लगी। ग्वाइनप्लेन ने उसे अपनी भुजाओं में थाम लिया।

उर्सस चिल्ला उठा, "ज़िंदा !"

डीया फिर बोली, "ग्वाइनप्लेन !"

उसका सिर झुककर ग्वाइनप्लेन के गाल से लग गया और वह आहिस्ता से बोली—

"तुम मेरे पास फिर से आ गये। धन्यवाद, ग्वाइनप्लेन !"

और उसकी गोद में बैठी हुई उसने अपना सिर ऊपर उठाया। उसके आलिंगन में लिपटी हुई डीया ने अपना मधुर मुख उसकी ओर उठाया और उसपर अपना प्रकाश तथा छायापूर्ण आंखें जमाईं, मानो वह उसे देख रही हो।

वह बोली, "तुम्हीं हो !"

ग्वाइनप्लेन ने उसकी सांसों को चुम्बनों से ढंक दिया। ऐसे भी शब्द होते हैं जो एक साथ शब्द, चीत्कार और उसांस होते हैं—जिनमें समस्त हर्ष और समस्त शोक मिलकर एक साथ प्रस्फुटित होता है। उनका कोई अर्थ नहीं रहता, किन्तु वे सब-कुछ कह जाते हैं।

"हां, मैं हूं। मैं ग्वाइनप्लेन हूं, जिसकी कि तुम आतमा हो। मेरी बात सुनो ! जिसकी कि तुम बच्ची हो, पत्नी हो, तारिका हो, जीवन की श्वास हो; जिसके लिए तुम अनन्तता हो, मैं वही हूं ! मैं यहां हूं ! मैं तुम्हें अपनी भुजाओं में पकड़े हूं ! मैं जीता हूं ! मैं तुम्हारा हूं ! अरे, जब मैं सोचता हूं कि एक क्षण में सबकुछ खत्म हो गया होता—एक मिनट और कि होमो आ गया ! मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगा, निराशा आनन्द के कितने निकट रहती है ! डीया, हम जीवित हैं ! डीया, मुझे क्षमा करो ! हां, मैं सदा के लिए तुम्हारा ही हूं। तुम ठीक हो ! मेरे सिर को हाथ लगाओ। देखो, मैं ही हूं। तुमने कहा कि मैं नीचे उतरा हूं। ऐसी बात नहीं है। मैं ऊपर चढ़ा हूं, फिर से तुम्हारे साथ ! सदा के लिए ! मैं कहता हूं सदा के लिए ! एक साथ ! हम एक साथ हैं ! इसका किसे विश्वास था ! हमने एक-दूसरे को

फिर से पा लिया। हमारे कष्ट बीत गये। अब हमारे सामने सिवा आनन्द के कुछ नहीं है। हमारा सुखी जीवन फिर से प्रारम्भ होगा और हम अपना दरवाज़ा इतने ज़ोर से बन्द कर देंगे कि फिर कभी विपत्ति भीतर नहीं आ सकेगी। मैं तुम्हें सब बताऊंगा। तुम आश्चर्य में पड़ जाओगी। नाव रवाना हो चुकी है। अब इसे कोई नहीं रोक सकता। हम रवाना हो चुके और स्वतन्त्र हैं। हम हालैंड को जा रहे हैं, हम विवाह करेंगे। मुझे जीविकोपार्जन का भय नहीं है। उसे कौन रोक सकता है! डर की कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी पूजा करता हूं!

"इतनी जल्दी नहीं!" उर्सस ने हकलाते हुए कहा।

डीया ने कांपते हुए और दैवी स्पर्श के आनन्दातिरेक के साथ अपना हाथ ग्वाइनप्लेन के चेहरे पर फेरा। ग्वाइनप्लेन ने उसे यह कहते हुए सुना, "देवताओं का चेहरा ऐसा ही रहता है।"

फिर उसने उसके कपड़े छुए और कहा—

"यह चोगा, यह टोपी, कुछ भी नहीं बदला, सब ज्यों-का-त्यों है।"

उर्सस विमूढ़, आनन्दित, मुस्कराते हुए और आंसू बहाते हुए उनकी ओर देख रहा था। वह अपने-आप बोला—

"मेरी समझ में कुछ नहीं आता। मैं नितान्त मूर्ख हूं—मैंने उसे कब्र में पहुंचाये जाते देखा था! मैं रोता और हंसता हूं। बस, मैं इतना ही जानता हूं। मैं प्रेमी के समान महामूर्ख हूं। मैं वास्तव में ऐसा ही हूं। मैं इन दोनों के प्रेम में फंसा हूं। बूढ़े मूर्ख! विकार बहुत अधिक हो गया—बहुत अधिक! मुझे इसीका डर है। नहीं, मैं तो यही चाहता था। ग्वाइनप्लेन, उनकी सावधानी रखना। हां, वे चूमें, इससे मुझे कोई मतलब नहीं। मैं तो केवल दर्शक हूं। लेकिन मेरा जी ऊबता है। मैं उनके सुख का उपभोग करता हूं और उसी पर जीता हूं।"

जब उर्सस इस तरह बोल रहा था, ग्वाइनप्लेन बोला—

"डीया, तुम अत्यन्त सुंदरी हो! मुझे पता नहीं कि इन पिछले थोड़े से दिनों में मेरी बुद्धि कहां चली गई थी। सच तो यह है कि संसार में तुम एक ही हो। मैं तुम्हें फिर से देख रहा हूं, किंतु अभी तक मुझे विश्वास नहीं होता। इस जहाज में! पर बताओ तो यह सब कैसे हुआ? उन्होंने तुम्हारी क्या हालत कर दी? किन्तु ग्रीनबाक्स कहां है? उन्होंने तुम्हें लूट लिया। उन्होंने तुम्हें निकाल दिया। यह तो नीचता है! अरे, मैं तुम्हारा बदला लूंगा—मैं तुम्हारा बदला लूंगा, डीया! उन्हें इसका उत्तर देना पड़ेगा। मैं इंग्लैंड का पीयर हूं।

उर्सस पीछे हटा, मानो कोई ग्रह उसकी छाती से टकरा गया हो और

वह ग्वाइनप्लेन की ओर ध्यान से देखने लगा।

यह तो स्पष्ट है कि यह मरा नहीं; किन्तु क्या यह पागल हो गया है? वह संदेहपूर्वक उसकी बातें सुनने लगा।

ग्वाइनप्लेन बोला—

"डीया, शांत हो जाओ। मैं हाउस ऑव लार्ड्स में शिकायत पेश करूंगा।"

उर्सस ने फिर उसकी ओर देखा और उंगली से अपना माथा ठोककर; और फिर निश्चय करके कहा—

"मेरे लिए यह सब एक ही है। सब ठीक हो जायगा। मेरे ग्वाइन-प्लेन, तुम चाहे जितने पागल हो जाओ, यह तो मनुष्यों का अधिकार है। मुझसे पूछो तो मैं सुखी हूं। किंतु यह सब कैसे हुआ?'

नाव शांतिपूर्वक तेज़ी से बढ़ी जा रही थी। रात अधिकाधिक अंधेरी होती जा रही थी। थोड़े-से बड़े-बडे तारे दीख रहे थे, वे भी एक-एक करके छिप गये। अब एक भी नहीं रहा और समस्त आकाश काला, अनन्त और मृदुल हो गया। नदी चौड़ी होने लगी। अन्त में उसके दोनों किनारे पतली रेखाओं के समान होकर अंधकार में विलीन हो गये। इस अंधकार में मे गंभीर शांति का आविर्भाव हुआ। ग्वाइनप्लेन आधा बैठा हुआ था और डीया को अपनी गोद में लिये था। वे बातचीत कर रहे थे, तुतला रहे थे, आनन्दोन्मत्त होकर बक रहे थे। आनन्द, हम तेरा चित्र कैसे खींचें!

"मेरे जीवन!"

"मेरे स्वर्ग!"

"मेरे प्रेम!"

"मेरे सुख!"

"ग्वाइनप्लेन!"

"डीया, मैं मस्त हूं। ला, तेरे पैर चूमूं।"

"तो फिर निःसंदेह तुम ही हो।"

"मुझे अभी इतनी बातें कहनी है कि मुझे नहीं सूझता, कहां से प्रारम्भ करूं।"

"एक चुंबन!"

"प्रेयसी!"

"ग्वाइनप्लेन, मुझसे यह न कहना कि तुम सुंदरी हो। सुंदर तो तुम हो।"

"मैंने तुम्हें फिर से पा लिया। मैं तुम्हें हृदय मे चिपटाये हूं, यह सच है। तुम मेरी हो। मैं स्वप्न नहीं देखता। क्या यह संभव है? हां, है। मुझे

जीवन पुनः प्राप्त हुआ। यदि तुम्हें मालूम हो! मेरे साथ सब प्रकार की विचित्र घटनाएं हुई हैं। डीया!"

"ग्वाइनप्लेन, मैं तुम्हें प्यार करती हूं!"

और उर्सस मूंह में बोला—

"मैं पितामह के समान सुखी हूं।"

होमो गाड़ी के नीचे से निकलकर विचारपूर्वक एक से दूसरे के पास बिना ध्यान आकर्षित किये आ-जा रहा था। वह उन्हें चाटता फिरता था; कभी उर्सस का मोटा जूता, कभी ग्वाइनप्लेन का चोगा, कभी डीया का कपड़ा और कभी चटाई। यह उसका आशीर्वाद देने का तरीका था।

वे चैथम और मेंडवे का मुहाना पार करके समुद्र में पहुंच रहे थे। अंधकारमय वायुमंडल इतना शांत था कि उन्होंने बिना बाधा टेम्स की यात्रा समाप्त कर दी। किसी प्रबन्ध की आवश्यकता नहीं पड़ी और न किसी मल्लाह को ही छत पर बुलाना पड़ा। नाव के दूसरे छोर पर कर्णधार अकेला ही रहबरी कर रहा था। यही एक आदमी ऊपर था। सामने के छोर पर की लालटेन इन प्राणियों के समूह पर प्रकाश डाल रही थी। वे सब मिलन के आनन्द के कारण सहसा कष्ट में से उबरे थे। इसकी किसी-को आशा नहीं थी।

आहुतियां

तत्काल डीया ग्वाइनप्लेन की गोद से छूटकर खड़ी हो गई। उसने दोनों हाथों से अपना हृदय दबाया, मानो उसका स्फुरण धीमा करने के लिए।

वह बोली, "यह क्या हो रहा है! कुछ खराबी जरूर है। आनन्द से दम घुटा जाता है। नहीं, कुछ नहीं! यह सौभाग्य है! ग्वाइनप्लेन, तुम्हारे आगमन ने मुझे आघात पहुंचाया है—आनन्द का आघात! यह जो आनन्द का स्वर तुमने मेरे हृदय में भर दिया है, उससे मैं उन्मत्त हो रही हूं। तुम्हारी अनुपस्थिति में मैं अनुभव कर रही थी कि मैं मर रही हूं। सच्चा जीवन मुझे छोड़कर जा रहा था, तुम उसे वापस ले आये। मैंने अनुभव किया, मानो मेरे अन्दर से कोई वस्तु तोड़कर अलग की जा रही हो। इस प्रकार अंधकार अलग किया जा रहा है, और मैं अनुभव कर रही हूं कि मेरे अन्तर में जीवन का उदय हो रहा है—तेजोमय जीवन का स्वर और आनन्द के जीवन का उदय। यह जीवन, जोकि तुमने अभी मुझे दिया है, आश्चर्य-जनक है। यह इतना स्वर्गीय है कि उससे मुझे थोड़ा-सा कष्ट होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो मेरी आत्मा विस्तृत हो गई है और मेरे इस

शरीर में कठिनाई से समा सकती है। यह दिव्य जीवन, यह स्वर्गीय सुख मेरे मस्तक में प्रवाहित होकर उसमें संचार कर रहा है। अपने हृदय में मैं पंखों की फड़फड़ाहट का अनुभव कर रही हूं। मैं अद्भुत किन्तु सुख का अनुभव कर रही हूं। ग्वाइनप्लेन, तुम मेरे उद्धारक बने हो!"

उसका चेहरा लाल हुआ, फिर पीला हुआ और फिर लाल हुआ और फिर वह गिर पड़ी।

उर्सस ने कहा, "हाय! तुमने उसे मार डाला।"

ग्वाइनप्लेन ने डीया की ओर अपने हाथ बढ़ाये। आनन्दातिरेक के बाद दुःखातिरेक। कितना आघात! यदि वह डीया को न संभाले होता तो वह स्वयं गिर पड़ता।

वह कांपते हुए चिल्लाया, "डीया, क्या बात है?"

वह बोली, "कुछ नहीं; मैं तुम्हें प्यार करती हूं!"

वह उसकी गोद में मलमल के कपड़े के समान निर्जीव पड़ी थी। उसके हाथ नीचे लटक रहे थे।

ग्वाइनप्लेन और उर्सस ने उसे चटाई पर लिटा दिया। वह धीरे से बोली—

"लेटने से मेरी साँस रुकती है।"

उन्होंने उसे ऊपर उठाया।

उर्सस बोला, "तकिया लाओ!"

वह बोली, "किसलिए? मेरे पास ग्वाइनप्लेन है!"

ग्वाइनप्लेन उसे थामे हुए पीछे बैठा था। उसने अपना सिर ग्वाइन-प्लेन के कंधे से टेक दिया। ग्वाइनप्लेन की आँखें दुःख से पागल हो रही थीं।

वह बोली, "अहा! मैं कितनी सुखी हूं!"

उर्सस ने उसकी कलाई पकड़कर नाड़ी की गति गिनी। उसने अपना सिर नहीं हिलाया। वह कुछ नहीं बोला, सिवा इसके कि उसकी पलकें जल्दी-जल्दी खुल और मुंद रही थीं, मानो अश्रु-प्रवाह को बलात् रोक रही हों।

ग्वाइनप्लेन ने पूछा, "क्या बात है?"

उर्सस ने डीया की बाईं ओर अपना कान लगाया।

ग्वाइनप्लेन ने उत्सुक होकर फिर पूछा, किन्तु वह उत्तर में डर रहा था।

उर्सस ने ग्वाइनप्लेन की ओर देखा और फिर डीया की ओर। उर्सस का चेहरा पीला पड़ गया था। वह बोला—

"अब हम कैण्टरबरी के बराबर होंगे। यहां से ग्रेवसेंड बहुत दूर नहीं

हो सकता। रात-भर हवा अच्छी रहेगी। समुद्र पर हमें आक्रमण का भय नहीं है, क्योंकि सब जंगी जहाज स्पेन के किनारे पर हैं। हमारा मार्ग अच्छी तरह पूरा होगा।"

डीया झुकी, उसके चेहरे की रंगत पीली पड़ती जा रही थी। वह जगह-जगह अपने कपड़े खींचकर पकड़ने लगी। उसने अनिर्वचनीय शोक से भरी हुई सांस ली और बोली—

"मैं जानती हूं, यह क्या है। मैं मर रही हूं!"

स्वाइनस्प्रेन भयभीत होकर खड़ा हो गया। उर्सस ने डीया को पकड़ लिया।

"मरती हो! तुम मरती हो! नहीं, यह नहीं होगा! तुम नहीं मर सकती! अभी मरती हो! इसी समय मरती हो! यह असंभव है! ईश्वर इतना भयंकर और क्रूर नहीं है कि वह तुम्हें देकर उसी क्षण वापस ले ले। नहीं, ऐसी बात हो नहीं सकती। इससे तो ईश्वर के बारे में संदेह होने लगेगा। तब तो अवश्य ही प्रत्येक वस्तु धोखे की टट्टी बन जायगी पृथ्वी, आकाश, बच्चों का झूला, मनुष्यों का हृदय, प्रेम, तारे सब। ईश्वर धोखेबाज होगा और मनुष्य धोखे में। कोई ऐसी वस्तु नहीं रह जायगी; जिसमें विश्वास किया जाय। यह तो सृष्टि का अपमान होगा। तब तो सब गड़बड़ में होगा। तुम जानती हो, तुम क्या कर रही हो, डीया? तुम्हें जीना होगा! मैं तुम्हें जीने की आज्ञा देता हूं! तुम्हें मेरी आज्ञा का पालन करना होगा! मैं तुम्हारा पति हूं और तुम्हारा स्वामी हूं। मैं तुम्हें छोड़कर जाने से रोकता हूं! हे परमात्मा! अरे अभागे मनुष्य! नहीं, यह नहीं हो सकता कि तुम्हारे बाद मैं इस संसार में रहूं। क्यों, यह तो उतना ही भयंकर होगा जितना कि सूर्य का न होना! डीया! डीया! सचेत होओ! यह तो क्षणिक कष्ट है। कभी-कभी कंपकपी आ जाती है, और हमें फिर उसका ध्यान भी नहीं रहता। यह नितांत आवश्यक है कि तुम अच्छी और नीरोग हो जाओ। तुम मरती हो! मैंने तुम्हारे साथ जो किया, उसका विचार-मात्र मुझे पागल किये देता है। हम एक-दूसरे के हैं और हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं। तुम्हारे जाने का कोई कारण नहीं है! यह तो अन्याय होगा! क्या मैंने अपराध किया है? पर तुमने तो मुझे क्षमा कर दिया है। तुम मुझे आतमघाती तो नहीं बनाना चाहतीं—क्या चाहती हो, मैं पागल बनूं, झूठ बोलूं! डीया, मैं प्रार्थना करता हूं! विनय करता हूं। चरण छूता हूं! मरो मत!"

आंसुओं से उसका गला रुंध गया था और वह अपने बाल खींचते हुए त्रास भय से दुःखित होकर, डीया के चरणों के पास गिर पड़ा।

डीया बोली, "मेरे ग्वाइनप्लेन, मेरा दोष नहीं है।"

इसके बाद उसके होठों पर फेन निकल आया। उर्सस ने जल्दी में उसे पोंछ दिया। ग्वाइनप्लेन उसके पैरों के पास पड़ा था, इसलिए वह नहीं देख सका।

ग्वाइनप्लेन ने डीया के पैर पकड़ लिये और तरह-तरह के शब्दों में उसकी प्रार्थना करने लगा।

"मैं कहता हूं, मैं यह नहीं होने दूंगा। तुम मरती हो! मुझमें यह सहने की शक्ति नहीं है। मरती हो! हां, किन्तु हम दोनों साथ-साथ मरेंगे। तुम मरती हो, मेरी डीया! मैं उसकी अनुमति कभी नहीं दूंगा! मेरी देवी, मेरी प्रेयसी! तुम जानती, हो मैं तुम्हारे साथ हूं। मैं शपथ-पूर्वक कहता हूं,तुम जिन्दा रहोगी। अरे, तुम यह सोच नहीं सकतीं कि तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा! तुम्हें यह मालूम हो जाय कि तुम मेरे लिए कितनी आवश्यक हो तो तुम्हारा मरना असम्भव हो जाय। डीया! देखो मेरे लिए केवल तुम ही हो! मेरे साथ अत्यन्त असाधारण घटनाएं हुई हैं। तुम विश्वास नहीं करोगी कि मैंने इन चन्द घंटों के अन्दर समस्त जीवन की छानबीन कर डाली है! मैंने एक बात ढूंढ़ निकाली है—वह यह कि उसमें कुछ नहीं है! तुम जीवित हो, तुम न रहो तो मेरे लिए समस्त विश्व अर्थ-हीन हो जायगा। मेरे साथ रहो! मुझ पर दया करो! तुम मुझे प्यार करती हो, इसलिए जीती रहो! जब तुम मुझे फिर से मिली हो तो मेरे साथ रहने के लिए ही। थोड़ी और ठहरो, जब हम कुछ देर तक ही साथ-साथ रह पाये हैं तब तुम मुझे इस तरह नहीं छोड़ सकतीं! अधीर मत बनो! हे परमात्मा, मुझे कितना कष्ट है! तुम मुझसे रुष्ट नहीं हो, हो क्या? तुम जानती हो कि जब वेपनटेक आया तो मुझे विवश होकर उसके साथ जाना पड़ा। देखो, तुम्हारी सांस अब ठीक चलने लगेगी। डीया, सब मामला ठीक हो गया है। हम सुखी होंगे। मुझे पागल मत बनाओ, डीया! मैंने तुम्हारे साथ कोई बुराई नहीं की है।"

ये शब्द कहे नहीं गये, किन्तु सांस में अपने-आप निकले थे। वे उसकी छाती से निकल रहे थे—कभी इतने करुणाजनक स्वर में कि कपोती भी चकित हो जाय, और कभी ऐसे गर्जन के साथ कि सिंह भी डर जाये।

डीया मन्द पड़ती हुई आवाज में और प्रायः प्रत्येक शब्द पर रुकती हुई बोली—

"प्यारे, अब कोई उपाय नहीं। मैं मानती हूं, तुम जो कुछ कर सकते हो, कर रहे हो। एक घंटे पहले मैं मरना चाहती थी। ग्वाइनप्लेन, मेरे पूज्य ग्वाइनप्लेन, हम कितने सुखी रहे हैं! ईश्वर ने मुझे तुम्हारे जीवन

में स्थापित किया और अब वह वहां से हटा रहा है। अब मैं जा रही हूं। तुम ग्रीनबाक्स की याद रखना, रखोगे न? और गरीब अन्धी छोटी-सी डीया को भी। तुम मेरा गायन याद रखोगे? मेरी आवाज के स्वर को मत भूलना और उस ढंग को, जिससे मैं गाया करती थी। मैं तुम्हें प्यार करती हूं। मैं लौटकर आऊंगी, और जब तुम सोते होगे तब तुम्हें वे शब्द कहूंगी। हां, हम एक-दूसरे से फिर आ मिले; परन्तु वह आनन्द बहुत अधिक था। उसका तत्काल अन्त होने वाला था। यह तय हो चुका है कि मैं पहले जाऊंगी। मैं अपने पिता उर्सस और अपने भाई होमो को बहुत-बहुत प्यार करती हूं। तुम सब कितने अच्छे हो! यहां हवा नहीं है। खिड़की खोल दो। मेरे ग्वाइनप्लेन, मैंने तुम्हें नहीं बताया, किन्तु एक दिन एक स्त्री आई थी। मैं उससे बहुत जलती थी। पता भी नहीं, मैं किसके बारे में कहती हूं। नहीं है न? मेरे हाथ ढंक दो, ज़रा ठंड लगती है। और फीबी और वीनो, वे कहां हैं? हरएक से प्यार हो जाता है। जितने किसीके सुख में शामिल रहते हैं, उन सबसे उसका प्यार हो जाता है। वे हमारे आनन्द में उपस्थित रहते हैं, इसलिए उनके प्रति हमारा सद्भाव हो ही जाता है। यह सब क्यों बीत गया! पिछले दो दिनों में क्या-क्या हुआ, मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया। अब मैं मर रही हूं। मुझे इन्हीं कपड़ों में रहने देना। जब मैंने ये कपड़े पहने थे तो मैं समझ गई थी कि ये मेरे कफ़न होंगे। मैं इन्हें पहने रहना चाहती हूं। उनपर ग्वाइनप्लेन के चुम्बन हैं। अरे, मैं जीवित रहने के लिए क्या-क्या न देने को तैयार हूं! हमने अपनी गरीब गाड़ी में कैसा सुख का जीवन बिताया है! हम कैसे गाते थे! अपनी तारीफ की तालियां किसी तरह सुनते थे! मुझे ऐसा मालूम होता था, मानो मैं तुम्हारे साथ बादलों में रहती हूं; यद्यपि मैं अंधी थी तो भी मैं प्रत्येक दिन को पहचानती थी। मैं जानती थी कि प्रातःकाल कब हुआ। मैं उस समय ग्वाइनप्लेन की बोली सुनती थी; मैं रात का अनुभव करती थी, उस समय मैं ग्वाइनप्लेन का स्वप्न देखती थी। मैं अनुभव करती थी कि मैं किसी वस्तु में लिपटी हुई हूं, वह वस्तु ग्वाइनप्लेन की आत्मा थी। हम एक-दूसरे की इतनी मधुर पूजा करते थे। वह सब दूर हो रहा है। अब गायन नहीं होगा। हाय! मैं जीती नहीं रह सकती! तुम मेरी याद रखोगे, प्रिय?"

उसकी आवाज धीमी होती जा रही थी। मृत्यु की अनिष्ट क्षीणता उसकी सांस को चुरा रही थी। डीया ने उंगलियों में अपने अंगूठे दबाये, इससे प्रकट होता था कि उनका अन्तकाल निकट आ गया था। ऐसा मालूम होता था कि मरती हुई बालिका के अन्तिम क्षीण शब्दों में नवोत्पन्न देवी का प्रथम अनिश्चित स्वर मिल रहा हो।

वह धीरे से बोली—

"तुम मुझे याद रखोगे, रखोगे न ? वह मरना अत्यन्त दुःखदायी है जिसके बाद कोई याद न करे। मैंने कभी-कभी गलतियां की हैं। मैं तुम सबसे क्षमा मांगती हूं। मेरे ग्वाइनप्लेन, मुझे विश्वास है कि यदि ईश्वर की ऐसी ही इच्छा होती तो हम अब भी सुखी होते; क्योंकि हमें बहुत कम स्थान की आवश्यकता है, और हम साथ मिलकर किसी दूसरे देश में अपनी जीविका कमा लेते। किन्तु ईश्वर की कुछ और ही इच्छा है। मेरी समझ में तनिक भी नहीं आता कि मैं क्यों मर रही हूं। मैंने अंधी होने की कभी शिकायत नहीं की, इसलिए कोई मुझसे नाराज हो ही नहीं सकता था। मैंने कभी कुछ नहीं मांगा, सिवा इसके कि मैं अन्धी बनी रहूं और सदा तुम्हारे साथ रहूं। हाय ! विलग होना कितना कष्टदायी है !"

उसके शब्द अधिकाधिक अस्पष्ट होते जा रहे थे। वे एक-दूसरे में मिले हुए निकलते थे मानो फूंक में उड़ रहे हों। अब वे सुनाई भी नहीं पड़ते थे।

वह बोली, "ग्वाइनप्लेन, तुम मेरा ध्यान रखना ! रखोगे न ? मेरी मरने के बाद भी यही चाह रहेगी।"

और फिर वह बोली, "हाय, मुझे अपने साथ रखो !"

फिर जरा रुककर, "जितने जल्दी हो सके, तुम मेरे पास आ जाना। मैं स्वर्ग में तुम्हारे बिना बहुत दुःखी रहूंगी। मेरे प्यारे ग्वाइनप्लेन, मुझे अधिक समय तक अकेली मत छोड़ना ! मेरा स्वर्ग यहां था, ऊपर तो केवल देवलोक है ! हाय ! सांस नहीं चलती ! मेरे प्रियतम ! मेरे प्रियतम !"

ग्वाइनप्लेन चिल्ला उठा, "हे ईश्वर, दया !"

डीया बोली, "विदा...!"

ग्वाइनप्लेन ने उसके ठंडे हाथों का चुम्बन किया। एक क्षण के लिए ऐसा मालूम हुआ कि उसकी सांस रुक गई। फिर वह कोहनी के बल उठी और उसकी आंखों में गहरा तेज चमकने लगा और अमिट मुस्कराहट के बीच उसकी आवाज़ साफ गूंज उठी।

वह बोली, "प्रकाश ! मुझे दिखाई देता है !"

और उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। वह चटाई पर लुढ़क गई। उसका शरीर कड़ा और निश्चेष्ट हो गया।

उर्सस बोला, "वह चली गई !"

और उस बेचारे बूढ़े ने मानो कष्ट से चूर-चूर होकर, अपना केश-रहित सिर नीचे झुकाया और डीया के पैरों पर पड़े हुए वस्त्र में अपना चेहरा छिपा लिया। वह वहीं बेहोश हो गया।

